हो गई थी। दूसरी ओर क्षेपक-कथाओं की भरमार से उन भावुक भक्तजनों को बहुत क्लेश होता था, जो श्रीरामचरित मानस को धर्म-ग्रंथ समझकर उसका प्रतिदिन पाठ करते हैं। इन्हीं सब बातों पर विचार करके इस बार यह ग्रंथ प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के अनुसार पाठ मिलाकर नागरी-प्रचारिणी-सभा, काशी तथा अयोध्यावासी निखिल-शास्त्र-निष्णात महात्मा श्रीरामवल्लभाशरणजी महाराज के निर्देशानुसार प्रसिद्ध प्रतियों से पाठ संशोधित कराकर यह विशुद्ध रामचरितमानस छापा गया है, और पाठ करनेवालों की सुविधा के लिये अयोध्या की प्रति के अनुसार इसमें नवाह और मासपारायण के पाठ भी लगा दिए गए हैं।

आशा है, यह संस्करण पाठकों को अधिक प्रिय होगा।

पौष शुक्ल २ सं० १९८४ वि०

सर्व सज्जनों का अनुरागी—
विष्णुनारायण भार्गव
मालिक, नवलकिशोर प्रेस,
लखनऊ

श्रीमद्गोस्वामि
तुलसीदासजी का जीवनचरित्र
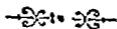
गोसाई तुलसीदासजी सरवरिया ब्राह्मण थे। वे बाँदा प्रदेशान्तर्गत राजापुर के रहनेवाले थे। इनके गुरु का नाम नृसिंहदास था। इनका जन्म शिवसिंहसरोजकार ने संवत् १५८३ का लिखा है, और किसी-किसी का मत है कि संवत् १५८९ में इनका जन्म हुआ। उन्होंने संवत् १६८० में देह त्याग किया। गोसाई तुलसीदासजी को भक्तमाल के कर्त्ता ने वाल्मीकिजी का अवतार लिखा है। इसमें कुछ संदेह नहीं कि उनकी वाणी में ऐसा ही प्रभाव दिखाई पड़ता है कि हृदय में घुस जाता है। रामचरित्ररूपी अमृत की धारा को आपने इस कलियुग में ऐसा प्रवाहमान किया है कि वह सबको सुलभ है।

निम्न-लिखित ग्रंथ गोसाइजी के बनाये विख्यात ग्रंथ हैं, १ रामायण (रामचरितमानस) २ विनयपत्रिका ३ रामायण गीतावली ४ रामायण कवितावली ५ दोहावली ६ रामशलाका ७ हनुमानबाहुक ८ जानकीमङ्गल ९ पार्वतीमङ्गल १० कड़खा रामायण ११ बरवा रामायण १२ रोला रामायण १३ झूलना रामायण १४ छन्दावली रामायण १५ छप्पै रामायण १६ कुण्डलिया रामायण १७ वैराग्यसंदीपिनी १८ तुलसीसतसई १९ रामाज्ञा २० रामलला नहछू २१ कृष्णगीतावली २२ संकटमोचन। प्रेमियों और उपासकों को ये ग्रंथ सब जगह

मिल सके हैं, और भक्तों के मुख से निश्चय हो चुका है कि जो कोई नियम करके नित्य रामायण का पाठ करता है, निश्चय उसकी श्रीरघुनन्दन स्वामी के चरणों में प्रीति हो जाती है और सब मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। राम शलाका में जो प्रश्न करे, तो ऐसे दोहे निकलें कि जो होने वाली बात हो सो ज्ञात हो जाय। तुलसीकृत रामायण को काशीजी के सब पण्डितों ने सभा करके सम्पूर्ण पढ़ा। आदि अन्त सब वेद, शास्त्र, पुराण, गीता के अनुकूल देखकर सबने इसका महत्त्व स्वीकार किया। किसी-किसी ने द्वेष करके विरोध किया, तो विश्वेश्वरनाथजी के स्वीकार करने से सबको स्वीकृत हुआ।

गोसाईं तुलसीदासजी अपनी स्त्री से विशेष स्नेह रखते थे। एक दिन स्त्री अपने मैके में मा-बाप से मिलने को गई, तो गोसाईंजी को इतना वियोग हुआ कि सहन न हो सका और ससुराल में पहुँचे। इनको देख स्त्री को लज्जा आई। क्रोध करके गोसाईंजी से बोली कि यह मेरा शरीर अस्थिमांस का अनित्य है, श्रीरघुनन्दन स्वामी नित्य निर्विकार पूर्णब्रह्म हैं, उनसे क्यों नहीं स्नेह करते कि दोनों लोक में लाभ हो। गोसाईं जी पण्डित और ज्ञानवान् तो थे ही इतना सुनते ही पूर्व पुण्य के पुंज उदय हुए, ज्ञान-वैराग्य की आँखें खुल गई। वहाँ से चल काशीजी में आकर श्रीरघुनन्दन स्वामी के भजन-कीर्तन में लगे। गोसाईंजी शौचादि को बन में जाया करते थे और शौच-शेष पानी को एक बेरी के वृक्ष पर नित्य डाल दिया करते

थे। उस पर एक भूत रहता था, उस पानी से उसकी तृषा मिटती थी। एक दिन प्रसन्न होकर बोला कि तुमको जो कामना हो सो कहो। गोसाईंजी ने कहा कि श्रीरघुनन्दन स्वामी का दर्शन करा दे। भूत ने कहा कि यह सामर्थ्य मेरे में नहीं; पर हनुमान्‌जी का पता बतलाता हूँ। कर्णघंटा पर रामायण की कथा होती है, वहाँ हनुमान्‌जी सबसे पहिले ऐसे पुरुष से कि जिसको देखते डर लगे और घृणा हो, आते हैं और सबसे पीछे जाते हैं। इस पहिचान से गोसाईंजी हनुमान्‌जी को ढूँढ़ते चले। जब उसी रूप में देखा, तो चरण पकड़ लिये और किसी तरह न छोड़ा, तब हनुमान्‌जी ने दर्शन दिया और कहा जो चाहता हो सो कहो। गोसाईंजी ने विनय किया कि श्रीरघुनन्दन स्वामी का दर्शन चाहता हूँ। हनुमान्‌जी ने कहा कि चित्रकूट में दर्शन होगा। गोसाईंजी अति अभिलाष से चित्रकूट में आये। एक दिन इस स्वरूप से दर्शन हुआ कि श्रीरघुनन्दन स्वामी श्यामसुन्दर राजकुमार के स्वरूप में वस्त्रभूषण बसन भूषण पहिने धनुष बाण लिये घोड़े पर सवार और लक्ष्मणजी गौरमूर्ति वैसी ही सजावट के सहित एक हरिण के पीछे घोड़ा डाले हुए जाते हैं। यद्यपि स्वामी की मूर्ति मन और आँखों में समा गई; पर यह न जाना कि ये स्वामी हैं। पीछे हनुमान्‌जी आये और गोसाईंजी से पूछा कि दर्शन किये? गोसाईंजी ने विनय किया कि दो राजकुमार देखे हैं। हनुमान्‌जी बोले कि वही राम लक्ष्मण थे। गोसाईंजी उसी रूप का ध्यान करते हुए पूर्ण मनोरथ को प्राप्त हुए।

एक हत्यारा पहिले राम का नाम टेरकर कहा करता कि हत्यारे को भिक्षा दो। गोसाइंजी को आश्चर्य्य हुआ कि यह कैसा पुरुष है कि पहिले रामनाम लेता है, फिर अपने आपको हत्यारा कहता है। उसको बुलाया और प्रेमशुद्ध जानकर अपने साथ भगवत् प्रसाद जिमाया। काशीजी के पण्डितों ने सभा की और गोसाइंजी को बुलाकर पूछा कि प्रायश्चित्त बिना किस तरह इसका पाप दूर हुआ। गोसाइंजी ने कहा एक बार राम-नाम लेने का क्या माहात्म्य है? शास्त्र में देखो, इसने तो सैकड़ों बेर रामनाम उच्चारण किया। आप लोगों को शास्त्र के वचन पर जो विश्वास नहीं, तो अज्ञान का अंधकार दूर नहीं हो सकता। पण्डितों ने यद्यपि शास्त्र को माना, पर यह व्यवस्था की कि विश्वेश्वरनाथ का नन्दी इसके हाथ से भोजन करे, तो सत्य मानें। गोसाईंजी ने नन्दी को उसके हाथ से भोजन रखवाया। वह नन्दी ने खा लिया। तब सब पण्डितों ने लज्जित होकर नाम की महिमा गोसाईंजी की भक्ति पर निश्चय किया।

एक दिन गोसाईंजी के स्थान पर रात को चोर चोरी करने आये, तो श्रीरघुनन्दन स्वामी धनुष बाण लेकर चोरों को डरवाते फिरे, चोरी करने न पाये, चोरों ने गोसाईंजी से प्रभात को आके पूछा कि महाराज वह श्यामसुन्दर किशोरमूर्ति परम मनोहर कौन हैं, जो, रात को चौकी देते हैं? गोसाईंजी सब वृत्तान्त सुनकर प्रेम में डूब गये और विचारा कि इस सामग्री के लिये स्वामी का परिश्रम और रात को जागरण अच्छा नहीं, बहुत रोने लगे। उसी घड़ी सब धन-सामग्री दान कर दिया। चोर

यह वृत्तान्त देखकर घर-बार छोड़ भगवत् शरण हो गये । एक ब्राह्मण मर गया, उसकी स्त्री विमान के साथ सती होने जाती थी, गोसाइजी को दण्डवत् किया, गोसाईजी के मुख से निकल गया सौभाग्यवती हो, उसने कहा मेरा पति मर गया, यह दासी सती होने जाती है, अब सौभाग्य कहाँ ? गोसाइजी ने उसके कुल में भगवद्भक्ति करने की प्रतिज्ञा कराके पति को जिला दिया । जब यह बात विख्यात हुई, तो बादशाह ने गोसाइजी को बड़े आदर से बुला उच्चासन पर बैठालकर सिद्धता दिखलाने को विनय किया। गोसाईजी बोले सिवाय श्रीरघुनन्दन स्वामी के दूसरी सिद्धता कुछ नहीं जानता हूँ और न इस झूठे खेल से काम रखता हूँ । बादशाह ने कहा कि अपने स्वामी ही का दर्शन करा दो, यह कहकर बंदि में किया । गोसाइजी ने हनुमान्‌जी का स्मरण किया । उसी घड़ी बानरों की अगणित सेना ने बादशाही किले में ऐसा उत्पात किया कि प्रलयकाल दिखलाई पड़ा । बादशाह जब पलँग पर से उछल गया, तब ज्ञानवृद्ध स गोसाइजी की शरण में आकर चरण पर गिरा । तब सब बानरी सेना अन्तर्धान हो गई । गोसाइ तुलसीदासजी ने आज्ञा दी कि तुम दूसरा किला रहने को बना लो, यह स्थान रघुनाथजी का हुआ । बादशाह ने तुरंत छोड़ दिया । गोसाइ तुलसीदासजी काशीजी को चले आये । एक भक्तों के बैरी ने गोसाइजी के मारने को अनुष्ठान किया । गोसाइजी ने एक पद महादेवजी का बनाया, जिसके प्रताप से कुछ न हुआ । शठ आप लज्जित हो रहा । फिर गोसाइजी वृन्दावन आकर नाभाजी से मिले और अनेक

रचना भक्तमाल को देख-सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। यह बात जो लिखी है कि गोसाइँजी ने मदनगोपालजी के दर्शन के समय यह बात कही थी कि धनुष-बाण धारण करोगे, तब दण्डवत् करूँगा, सो यह बात झूठ और बिना सिर पैर की है, क्योंकि कृष्णावली में कृष्ण-यश गोसाईंजी ने गाया सो प्रसिद्ध है, सिवाय इसके सब जगत् को दण्डवत् किया है 'सीय राम मय सब जग जानी। करौं प्रनाम जोरि जुग पानी' यह चौपाई जिसकी कही है भला वह कब भगवत् के सामने ऐसी हठ-बानी कह सका है। इस बात के लिखने का कारण यह है कि उपासक जिस देवता के मन्दिर में जाता है, अपने इष्ट का रूप ध्यान करता है। यह रीति शास्त्र के सम्मत के अनुकूल है। सो गोसाईंजी दर्शन को गये और परम मनोहर मूर्ति को देखा, श्री श्रीरघुनन्दन धनुष बाणधारी का ध्यान करके दण्डवत् किया। गोसाईंजी सच्चे भक्त और सिद्ध थे। इस हेतु मदन गोपालजी ने भी उनके ध्यान के अनुकूल रूप दिखा दिया। जो कोई उस समय दर्शन करनेवाले थे, उनको भी धनुष बाणधारी ही दृष्टि में आये। इस हेतु यह बात फैली और किसी ने एक और कल्पना किया। वृन्दावन में किसी ने गोसाइँजी से प्रश्न किया कि श्रीकृष्ण महाराज पूर्णब्रह्म और अवतारी हैं और नृसिंह, वामन, परशुराम, रामचन्द्र आदि जस अवतारों के अंश कला से अवतार, तुम श्रीकृष्ण महाराज की उपासना क्यों नहीं करते? यद्यपि शास्त्र प्रमाण से गोसाईंजी उत्तर देने को समर्थ थे, पर अपूर्णभाव में प्रेमभक्ति को दृढ़

करते हुए, ऐसा उत्तर दिया कि वह चुप हो रहा और सिद्धांत बना रहा। वह यह है कि श्रीरामचन्द्र दशरथनन्दन को बहुत सुंदर सुकुमार घन मनोहरमूर्ति परम शोभायमान देख कर हमारा मन ऐसा लग गया है कि नहीं छूटता। अब जो तुम्हारे वचन से उनमें कुछ ईश्वरता भी है, तो और अच्छी बात हुई ॥ इति ॥

* श्रीगणेशाय नमः *

रामायण-माहात्म्य

दो० गुरु हरि हर गणईश को, सुमिरौं तुलसीदास।
करत गोपाल महात्म्यकी, रामायण सुखरास॥

रामायण सुरतरु की छाया * दुख भय दूरि निकट जो आया
सप्तकाण्ड स्कन्ध सोहाई * दोहा लघु शाखा छबिछाई
शुचि सोरठा सौरभ छोई * पत्री बहु चौपाई ओई
छन्दन की शोभा अतिन्यारी * बहु नवीन पंकुर छबिपूरी
अपर सुमन रहे गहगाई * अति अद्भुत सुगन्ध कविताई
विविध प्रकार अर्थ सोई फल * शोभा सुमति स्वादु जानै भल
भक्ति ज्ञान वैराग्य सरस रस * बीज बोध निर्गुण सगुण यश
मुनि भुशुण्डि शिव भवसहि गाई * सोइ गाई जगदेव गोसाई

दो० तुलसिदास रामायणहिं, नहिं करते अनुसार।
कलि के कुटिल जीव ये, को करतो निस्तार॥

रामायण सुरधेनु समाना * दायक अभिमत फल कल्याना
गुणसमूह कवि रचे कौन गनि * आशु प्रभाव सरिस चिंतामनि
रामायन रामायन धारी * बरणि पार पावै को ताही
रामायण अद्भुत फुलवारी * राम भ्रमर भूषित रुचि भारी
श्रीरामायण जेहि घर माहीं * भूत प्रेत तहँ भूलि न जाहीं
नहिं गमि तहाँ दरिद्रु केरी * तहँ श्रीमहावीर की फेरी
यन्त्र मन्त्र सद्नीती भेदी * रामायण महँ जानिय वेदी

प्रीति करी रामायण माहीं • तेहि सम मान्यवन्त कोउ नाहीं

दो॰ रामायण सम नाहिं कोउ, सब उपमा उपमेय ।
उपमा भाषा और की, कैसे कोऊ देय ॥

त्रेता मह भे बाल्मीकि मुनि • ते कलियुग में तुलसिदास पुनि
शत करोरि रामायण भाखी • इन मथि सार सुधूरुप राखी
प्रथम काण्ड है बाल रसीला • जन्म विवाह राम की लीला
द्वितिय अयोध्याकाण्ड प्रकाशा • पितु॰ आज्ञा रघुवर बनवासा
पुनि अरण्य किष्किन्धा भाख्यौ • तहँ सुग्रीव शरण महँ राख्यौ
सुन्दर सुन्दरकाण्ड सुहावन • युद्धकाण्ड महँ मारेउ रावन
सप्तम उत्तर परम अनूपा • उत्सव प्रभु कोशलपुर भूपा
तुलसीकृत रामायण येती • विविध प्रकार कथा है केती

दो॰ जग वारिधि को पार नहिं, ऐसो है कैलाय ।
तुलसीदास कृपा करी, रचि रामायण नाय ॥

श्रीरामायण स्वर्ग निसेनी • सज्जनमन कहँ आनँद देनी
श्रीरामायण सद्गुण माता • पढ़ आदि पढ़ि होहिं सुज्ञाता
पाप समूह मूल की राशी • रामायण धनंश्यकनकाशी
मोहपुंज तमकिरणि तमारी • कामअगिनि कहँ शीतलवारी
रामायण शशिकिरण सुहाई • सत चकोरन कहँ सुखदाई
धन्य धन्य श्रीतुलसिदास धनि • सगाहित रामायण रची भनि
नीच ऊँच जते नर नारी • श्रीरामायण सब कहँ प्यारी
रामायण सों नेह लगावैं • अमन अपत्य सो चित सुख पावैं

दो॰ रामायण सों नेह किय, सिद्धि होत सब काम ।
है सबकी कल्याणदा, पढ़ु सुनु लहु विश्राम ॥

पाप बास देही महँ तब लग * श्रीरामायण सुनै न जब लग
सदय पुरानी पुण्य होय जब * रामायण महँ मन लागै तब

दो० रामायणके सुनत ही, छूटि जात प्रेतत्व ।
जाके पढ़ते सुनत से, सुकृत है परतत्व ॥

को जानै रामायण का रस * यह तो है सन्तन को सरबस
बनज सनेही भ्रमिगण जैसे * मज्जन प्रिय रामायण तैसे
त्यागि मक्कजन ग्रन्थ अनेकू * धारण किय रामायण एकू
मक्कन करैं है भक्ति अनूपा * रसिकजनन करैं है रसरूपा
ज्ञानमयी तिन करै है ज्ञानी * तुलसी तारण तरण बखानी
काम क्रोध रूप भरा संसारा * भीषण रामायण अनुसारा
रामायण महँ नेह न जाके * जीवत शव सम जानिय ताके
रामायण जा कहँ प्रिय नाहीं * वृथा जन्म ताके जग माहीं

दो० रामायण अमृत कथा लेत न ताको स्वाद ।
तिनका निश्चय जानिये हैं पूरे मनुजाद ॥

रामायण विधि कही विशारद * सनत्कुमार सों भाषी नारद
सरित विधान सुनै जो कोई * सहज मुक्ति पावै नर सोई
कार्तिक माघ चैत्र तिथि आई * नव दिन सुनै कथा सुखदाई
ब्रह्ममुहूर्त समय हो जबहीं * कर्म करै शौचादिक तबहीं
करै दन्तधावन सरजीरा * मज्जन करि धरै मनधीरा
पुनि रामायण पुस्तक धरै * प्रेम सहित गन्धादिक धरै
ॐ नमो नारायण मन्त्र भर्नाजै * तीन आहुती होम करीजै
मन वच कर्म पाप तन केरे * छूटि जात नहिं आवत नेरे

दो० या विधि रामायण विधिहिं जे करिहहिं चितलाय ।

रामधाम ते आइहैं, संसृति दुखहि मिटाय ॥
जो कछु कारज करै कोउ भाई * सुमिरि पढ़ै सो यह चौपाई
प्रबिसि नगर कीजै सब काजा * हृदय राखि कोसलपुर राजा
जो बिदेश चाहै कुशलाई * सो यह सुमिरि पढ़ै चौपाई
रक्षहिं सियासहित दोउ भाई * पढ़ जनहिं मनधरि सिरनाई
भूत पिशाच आदि भय लागि * यह सोरठा पढ़े सौ भागि
सो० बन्दौं पवनकुमार, खलवन पावक ज्ञानघन ।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम शर चाप धर ॥
राम निवास चहै जो भाई * भावसहित जपु यह चौपाई
जाके सुमिरन तें रिपु नाशा * नाम शत्रुघ्न वेद प्रकाशा
यह चौपाई जपै जो कोई * शत्रु आदि दुख ताहि न होई
विश्वभरण पोषण कर जोई * ताकर नाम भरत अस होई
जो उत्सव चह विविध प्रकारा * कर यह चौपाई अनुसारा
जब ते राम ब्याहि घर आये * नित नव मङ्गल मोद बधाये
जो चाहै जग महँ जय भाई * थिर ह्वै जपु यह चौपाई
सखा धर्ममय अस रथ जाके * जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके
है बहु भांति कार्य जग माहीं * रामायण सों सब ह्वै जाहीं
दो० सकल भांति मनकामना, यह दोहा दातार ।
रामायण महँ खोजि करि, कर याको अनुसार ॥
यह शोभा सुसमाज सुख, कहत न बनै खगेश ।
बरणै शारद शेष श्रुति, सो रस जानु महेश ॥
बरणौं एक रुचिर इतिहासा * तुलसिदास जो कीन्ह तमासा
भविष पुर काशी महिपाला * कहौं एकम रहे कछु काला

अतिशय प्रीति बढ़ी दुहु माहीं * मन में कपट क्लेश कछु नाहीं
गर्भवती दोऊ नृप नारी * चली बात दोउन हितकारी
द्राविड़ कही बात मुसकानी * सुनहु नृपति काशी के वासी
जो पै तब सुत सुता हमारे * अथवा मम सुत सुता तिहारे
अस संयोग होइ जो नाहू * हम तुम करहिं विवाह उछाहू
सौंहैं करि यह बात दृढ़ाई * सन्तत प्रीति रही मन माहीं
सुखद समय आयो जब सोऊ * निज निज भवन गये नृप दोऊ

सो० कन्या भईं दुहुँ ओर, जानी जात न दैवगति ।
कहि पठयो सुख मोर, द्रविड़ दूत काशी गये ॥

यह अस होत भयो जिहिं ठाईं * सो यह हेतु कहौं मैं गाईं
द्राविड़पति निजगृह आयो जब * रानी सों अस कहत भयो तब
जो होई कन्या दुहुँ ओरा * तौ मैं प्राण तजब बरजोरा
सुनि रानी राजा मुख बानी * मन महँ बहुत भाँति भय मानी
उपरोहित कहँ लिखिसि बुलाई * नृप दुराय यह बात बुझाई
मम अहिवात तुम्हारे हाथा * नहिं तौ प्रभु मैं होब अनाथा
रानी मन्त्र दीन्ह नहिं थोरी * मइ मायावश द्विजमति भोरी
सेवक सेवकभवन वश कीन्हेसि * आदर मान दान बहु दीन्हेसि

दो० सेवक एक दीन्ह तेहिं, वाराणसी बसाय ।
तेहि ते पायसि खबरि सब, तब बहु किहिसि उपाय ॥

पुत्र नाम धरि ग्रह रखायो * आदरा वर्ष न द्वार दिखायो
विदुषन कहेहु न कोऊ देखे * ब्याह समय सब कोउ पेखे
मित्रमिलमहित चित अभराग्यो * बेगी पठै ब्याह पुनि माँग्यो
अति आनन्द बढ्यो मगबेगी * काशी नृप पहँ आयो नेगी

नृप मनमुदित पत्रिका बाँची • ते पायो बरात रँगराची
धायो ब्याहन द्राविड़राजा • मूर्छा मात उपजी अतिसाजा
कोधातुर कासी अवनीशा • कह कहँ द्राविड़ मर शीशा
पटमुनि द्राविड़ अधिक डेरानेउ • निज दल सामुहि२ पधितानेउ
दो० अतिसभीत अतिदीन हूँ, गो जहँ तुलसीदास।
पाहि पाहि कहि पाँव परि, कहेउ करौं पुत्र भास॥
तब काशी नृप कहँ बुलवायो • तुलसिदास तिन मन समुभायो
सुतकहि सुता जो ब्याहन धायो • होय पुत्र तौ होय बधायो
जो यह पुत्र होय महराजा • करिय बिवाह साजि सब साजा
तुलसिदास बेदी विरचाई • तहँ गणेश गौरी पधराई
सिंहसन पै धरि रामायण • नव दिन भरि कीन्हीं पारायण
जो कन्या बरवेष बनायो • ताही को सामुहे बैठायो
भक्षा धाम सो श्रोता भई • दुनिया तहँ देखन सब गई
कथा सकल जब बाँचि सुनाई • तासु शीश कर धरेउ गोसाँई
दो० बर पद चौपाई पढ़ी, रामै सुमिरि प्रसन्न।
तिहि अवसर नर हूँ गयो, श्रीरामायण धन्य॥
अत्रभद्रामणि विषय व्याल के • मेटत कठिन कुअंक भाल के
रामायण जब कही गोसाँई • मगरन हित काशी फिर आई
आदर कीन्ह न पण्डित काऊ • कहँ जो हम सों करौ उपाऊ
भई मस्थान कहँ तहँ जाहू • पोथी भ्रम न देखावहु काहू
श्रीआनँदकानन ब्रह्मचारी • हम शिरमौर सुमहिमा भारी
जो याको ये आदर करिहैं • तौ हम सब सिर शीशहि धरिहैं
सब आनँदकानन पहँ तत्पर • करत प्रशंस प्रसंस परस्पर

पोथी की परचा पुनि कीन्ही * देखन हेतु सो लै करि लीन्ही
कछु दिन पढ़ी सहित अनुरागन * गये गोसाईं पोथी माँगन

दो० पोथी यह अरु अस कहेउ सोई आदर लोक ।
निज प्रमाणकरिलिखिदियो, इक अद्भुत श्लोक ॥

श्लो० आनन्दकानने ह्यस्मिञ्जङ्गमस्तुलसीतरुः ।
कविता मञ्जरी यस्य रामभ्रमरभूषिता ॥ १ ॥

छ० धनि धन्य तुलसीदास जिन जग हेतु रामायन भनी ।
माहात्म्य अमित न कहि सकौं रसविषयमहँ मोमति सनी ॥
निज बुद्धि के अनुसार कहि गोपाल सतगुरु की दया ।
रघुबीर यश की अधिकता श्रीसन्तजन करिहैं मया ॥

दो० श्रीमत तुलसीदासजी हौ प्रसन्न वर देहु ।
रामायण माहात्म्य सों हरिजन करहिं सनेहु ॥
सपतवसुँ मम चन्द कँ, मार्गशुक्ल गुरुवार ।
एकादशि कहँ कीन्ह मैं, अपनी मति अनुसार ॥
रामकोट श्रीअवधपुर स्वामी रामप्रसाद ।
तिनकी महिमा को कहै, निरवधिविदित मर्याद ॥
तिन ते गादी पाँचईं, सो स्वामी मैं दास ।
लषणपुरी मम जन्मक्षिति, रामनगर के पास ॥
भोजनगर प्रसिद्ध द्विज उत्तम पूरनदास ।
तस्यात्मज गोपालकृत, यह माहात्म्य इतिहास ॥

इति श्रीदीनगोपालदासकृतरामायणमाहात्म्य
संपूर्णम् ।

एकश्लोकी रामायण

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनम् ।
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ॥
वालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनम् ।
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ॥ १ ॥

एकश्लोकी भागवत

आदौ देवकिदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्धनम् ।
मायापूतनजीवितापहरणं गोवर्धनोद्धारणम् ॥
कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनम् ।
एतद्भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम् ॥ १ ॥

सप्तश्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ १ ॥
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः ॥ २ ॥
सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ ३ ॥
कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ४ ॥
ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ ५ ॥
सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ ६ ॥

पोथी की परचा पुनि कीन्ही * देखन हेतु सो है धरि लीन्ही
कछु दिन पढ़ी सहित अनुरागन * गये गोसाइ पोथी माँगन
दो० पोथी दइ अरु अस कहेउ, होई आदर लोक।
मिश्र प्रसादकरिहिलिखियो, इक अद्भुत श्लोक॥
श्लो० आनन्दकानने ह्यस्मिञ्जङ्गमस्तुलसीतरुः।
कविता मञ्जरी यस्य रामभ्रमरभूषिता॥ १॥
कु० धनि धन्य तुलसीदास जिन जग हेतु रामायन भनी।
माहात्म्य अमित न कहिसकौं रसविषयमहँ मोमति सनी॥
निज बुद्धि के अनुसार कहि गोपाल सतगुरु की दया।
रघुबीर यश की अधिकता श्रीसंतजन करिहैं मया॥
दो० श्रीमत तुलसीदासजी, ह्वै प्रसन्न वर देहु।
रामायण माहात्म्य सों, हरिजन करहिं सनेहु॥
सयसयसु नभ चन्द्र कु, मार्गशुक्ल गुरुवार।
एकादशि कहँ कीन्ह मैं, अपनी मति अनुसार॥
रामकोट श्रीअवधपुर, स्वामी रामप्रसाद।
तिनकी महिमा को कहै निरखविदित मर्याद॥
तिन ते गादी पाँचई, सो स्वामी मैं दास।
अवधपुरी मम जन्मक्षिति, रामनगर के पास॥
मोजमनगर प्रसिद्ध द्विज उत्तम पूरमवास।
तस्यात्मज गोपालकृत, यह महात्म्य इतिहास॥

इति श्रीद्विजगोपालदासकृतरामायणमाहात्म्यं संपूर्णम्।

एकश्लोकी रामायण

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनम् ।
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ॥
बालीनिदलनं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनम् ।
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ॥ १ ॥

एकश्लोकी भागवत

आदौ देवकिदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्धनम् ।
मायापूतनजीवितापहरणं गोवर्धनोद्धारणम् ॥
कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनम् ।
एतद्भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम् ॥ १ ॥

सप्तश्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ १ ॥
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः २
सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ ३ ॥
कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ४ ॥
ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ ५ ॥
सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ ६ ॥

दोहा—श्रीगणेश को सुमिरिकै, शारद को धरि ध्यान।
लिखित प्रश्न की रीति सों उत्तर लीजै जान॥
अपनी पृच्छक अङ्क पर अँगुली को धरि देत।
ताके अगिले अङ्क ते, नवमाक्षर गनि लेत॥
ऊपर को ऊपर लिखे, नीचे निम्न लिखेत।
रामसलाकाप्रश्न यह यथा उचित फल देत॥

सुनु सिय सत्य असीस हमारी । पूजहि मन कामना तुम्हारी १
प्रविसि नगर कीजै सब काजा । हृदय राखि कोसलपुर राजा २
उघरे अंत न होइ निबाहू । काल नेमि जिमि रावण राहू ३
विधिवस सुजन कुसंगति परहीं । फणिमणिसम निज गुण अनुसरहीं ४
होइहै सोइ जो राम रचि राखा । को करि तरक बढ़ावहि साखा ५
मुदमंगल मय संत समाजू । जिमि जगजंगम तीरथ राजू ६
गरल सुधा रिपु करै मिताई । गोपद सिंधु अनल सितलाई ७
बरुण कुबेर सुरेस समीरा । रणसन्मुख धरि काहु न धीरा ८
सफल मनोरथ होहिं तुम्हारे । राम लखन सुनि भये सुखारे ९

रामचरितमानस की सक्षिप्त
विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
तुलसीदास का जीवनचरित्र	
रामायण-माहात्म्य	
रामसखाकाप्रश्न	
बालकाण्ड	
मंगलाचरण	१
नाम-माहात्म्य	१२
भरद्वाज-याज्ञवल्क्य संवाद	२६
सती-मोह	२८
शिव पार्वती-संवाद	४६
नारद-मोह	६६
मनु-सतरूपा-तप	७२
प्रतापभानु की कथा	७७
राम-जन्म	९५
विश्वामित्र की यज्ञरक्षा	१०२
पुष्प-वाटिका निरीक्षण	११२
धनुष भंग	११८
श्रीसीता राम विवाह	१२३
अयोध्याकाण्ड	
मंगलाचरण	१७७
श्रीराम राज्याभिषेक की तैयारी	१७८
राम-जानकी-संवाद	२०४
राम का वन-गमन	२१२
निषाद मिलन	२१६
भरद्वाज मुनि से भेंट	२२४
श्रीराम-वाल्मीकि-मिलन	२३२
चित्रकूट निवास	२३५
दशरथ-तन-त्याग	

विषय	पृष्ठ
भरत-कौशल्या-संवाद	२४०
भरत चित्रकूट-गमन	२५०
भरत भरद्वाज-संवाद	२५८
राम भरत मिलन	२८४
श्रीराम भरत-संवाद	२९२
जनकजी का आगमन	२९८
भरतजी की विदाई	३१८
नंदिग्राम में निवास	३२०
अरण्यकाण्ड	
मंगलाचरण	३२३
जयंत की कुटिलता	३२४
अनसूया-सीता-संवाद	३२९
सुतीक्ष्ण मिलाप	३३१
पंचवटी निवास	३३६
शूर्पणखा की नाक काटना	३३७
खर-दूषण की लड़ाई	३३८
रावण मारीच मन्त्रणा	३४४
सीता-हरण	३४८
शबरी पर कृपा	३५४
किष्किंधाकांड	
मंगलाचरण	३६१
श्रीराम हनुमान् भेंट	३६२
बालि वध	३६६
सुग्रीव का सीता की खोज में वानर भेजना	३७१
हनुमान्-जाम्बवन्त संवाद	३७७
सुन्दरकांड	
मंगलाचरण	३७९
वायुसुत लंका प्रवेश	३८०
हनुमान्-सीता-संवाद	३८०
लंका-दहन	३९३
राम-हनुमान्-संवाद	३९४
श्रीराम-लंका प्रस्थान	३९६
विभीषण की शरणागति	४०२

विषय	पृष्ठ
समुद्र पर कोप	२०७
लङ्काकाण्ड	
मंगलाचरण	२१०
नल नील का पुल बाँधना	२११
अंगद-रावण-संवाद	२१३
लक्ष्मण-मेघनाद-युद्ध	२३८
राम-विलाप	२४२
कुम्भकर्ण वध	२४७
मेघनाद वध	२५१
राम-रावण-युद्ध	२५३
रावण-मरण	२६६
सीता अग्नि-परीक्षा	२७४
अवध के लिए प्रस्थान	२८०
उत्तरकाण्ड	
मंगलाचरण	२८१
भरत-हनुमान् मिलन	२८२
भरत मिलाप	२८८
राम राज्याभिषेक	२९२
श्रीराम का उपदेश	३०१
गरुड़ भुशुण्डि-संवाद	३१८
भुशुण्डि-लोमश संवाद	३३३
भक्ति ज्ञान-वर्णन	३४०
रामायण की आरती	३००

नवाह्नपारायण के विश्राम-स्थान

	पृष्ठ
पहला विश्राम	६३
दूसरा ,,	११८
तीसरा विश्राम	१०२
चौथा ,,	१९३

	पृष्ठ		पृष्ठ
पाँचवाँ विश्राम	२८२	आठवाँ विश्राम	३११
छठा ,,	२४६	नवाँ ,,	३१२
सातवाँ ,,	३१०		

मासपारायण के विश्राम-स्थान

	पृष्ठ		पृष्ठ
पहला विश्राम	१६	सोलहवाँ विश्राम	२२४
दूसरा ,,	३८	सत्रहवाँ ,,	२३६
तीसरा ,,	४०	अठारहवाँ ,,	२६६
चौथा ,,	६१	उन्नीसवाँ ,,	२७२
पाँचवाँ ,,	७०	बीसवाँ ,,	२८२
छठा ,,	८१	इक्कीसवाँ ,,	३२२
सातवाँ ,,	१०५	बाईसवाँ ,,	३३०
आठवाँ ,,	११८	तेईसवाँ ,,	३०८
नवाँ ,,	१३१	चौबीसवाँ ,,	३०३
दसवाँ ,,	१४९	पचीसवाँ ,,	४२१
ग्यारहवाँ ,,	१६०	छब्बीसवाँ ,,	३६६
बारहवाँ ,,	१७६	सत्ताईसवाँ ,,	४८३
तेरहवाँ ,,	१६०	अट्ठाईसवाँ ,,	५१८
चौदहवाँ ,,	२०४	उन्तीसवाँ ,,	५४३
पन्द्रहवाँ ,,	२१८	तीसवाँ ,,	५६२

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते
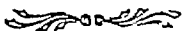
रामचरितमानस

प्रथम सोपान

(बालकांड)

श्लोकाः

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥
भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥
वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥
सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥
उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥ ५ ॥
यन्मायावशवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुराः
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ।

सो जानब सतसंग प्रभाऊ * लोकहु बेद न आन उपाऊ
बिनु सतसंग बिबेक न होई * रामकृपा बिनु सुलभ न सोई
सतसंगति मुद-मंगल मूला * सोइ फल सिधि सब साधन फूला
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई * पारस परसि कुधातु सोहाई
बिधिबस सुजन कुसंगति परहीं * फनि-मनिसम निजगुन अनुसरहीं
बिधि हरिहर-कबि-कोबिद बानी * कहत साधु-महिमा सकुचानी
सो मोसन कहि जात न कैसे * साकबनिक मनिगन-गुन जैसे

दो० बंदउँ संत समानचित हित अनहित नहिं कोउ।
अंजलिगत सुभ सुमन जिमि सम सुगंधकर दोउ ॥३॥
संत सरलचित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु।
बालबिनय सुनि करि कृपा रामचरन-रति देहु ॥४॥

बहुरि बंदि खलगन सति भाये * जे बिनु काज दाहिनेहु बाँये
पर-हित हानि लाभ जिन्ह केरे * उजरे हरष बिषाद बसेरे
हरि हर-जस राकेस राहु से * परअकाज भट सहसबाहु से
जे परदोष लखहिं सहसाखी * परहित घृत जिनके मनमाखी
तेज कृसानु रोष महिषेसा * अघ-अवगुन धन धनी धनेसा
उदय केतुसम हित सबही के * कुंभकरन सम सोवत नीके
परअकाज लगि तनु परिहरहीं * जिमि हिमउपल कृषी दलि गरहीं
बंदउँ खल जस सेष सरोषा * सहसबदन बरनइ परदोषा
पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना * परअघ सुनइ सहसदस काना
बहुरि सक्र सम बिनवउँ तेही * संतत सुरानीक हित जेही
बचन बज्र जेहि सदा पियारा * सहसनयन परदोष निहारा

दो० उदासीन अरि-मीत-हित सुनत जरहिं खलरीति।

जानु पानि जुग जोरि जन बिनती करइ सप्रीति ॥४॥

मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा • तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा
बायस पलिअहिं अति अनुरागा • होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा
बंदउँ संत असज्जन चरना • दुखप्रद उभय बीच कछु बरना
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं • मिलत एक दारुन दुख देहीं
उपजहिं एक संग जग माहीं • जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं
सुधा सुरा सम साधु असाधू • जनक एक जग जलधि अगाधू
भलअनभल निज-निज करतूती • लहत सुजस अपलोक बिभूती
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू • गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू
गुन अवगुन जानत सब कोई • जो जेहि भाव नीक तेहि सोई

दो० भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीच ।
सुधा सराहिय अमरता गरल सराहिय मीच ॥ ५॥

खल अघ अगुन साधु-गुन-गाहा • उभय अपार उदधि अवगाहा
तेहि तें कछु गुन-दोष बखाने • संग्रह-त्याग न बिनु पहिचाने
भलेउ पोच सब बिधि उपजाये • गनि गुन-दोष बेद बिलगाए
कहहिं बेद इतिहास पुराना • बिधि प्रपंच गुन-अवगुन-साना
दुख-सुख पाप-पुन्य दिनराती • साधु असाधु सुजाति-कुजाती
दानव-देव ऊँच अरु नीचू • अमिय सजीवन माहुर मीचू
माया ब्रह्म जीव जगदीसा • लच्छि-अलच्छि रंक-अवनीसा
कासी-मग सुरसरि-क्रमनासा • मरु मारव महिदेव गवासा
सरग नरक अनुराग बिरागा • निगम अगम गुन-दोष-बिभागा

दो० जड़-चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारिबिकार ॥ ६॥

अस बिबेक जब देइ बिधाता • तब तजि दोष गुनहिं मन राता
कालसुभाउ करम बरिआई • भलेउ प्रकृतिबस चुकइ भलाई
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं • दलि दुख दोष बिमल जस देहीं
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू • मिटइ न मलिन सुभाव अभंगू
लखि सुबेष जग बंचक जेऊ • बेषप्रताप पूजिअहिं तेऊ
उघरहिं अंत न होइ निबाहू • कालनेमि जिमि रावन राहू
किएहु कुबेष साधु सनमानू • जिमि जग जामवंत हनुमानू
हानि कुसंग सुसंगति लाहू • लोकहु बेद बिदित सब काहू
गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा • कीचहिं मिलइ नीच-जल संगा
साधु असाधु सदन सुक सारी • सुमिरहिं राम देहिं गनि-गारी
धूम कुसंगति कारिख होई • लिखिय पुरान मंजुमसि सोई
सोइ जल अनल अनिल संघाता • होइ जलद जग जीवन दाता

दो॰ ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग ।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग ॥८॥
सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह ।
ससिपोषक सोषकसमुझि जग जस अपजस दीन्ह ॥९॥
जड़ चेतन जग जीव जत सकल राम मय जानि ।
बंदउँ सबके पदकमल सदा जोरि जुगपानि ॥१०॥
देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब ।
बंदउँ किंनर रजनिचर कृपा करहु अब सर्ब ॥ ११ ॥

आकर चारि लाख चौरासी • जाति जीव जल-थल-नभ-बासी
सीय-राम-मय सब जग जानी • करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी
जानि कृपा कर किंकर मोहू • सब मिलि करहु छाँड़ि छलछोहू

निज बुधिबल भरोस मोहिं नाहीं ● तातें बिनय करउँ सब पाहीं
करन चहउँ रघुपति गुन-गाहा ● लघुमति मोरि चरित अवगाहा
सूझ न एकउ अंग उपाऊ ● मन मति रंक मनोरथ राऊ
मति अति नीच ऊँच रुचि आछी ● चहिय अमिय जग जुरइ न छाछी
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई ● सुनिहहिं बालबचन मन लाई
जौं बालक कह तोतरि बाता ● सुनहिं मुदितमन पितु अरु माता
हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी ● जे पर दूषन भूषन धारी
निज कबित्त केहि लाग न नीका ● सरस होउ अथवा अति फीका
जे परभनिति सुनत हरषाहीं ● ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं
जग बहु नर सरसरि-सम भाई ● जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई
सज्जन सुकृत सिंधु-सम कोई ● देखि पूर बिधु बाढ़इ जोई
दो० भाग छोट अभिलाष बड़ करउँ एक बिस्वास।
पैहहिं सुख सुनि सुजन सब खल करिहहिं उपहास ॥१२॥
खलपरिहास होइ हित मोरा ● काक कहहिं कलकंठ कठोरा
हंसहिं बक दादुर चातक ही ● हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही
कबित-रसिक न राम-पद नेहू ● तिनकहँ सुखद हासरस एहू
भाषाभनिति भोरि मति मोरी ● हँसिबे जोग हँसे नहिं खोरी
प्रभु-पद प्रीति न सामुझि नीकी ● तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी
हरिहर पद रति मति न कुतरकी ● तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुबरकी
राम-भगति भूषित जिय जानी ● सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी
कबि न होउँ नहिं बचन प्रबीनू ● सकल कला सब बिद्या हीनू
आखर अरथ अलंकृत नाना ● छंद प्रबंध अनेक बिधाना
भावभेद रसभेद अपारा ● कबित-दोष-गुन बिबिध प्रकारा

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई • तदपि कहें बिनु रहा न कोई
तहाँ बेद अस कारन राखा • भजन-प्रभाव भाँति बहु भाषा
एक अनीह अरूप अनामा • अज सच्चिदानंद परधामा
ब्यापक बिस्वरूप भगवाना • तेहि धरि देह चरित कृत नाना
सो केवल भगतन्ह हित लागी • परम कृपाल प्रनत-अनुरागी
जेहि जन पर ममता अति छोहू • जेहि करुना करि कीन्ह न कोहू
गई बहोरि गरीब नेवाजू • सरल सबल साहिब रघुराजू
बुध बरनहिं हरिजस अस जानी • करहिं पुनीत सुफल निज बानी
तेहि बल मैं रघुपति-गुन-गाथा • कहिहउँ नाइ राम पद माथा
मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई • तेहि मग चलत सुगम मोहि भाई

दो• अति अपार जे सरित बर जौं नृप सेतु कराहिं ।
चढ़ि पिपीलिकउ परम लघु बिनु श्रम पारहि जाहिं ॥१८॥

एहि प्रकार बल मनहि देखाई • करिहउँ रघुपति-कथा सोहाई
ब्यास आदि कबिपुंगव नाना • जिन्ह सादर हरिसुजस बखाना
चरन कमल बंदउँ तिन्ह केरे • पुरवहु सकल मनोरथ मेरे
कलि के कबिन्ह करउँ परनामा • जिन्ह बरने रघुपति-गुन ग्रामा
जे प्राकृत कबि परम सयाने • भाषा जिन्ह हरिचरित बखाने
भये जे अहहिं जे होइहहिं आगे • प्रनवउँ सबहि कपट सब त्यागे
होहु प्रसन्न देहु बरदानू • साधु-समाज भनिति सनमानू
जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं • सो स्रम बादि बालकबि करहीं
कीरति भनिति भूति भलि सोई • सुरसरि-सम सब कहँ हित होई
राम-सुकीरति भनिति भदेसा • असमंजस अस मोहि अँदेसा
तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे • सिअनि सोहावनि टाट पटोरे

दो० सरल कबित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान ।
सहज बैर बिसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान ॥१९॥
सो न होइ बिनु बिमल मति मोहिं मति बल अति थोर
करहु कृपा हरि जस कहउँ पुनि पुनि करउँ निहोर ॥२०॥
कबि कोबिद रघुबर चरित-मानस मंजु मराल ।
बाल बिनय सुनि सुरुचि लखि मो पर होहु कृपाल ॥२१॥

सो० बंदउँ मुनि-पद-कंजु रामायन जेहिं निरमयेउ ।
सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूषन-सहित ॥ ६ ॥
बंदउँ चारिउ बेद भव-बारिध-बोहित सरिस ।
जिन्हहिं न सपनेहु खेद बरनत रघुबर बिसद जस ॥७॥
बंदउँ बिधि-पद रेनु भवसागर जेहिं कीन्ह जहँ ।
संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल बिष बारुनी ॥ ८ ॥

दो० बिबुध बिप्र-बुध-ग्रह-चरन बंदि कहउँ करजोरि ।
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि ॥२२॥

पुनि बंदउँ सारद सुर-सरिता * जुगल पुनीत मनोहर चरिता
मज्जन पान पाप हर एका * कहत सुनत एक हर अबिबेका
गुरु पितु मातु महेस भवानी * प्रनवउँ दीनबंधु दिनदानी
सेवक स्वामि सखा सिय-पी के * हित निरुपधि सब बिधि तुलसी के
कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा * साबर-मंत्र-जाल जिन्ह सिरिजा
अनमिल आखर अरथ न जापू * प्रगट प्रभाउ महेस-प्रतापू
सो महेस मोहिं पर अनुकूला * करिहिं कथा मुद-मंगल-मूला
सुमिरि सिवा सिव पाय पसाऊ * बरनउँ रामचरित चितचाऊ
भनिति मोरि सिवकृपा बिभाती * ससिसमाज मिलि मनहुँ सुराती

जे एहि कथहि सनेह समेता * कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता
होइहहिं राम-चरन अनुरागी * कलि-मल-रहित सुमंगल-भागी

दो० सपनेहुँ साँचेहु मोहि पर जौ हरगौरि पसाउ ।
तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषाभनितिप्रभाउ ॥१५॥

बंदउँ अवधपुरी अति पावनि * सरजूसरि कलि-कलुष-नसावनि
प्रनवउँ पुर-नर-नारि बहोरी * ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी
सिय निंदक अघओघ नसाये * लोक बिसोक बनाइ बसाये
बंदउँ कौसिल्या दिसि प्राची * कीरति जासु सकल जग माँची
प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू * बिस्व सुखद खल-कमल-तुसारू
दसरथ राउ सहित सब रानी * सुकृत सुमंगल मूरति मानी
करउँ प्रनाम करम मन बानी * करहु कृपा सुत सेवक जानी
जिन्हहिं बिरचि बड़ भयउ बिधाता * महिमा-अवधि राम-पितु-माता

सो० बंदउँ अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि राम पद ।
बिछुरत दीनदयाल प्रिय तनु तृन इव परिहरेउ ॥१६॥

प्रनवउँ परिजन सहित बिदेहू * जाहि रामपद गूढ़ सनेहू
जोग भोग महँ राखेउ गोई * राम बिलोकत प्रगटेउ सोई
प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना * जासु नेम ब्रत जाइ न बरना
राम चरन पंकज मन जासू * लुबुध मधुप इव तजइ न पासू
बंदउँ लछिमन-पद-जल-जाता * सीतल सुभग भगत-सुखदाता
रघुपति कीरति बिमल पताका * दंड-समान भयउ जस जाका
सेष सहस्र सीस जग कारन * जो अवतरेउ भूमि-भय-टारन
सदा सो सानुकूल रह मोपर * कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर
रिपुसूदन पद-कमल नमामी * सूर सुसील भरत अनुगामी

महावीर बिनवउँ हनुमाना * राम जासु जस आपु बखाना

सो० प्रनवउँ पवनकुमार खल-बन पावक ज्ञानघन ।
जासु हृदय-आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥१७॥

कपिपति रीछ-निसाचर-राजा * अंगदादि जे कीससमाजा
बंदउँ सबके चरन सोहाए * अधमसरीर राम जिन्ह पाए
रघुपति-चरन-उपासक जेते * खग मृग सुर नर असुर समेते
बंदउँ पदसरोज सब केरे * जे बिनु काम राम के चेरे
सुकसनकादि भगत मुनि नारद * जे मुनिबर बिज्ञानबिसारद
प्रनवउँ सबहिं धरनि धरि सीसा * करहु कृपा जन जानि मुनीसा
जनकसुता जगजननि जानकी * अतिसय प्रिय करुनानिधान की
ताके जुग पद-कमल मनावउँ * जासु कृपा निरमल मति पावउँ
पुनि मन बचन कर्म रघुनायक * चरन-कमल बंदउँ सब लायक
राजिवनयन धरे धनुसायक * भगत-बिपति-भंजन सुखदायक

दो० गिरा अरथ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न ।
बंदउँ सीतारामपद जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न ॥१८॥

बंदउँ रामनाम रघुबर को * हेतु कृसानु भानु हिमकर को
बिधिहरिहरमय बेदप्रान सो * अगुन अनूपम गुननिधान सो
महामंत्र जोइ जपत महेसू * कासीं मुकुति हेतु उपदेसू
महिमा जासु जान गनराऊ * प्रथम पूजिअत नामप्रभाऊ
जान आदिकबि नामप्रतापू * भयउ सुद्ध करि उलटा जापू
सहस-नाम-सम सुनि सिवबानी * जपि जेइँ पिय संग भवानी
हरषे हेतु हेरि हर ही को * किय भूषन तियभूषन ती को
नामप्रभाउ जान सिव नीको * कालकूट फलु दीन्ह अमी को

दो० रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु।
तुलसी सुभग सनेह बन सिय-रघुबीर बिहारु ॥३१॥

राम चरित चिंतामनि चारू • संत-सुमति तिय सुभग सिंगारू
जगमंगल गुनग्राम राम के • दानि मुकुति धन धरम धाम के
सदगुरु ज्ञान बिराग जोग के • बिबुध बैद भव भीम रोग के
जननिजनक सिय-राम प्रेम के • बीज सकल ब्रत धरम-नेम के
समन पाप संताप सोक के • प्रिय पालक परलोक लोक के
सचिव सुभट भूपति बिचार के • कुंभज लोभ उदधि अपार के
काम कोह कलिमल-करिगन के • केहरि-सावक जन मन बन के
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के • कामद घन दारिद दवारि के
मंत्र महा-मनि बिषय ब्याल के • मेटत कठिन कुअंक भाल के
हरन मोहतम दिनकर-कर से • सेवक सालि पाल जलधर से
अभिमत दानि देवतरु-बर से • सेवत सुलभ सुखद हरिहर से
सुकबि-सरद-नभमन उडुगन से • रामभगत जन जीवन धन से
सकल सुकृतफल भूरि भोग से • जगहित निरुपधि साधु लोग से
सेवक-मन मानस मराल से • पावन गंग-तरंग-माल से

दो० कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाखंड।
दहन राम-गुन-ग्राम जिमि ईंधन अनल प्रचंड ॥३२॥
रामचरित राकेस-कर सरिस सुखद सब काहु।
सज्जन-कुमुद-चकोर चित हितबिसेषिबड़लाहु ॥३३॥

कीन्ह प्रस्न जेहि भाँति भवानी • जेहि बिधि संकर कहा बखानी
सो सब हेतु कहब मैं गाई • कथा प्रबंध बिचित्र बनाई
जेहि यह कथा सुनी नहिं होई • जनि आचरज करइ सुनि सोई

कथा अलौकिक सुनहिं जे ज्ञानी • नहिं आचरज करहिं अस जानी
रामकथा के मिति जग नाहीं • असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं
नाना भाँति राम अवतारा • रामायन सतकोटि अपारा
कल्पभेद हरिचरित सोहाए • भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए
करिय न संसय अस उर आनी • सुनिय कथा सादर रतिमानी

दो० राम अनंत अनंत गुन अमित कथा बिस्तार।
सुनि आचरज न मानिहहिं जिनके बिमल बिचार॥३३॥

एहि बिधि सब संसय करि दूरी • सिर धरि गुरु पद पंकज धूरी
पुनि सबही बिनवउँ कर जोरी • करत कथा जेहि लाग न खोरी
सादर सिवहि नाइ अब माथा • बरनउँ बिसद राम गुन गाथा
संवत सोरह सै इकतीसा • करउँ कथा हरिपद धरि सीसा
नौमी भौमवार मधुमासा • अवधपुरी यह चरित प्रकासा
जेहि दिन रामजनम श्रुति गावहिं • तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं
असुर नाग खग नर मुनि देवा • आइ करहिं रघुनायक सेवा
जनम-महोत्सव रचहिं सुजाना • करहिं राम कल कीरति गाना

दो० मज्जहिं सज्जन वृंद बहु पावन सरजू नीर।
जपहिं राम धरि ध्यान उर सुंदर स्याम सरीर॥३४॥

दरस परस मज्जन अरु पाना • हरइ पाप कह बेद पुराना
नदी पुनीत अमित महिमा अति • कहि न सकइ सारदा बिमलमति
राम धाम-दा पुरी सुहावनि • लोकसमस्त बिदित अतिपावनि
चारि खानि जगजीव अपारा • अवध तजे तन नहिं संसारा
सब बिधि पुरी मनोहर जानी • सकल सिद्धिप्रद मंगलखानी
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा • सुनत नसाहिं काम मद दंभा

राम-चरित-मानस एहि नामा • सुनत स्रवन पाइअ बिस्रामा
मनकरि बिषय अनलबन जरई • होइ सुखी जौं एहि सर परई
राम चरित-मानस मुनिभावन • बिरचेउ संभु सुहावन पावन
त्रिबिधदोष-दुख-दारिद दावन • कलिकुचालि कलिकलुष-नसावन
रचि महेस निज मानस राखा • पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा
तातें राम-चरित मानस बर • धरेउ नाम हियँहेरि हरषि हर
कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई • सादर सुनहु सुजन मन लाई
दो० जस मानस जेहि बिधि भयउ जग प्रचार जेहि हेतु।
अब सोइ कहउँ प्रसंग सब सुमिरि उमा-बृषकेतु॥३९॥
संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी • राम-चरित-मानस कबि तुलसी
करइ मनोहर मति अनुहारी • सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू • बेद पुरान उदधि घन साधू
बरषहिं राम सुजस बर बारी • मधुर मनोहर मंगलकारी
लीला सगुन जो कहहिं बखानी • सोइ स्वच्छता करइ मल हानी
प्रेम भगति जो बरनि न जाई • सोइ मधुरता सुसीतलताई
सो जल सुकृत सालि हित होई • रामभगत जन जीवन सोई
मेधा महिगत सो जल पावन • सकिलि स्रवनमग चलेउ सुहावन
भरेउ सुमानस सुथल थिराना • सुखद सीत रुचि चारु चिराना
दो० सुठि सुंदर संबाद बर बिरचे बुद्धि बिचारि।
तेइ एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि॥४०॥
सप्त प्रबंध सुभग सोपाना • ग्याननयन निरखत मनमाना
रघुपति-महिमा अगुन अबाधा • बरनब सोइ बर बारि अगाधा
रामसीय जस सलिल सुधासम • उपमा बीचि बिलास मनोरम

पुरइनि सघन चारु चौपाई • जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई
छंद सोरठा सुंदर दोहा • सोइ बहुरंग कमलकुल सोहा
अरथ अनूप सुभाव सुभासा • सोइ पराग मकरंद सुबासा
सुकृत पुंज मंजुल अलिमाला • ज्ञान बिराग बिचार मराला
धुनि अवरेब कबित गुन जाती • मीन मनोहर ते बहु भाँती
अरथ धरम कामादिक चारी • कहब ज्ञान बिज्ञान बिचारी
नव रस जप तप जोग बिरागा • ते सब जलचर चारु तड़ागा
सुकृती साधु-नाम-गुन-गाना • ते बिचित्र जल-बिहग-समाना
संत-सभा चहुँ दिसि अँवराई • श्रद्धा रितु बसंत सम गाई
भगति-निरूपन बिबिध बिधाना • छमा दया द्रुम लता बिताना
सम जम नियम फूल फल ज्ञाना • हरिपद रति रस बेद बखाना
औरउ कथा अनेक प्रसंगा • तेइ सुक पिक बहु बरन बिहंगा

दो॰ पुलक बाटिका बाग बन सुख सुबिहंग बिहारु।
माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु ॥३८॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे • तेइ एहि ताल चतुर रखवारे
सदा सुनहिं सादर नर नारी • तेइ सुर बर मानस-अधिकारी
अति खल जे बिषई बक कागा • एहि सर निकट न जाहिं अभागा
संबुक भेक सेवार समाना • इहाँ न बिषय-कथा रस नाना
तेहि कारन आवत हिय हारे • कामी काक बलाक बिचारे
आवत एहि सर अति कठिनाई • रामकृपा बिनु आइ न जाई
कठिन कुसंग कुपंथ कराला • तिन्ह के बचन बाघ हरि ब्याला
गृहकारज नाना जंजाला • तेइ अति दुर्गम सैल बिसाला
बन बहुबिषम मोह मद माना • नदी कुतर्क भयंकर नाना

दो० जे श्रद्धा संबल रहित नहिं संतन्ह कर साथ।
तिनकहँमानसअगमअतिजिनहिंनप्रियरघुनाथ ॥३८॥

जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई • जातहि नींद जुड़ाई होई
जड़ता जाड़ विषम उर लागा • गयहु न मज्जन पाव अभागा
करि न जाइ सर मज्जन पाना • फिरि आवइ समेत अभिमाना
जौं बहोरि कोउ पूछन आवा • सर निंदा करि ताहि बुझावा
सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही • राम सुकृपा विलोकहिं जेही
सोइ सादर सर मज्जन करई • महाघोर त्रयताप न जरई
ते नर यह सर तजहिं न काऊ • जिन्ह के रामचरन भल भाऊ
जो नहाइ चह एहि सर भाई • सो सतसंग करउ मन लाई
अस मानस मानस चष चाही • भइ कवि बुद्धि विमल अवगाही
भयेउ हृदय आनन्द उछाहू • उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू
चली सुभग कविता सरिता सी • राम विमल जस जलभरिता सी
सरजू नाम सुमंगलमूला • लोक वेद मत मंजुल कूला
नदी पुनीत सुमानस नंदिनि • कलिमल तृनतरुमूलनिकंदिनि

दो० श्रोता त्रिविध समाज पुर ग्राम नगर दुहुँ कूल।
संतसभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल ॥३९॥

रामभगति सुरसरितहि जाई • मिली सुकीरति सरजु सुहाई
सानुज राम-समर-जसु पावन • मिलेउ महानद सोन सुहावन
जुगबिच भगति देव धुनि धारा • सोहति सहित सुविरतिविचारा
त्रिविध ताप-त्रासक तिमुहानी • रामसरूप सिंधु समुहानी
मानस मूल मिली सुरसरिही • सुनत सुजनमन पावन करिही
विचविचकथाविचित्र विभागा • जनु सरितीर तीर वन बागा

उमा – महेस – बिबाह बराती * ते जलचर अगनित बहु भाँती
रघुबर – जनम अनंद – बधाई * भवँर तरंग मनोहरताई
दो॰ बालचरित चहुँ बंधु के बनज बिपुल बहुरंग ।
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारि बिहंग ॥४१॥
सीय स्वयम्बर कथा सुहाई * सरित सुहावनि सो छबि छाई
नदी नाव पटु प्रस्न अनेका * केवट कुसल उतर सबिबेका
सुनि अनुकथन परसपर होई * पथिक समाज सोह सरि सोई
घोर धार भृगुनाथ रिसानी * घाट सुबद्ध राम बर बानी
सानुज राम-बिबाह उछाहू * सो सुभ उमँग सुखद सब काहू
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं * ते सुकृती मन मुदित नहाहीं
रामतिलक हित मंगल साजा * परब जोग जनु जुरे समाजा
काई कुमति केकई केरी * परी जासु फल बिपति घनेरी
दो॰ समन अमित उतपात सब भरत चरित जपजाग ।
कलि अघ खल अवगुन कथन ते जल मल बक काग ॥४२॥
कीरति सरित छहूँ रितु रूरी * समय सुहावनि पावनि भूरी
हिम हिमसैल सुता सिवब्याहू * सिसिर सुखद प्रभु-जनम-उछाहू
बरनब राम बिबाह समाजू * सो मुद मंगलमय रितु राजू
ग्रीसम दुसह राम बन गवनू * पंथ कथा खर आतप पवनू
बरषा घोर निसाचर रारी * सुरकुल सालि सुमंगलकारी
राम राजसुख बिनय बड़ाई * बिसद सुखद सोइ सरद सोहाई
सती सिरोमनि सिय-गुन-गाथा * सोइ गुन अमल अनूपम पाथा
भरत सुभाउ सुसीतलताई * सदा एकरस बरनि न जाई
दो॰ अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परसपर हास ।

चाहहु सुनइ रामगुन गूढ़ा * कीन्हहु प्रस्न मनहुँ अति मूढ़ा
तात सुनहु सादर मन लाई * कहउँ राम कै कथा सुहाई
महामोह महिषेस बिसाला * रामकथा कालिका कराला
रामकथा ससि किरन समाना * संत चकोर करहिं जेहि पाना
एसेइ संसय कीन्ह भवानी * महादेव तब कहा बखानी
दो० कहउँ सो मति अनुहारि अब उमा - संभु - संबाद ।
भयउ समय जेहि हेतु जेहि सुनु मुनि मिटिहि बिषाद ॥४९॥
एक बार त्रेता जुग माहीं * संभु गए कुंभज रिषि पाहीं
संग सती जगजननि भवानी * पूजे रिषि अखिलेस्वर जानी
रामकथा मुनिबर्ज बखानी * सुनी महेस परम सुख मानी
रिषि पूछी हरिभगति सुहाई * कही संभु अधिकारी पाई
कहत सुनत रघुपति-गुन-गाथा * कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा
मुनि सन बिदा माँगि त्रिपुरारी * चले भवन सँग दच्छकुमारी
तेहि अवसर भंजन महिभारा * हरि रघुबंस लीन्ह अवतारा
पिता बचन तजि राज उदासी * दंडकबन बिचरत अबिनासी
दो० हृदय बिचारत जात हर केहि बिधि दरसनु होइ ।
गुप्तरूप अवतरेउ प्रभु गए जान सब कोइ ॥५०॥
सो० संकर उर अति छोभु सती न जानइ मरमु सोइ ।
तुलसी दरसन लोभु मन डरु लोचन लालची ॥५१॥
रावन मरन मनुज-कर जाँचा * प्रभु बिधिबचन कीन्ह चह साँचा
जौं नहिं जाउँ रहइ पछितावा * करत बिचारु न बनत बनावा
एहि बिधि भये सोच बस ईसा * तेही समय जाइ दससीसा
लीन्ह नीच मारीचहि संगा * भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा

करि छल मूढ़ हरी बैदेही * प्रभुप्रभाव तस बिदित न तेही
मृग बधि बंधुसहित हरि आए * आस्रमु देखि नयन जल छाए
बिरहबिकल नर इव रघुराई * खोजत बिपिन फिरत दोउ भाई
कबहूँ जोग बियोग न जाके * देखा प्रगट बिरह दुख ताके
दो० अति बिचित्र रघुपति-चरित जानहिं परम सुजान ।
जे मतिमंद बिमोहबस हृदय धरहिं कछु आन ॥५१॥
संभु समय तेहि रामहि देखा * उपजा हिय अति हरषु बिसेखा
भरि लोचन छबि सिंधु निहारी * कुसमय जानि न कीन्हि चिन्हारी
जय सच्चिदानंद जग पावन * अस कहि चलेउ मनोजनसावन
चले जात सिव सती समेता * पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता
सती सो दसा संभु कै देखी * उर उपजा संदेहु बिसेषी
संकर जगतबंद्य जगदीसा * सुर नर मुनि सब नावत सीसा
तिन्ह नृपसुतहि कीन्ह परनामा * कहि सच्चिदानंद परधामा
भये मगन छबि तासु बिलोकी * अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी
दो० ब्रह्म जो ब्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद ।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद॥५२॥
बिष्णु जो सुरहित नरतनुधारी * सोउ सर्बग्य जथा त्रिपुरारी
खोजइ सो कि अग्य इव नारी * ग्यानधाम श्रीपति असुरारी
संभु गिरा पुनि मृषा न होई * सिव सर्बग्य जान सब कोई
अस संसय मन भयेउ अपारा * होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा
जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी * हर अंतरजामी सब जानी
सुनहि सती तव नारि-सुभाऊ * संसय अस न धरिय उर काऊ
जासु कथा कुम्भज ऋषि गाई * भगति जासु मैं मुनिहि सुनाई

सोइ मम इष्ट-देव रघुबीरा * सेवत जाहि सदा मुनि धीरा

छं० मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं।
कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं ॥
सोइ राम ब्यापक ब्रह्म भुवन-निकाय-पति मायाधनी।
अवतरेउ अपने भगतहित निजतंत्र नित रघुकुल-मनी ॥

सो० लाग न उर उपदेस जदपि कहेउ सिव बार बहु।
बोले बिहँसि महेस हरि-माया-बल-जानि जिय १२

जौ तुम्हरे मन अति संदेहू * तौ किन जाइ परीछा लेहू
तब लगि बैठ अहउँ बट छाहीं * जब लगि तुम ऐहहु मोहि पाहीं
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी * करेहु सो जतन बिबेक बिचारी
चलीं सती सिव आयसु पाई * करइ बिचार करउँ का भाई
इहाँ संभु अस मन अनुमाना * दच्छसुता कहँ नहिं कल्याना
मोरेहु कहे न संसय जाहीं * बिधि बिपरीत भलाई नाहीं
होइहि सोइ जो राम रचि राखा * को करि तरक बढ़ावइ साखा
अस कहि लगे जपन हरिनामा * गइ सती जहँ प्रभु सुखधामा

दो० पुनि पुनि हृदय बिचार करि धरि सीता कर रूप।
आगे होइ चलि पंथ तेहि जेहि आवत नरभूप १३ ॥

लछिमन दीख उमाकृत बेषा * चकित भये भ्रम हृदय बिसेषा
कहि न सकत कछु अति गँभीरा * प्रभु प्रभाउ जानत मति धीरा
सती कपट जानेउ सुर स्वामी * सबदरसी सब अंतरजामी
सुमिरत जाहि मिटइ अज्ञाना * सोइ सर्बज्ञ राम भगवाना
सती कीन्ह चह तहउँ दुराऊ * देखहु नारि-सुभाउ प्रभाऊ
निज मायाबल हृदय बखानी * बोले बिहँसि राम मृदुबानी

जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू * पिता समेत लीन्ह निज नामू
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू * बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू
दो० रामबचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोच ।
सती सभीत महेस पहिं चलीं हृदयँ बड़ सोच॥५४॥
मैं संकर कर कहा न माना * निज अग्यान राम पर आना
जाइ उतरु अब देहउँ काहा * उर उपजा अति दारुन दाहा
जाना राम सती दुख पावा * निज प्रभाउ कछु प्रगटि जनावा
सती दीख कौतुकु मग जाता * आगे राम सहित श्री भ्राता
फिरि चितवा पाछे प्रभु देखा * सहित बंधु सिय सुंदर बेषा
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना * सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रबीना
देखे सिव बिधि बिष्नु अनेका * अमित प्रभाउ एक तें एका
बंदत चरन करत प्रभु-सेवा * बिबिध बेष देखे सब देवा
दो० सती बिधात्री इंदिरा देखीं अमित अनूप ।
जेहि जेहि बेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप॥५५॥
देखे जहँ तहँ रघुपति जेते * सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते
जीव चराचर जो संसारा * देखे सकल अनेक प्रकारा
पूजहिं प्रभुहिं देव बहु बेषा * रामरूप दूसर नहिं देखा
अवलोके रघुपति बहुतेरे * सीता सहित न बेष घनेरे
सोइ रघुबर सोइ लछिमन सीता * देखि सती अति भइ सभीता
हृदय कंप तन सुधि कछु नाहीं * नयन मूँदि बैठीं मग माहीं
बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी * कछु न दीख तहँ दच्छकुमारी
पुनि पुनि नाइ रामपद सीसा * चलीं तहाँ जहँ रहे गिरीसा
दो० गईं समीप महेस तब हँसि पूछी कुसलात ।

कीन्हि परीछा कवनबिधि कहहु सत्य सब बात ॥१६॥

मास पारायण २ दिन

सतीं समुझि रघुबीर प्रभाऊ • भयबस सिव सन कीन्ह दुराऊ
कछु न परीछा लीन्हि गोसाई • कीन्ह प्रनाम तुम्हारिहि नाई
जो तुम्ह कहा सो मृषा न होई • मोरे मन प्रतीति अति सोई
तब संकर देखेउ धरि ध्याना • सतीं जो कीन्ह चरित सब जाना
बहुरि राम मायहि सिरनावा • प्रेरि सतिहि जेहि झूठ कहावा
हरि इच्छा भावी बलवाना • हृदय बिचारत संभु सुजाना
सतीं कीन्ह सीता कर बेषा • सिव उर भयेउ बिषाद बिसेषा
जौं अब करउँ सती सन प्रीती • मिटइ भगति-पथ होइ अनीती
दो• परम पुनीत न जाइ तजि किये प्रेम बड़ पाप।
प्रगटि न कहत महेस कछु हृदय अधिक संताप ॥१७॥
तब संकर प्रभुपद सिरनावा • सुमिरत राम हृदय अस आवा
एहितन सतिहि भेंट मोहि नाहीं • सिव संकल्प कीन्ह मन माहीं
अस बिचारि संकर मति धीरा • चले भवन सुमिरत रघुबीरा
चलत गगन भइ गिरा सुहाई • जय महेस भलि भगति दृढ़ाई
असपन तुम्ह बिनु करइ को आना • राम भगत समरथ भगवाना
सुनि नभ गिरा सती उर सोचा • पूछा सिवहि समेत सकोचा
कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला • सत्यधाम प्रभु दीनदयाला
जदपि सतीं पूछा बहु भाँती • तदपि न कहेउ त्रिपुर-आराती
दो• सतीं हृदय अनुमान किय सब जानेउ सर्बग्य।
कीन्ह कपट मैं संभु सन नारि सहज जड़ अग्य ॥१८॥
सो• जल पय सरिस बिकाय देखहु प्रीति कि रीति भलि।

बिलग होत रस जाइ कपट-खगाई परत ही ॥ १६ ॥

हृदयसोच समुझत निज करनी * चिंता अमित जाइ नहिं बरनी
कृपासिंधु सिव परम अगाधा * प्रगट न कहेउ मोर अपराधा
संकर-रुख अवलोकि भवानी * प्रभु मोहि तजेउ हृदय अकुलानी
निज अघसमुझिनकछुकहिजाई * तपइ अवाँ इव उर अधिकाई
सतिहि ससोच जानि बृषकेतू * कही कथा सुंदर सुखहेतू
बरनत पंथ बिबिध इतिहासा * बिस्वनाथ पहुँचे कैलासा
तहँ पुनि संभु समुझि पन आपन * बइठे बट तर करि कमलासन
संकर सहज सरूप सँभारा * लागि समाधि अखंड अपारा

दो० सती बसहिं कैलास तब अधिक सोच मन माहिं ।
मरम न कोउ जान कछु जुग सम दिवस सिराहिं ६६ ॥

नित नव सोच सती उर भारा * कब जइहउँ दुख-सागर-पारा
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना * पुनि पति-बचन मृषा करि जाना
सो फल मोहि बिधाता दीन्हा * जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा
अबबिधिअस बूझिय नहि तोही * संकर-बिमुख जिआवसि मोही
कहि न जाइ कछु हृदय-गलानी * मन महँ रामहिं सुमिर सयानी
जौं प्रभु दीनदयालु कहावा * आरति-हरन बेद जस गावा
तौ मैं बिनय करउँ कर जोरी * छूटउ बेगि देह यह मोरी
जौं मोरे सिव चरन सनेहू * मन क्रम बचन सत्य ब्रत एहू

दो० तौ सबदरसी सुनिय प्रभु करउ सो बेगि उपाइ ।
होइ मरन जेहि बिनहिं स्रम दुसह बिपत्ति बिहाइ ७० ॥

एहि बिधि दुखित प्रजेसकुमारी * अकथनीय दारुन दुख भारी
बीते संबत सहस सतासी * तजी समाधि संभु अबिनासी

लीन्हि परीछा कवनबिधि कहहु सत्य सब बात ॥५५॥

मास-पारायण २ दिन

सती समुझि रघुबीर प्रभाऊ * भयबस सिव सन कीन्ह दुराऊ
कछु न परीछा लीन्हि गोसाइ * कीन्ह प्रनाम तुम्हारिहि नाइ
जो तुम्ह कहा सो मृषा न होई * मोरे मन प्रतीति अति सोई
तब संकर देखेउ धरि ध्याना * सती जो कीन्ह चरित सब जाना
बहुरि राम मायहि सिरनावा * प्रेरि सतिहि जेहि झूठ कहावा
हरि इच्छा भावी बलवाना * हृदय बिचारत संभु सुजाना
सती कीन्ह सीता कर बेषा * सिव उर भयेउ बिषाद बिसेषा
जौं अब करउँ सती सन प्रीती * मिटइ भगति-पथ होइ अनीती

दो० परम पुनीत न जाइ तजि किये प्रेम बड़ पाप।
प्रगटि न कहत महेस कछु हृदय अधिक संताप ॥५६॥

तब संकर प्रभुपद सिरनावा * सुमिरत राम हृदय अस आवा
एहि तन सतिहि भेंट मोहि नाहीं * सिव संकल्प कीन्ह मन माहीं
अस बिचारि संकर मति धीरा * चले भवन सुमिरत रघुबीरा
चलत गगन भइ गिरा सुहाई * जय महेस भलि भगति दृढ़ाई
असपन तुम्ह बिनु करइ को आना * राम भगत समरथ भगवाना
सुनि नभ गिरा सती उर सोचा * पूछा सिवहि समेत सकोचा
कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला * सत्यधाम प्रभु दीनदयाला
जदपि सती पूछा बहु भाँती * तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती

दो० सती हृदय अनुमान किय सब जानेउ सर्बग्य।
कीन्ह कपट मैं संभु सन नारि सहज जड़ अग्य ॥५८॥

सो० जल पय सरिस बिकाय देखहु प्रीति कि रीति भलि।

बिलग होत रस जाइ कपट खटाई परत ही ॥ ५२ ॥

हृदय सोच समुझत निज करनी * चिंता अमित जाइ नहिं बरनी
कृपासिंधु सिव परम अगाधा * प्रगट न कहेउ मोर अपराधा
संकर-रुख अवलोकि भवानी * प्रभु मोहिं तजेउ हृदय अकुलानी
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई * तपइ अवाँ इव उर अधिकाई
सतिहि ससोच जानि बृषकेतू * कहीं कथा सुंदर सुखहेतू
बरनत पंथ बिबिध इतिहासा * बिस्वनाथ पहुँचे कैलासा
तहँ पुनि संभु समुझि पन आपन * बैठे बट तर करि कमलासन
संकर सहज सरूप सँभारा * लागि समाधि अखंड अपारा

दो० सती बसहिं कैलास तब अधिक सोच मन माहिं ।
मरम न कोउ जान कछु जुग सम दिवस सिराहिं ॥ ५३ ॥

नित नव सोच सती उर भारा * कब जैहउँ दुख-सागर-पारा
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना * पुनि पति-बचन मृषा करि जाना
सो फल मोहि बिधाता दीन्हा * जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा
अब बिधि अस बूझिय नहिं तोही * संकर-बिमुख जिआवसि मोही
कहि न जाइ कछु हृदय-गलानी * मन महँ रामहिं सुमिर सयानी
जौं प्रभु दीनदयालु कहावा * आरति-हरन बेद जसु गावा
तौ मैं बिनय करउँ कर जोरी * छूटउ बेगि देह यह मोरी
जौं मोरे सिव चरन सनेहू * मन क्रम बचन सत्य ब्रत एहू

दो० तौ सबदरसी सुनिय प्रभु करउ सो बेगि उपाइ ।
होइ मरन जेहि बिनहिं स्रम दुसह बिपत्ति बिहाइ ॥ ५४ ॥

एहि बिधि दुखित प्रजेसकुमारी * अकथनीय दारुन दुख भारी
बीते संबत सहस सतासी * तजी समाधि संभु अबिनासी

दो० सती मरन सुनि संभुगन लगे करन मख खीस।
जग्य बिधंस बिलोकि भृगु रच्छा कीन्ह मुनीस॥६४॥

समाचार सब संकर पाए • बीरभद्र करि कोप पठाए
जग्य बिधंस जाइ तिन्ह कीन्हा • सकल सुरन्ह बिधिवत फल दीन्हा
भइ जगबिदित दच्छगति सोई • जसि कछु संभु-बिमुख कै होई
यह इतिहास सकल जग जाना • तातें मैं संछेप बखाना
सती मरत हरि सन बर माँगा • जनम जनम सिव-पद-अनुरागा
तेहि कारन हिमगिरि-गृह आई • जनमी पारबती तनु पाई
जब तें उमा सैल गृह आई • सकल सिद्धि संपति तहँ छाई
जहँ तहँ मुनिन्ह सुआस्रम कीन्हें • उचित बास हिमभूधर दीन्हें

दो० सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति।
प्रगटीं सुंदर सैल पर मनि आकर बहु भाँति॥६५॥

सरिता सब पुनीत जल बहहीं • खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं
सहज बयर सब जीवन त्यागा • गिरि पर सकल करहिं अनुरागा
सोह सैल गिरिजा गृह आये • जिमि जन राम भगति के पाये
नित नूतन मंगल गृह तासू • ब्रह्मादिक गावहिं जस जासू
नारद समाचार सब पाये • कौतुक ही गिरि-गेह सिधाये
सैलराज बड़ आदर कीन्हा • पद पखारि बर आसन दीन्हा
नारि सहित मुनि-पद सिर नावा • चरन-सलिल सब भवन सिंचावा
निज सौभाग्य बहुत बिधि बरना • सुता बोलि मेली मुनि चरना

दो० त्रिकालग्य सर्बग्य तुम्ह गति सर्बत्र तुम्हारि।
कहहु सुता के दोष-गुन मुनिबर हृदय बिचारि॥६६॥

कह मुनि बिहँसि गूढ़ मृदु बानी • सुता तुम्हारि सकल गुनखानी

सुंदर सहज सुसील सयानी * नाम उमा अंबिका भवानी
सब लच्छन-संपन्न कुमारी * होइहि संतत पियहि पियारी
सदा अचल एहि कर अहिवाता * एहि तें जस पैहहिं पितु-माता
होइहि पूज्य सकल जग माहीं * एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं
एहि कर नाम सुमिरि संसारा * तिय चढ़िहहिं पतिब्रत असिधारा
सैल सुलच्छनि सुता तुम्हारी * सुनहु जे अब अवगुन दुइ चारी
अगुन अमान मातुपितु-हीना * उदासीन सब संसय-छीना

दो० जोगी जटिल अकाम-मन नगन अमंगल-बेष ।
अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि परी हस्त असि रेख॥६८॥

सुनि मुनि-गिरा सत्य जियजानी * दुख दंपतिहि उमा हरषानी
नारदहूँ यह भेद न जाना * दसा एक समुझब बिलगाना
सकल सखी गिरिजा गिरि मैना * पुलक सरीर भरे जल नैना
होइ न मृषा देवरिषि भाखा * उमा सो बचन हृदय धरि राखा
उपजेउ सिव-पद-कमल सनेहू * मिलन कठिन मन भा संदेहू
जानि कुअवसरु प्रीति दुराई * सखी उछंग बैठि पुनि जाई
झूठ न होइ देवरिषि-बानी * सोचहिं दंपति सखीं सयानी
उर धरि धीर कहइ गिरिराऊ * कहहु नाथ का करिअ उपाऊ

दो० कह मुनीस हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार ।
देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार ॥६९॥

तदपि एक मैं कहउँ उपाई * होइ करै जौं दैउ सहाई
जस बरु मैं बरनेउँ तुम्ह पाहीं * मिलिहि उमहि तस संसय नाहीं
जे जे बर के दोष बखाने * ते सब सिव पहिं मैं अनुमाने
जौं बिबाहु संकर सन होई * दोषउ गुन सम कह सबु कोई

जौं अहि-सेज सयन हरि करहीं • बुध कछु तिन्ह कर दोष न धरहीं
भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं • तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाहीं
सुभअरुअसुभ सलिल सब बहई • सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई
समरथ कहुँ नहिं दोषु गोसाईं • रबि पावक सुरसरि की नाईं
दो• जौं अस हिसिषा करहिं नर जड़बिबेक अभिमान ।
परहिं कलप भरि नरक महुँ जीव कि ईससमान ॥६९॥
सुरसरि-जल-कृत-बारुनि जाना • कबहुँ न संत करहिं तेहि पाना
सुरसरि मिलें सो पावन जैसें • ईस अनीसहि अंतरु तैसें
संभु सहज समरथ भगवाना • एहि बिबाहँ सब बिधि कल्याना
दुराराध्य पै अहहिं महेसू • आसुतोष पुनि किएँ कलेसू
जौं तपु करै कुमारि तुम्हारी • भाविउ मेटि सकहिं त्रिपुरारी
जद्यपि बर अनेक जग माहीं • एहि कहँ सिव तजि दूसर नाहीं
बर दायक प्रनतारति भंजन • कृपासिंधु सेवक मन रंजन
इच्छित फल बिनु सिव अवराधें • लहिअ न कोटि जोग जप साधें
दो• अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहि दीन्हि असीस ।
होइहि यह कल्यान सब संसय तजहु गिरीस ॥७०॥
अस कहि ब्रह्मभवन मुनि गयऊ • आगिल चरित सुनहु जस भयऊ
पतिहि एकांत पाइ कह मैना • नाथ न मैं समुझे मुनि बैना
जौं घरु बरु कुलु होइ अनूपा • करिअ बिबाहु सुता अनुरूपा
न त कन्या बरु रहउ कुआरी • कंत उमा मम प्रान पिआरी
जौं न मिलिहि बरु गिरिजहि जोगू • गिरि जड़ सहज कहिहि सबु लोगू
सोइ बिचारि पति करेहु बिबाहू • जेहिं न बहोरि होइ उर दाहू
अस कहि परी चरन धरि सीसा • बोले सहित सनेह गिरीसा

बरु पावक प्रगटइ ससि माहीं * नारद बचन अन्यथा नाहीं

दो॰ प्रिया सोचु परिहरहु सब सुमिरहु श्रीभगवान।
पारबतिहि निरमयउ जेहि सोइ करिहि कल्यान ॥ ८२ ॥

अब जौं तुम्हहि सुता पर नेहू * तौ अस जाइ सिखावन देहू
करइ सो तप जेहि मिलहिं महेसू * आन उपाय न मिटिहि कलेसू
नारद बचन सगर्भ सहेतू * सुंदर सब गुन निधि बृषकेतू
अस बिचारि तुम्ह तजहु असंका * सबहि भाँति संकर अकलंका
सुनि पति-बचन हरषि मनमाहीं * गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं
उमहि बिलोकि नयन भरि बारी * सहित सनेह गोद बैठारी
बारहिं बार लेति उर लाई * गदगद कंठ न कछु कहि जाई
जगत मातु सर्बग्य भवानी * मातु सुखद बोली मृदु बानी

दो॰ सुनहि मातु मैं दीख अस सपन सुनावउँ तोहि।
सुन्दर गौर सुबिप्रबर अस उपदेसेउ मोहि ॥ ८३ ॥

करहि जाइ तप सैलकुमारी * नारद कहा सो सत्य बिचारी
मातु-पितहि पुनि यह मत भावा * तप सुखप्रद दुख-दोष-नसावा
तपबल रचइ प्रपंच बिधाता * तपबल बिष्णु सकल-जग त्राता
तप बल संभु करहिं संहारा * तप बल सेष धरइ महि-भारा
तप अधार सब सृष्टि भवानी * करहि जाइ तप अस जियजानी
सुनत बचन बिसमित महतारी * सपन सुनायउ गिरिहि हँकारी
मातु-पितहि बहु बिधि समुझाई * चली उमा तप हित हरषाई
प्रिय परिवार पिता अरु माता * भये बिकल मुख आव न बाता

दो॰ बेदसिरा-मुनि आइ तब सबहि कहा समुझाइ।
पारबती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ ॥ ८४ ॥

उर धरि उमा प्रानपति चरना • जाइ बिपिन लागीं तप करना
अति सुकुमार न तन तप जोगू • पति-पद सुमिरि तजेउ सब भोगू
नित नव चरन उपज अनुरागा • बिसरी देह तपहिं मन लागा
संबत सहस मूल फल खाये • साग खाइ सत बरस गँवाये
कछु दिन भोजन बारि बतासा • किये कठिन कछु दिन उपबासा
बेलपाति महि परइ सुखाई • तीनि सहस संबत सोइ खाई
पुनि परिहरे सुखाने परना • उमहिं नाम तब भयउ अपरना
देखि उमहिं तप खीन सरीरा • ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा
दो• भयउ मनोरथ सुफल तव सुनु गिरिराजकुमारि।
परिहरु दुसह कलेस सब अब मिलिहहिं त्रिपुरारि ॥८४॥
अस तप काहु न कीन्ह भवानी • भये अनेक धीर मुनि ग्यानी
अब उर धरहु ब्रह्म-बर-बानी • सत्य सदा संतत सुचि जानी
आवहिं पिता बुलावन जबही • हठ परिहरि घर आवहु तबही
मिलहिं तुम्हहिं जब सप्तरिषीसा • जानेहु तब प्रमान बागीसा
सुनत गिरा बिधि गगन बखानी • पुलक गात गिरिजा हरषानी
उमा चरित सुंदर मैं गावा • सुनहु संभु कर चरित सुहावा
जब तें सती जाइ तनु त्यागा • तब तें सिव मन भयउ बिरागा
जपहिं सदा रघुनायक-नामा • जहँ तहँ सुनहिं राम-गुन ग्रामा
दो• चिदानंद सुखधाम सिव बिगत-मोह-मद काम।
बिचरहिं महि धरि हृदय हरि सकल-लोक अभिराम ॥८५॥
कतहुँ मुनिन्ह उपदेसहिं ग्याना • कतहुँ रामगुन करहिं बखाना
जदपि अकाम तदपि भगवाना • भगत-बिरह-दुख-दुखित सुजाना
एहि बिधि गयउ काल बहु बीती • नित नइ होइ राम-पद-प्रीती

मेम प्रेम संकर कर देखा * अविचल हृदय भगति कै रेखा
प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला * रूप-सील-निधि तेज बिसाला
बहु प्रकार संकरहिं सराहा * तुम्ह बिनु अस ब्रत को निरबाहा
बहुबिधि राम सिवहिं समुझावा * पारबती कर जनम सुनावा
अति पुनीत गिरिजा कै करनी * बिस्तर-सहित कृपानिधि बरनी
दो० अब बिनती मम सुनहु सिव जौं मोपर निज नेहु।
जाइ बिबाहहु सैलजहि यह मोहि माँगे देहु ॥८७॥
कह सिव जदपि उचित असनाहीं * नाथबचन पुनि मेटि न जाहीं
सिरधरि आयसु करिय तुम्हारा * परम धरम यह नाथ हमारा
मातु पिता गुरु-प्रभु कै बानी * बिनहि बिचार करिय सुभ जानी
तुम्ह सब भाँति परम हितकारी * अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी
प्रभु तोषेउ सुनि संकर-बचना * भगति-बिबेक-धरम-जुत रचना
कह प्रभु हर तुम्हार पन रहेऊ * अब उर राखेहु जो हम कहेऊ
अंतरधान भये अस भाखी * संकर - सोइ मूरति उर राखी
तबहिं सप्तरिषि सिव पहिं आये * बोले प्रभु अति बचन सुहाये
दो० पारबती पहिं जाइ तुम्ह प्रेम-परीछा लेहु।
गिरिहि प्रेरि पठयहु भवन दूरि करेहु संदेहु ॥८८॥
तब रिषि तुरत गौरिपहँ गयऊ * देखि दसा मुनि बिसमय भयऊ
रिषिन गौरि देखी तहँ कैसी * मूरतिवंत तपस्या जैसी
बोले मुनि सुनु सैलकुमारी * करहु कवन कारन तप भारी
केहि अवराधहु का तुम्ह चहहू * हम सन सत्य मरम किन कहहू
सुनत रिषिन्ह के बचन भवानी * बोली गूढ़ मनोहर बानी
कहत मरम मन अति सकुचाई * हँसिहहु सुनि हमारि जड़ताई

मन हठ परा न सुनइ सिखावा • चहत बारि पर भीति उठावा
नारद कहा सत्य सोइ जाना • बिनु पखन हम चहहिं उड़ाना
देखहु मुनि अबिबेक हमारा • चाहिअ सदा सिवहि भरतारा

दो॰ सुनत बचन बिहँसे रिषय गिरि-संभव तव देह ।
नारद कर उपदेस सुनि कहहु बसेउ को गेह ॥७८॥

दच्छ-सुतन्ह उपदेसेन्हि जाई • तिन फिरि भवन न देखा आई
चित्रकेतु कर घर उन घाला • कनककसिपु कर पुनि असहाला
नारद-सिष जे सुनहिं नरनारी • अवसि होहिं तजि भवन भिखारी
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा • आपु सरिस सबही चह कीन्हा
तेहि के बचन मानि बिस्वासा • तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा
निर्गुन निलज कुबेष कपाली • अकुल अगेह दिगंबर ब्याली
कहहु कवन सुख अस बर पाए • भल भूलिहु ठग के बौराए
पंच कहे सिव सती बिबाही • पुनि अवडेरि मरायेन्हि ताही

दो॰ अब सुख सोवत सोच नहिं भीख माँगि भव खाहिं ।
सहज एकाकिन्ह के भवन कबहुँ कि नारि खटाहिं ॥७९॥

अजहुँ मानहु कहा हमारा • हम तुम्ह कहँ बर नीक बिचारा
अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला • गावहिं बेद जासु जस-लीला
दूषन-रहित सकल गुन रासी • श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी
अस बर तुम्हहि मिलाउब आनी • सुनत बिहँसि कह बचन भवानी
सत्य कहेहु गिरि-भव तन एहा • हठ न छूट छूटइ बरु देहा
कनकउ पुनि पषान तें होई • जारेहु सहज न परिहर सोई
नारद-बचन न मैं परिहरऊँ • बसउ भवन उजरउ नहिं डरऊँ
गुरु के बचन प्रतीति न जेही • सपनेहु सुगम न सुख सिधि तेही

दो० महादेव अवगुन-भवन बिष्णु सकल-गुन धाम।
जेहि कर मन रम जाहि सन तेहि तेही सन काम ॥८१॥

जौं तुम्ह मिलतेउ प्रथम मुनीसा * सुनतेउँ सिख तुम्हारि धरि सीसा
अब मैं जनम संभु हित हारा * को गुन-दूपन करइ बिचारा
जौं तुम्हरे हठ हृदय बिसेषी * रहि न जाइ बिन किए बरेषी
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं * बर-कन्या अनेक जग माहीं
जनम कोटि लगि रगरि हमारी * बरउँ संभु नतु रहउँ कुआँरी
तजउँ न नारद कर उपदेसू * आप कहहिं सतबार महेसू
मैं पा परउँ कहइ जगदंबा * तुम्ह गृह गवनहु भयउ बिलंबा
देखि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी * जय जय जगदंबिके भवानी

दो० तुम माया भगवान सिव सकल जगत पितु-मातु।
नाइ चरन सिर मुनि चले पुनि पुनि हरषित गातु ॥८२॥

जाइ मुनिन्ह हिमवंत पठाये * करि बिनती गिरिजहि गृह ल्याये
बहुरि सप्तरिषि सिव पहिं जाई * कथा उमा कै सकल सुनाई
भये मगन सिव सुनत सनेहा * हरषि सप्तरिषि गवने गेहा
मन थिर करि तब संभु सुजाना * लगे करन रघुनायक-ध्याना
तारक-असुर भयउ तेहि काला * भुज प्रताप बल तेज बिसाला
तेइ सब लोक लोकपति जीते * भये देव सुख-संपति रीते
अजर अमर सो जीति न जाई * हारे सुर करि बिबिध लराई
तब बिरंचि पहिं जाइ पुकारे * देखे बिधि सब देव दुखारे

दो० सब सन कहा बुझाइ बिधि दनुज निधन तब होइ।
संभु-सुक्र-संभूत सुत एहि जीतइ रन सोइ ॥८३॥

मोर कहा सुनि करहु उपाई * होइहि ईस्वर करिहि सहाई

सती जो तजी दच्छ-मख देहा • जनमी जाइ हिमाचल-गेहा
तेइ तप कीन्ह संभु पति लागी • सिव समाधि बैठे सब त्यागी
जदपि अहइ असमंजस भारी • तदपि बात एक सुनहु हमारी
पठवहु काम जाइ सिव पाहीं • करइ छोभ संकर मन माहीं
तब हम जाइ सिवहिं सिरनाई • करवाउब बिबाह बरिआई
यहि बिधि भलेहि देव-हित होई • मत अति नीक कहइ सब कोई
अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अति हेतू • प्रगटेउ बिषमबान झषकेतू

दो॰ सुरन्ह कही निज बिपति सब सुनि मन कीन्ह बिचार।
संभुबिरोध न कुसल मोहिं बिहँसि कहेउ अस मार ॥८४॥

तदपि करब मैं काज तुम्हारा • स्रुति कह परम धरम उपकारा
परहित लागि तजइ जो देही • संतत संत प्रसंसहिं तेही
अस कहि चलेउ सबहि सिरनाई • सुमन धनुष कर सहित सहाई
चलत मार अस हृदय बिचारा • सिव-बिरोध ध्रुव मरन हमारा
तब आपन प्रभाउ बिस्तारा • निज बस कीन्ह सकल संसारा
कोपेउ जबहिं बारिचर-केतू • छन महँ मिटे सकल स्रुति-सेतू
ब्रह्मचर्ज ब्रत संजम नाना • धीरज धरम ग्यान बिग्याना
सदाचार जप जोग बिरागा • सभय बिबेक-कटक सब भागा

छं॰ भागेउ बिबेक सहाय सहित सो सुभट संजुग महि मुरे।
सदग्रंथ पर्बत कंदरन्हि महँ जाइ तेहि अवसर दुरे ॥
होनिहार का करतार को रखवार जग खरभर परा।
दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहँ कोपि कर धनु सर धरा ॥

दो॰ जे सजीव जग चर अचर नारि पुरुष अस नाम।
ते निज निज मरजाद तजि भये सकल बस काम ॥८५॥

सब के हृदय मदन अभिलाखा * लता निहारि नवहिं तरु साखा
नदी उमगि अंबुधि कहँ धाईं * संगम करहिं तलाव तलाईं
जहँ असि दसा जड़न की बरनी * को कहि सकइ सचेतन करनी
पसु पच्छी नभ-जल-थल-चारी * भये काम-बस समय बिसारी
मदन-अंध ब्याकुल सब लोका * निसदिन नहिं अवलोकहिं कोका
देव दनुज नर किंनर ब्याला * प्रेत पिसाच भूत बेताला
इन्ह कै दसा न कहेउँ बखानी * सदा काम के चेरे जानी
सिद्ध बिरक्त महा मुनि जोगी * तेपि काम बस भये बियोगी
छं॰ भये कामबस जोगीस तापस पावँरन की को कहै ।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे ॥
अबला बिलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामयं ।
दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अयं ॥
सो॰ धरा न काहू धीर सब के मन मनसिज हरे ।
जेहि राखे रघुबीर ते उबरे तेहि काल महँ ॥८५॥
उभय घरी अस कौतुक भयऊ * जब लगि काम संभु पहिं गयऊ
सिवहिं बिलोकि ससंकेउ मारू * भयउ जथाथिति सब संसारू
भये तुरत जग जीव सुखारे * जिमि मद उतरि गए मतवारे
रुद्रहिं देखि मदन भय माना * दुराधर्ष दुर्गम भगवाना
फिरत लाज कछु करि नहिं जाई * मरन ठानि मन रचेसि उपाई
प्रगटेसि तुरत रुचिर रितुराजा * कुसुमित नव तरुराजि बिराजा
बन उपबन बापिका तड़ागा * परम सुभग सब दिसाबिभागा
जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा * देखि मुएहु मन मनसिज जागा
छं॰ जागइ मनोभव मुएहु मन बन सुभगता न परै कही ।

सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही॥
बिकसे सरन्ह बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा।
कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहिं अपछरा॥
दो० सकल कला करि कोटि बिधि हारेउ सेन-समेत।
चली न अचल समाधि सिव कोपेउ हृदय निकेत॥८६॥
देखि रसाल बिटप बर साखा • तेहि पर चढ़ेउ मदन मन माखा
सुमनचाप निज सर संधाने • अतिरिसि ताकि श्रवन लगि ताने
छाँड़ेउ बिषम बिसिख उर लागे • छुटि समाधि संभु तब जागे
भयउ ईस मन छोभ बिसेषी • नयन उघारि सकल दिसि देखी
सौरभपल्लव मदन बिलोका • भयउ कोप कंपेउ त्रयलोका
तब सिव तीसर नयन उघारा • चितवत काम भयउ जरि छारा
हाहाकार भयउ जग भारी • डरपे सुर भये असुर सुखारी
समुझि कामसुख सोचहिं भोगी • भये अकंटक साधक जोगी
छं० जोगी अकंटक भये पति-गति सुनत रति मुरछित भई।
रोदति बदति बहु भाँति करुना करति संकर पहिं गई॥
अति प्रेमकरि बिनती बिबिधबिधि जोरिकर सनमुख रही।
प्रभु आसुतोष कृपाल सिव अबला निरखि बोले सही॥
दो० अब तें रति तव नाथ कर होइहि नाम अनंग।
बिनुबपुब्यापिहि सबहिपुनि सुनुनिजमिलनप्रसंग॥८७॥
जब जदुबंस कृष्न अवतारा • होइहि हरन महा महिभारा
कृष्न-तनय होइहि पति तोरा • बचन अन्यथा होइ न मोरा
रति गवनी सुनि संकर बानी • कथा अपर अब कहउँ बखानी
देवन समाचार सब पाये • ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाये

सब सुर बिष्णु बिरंचि-समेता * गये जहाँ सिव कृपा-निकेता
पृथक पृथक तिन्ह कीन्ह प्रसंसा * भये प्रसन्न चन्द्र अवतंसा
बोले कृपासिंधु वृषकेतू * कहहु अमर आये केहि हेतू
कहबिधि तुम्ह प्रभु अंतरजामी * तदपि भगतिबस बिनवउँ स्वामी
दो० सकल सुरन्ह के हृदय अस संकर परम उछाहु ।
निज नयनन्हि देखा चहहिं नाथ तुम्हार बिबाहु ॥८८॥
यह उत्सव देखिय भरि लोचन * सोइ कछु करहु मदन-मद-मोचन
काम जारि रति कहँ बर दीन्हा * कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा
साँसति करि पुनि करहिं पसाऊ * नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ
पारबती तप कीन्ह अपारा * करहु तासु अब अंगीकारा
सुनि बिधि बिनय समुझि प्रभु बानी * ऐसइ होय कहा सुख मानी
तब देवन दुंदुभी बजाई * बरषि सुमन जय जय सुरसाई
अवसर जानि सप्तरिषि आये * तुरतहिं बिधि गिरि-भवन पठाये
प्रथम गये जहँ रही भवानी * बोले मधुर बचन छल-सानी
दो० कहा हमार न सुनेहु तब नारद के उपदेस ।
अब भा झूठ तुम्हार पन जारेउ काम महेस ॥८९॥

मास पारायण ३ दिन

सुनि बोली मुसुकाइ भवानी * उचित कहेहु मुनिबर बिज्ञानी
तुम्हरे जान काम अब जारा * अब लगि संभु रहे सबिकारा
हमरे जान सदासिव जोगी * अज अनवद्य अकाम अभोगी
जौं मैं सिव सेयउँ अस जानी * प्रीति समेत करम मन-बानी
तौ हमार पन सुनहु मुनीसा * करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा
तुम्ह जो कहेहु हर जारेउ मारा * सो अति बड़ अबिबेक तुम्हारा

छं० लघुलागिबिधिकी निपुनता अवलोकिपुर-सोभासही।
बन बाग कूप तड़ाग सरिता सुभग सब सक को कही॥
मंगल बिपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं।
बनिता पुरुष सुंदर चतुर छबि देखि मुनिमन मोहहीं॥
दो० जगदंबा जहँ अवतरी सो पुर बरनि कि जाइ।
रिधिसिधि संपति सकल सुख नित नूतन अधिकाइ १०१॥
नगर निकट बरात सुनि आई • पुर खरभर सोभा अधिकाई
करि बनाव सजि बाहन नाना • चले लेन सादर अगवाना
हिय हरषे सुर सेन निहारी • हरिहि देखि अति भये सुखारी
सिव-समाज जब देखन लागे • बिडरि चले बाहन सब भागे
धरि धीरज तहँ रहे सयाने • बालक सब लै जीव पराने
गये भवन पूछहिं पितु माता • कहहिं बचन भय कंपित-गाता
कहिय काह कहि जाइ न बाता • जम कर धारि किधौं बरिआता
बर बौराह बरद असवारा • ब्याल कपाल बिभूषन छारा
छं० तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा।
सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि बिकट मुख रजनीचरा॥
जोजियतरहिहि बरात देखत पुन्य बड़ तेहि कर सही।
देखिहिसो उमा-बिबाहघरघर बातअसिलरिकन्हकही॥
दो० समुझि महेस-समाज सब जननि जनक मुसुकाहिं।
बाल बुझाये बिबिध बिधि निडर होहु डर नाहिं १०२॥
लै अगवान बरातहि आये • दिये सबहि जनवास सुहाये
मैना सुभ आरती सँवारी • संग सुमंगल गावहिं नारी
कंचनथार सोह बर पानी • परिछन चली हरहि हरषानी

बिकटबेष रुद्रहिं जब देखा * अबलन्ह उर भय भयउ बिसेखा
भागि भवन पैठीं अति त्रासा * गये महेस जहाँ जनवासा
मैना हृदय भयउ दुख भारी * लीन्हीं बोलि गिरीसकुमारी
अधिक सनेह गोद बैठारी * स्यामसरोज नयन भरि बारी
जेहि बिधि तुम्हहिं रूप अस दीन्हा * तेहि जड़ बर बाउर कस कीन्हा
छं० कस कीन्ह बर बौराह बिधि जेहि तुम्हहिं सुंदरता दई।
जो फल चहिय सुरतरुहिं सो बरबस बबूरहिं लागई॥
तुम्ह सहित गिरि तें गिरउँ पावक जरउँ जलनिधि महँ परउँ।
घर जाउ अपजस होउ जग जीवत बिबाह न हौं करउँ॥
दो० भईं बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि।
करि बिलाप रोदति बदति सुता सनेह सँभारि॥१०२॥
नारद कर मैं कहा बिगारा * भवन मोर जिन्ह बसत उजारा
अस उपदेस उमहिं जिन्ह दीन्हा * बैरे बरहिं लागि तप कीन्हा
साँचेहु उन्हके मोह न माया * उदासीन धन धाम न जाया
पर-घर-घालक लाज न भीरा * बाँझ कि जान प्रसव की पीरा
जननिहिं बिकल बिलोकि भवानी * बोली जुत बिबेक मृदु बानी
अस बिचारि सोचहि मति माता * सो न टरइ जो रचइ बिधाता
करम लिखा जौ बाउर नाहू * तौ कत दोष लगाइय काहू
तुम्ह सन मिटहिं कि बिधि के अंका * मातु ब्यर्थ जनि लेहु कलंका
छं० जनि लेहु मातु कलंक करुना परिहरहु अवसर नहीं।
दुख सुख जो लिखा लिलार हमरे जाब जहँ पाउब तहीं॥
सुनि उमाबचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं।
बहु भाँति बिधिहि लगाइ दूषन नयन बारि बिमोचहीं॥

दो० तेहि अवसर नारद सहित अरु रिषिसप्त समेत।
समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत॥ १०६॥

तब नारद सबही समुझावा • पूरब कथा प्रसंग सुनावा
मैना सत्य सुनहु मम बानी • जगदंबा तव सुता भवानी
अजा अनादि सक्ति अबिनासिनि • सदा संभु अरधंग निवासिनि
जग-संभव-पालन-लय-कारिनि • निज इच्छा लीला-बपु धारिनि
जनमी प्रथम दच्छगृह जाई • नाम सती सुंदर तनु पाई
तहउँ सती संकरहि बिबाही • कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं
एक बार आवत सिव संगा • देखेउ रघुकुल कमल पतंगा
भयउ मोह सिव कहा न कीन्हा • भ्रम बस बेष सीय कर लीन्हा

छं० सियबेष सती जो कीन्ह तेहि अपराध संकर परिहरी।
हरबिरह जाइ बहोरि पितु के जग्य जोगानल जरी॥
अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुन तप किया।
अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्बदा संकर प्रिया॥

दो० सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा बिषाद।
छन महँ ब्यापेउ सकल पुर घर घर यह संबाद॥ १०७॥

तब मैना हिमवंत अनंदे • पुनि पुनि पारबती पद बंदे
नारि पुरुष सिसु जुबा सयाने • नगर लोग सब अति हरषाने
लगे होन पुर मंगल गाना • सजे सबहि हाटक घट नाना
भाँति अनेक भई जेवनारा • सूपसास्त्र जस कछु ब्यवहारा
सो जेवनार कि जाइ बखानी • बसहिं भवन जेहि मातु भवानी
सादर बोले सकल बराती • बिष्णु बिरंचि देव सब जाती
बिबिध पाँति बैठी जेवनारा • लगे परोसन निपुन सुआरा

नारिबृंद सुर जेवँत जानी * लगीं देन गारीं मृदु बानी

छं० गारीं मधुर सुर देहिं सुन्दरि ब्यंग बचन सुनावहीं।
भोजन करहिं सुर अति बिलंब बिनोद सुनि सचु पावहीं॥
जेवँत जो बढ़्यो अनंद सो मुख कोटिहू न परइ कह्यो।
अचवाइ दीन्हे पान गवने बास जहँ जाको रह्यो॥

दो० बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहँ लगन सुनाई आइ।
समय बिलोकि बिबाह कर पठये देव बोलाइ॥ १००॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे * सबहिं जथोचित आसन दीन्हे
बेदी बेद बिधान सँवारी * सुभग सुमंगल गावहिं नारी
सिंहासन अति दिब्य सुहावा * जाइ न बरनि बिरंचि बनावा
बैठे सिव बिप्रन्ह सिर नाई * हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई
बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाई * करि सिंगार सखीं लै आई
देखत रूप सकल सुर मोहे * बरनइ छबि अस जग कबि को है
जगदम्बिका जानि भव-भामा * सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनामा
सुंदरता मरजाद भवानी * जाइ न कोटिहु बदन बखानी

छं० कोटिहु बदन नहिं बनइ बरनत जग-जननि-सोभा महा।
सकुचहिं कहत स्रुति सेष सारद मंदमति तुलसी कहा॥
छबिखानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप सिव जहाँ।
अवलोकि सकइ न सकुच पति-पद-कमल मनु मधुकरु तहाँ॥

दो० मुनि अनुसासन गनपतिहि पूजेउ संभु भवानि।
कोउ सुनि संसय करइ जनि सुर अनादि जियँ जानि॥ १०१॥

जसि बिबाह कै बिधि स्रुति गाई * महा मुनिन्ह सो सब करवाई
गहि गिरीस कुस कन्या पानी * भवहि समरपीं जानि भवानी

लच्छन सब बिचारि उर राखे। कछुक बनाइ भूप सन भाषे॥
सुतासुलच्छन कहि नृप पाहीं। नारद चले सोच मन माहीं॥
करउँ जाइ सोइ जतन बिचारी। जेहि प्रकार मोहि बरइ कुमारी॥
जपतप कछु न होइ तेहि काला। हे बिधि मिलइ कवन बिधि बाला॥

दो०- एहि अवसर चाहिअ परम सोभा रूप बिसाल।
जो बिलोकि रीझइ कुअँरि तब मेलइ जयमाल॥१३१॥

हरि सन मागउँ सुंदरताई। होइहि जात गहरु अति भाई॥
मोरे हित हरि सम नहिं कोऊ। एहि अवसर सहाय सोइ होऊ॥
बहुबिधि बिनय कीन्हि तेहि काला। प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला॥
प्रभु बिलोकि मुनि नयन जुड़ाने। होइहि काजु हिएँ हरषाने॥
अति आरति कहि कथा सुनाई। करहु कृपा करि होहु सहाई॥
आपन रूप देहु प्रभु मोही। आन भाँति नहिं पावउँ ओही॥
जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा॥
निज माया बल देखि बिसाला। हियँ हँसि बोले दीनदयाला॥

दो०- जेहि बिधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार।
सोइ हम करब न आन कछु बचन न मृषा हमार॥१३२॥

कुपथ माग रुज ब्याकुल रोगी। बैद न देइ सुनहु मुनि जोगी॥
एहि बिधि हित तुम्हार मैं ठयऊ। कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ॥
माया-बिबस भये मुनि मूढ़ा। समुझी नहिं हरि-गिरा निगूढ़ा॥
गवने तुरत तहाँ रिषिराई। जहाँ स्वयंबर भूमि बनाई॥
निज निज आसन बैठे राजा। बहु बनाव करि सहित समाजा॥
मुनि मन हरष रूप अति मोरे। मोहि तजि आनहि बरिहि न भोरे॥
मुनि हित कारन कृपानिधाना। दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना॥

सो चरित्र लखि काहु न पावा • नारद जानि सबहिं सिर नावा
दो० रहे तहाँ दुइ रुद्र-गन ते जानहिं सब भेउ ।
विप्र-बेष देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ ॥१३१॥
जेहि समाज बैठे मुनि जाई • हृदय रूप अहमिति अधिकाई
तहँ बैठे महेस-गन दोऊ • बिप्र-बेष गति लखइ न कोऊ
करहिं कूटि नारदहि सुनाई • नीकि दीन्हि हरि सुंदरताई
रीझिहि राजकुँअरि छबि देखी • इन्हहि बरिहि हरि जानि बिसेषी
मुनिहि मोह मन हाथ पराये • हँसहिं संभु-गन अति सचुपाये
जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी • समुझि न परइ बुद्धि भ्रम-सानी
काहु न लखा सो चरित बिसेषा • सो सरूप नृप-कन्या देखा
मर्कट बदन भयंकर देही • देखत हृदय क्रोध भा तेही
दो० सखी संग लेइ कुअँरि तब चलि जनु राजमराल ।
देखत फिरइ महीप सब कर सरोज जयमाल ॥१३२॥
जेहि दिसि बैठे नारद फूली • सो दिसि तेहि न बिलोकी भूली
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं • देखि दसा हर-गन मुसकाहीं
धरि नृप-तनु तहँ गयेउ कृपाला • कुअँरि हरषि मेलेउ जयमाला
दुलहिनि लइ गे लच्छि-निवासा • नृप-समाज सब भयेउ निरासा
मुनि अति बिकल मोह मति नाठी • मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी
तब हर-गन बोले मुसुकाई • निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई
अस कहि दोउ भागे भय भारी • बदन दीख मुनि बारि निहारी
बेष बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा • तिन्हहिं सराप दीन्ह अति गाढ़ा
दो० होहु निसाचर जाइ तुम्ह कपटी पापी दोउ ।
हँसेहु हमहिं सो लेहु फल बहुरि हँसेहु मुनि कोउ ॥१३३॥

पुनि जल दीख रूप निज पावा • तदपि हृदय संतोष न आवा
फरकत अधर कोप मन माहीं • सपदि चले कमलापति पाहीं
देहउँ साप कि मरिहउँ जाई • जगत मोरि उपहास कराई
बीचहिं पंथ मिले दनुजारी • संग रमा सोइ राजकुमारी
बोले मधुर बचन सुर-साईं • मुनि कहँ चले बिकल की नाईं
सुनत बचन उपजा अति क्रोधा • माया-बस न रहा मन बोधा
परसंपदा सकहु नहिं देखी • तुम्हरे इरिषा कपट बिसेषी
मथत सिंधु रुद्रहि बौरायेहु • सुरन्ह प्रेरि बिषपान करायेहु

दो० असुर सुरा बिष संकरहि आपु रमा मनि चारु ।
स्वारथसाधक कुटिल तुम्ह सदा कपट ब्यवहारु ॥१३६॥

परम स्वतंत्र न सिर पर कोई • भावइ मनहि करहु तुम्ह सोई
भलेहि मंद मंदेहि भल करहू • बिसमय हरष न हिय कछु धरहू
डहकि डहकि परिचेहु सब काहू • अति असंक मन सदा उछाहू
करम सुभासुभ तुम्हहि न बाधा • अब लगि तुम्हहि न काहू साधा
भले भवन अब बायन दीन्हा • पावहुगे फल आपन कीन्हा
बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा • सोइ तनु धरहु साप मम एहा
कपि-आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी • करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी
मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी • नारि-बिरह तुम्ह होब दुखारी

दो० साप सीस धरि हरषि हिय प्रभु बहु बिनती कीन्हि ।
निज माया कै प्रबलता करषि कृपानिधि लीन्हि ॥१३७॥

जब हरि माया दूरि निवारी • नहिं तहँ रमा न राजकुमारी
तब मुनि अति सभीत हरि चरना • गहे पाहि प्रनतारतिहरना
मृषा होउ मम साप कृपाला • मम इच्छा कह दीनदयाला

मैं दुर्बचन कहे बहुतेरे * कह मुनि पाप मिटिहि किमि मेरे
जपहु जाइ संकर सत नामा * होइहि हृदय तुरत बिस्रामा
कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरे * असि परतीति तजहु जनि भोरे
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी * सो न पाव मुनि भगति हमारी
अस उर धरि महि बिचरहु जाई * अब न तुम्हहि माया निअराई
दो॰ बहुबिधि मुनिहि प्रबोध प्रभु तब भये अंतरधान ।
सत्यलोक नारद चले करत राम-गुन-गान ॥१२६॥
हर-गन मुनिहि जात पथ देखी * बिगत मोह मन हरष बिसेखी
अति सभीत नारद पहिं आये * गहि पद आरत बचन सुनाये
हर-गन हम न बिप्र मुनिराया * बड़ अपराध कीन्ह फल पाया
साप-अनुग्रह करहु कृपाला * बोले नारद दीनदयाला
निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ * बैभव बिपुल तेज बल होऊ
भुजबल बिस्वजितब तुम्ह जहिआ * धरिहहिं बिष्नु मनुज तनु तहिआ
समर मरन हरि हाथ तुम्हारा * होइहहु मुकुत न पुनि संसारा
चले जुगल मुनि-पद सिर नाई * भये निसाचर कालहि पाई
दो॰ एक कलप एहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार ।
सुर रंजन सज्जन-सुखद हरि भंजन भुबि-भार ॥१२७॥
एहि बिधि जनम करम हरिकेरे * सुन्दर सुखद बिचित्र घनेरे
कलप कलप प्रति प्रभु अवतरहीं * चारु चरित नाना बिधि करहीं
तब तब कथा मुनीसन्ह गाई * परम पुनीत प्रबंध बनाई
बिबिध प्रसंग अनूप बखाने * करहिं न सुनि आचरज सयाने
हरि अनंत हरि-कथा अनंता * कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता
रामचंद्र के चरित सुहाये * कलप कोटि लगि जाहिं न गाये

हृदय बहुत दुख लाग जनम गयउ हरिभगति बिनु २१॥

बरबस राज सुतहि तब दीन्हा • नारि-समेत गवन बन कीन्हा
तीरथबर नैमिष बिख्याता • अति पुनीत साधक सिधि दाता
बसहिं तहाँ मुनि-सिद्ध-समाजा • तहँ हियहरषि चलेउ मनु राजा
पंथ जात सोहहिं मतिधीरा • ज्ञान भगति जनु धरे सरीरा
पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा • हरषि नहाने निरमल नीरा
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी • धरमधुरंधर नृप रिषि जानी
जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाये • मुनिन्ह सकल सादर करवाये
कृससरीर मुनिपट परिधाना • सत-समाज नित सुनहिं पुराना

दो० द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग।
बासुदेव-पद-पंकरुह दंपति मन अति लाग ॥१४१॥

करहिं अहार साक फल कंदा • सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा
पुनि हरि हेतु करन तप लागे • बारि अधार मूल फल त्यागे
उर अभिलाष निरंतर होई • देखिय नयन परम प्रभु सोई
अगुन अखंड अनंत अनादी • जेहि चिंतहिं परमारथबादी
नेति नेति जेहि बेद निरूपा • चिदानंद निरुपाधि अनूपा
संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना • उपजहिं जासु अंस तें नाना
ऐसेउ प्रभु सेवक-बस अहई • भगत हेतु लीला तनु गहई
जौं यह बचन सत्य श्रुति भाषा • तौ हमार पूजिहि अभिलाषा

दो० एहि बिधि बीते बरष षट सहस बारि-आहार।
संबत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार ॥१४०॥

बरष सहस दस त्यागेउ सोऊ • ठाढ़े रहे एकपग दोऊ
बिधि-हरि-हर तप देखि अपारा • मनु-समीप आये बहु बारा

माँगहु बर बहु भाँति लोभाये * परम धीर नहिं चलहिं चलाये
अस्थिमात्र होइ रहे सरीरा * तदपि मनाग मनहिं नहिं पीरा
प्रभु सर्बग्य दास निज जानी * गति अनन्य तापस नृप-रानी
माँगु-माँगु बर भइ नभ बानी * परम गँभीर कृपामृत-सानी
मृतक-जिआवनि गिरा सुहाई * स्रवन-रंध्र होइ उर जब आई
हृष्ट पुष्ट तन भये सुहाये * मानहुँ अबहिं भवन तें आये

दो० स्रवन-सुधा-सम बचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात।
बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदय समात ॥१२३॥

सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू * बिधि हरि हर बंदित पद-रेनू
सेवत सुलभ सकल-सुख-दायक * प्रनतपाल सचराचर-नायक
जौं अनाथहित हम पर नेहू * तौ प्रसन्न होइ यह बर देहू
जो सरूप बस सिव मन माहीं * जेहि कारन मुनि जतन कराहीं
जो भुसुंडि मन मानस-हंसा * सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन * कृपा करहु प्रनतारति मोचन
दंपति बचन परम प्रिय लागे * मृदुल बिनीत प्रेम रस पागे
भगतबछल प्रभु कृपानिधाना * बिस्वबास प्रगटे भगवाना

दो० नीलसरोरुह नीलमनि नील नीरधर-स्याम।
लाजहिं तन-सोभा निरखि कोटि कोटिसत काम ॥१२४॥

सरद-मयंक बदन छबिसींवाँ * चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवाँ
अधर अरुन रद सुंदर नासा * बिधुकर-निकर-बिनिंदक हासा
नव-अंबुज-अंबक छबि नीकी * चितवनि ललित भावती जी की
भृकुटि मनोज चाप-छबि-हारी * तिलक ललाट पटल दुतिकारी
ल मकर मुकुट सिर भ्राजा * कुटिल केस जनु मधुप-समाजा

उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला * पदिक हार भूषन मनि-जाला
केहरि-कंधर चारु जनेऊ * बाहुबिभूषन सुंदर तेऊ
करि-कर-सरि सुभग भुजदंडा * कटि निषंग कर सर कोदंडा
दो० तड़ित बिनिंदक पीतपट उदर रेख बर तीनि।
नाभि मनोहर लेति जनु जमुन-भँवर-छबि छीनि॥१४७॥
पद-राजीव बरनि नहिं जाहीं * मुनि-मन-मधुप बसहिं जिन्ह माहीं
बामभाग सोभति अनुकूला * आदिसक्ति छबिनिधि जग-मूला
जासु अंस उपजहिं गुन खानी * अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी
भृकुटिबिलास जासु जग होई * राम बाम दिसि सीता सोई
छबि-समुद्र हरिरूप बिलोकी * एकटक रहे नयन पट रोकी
चितवहिं सादर रूप अनूपा * तृप्ति न मानहिं मनु-सतरूपा
हरषबिबस तन-दसा भुलानी * परे दंड इव गहि पद पानी
सिर परसे प्रभु निज कर-कंजा * तुरत उठाये करुना पुंजा
दो० बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहिं जानि।
माँगहु बर जोइ भाव मन महादानि अनुमानि॥१४८॥
सुनि प्रभु बचन जोरि जुग पानी * धरि धीरज बोले मृदु बानी
नाथ देखि पदकमल तुम्हारे * अब पूरे सब काम हमारे
एक लालसा बड़ि उर माहीं * सुगम अगम कहि जात सो नाहीं
तुम्हहिं देत अति सुगम गोसाँईं * अगम लाग मोहिं निज कृपनाईं
जथा दरिद्र बिबुधतरु पाई * बहु संपति माँगत सकुचाई
तासु प्रभाउ जान नहिं सोई * तथा हृदय मम संसय होई
सो तुम्ह जानहु अंतरजामी * पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी
सकुच बिहाइ माँगु नृप मोही * मोरे नहिं अदेय कछु तोही

दो० दानिसिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतभाउ।
चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभुसन कवन दुराउ ॥१४९॥

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले • एवमस्तु करुनानिधि बोले
आपु सरिस खोजौं कहँ जाई • नृप तव तनय होब मैं आई
सतरूपहि बिलोकि करजोरें • देबि माँगु बर जो रुचि तोरें
जो बर नाथ चतुर नृप माँगा • सोइ कृपाल मोहि अतिप्रिय लागा
प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई • जदपि भगत-हित तुम्हहिं सोहाई
तुम्ह ब्रह्मादि-जनक जग स्वामी • ब्रह्म सकल उर-अंतरजामी
अस समुझत मन संसय होई • कहा जो प्रभु प्रमान पुनि सोई
जे निज भगत नाथ तव अहहीं • जो सुख पावहिं जो गति लहहीं

दो० सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निजचरनसनेहु।
सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रभु हमहिं कृपाकरि देहु ॥१५०॥

सुनि मृदु गूढ़ रुचिर बर-रचना • कृपासिंधु बोले मृदु बचना
जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं • मैं सो दीन्ह सब संसय नाहीं
मातु बिबेक अलौकिक तोरें • कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरें
बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी • अवर एक बिनती प्रभु मोरी
सुत-बिषयक तव पद रति होऊ • मोहि बड़ मूढ़ कहइ किन कोऊ
मनिबिनु फनि जिमि जल बिनु मीना • मम जीवन तिमि तुम्हहिं अधीना
अस बर माँगि चरन गहि रहेऊ • एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ
अब तुम्ह मम अनुसासन मानी • बसहु जाइ सुरपति-रजधानी

सो० तहँ करि भोग बिलास तात गये कछु काल पुनि।
होइहहु अवधभुआल तब मैं होब तुम्हार सुत ॥१५१॥

इच्छामय नरबेष सँवारे • होइहउँ प्रगट, निकेत तुम्हारे

अंसन्ह सहित देह धरि ताता * करिहउँ चरित भगत-सुख दाता
जेहि सुनि सादर नर बड़भागी * भव तरिहहिं ममता-मद-त्यागी
आदिसक्ति जेहि जग उपजाया * सोउ अवतरिहि मोरि यह माया
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा * सत्य सत्य पन सत्य हमारा
पुनिपुनि अस कहि कृपानिधाना * अंतरधान भये भगवाना
दंपति उर धरि भगति कृपाला * तेहि आश्रम निवसे कछु काला
समय पाइ तनु तजि अनयासा * जाइ कीन्ह अमरावति-बासा
दो॰ यह इतिहास पुनीत अति उमहि कहा वृषकेतु ।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि राम जनमकर हेतु ॥१२०॥

मास पारायण ५ दिन

सुनि मुनि कथा पुनीत पुरानी * जो गिरिजा प्रति संभु बखानी
बिस्वबिदित एक कैकय देसू * सत्यकेतु तहँ बसइ नरेसू
धरम धुरंधर नीति-निधाना * तेज-प्रताप सील बलवाना
तेहि के भये जुगल सुत बीरा * सब-गुन-धाम महा-रन धीरा
राजधनी जो जेठ सुत आही * नाम प्रतापभानु अस ताही
अपर सुतहि अरिमर्दन नामा * भुज बल-अतुल अचल संग्रामा
भाइहि भाइहि परम समीती * सकल-दोष-छल-बरजित प्रीती
जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा * हरि हित आपु गवन बन कीन्हा
दो॰ जब प्रतापरबि भयेउ नृप फिरी दोहाइ देस ।
प्रजा पाल अति बेद-बिधि कतहुँ नहीं अघ-लेस ॥१२८॥
नृप-हित-कारक सचिव सयाना * नाम धरम रुचि सुक्र-समाना
सचिव सयान बंधु-बल-बीरा * आपु प्रताप-पुंज रनधीरा
सेन संग चतुरंग अपारा * अमित सुभट सब समर-जुझारा

अवसि अगाध जीति मग सेनू * छत्र धरनि भरत सिर रेनू
दो॰ अस कहि गहे नरेस पद स्वामी होहु कृपाल।
मोहि लागि दुख सहिय प्रभु सज्जन दीनदयाल ॥१७२॥
मानि नृपहि आपन आधीना * बोला तापस कपट-प्रबीना
सत्य कहउँ भूपति सुनु तोही * जग नाहिं न दुर्लभ कछु मोही
अवसि काज मैं करिहउँ तोरा * मन तन बचन भगत तैं मोरा
जोग जुगुति तप मंत्र प्रभाऊ * फलइ तबहिं जब करिय दुराऊ
जौं नरेस मैं करउँ रसोई * तुम्ह परसहु मोहि जान न कोई
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई * सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई
पुनि तिन्ह के गृह जेवँई जोऊ * तव बस होइ भूप सुनु सोऊ
जाइ उपाय रचहु नृप एहू * संबत भरि संकलप करेहू
दो॰ नित नूतन द्विज सहस सत बरेहु सहित परिवार।
मैं तुम्हरे संकलप लगि दिनहिं करब जेवनार ॥१७३॥
एहि बिधि भूप कष्ट अति थोरे * होइहहिं सकल बिप्र बस तोरे
करिहहिं बिप्र होम मख सेवा * तेहि प्रसंग सहजहिं बस देवा
और एक तोहि कहउँ लखाऊ * मैं एहि बेष न आउब काऊ
तुम्हरे उपरोहित कहँ राया * हरि आनब मैं करि निजमाया
तपबल तेहि करि आपु समाना * रखिहउँ इहाँ बरष परमाना
मैं धरि तासु बेष सुनु राजा * सब बिधि तोर सँवारब काजा
गइ निसि बहुत सयन अब कीजे * मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे
मैं तपबल तोहि तुरग समेता * पहुँचइहउँ सोवतहि निकेता
दो॰ मैं आउब सोइ बेष धरि पहिचानेहु तब मोहि।
जब एकांत बुलाइ सब कथा सुनावउँ तोहि ॥१७४॥

सयन कीन्ह नृप आयसु मानी * आसन जाइ बैठ छल ग्यानी
श्रमित भूप निद्रा अति आई * सो किमि सोव सोच अधिकाई
कालकेतु निसिचर तहँ आवा * जेइ सूकर होइ नृपहि भुलावा
परममित्र तापस नृप केरा * जानइ सो अति कपट घनेरा
तेहिके सत सुत अरु दस भाई * खल अति अजय देव-दुख-दाई
प्रथमहिं भूप समर सब मारे * बिप्र संत सुर देखि दुखारे
तेहि खल पाछिल बयर सँभारा * तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा
जेहि रिपुछय सोइ रचेन्हि उपाऊ * भावी बस न जान कछु राऊ

दो० रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिय न ताहु ।
अजहुँ देत दुख रबि ससिहि सिर अवसेषित राहु ॥१७२॥

तापस नृप निज सखहि निहारी * हरषि मिलेउ उठि भयउ सुखारी
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई * जातुधान बोला सुख पाई
अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेसा * जौं तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा
परिहरि सोच रहहु तुम्ह सोई * बिन औषध बियाधि बिधि खोई
कुलसमेत रिपु मूल बहाई * चौथे दिवस मिलब मैं आई
तापस नृपहि बहुत परितोषी * चला महाकपटी अतिरोषी
भानुप्रतापहि बाजिसमेता * पहुँचायेसि छन माँझ निकेता
नृपहि नारि पहिं सयन कराई * हय गृह बाँधेसि बाजि बनाई

दो० राजा के उपरोहितहि हरि लै गयेउ बहोरि ।
लै राखेसि गिरि-खोह महँ मायाकरि मतिभोरि ॥१७३॥

आपु बिरचि उपरोहित रूपा * परेउ जाइ तेहि सेज अनूपा
जागेउ नृप अनभये बिहाना * देखि भवन अति अचरज माना
मुनि-महिमा मन महँ अनुमानी * उठेउ गवहिं जेहि जान न रानी

कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही • पुर नरनारि न जानेउ केही
गये जाम जुग भूपति आवा • घर घर उत्सव बाज बधावा
उपरोहितहि देख जब राजा • चकित बिलोक सुमिरि सोइ काजा
जुगसम नृपहि गये दिन तीनी • कपटी मुनिपद रहिमति लीनी
समय जानि उपरोहित आवा • नृपहि मते सब कहि समुझावा
दो॰ नृप हरषेउ पहिचानि गुरु भ्रमबस रहा न चेत।
बरे तुरत सतसहस बर बिप्र कुटुंब-समेत ॥ १७७ ॥
उपरोहित जेवनार बनाई • छरस चारि बिधि जसि स्रुतिगाई
मायामय तेहि कीन्ह रसोई • बिंजन बहु गनि सकइ न कोई
बिबिध मृगन्हकर आमिषराँधा • तेहि महँ बिप्रमांसु खल साँधा
भोजन कहँ सब बिप्र बोलाये • पग पखारि सादर बैठाये
परुसन जबहिं लाग महिपाला • भइ अकासबानी तेहि काला
बिप्रबृंद उठि उठि गृह जाहू • है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू
भयउ रसोईं भूसुर मासू • सब द्विज उठे मानि बिस्वासू
भूप बिकल मति मोह भुलानी • भावी-बस न आव मुख बानी
दो॰ बोले बिप्र सकोप तब नहिं कछु कीन्ह बिचार।
जाइ निसाचर होहु नृप मूढ़ सहित परिवार ॥ १७८ ॥
छत्रबंधु तैं बिप्र बोलाई • घालै लिये सहित समुदाई
ईश्वर राखा धरम हमारा • जइहसि तैं समेत परिवारा
संबत मध्य नास तव होऊ • जलदाता न रहिहि कुल कोऊ
नृपसुनि साप बिकल अतित्रासा • भइ बहोरि बर गिरा अकासा
बिप्रहु साप बिचारि न दीन्हा • नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा
चकित बिप्रसब सुनि नभ-बानी • भूप गयउ जहँ भोजन-खानी

तहँ न असन नहिं बिप्र सुआरा * फिरेउ राउ मन सोच अपारा
सब प्रसंग महिसुरन्ह सुनाई * त्रसित परेउ अवनी अकुलाई
दो० भूपति भावी मिटइ नहिं जदपि न दूषन तोर।
किये अन्यथा होइ नहिं बिप्र-स्राप अति घोर १७९॥
अस कहि सब महिदेव सिधाये * समाचार पुरलोगन्ह पाये
सोचहिं दूषन दैवहि देहीं * बिरचत हंस काग किय जेहीं
उपरोहितहि भवन पहुँचाई * असुर तापसहि खबरि जनाई
तेहि खल जहँ तहँ पत्र पठाये * सजि सजि सेन भूप सब धाये
घेरेन्हि नगर निसान बजाई * बिबिध भाँति नित होइ लराई
जूझे सकल सुभट करि करनी * बंधु-समेत परेउ नृप धरनी
सत्यकेतु कुल कोउ नहिं बाँचा * बिप्र-स्राप किमि होइ असाँचा
रिपु जिति सब नृप नगर बसाई * निज पुर गवने जय जस पाई
दो० भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम।
धूरि मेरुसम जनक जम ताहि ब्यालसम दाम ॥१८०॥
काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा * भयउ निसाचर सहित समाजा
दस सिर ताहि बीस भुजदंडा * रावन नाम बीर बरिबंडा
भूप अनुज अरिमर्दन नामा * भयउ सो कुंभकरन बल-धामा
सचिव जो रहा धरम रुचि जासू * भयउ बिमात्र-बंधु लघु तासू
नाम बिभीषन जेहि जग जाना * बिष्णु-भगत बिज्ञान-निधाना
रहे जे सुत सेवक नृप केरे * भये निसाचर घोर घनेरे
कामरूप खल जिनिस अनेका * कुटिल भयंकर बिगत-बिबेका
कृपा-रहित हिंसक सब पापी * बरनि न जाइ बिस्व-परितापी
दो० उपजे जदपि पुलस्त्य-कुल पावन अमल अनूप।

निज संताप सुनाएसि रोई । काहू तें कछु काज न होई ॥
छं० सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि सर्बा गे बिरंचि के लोका ।
सँग गो-तनु धारी भूमि बिचारी परम बिकल भय सोका ॥
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मोरेउ कछु न बसाई ।
जा करि तैं दासी सो अबिनासी हमरेउ तोर सहाई ॥
सो० धरनि धरहि मन धीर कह बिरंचि हरिपद सुमिरु ।
जानत जन की पीर प्रभु भंजिहि दारुन बिपति ॥१८५॥
बैठे सुर सब करहिं बिचारा । कहँ पाइअ प्रभु करिअ पुकारा ॥
पुर बैकुंठ जान कह कोई । कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई ॥
जाके हृदय भगति जसि प्रीती । प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहि रीती ॥
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊँ । अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ ॥
हरि ब्यापक सर्बत्र समाना । प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना ॥
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं । कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ॥
अग-जग मय सब रहित बिरागी । प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी ॥
मोर बचन सबके मन माना । साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ॥
दो० सुनि बिरंचि मन हरष तन पुलकि नयन बह नीर ।
अस्तुति करत जोरि कर सावधान मतिधीर ॥१८६॥
छं० जय जय सुरनायक जन-सुखदायक प्रनतपाल भगवंता ।
गो द्विज-हितकारी जय असुरारी सिंधु-सुता-प्रिय-कंता ॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह
जय जय अबिनासी सब-घट-बासी ब्यापक पर
अबिगत गोतीतं चरित

जेहि लागि बिरागी अतिअनुरागी बिगत-मोह मुनिबृन्दा।
निसिबासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानंदा॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिधि बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा॥
जो भव भय-भंजन मुनि-मन-रंजन गंजन बिपति बरूथा।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल-सुर-जूथा॥
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पियारे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना॥
भव-बारिधि-मंदर सबबिधिसुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकलसुर परम भयातुर नमत नाथ पदकंजा॥
दो॰ जानि सभय सुर-भूमि सुनि बचन समेत सनेह।
गगन-गिरा गंभीर भइ हरनि सोक-संदेह॥ १८१॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा * तुम्हहिं लागि धरिहउँ नर-बेसा
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा * लेहउँ दिनकर बंस उदारा
कस्यप अदिति महा तप कीन्हा * तिन्ह कहँ मैं पूरब बर दीन्हा
ते दसरथ कौसल्या रूपा * कोसलपुरी प्रगट नर भूपा
तिन्ह के गृह अवतरिहउँ जाई * रघुकुल-तिलक सो चारिउ भाई
नारद-बचन सत्य सब करिहउँ * परम सक्ति समेत अवतरिहउँ
हरिहउँ सकल भूमि गरुआई * निर्भय होहु देव समुदाई
गगन ब्रह्मबानी सुनि काना * तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना
तब ब्रह्मा धरनिहि समुझावा * अभय भई भरोस जिय आवा
दो॰ निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहइ सिखाइ।
बानर-तनु धरिधरिमहि हरिपद सेवहु जाइ॥ १८२॥

करुना-सुख-सागर सब-गुन आगर जेहि गावहिं स्रुतिसंता।
सो मम हित लागी जन-अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥
ब्रह्मांडनिकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीरमति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजिय सिसुलीला अतिप्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

दो० बिप्र धेनु-सुर-संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज-इच्छा-निर्मित-तनु माया-गुन गो-पार॥१८७॥

सुनि सिसुरुदन परम प्रिय बानी * संभ्रम चलि आइँ सब रानी
हरषित जहँ तहँ धाइँ दासी * आनँद-मगन सकल पुरबासी
दसरथ पुत्र-जन्म सुनि काना * मानहुँ ब्रह्मानंद समाना
परम प्रेम मन पुलक सरीरा * चाहत उठन करत मति धीरा
जाकर नाम सुनत सुभ होई * मोरे गृह आवा प्रभु सोई
परमानंद - पूरि मन राजा * कहा बोलाइ बजावहु बाजा
गुरु बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा * आये द्विजन्ह सहित नृप-द्वारा
अनुपम बालक देखेन्हि जाई * रूपरासि गुन कहि न सिराई

दो० तब नंदीमुख स्राद्ध करि जातकरम सब कीन्ह।
हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह॥१८८॥

ध्वज पताक तोरन पुर छावा * कहि न जाइ जेहि भाँति बनावा

सुमन वृष्टि आकास तें होई * ब्रह्मानंद-मगन सब लोई
बृंद बृंद मिलि चली लोगाई * सहज सिंगार किये उठि धाई
कनककलस मंगल भरि थारा * गावत पैठहिं भूप-दुआरा
करि आरती निछावरि करहीं * बार बार सिसु-चरनन्हि परहीं
मागध सूत बंदिगन गायक * पावन गुन गावहिं रघुनायक
सरबस दान दीन्ह सब काहू * जेहि पावा राखा नहिं ताहू
मृग-मद चंदन-कुंकुम-कीचा * मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा

दो॰ गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुखमाकंद ।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि-नर-बृंद ॥१९४॥

कैकयसुता सुमित्रा दोऊ * सुंदर सुत जनमत भइँ ओऊ
वह सुख संपति समय समाजा * कहि न सकइ सारद अहिराजा
अवधपुरी सोहइ एहि भाँती * प्रभुहि मिलन आई जनु राती
देखि भानु जनु मन सकुचानी * तदपि बनी संध्या अनुमानी
अगरधूप बहु जनु अँधियारी * उड़इ अबीर मनहुँ अरुनारी
मंदिर मनि समूह जनु तारा * नृप-गृह-कलस सो इंदु उदारा
भवन बेद-धुनि अति मृदु बानी * जनु खग-मुखर समय जनु सानी
कौतुक देखि पतंग भुलाना * एक मास तेइ जात न जाना

दो॰ मास दिवस कर दिवस भा मरम न जानइ कोइ ।
रथसमेत रबि थाकेउ निसा कवन बिधि होइ ॥२००॥

यह रहस्य काहू नहिं जाना * दिनमनि चले करत गुन-गाना
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा * चले भवन बरनत निज भागा
अवरउ एक कहउँ निज चोरी * सुनु गिरिजा अतिदृढ़ मति तोरी
काकभुसुंडि संग हम दोऊ * मनुज-रूप जानइ नहिं कोऊ

परमानंद प्रेम सुख फूले * बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले
यह सुभ चरित जान पै सोई * कृपा राम कै जापर होई
तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा * दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा
गज रथ तुरग हेम गो हीरा * दीन्हे नृप नाना बिधि चीरा
दो० मन संतोषे सबन्हि के जहँ तहँ देहिं असीस।
सकल तनय चिरजीवहु तुलसिदास के ईस ॥२००॥
कछुक दिवस बीते एहि भाँती * जात न जानिय दिन अरु राती
नामकरन कर अवसर जानी * भूप बोलि पठये मुनि ज्ञानी
करि पूजा भूपति अस भाषा * धरिय नाम जो मुनि गुनि राखा
इन्हके नाम अनेक अनूपा * मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा
जो आनंदसिंधु सुखरासी * सीकर तें त्रैलोक सुपासी
सो सुखधाम राम अस नामा * अखिल लोक दायक बिस्रामा
बिस्व भरन पोषन कर जोई * ताकर नाम भरत अस होई
जाके सुमिरन तें रिपु नासा * नाम सत्रुहन बेद प्रकासा
दो० लच्छन धाम रामप्रिय सकल-जगत-आधार।
गुरु बसिष्ठ तेहि राखा लछिमन नाम उदार ॥२०१॥
धरे नाम गुरु हृदय बिचारी * बेद-तत्त्व नृप तव सुत चारी
मुनि धन जन सरबस सिव प्राना * बाल-केलि-रस तेहि सुख माना
बारेहि तें निज हित पति जानी * लछिमन राम-चरन-रति मानी
भरत सत्रुहन दूनउ भाई * प्रभु-सेवक जसि प्रीति बड़ाई
स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी * निरखहिं छबि जननी तृन तोरी
चारिउ सील रूप गुन धामा * तदपि अधिक सुख-सागर रामा
हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासा * सूचत किरन मनोहर हासा

कबहुँ उछंग कबहुँ वर पलना * मातु दुलारइ कहि प्रिय ललना
दो० व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत-बिनोद ।
सो अज प्रेम-भगति-बस कौसल्या के गोद ॥२०१॥
काम-कोटि-छबि स्याम सरीरा * नील कंज बारिद गंभीरा
अरुन-चरन-पंकज नख जोती * कमलदलन्हि बैठे जनु मोती
रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहइ * नूपुर धुनि सुनि मुनिमन मोहइ
कटि किंकनी उदर त्रय रेखा * नाभि गँभीर जान जिन्ह देखा
भुज बिसाल भूषन जुत भूरी * हिय हरि-नख अति सोभा रूरी
उर मनि-हार पदिक की सोभा * बिप्रचरन देखत मन लोभा
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई * आनन अमित मदन छबि छाई
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे * नासा तिलक को बरनइ पारे
सुंदर स्रवन सुचारु कपोला * अति प्रिय मधुर तोतरे बोला
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे * बहु प्रकार रचि मातु सँवारे
पीत झँगुलिया तनु पहिराई * जानु-पानि-बिचरनि मोहि भाई
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा * सो जानइ सपनेहुँ जिन देखा
दो० सुखसंदोह मोह पर ग्यान - गिरा - गोतीत ।
दम्पति परम प्रेम बस कर सिसुचरित पुनीत ॥२०२॥
एहि बिधि राम जगत-पितु माता * कोसल-पुर बासिन्ह सुखदाता
जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी * तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी
रघुपति-बिमुख जतन कर कोरी * कवन सकइ भव-बंधन छोरी
जीव चराचर बस कै राखे * सो माया प्रभु सों भय भाखे
भृकुटि बिलास नचावइ ताही * अस प्रभु छाड़ि भजिअ कहु काही
मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई * भजत कृपा करिहहिं रघुराई

एहिबिधि सिसु बिनोदप्रभुकीन्हा * सकल नगर बासिन्ह सुख दीन्हा
लेइ उछंग कबहुँक हलरावइ * कबहुँ पालने घालि झुलावइ
दो० प्रेममगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।
सुत-सनेह-बस माता बालचरित कर गान ॥ २०२ ॥
एक बार जननी अन्हवाये * करि सिंगार पलना पौढ़ाये
निज कुल इष्टदेव भगवाना * पूजा हेतु कीन्ह असनाना
करि पूजा नैबेद्य चढ़ावा * आपु गई जहँ पाक बनावा
बहुरि मातु तहँवाँ चलि आई * भोजन करत देख सुत जाई
गइ जननी सिसु पहिं भयभीता * देखा बाल तहाँ पुनि सूता
बहुरि आइ देखा सुत सोई * हृदय कम्प मन धीर न होई
इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा * मतिभ्रम मोर कि आन बिसेखा
देखि राम जननी अकुलानी * प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी
दो० देखरावा मातहिं निज अद्भुत रूप अखंड।
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड ॥ २०३ ॥
अगनित रबि ससि सिवचतुरानन * बहु गिरिसरितसिंधु महिकानन
काल करम गुन ग्यान सुभाऊ * सोउ देखा जो सुना न काऊ
देखी माया सब बिधि गाढ़ी * अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी
देखा जीव नचावइ जाही * देखी भगति जो छोरइ ताही
तन पुलकित मुख बचन न आवा * नयन मूँदि चरननि सिर नावा
बिसमयवंति देखि महतारी * भये बहुरि सिसु रूप खरारी
अस्तुति करि न जाइ भय माना * जगत-पिता मैं सुत करि जाना
हरि जननी बहु बिधि समुझाई * यह जनि कतहुँ कहसि सुनु माई
दो० बार बार कौसल्या बिनय करइ कर जोरि।

अब जनि कबहुँ ब्यापइ प्रभु मुहि माया तोरि ॥२०१॥

बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा * अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा
कछुक काल बीते सब भाई * बड़े भये परिजन-सुख दाई
चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई * बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई
परम मनोहर चरित अपारा * करत फिरत चारिउ सुकुमारा
मन-क्रम बचन अगोचर जोई * दसरथ अजिर बिचर प्रभु सोई
भोजन करत बोल जब राजा * नहिं आवत तजि बाल-समाजा
कौसल्या जब बोलन जाई * ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलहिं पराई
निगम नेति सिव अंत न पावा * ताहि धरइ जननी हठि धावा
धूसर धूरि भरे तनु आये * भूपति बिहँसि गोद बैठाये

दो० भोजन करत चपल चित इत उत अवसर पाइ ।
भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ ॥२०२॥

बाल चरित अति सरल सुहाये * सारद सेष संभु श्रुति गाये
जिन्ह कर मन इन्हसन नहिं राता * ते जन बंचित किये बिधाता
भये कुमार जबहिं सब भ्राता * दीन्ह जनेऊ गुरु-पितु-माता
गुरु गृह गये पढ़न रघुराई * अलप काल बिद्या सब आई
जाकी सहज स्वास श्रुति चारी * सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी
बिद्या बिनय निपुन गुन-सीला * खेलहिं खेल सकल नृपलीला
करतल बान धनुष अति सोहा * देखत रूप चराचर मोहा
जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिं सब भाई * थकित होहिं सब लोग लुगाई

दो० कोसलपुर-बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल ।
प्रानहुँ ते प्रिय लागत सब कहँ राम कृपाल ॥२०३॥

बंधु सखा सँग लेहिं बोलाई * बन मृगया नित खेलहिं जाई

पावन मृग मारहिं जिय जानी * दिन प्रति नृपहि देखावहिं आनी
जे मृग राम-बान के मारे * ते तनु तजि सुरलोक सिधारे
अनुज-सखा सँग भोजन करहीं * मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं
जेहि बिधि सुखी होहिं पुरलोगा * करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा
बेद पुरान सुनहिं मन लाई * आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा * मातु पिता गुरु नावहिं माथा
आयसु माँगि करहिं पुरकाजा * देखि चरित हरषइ मन राजा
दो० ब्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप ।
भगत-हेतु नाना बिधि करत चरित्र अनूप ॥ २१० ॥
यह सब चरित कहा मैं गाई * आगिलि कथा सुनहु मन लाई
बिस्वामित्र महामुनि ज्ञानी * बसहिं बिपिन सुभ आश्रम जानी
जहँ जप जज्ञ जोग मुनि करहीं * अति मारीच सुबाहुहि डरहीं
देखत जज्ञ निसाचर धावहिं * करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं
गाधि-तनय मन चिंता ब्यापी * हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी
तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा * प्रभु अवतरेउ हरन महिभारा
एहु मिस देखउँ पद जाई * करि बिनती आनउँ दोउ भाई
ज्ञान-बिराग सकल-गुन-अयना * सो प्रभु मैं देखब भरि नयना
दो० बहु बिधि करत मनोरथ जात लागि नहिं बार ।
करि मज्जन सरजू जल गये भूप-दरबार ॥ २११ ॥
मुनि आगमन सुना जब राजा * मिलन गयेउ लै बिप्र-समाजा
करि दंडवत मुनिहि सनमानी * निज आसन बैठारेन्हि आनी
चरन पखारि कीन्हि अति पूजा * मो सम आजु धन्य नहिं दूजा
बिबिध भाँति भोजन करवावा * मुनिबर हृदय हरष अति पावा

पुनि चरननि मेले सुत चारी * राम देखि मुनि देह बिसारी
भये मगन देखत मुख सोभा * जनु चकोर पूरन ससि लोभा
तब मन हरषि बचन कह राऊ * मुनि अस कृपा न कीन्हेहु काऊ
केहि कारन आगमन तुम्हारा * कहहु सो करत न लावउँ बारा
असुर समूह सतावहिं मोही * मैं जाचन आयेउँ नृप तोही
अनुज समेत देहु रघुनाथा * निसिचर-बध मैं होब सनाथा
दो० देहु भूप मन हरषित तजहु मोह अज्ञान।
धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं इन्ह कहँ अति कल्यान ॥२११॥
सुनि राजा अति अप्रिय बानी * हृदय कंप मुख-दुति कुम्हिलानी
चौथेपन पायउँ सुत चारी * बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी
माँगहु भूमि धेनु धन कोसा * सरबस देउँ आजु सहरोसा
देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं * सोउ मुनि देउँ निमिष एक माहीं
सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाईं * राम देत नहिं बनइ गोसाईं
कहँ निसिचर अति घोर कठोरा * कहँ सुंदर सुत परम किसोरा
सुनि नृप गिरा प्रेम-रस-सानी * हृदय हरष माना मुनि ज्ञानी
तब बसिष्ठ बहुबिधि समुझावा * नृप-संदेह नास कहँ पावा
अति आदर दोउ तनय बोलाये * हृदय लाइ बहुभाँति सिखाये
मेरे प्राननाथ सुत दोऊ * तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ
दो० सौंपे भूप रिषिहि सुत बहुबिधि देइ असीस।
जननी भवन गये प्रभु चले नाइ पद सीस ॥ २१२ ॥
सो० पुरुष सिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि-भय-हरन।
कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्व-कारन-करन ॥ १८ ॥
अरुन नयन उर बाहु बिसाला * नील जलज तनु स्याम-तमाला

कटि पट पीत कसें बर भाथा • रुचिर चाप सायक दुहुँ हाथा
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई • बिस्वामित्र महानिधि पाई
प्रभु ब्रह्मन्यदेव मैं जाना • मोहि निति पिता तजेउ भगवाना
चले जात मुनि दीन्हि देखाई • सुनि ताड़का क्रोध करि धाई
एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा • दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा
तब रिषि निज नाथहि जियँ चीन्ही • बिद्यानिधि कहुँ बिद्या दीन्ही
जातें लाग न छुधा पिपासा • अतुलित बल तनु तेज प्रकासा

दो॰ • आयुध सर्ब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि।
कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति-हित जानि २११॥

प्रात कहा मुनि सन रघुराई • निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई
होम करन लागे मुनि झारी • आपु रहे मख कीं रखवारी
सुनि मारीच निसाचर क्रोही • लै सहाय धावा मुनिद्रोही
बिनु फर बान राम तेहि मारा • सत जोजन गा सागर पारा
पावक सर सुबाहु पुनि मारा • अनुज निसाचर कटकु सँघारा
मारि असुर द्विज निर्भयकारी • अस्तुति करहिं देव मुनि झारी
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया • रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया
भगति हेतु बहु कथा पुराना • कहे बिप्र जद्यपि प्रभु जाना
तब मुनि सादर कहा बुझाई • चरित एक प्रभु देखिअ जाई
धनुषजग्य सुनि रघुकुल-नाथा • हरषि चले मुनिबर के साथा
आश्रम एक दीख मग माहीं • खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी • सकल कथा मुनि कही बिसेषी

दो॰ • गौतम-नारि श्राप-बस उपल-देह धरि धीर।
चरन-कमल-रज चाहति कृपा करहु रघुबीर ॥२१२॥

छं॰ परसत पद पावन सोक-नसावन प्रगट भई तपपुंज सही।
देखत रघुनायक जन-सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही॥
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही।
अतिसय बड़ भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही॥
धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा रघुपति-कृपा भगति पाई।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई॥
मैं नारि अपावन प्रभु जगपावन रावनरिपु जन-सुख-दाई।
राजीव बिलोचन भव-भयमोचन पाहि पाहि सरनहिं आई॥
मुनि साप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना।
देखेउँ भरि लोचन हरि भवमोचन इहइ लाभ संकर जाना॥
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न माँगउ बर आना।
पद-कमल-परागा-रस अनुरागा मम मनमधुप करइ पाना॥
जेहि पद सुरसरिता परमपुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी।
सोइ पदपंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी॥
एहि भाँति सिधारी गौतमनारी बार बार हरि-चरन परी।
जो अति मन भावा सो बर पावा गइ पतिलोक अनंद-भरी॥

दो॰ अस प्रभु दीनबंधु हरि कारनरहित दयाल।
तुलसिदास सठ ताहि भजु छाड़ि कपट-जंजाल॥२११॥

मास-पारायण ७ दिन

चले राम लछिमन मुनि संगा * गये जहाँ जगपावनि गंगा
गाधि-सूनु सब कथा सुनाई * जेहि प्रकार सुरसरि महि आई
तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाये * बिबिध दान महिदेवन्ह पाये
हरषि चले मुनिबृंद-सहाया * बेगि बिदेह नगर नियराया

पुर-रम्यता राम जब देखी • हरषे अनुज समेत बिसेषी
बापीं कूप-सरित सर नाना • सलिलसुधा-सम मनि-सोपाना
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा • कूजत कल बहुबरन बिहंगा
बरन बरन बिकसे बनजाता • त्रिबिध समीर सदा सुखदाता

दो० • सुमन-बाटिका बाग-बन बिपुल बिहंग-निवास।
फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँ पास ॥ २१० ॥

बनइ न बरनत नगर निकाई • जहाँ जाइ मन तहँइँ लोभाई
चारु बजारु बिचित्र अँबारी • मनिमय बिधि जनु स्वकर सँवारी
धनिक बनिक बर धनद-समाना • बैठे सकल बस्तु लेइ नाना
चौहट सुंदर गलीं सुहाई • संतत रहहिं सुगंध सिंचाई
मंगलमय मंदिर सब केरे • चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे
पुर नर-नारि सुभग सुचि संता • धरमसील ग्यानी गुनवंता
अति अनूप जहँ जनक-निवासू • बिथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू
होत चकित चित कोट बिलोकी • सकल भुवन-सोभा जनु रोकी

दो० • धवल धाम मनि-पुरट-पट सुघटित नाना भाँति।
सिय-निवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति ॥ २११ ॥

सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा • भूप भीर नट मागध भाटा
बनी बिसाल बाजि-गज-साला • हय-गय-रथ-संकुल सब काला
सूर सचिव सेनप बहुतेरे • नृप-गृह-सरिस सदन सब केरे
पुर बाहिर सर-सरित-समीपा • उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा
देखि अनूप एक अँवराई • सब सुपास सब भाँति सुहाई
कौसिक कहेउ मोर मन माना • इहाँ रहिअ रघुबीर सुजाना
भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेता • उतरे तहँ मुनिबृंद-समेता

बिस्वामित्र महामुनि आये * समाचार मिथिलापति पाये

दो॰ संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुरबर गुरु ग्याति ।
चले मिलन मुनिनायकहि मुदित राउ एहि भाँति ॥२१४॥

कीन्ह प्रनाम चरन धरि माथा * दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा
बिप्रबृंद सब सादर बंदे * जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे
कुसल-प्रस्न कहि बारहिं बारा * बिस्वामित्र नृपहि बैठारा
तेहि अवसर आये दोउ भाई * गये रहे देखन फुलवाई
स्याम गौर मृदु बयस किसोरा * लोचनसुखद बिस्व-चित चोरा
उठे सकल जब रघुपति आये * बिस्वामित्र निकट बैठाये
भये सब सुखी देखि दोउ भ्राता * बारि बिलोचन पुलकित गाता
मूरति मधुर मनोहर देखी * भयउ बिदेह बिदेह बिसेखी

दो॰ प्रेममगन मन जानि नृप करि बिबेक धरि धीर ।
बोलेउ मुनिपद नाइ सिर गदगद गिरा गँभीर ॥२१५॥

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक * मुनिकुलतिलक किनृपकुलपालक
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा * उभय बेष धरि की सोइ आवा
सहज बिराग-रूप मन मोरा * थकित होत जिमि चंद चकोरा
ताते प्रभु पूछउँ सति भाऊ * कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ
इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा * बरबस ब्रह्म-सुखहि मन त्यागा
कह मुनि बिहँसि कहेहु नृप नीका * बचन तुम्हार न होइ अलीका
ये प्रिय सबहि जहाँ लगि प्रानी * मन मुसुकाहिं राम सुनि बानी
रघुकुल-मनि दसरथ के जाये * मम हित लागि नरेस पठाये

दो॰ राम लखन दोउ बंधु बर रूप-सील-बल-धाम ।
मख राखेउ सब साखि जग जिते असुर संग्राम ॥२१६॥

मुनि तव चरन देखि कह राऊ • कहि न सकउँ निज पुन्य प्रभाऊ
सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता • आनँदहू के आनँददाता
इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि • कहि न जाइ मन भाव सुहावनि
सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू • ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू
पुनिपुनि प्रभुहि चितव नरनाहू • पुलक गात उर अधिक उछाहू
मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसू • चलेउ लिवाय नगर अवनीसू
सुंदर सदन सुखद सब काला • तहाँ बास लै दीन्ह भुआला
करि पूजा सब बिधि सेवकाई • गयउ राउ गृह बिदा कराई

दो० रिषय संग रघुबंसमनि करि भोजन बिस्राम।
बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवस रहा भरि जाम ॥ २२१ ॥

लखन हृदय लालसा बिसेषी • जाइ जनकपुर आइय देखी
प्रभु-भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं • प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं
राम अनुज मन की गति जानी • भगतबछलता हिय हुलसानी
परम बिनीत सकुचि मुसुकाई • बोले गुर अनुसासन पाई
नाथ लखन पुर देखन चहहीं • प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं
जौं राउर आयसु मैं पावउँ • नगर देखाय तुरत लै आवउँ
सुनि मुनीस कह बचन सप्रीती • कस न राम तुम्ह राखहु नीती
धरम-सेतु-पालक तुम्ह ताता • प्रेम बिबस सेवक-सुख-दाता

दो० जाइ देखि आवहु नगर सुख-निधान दोउ भाइ।
करहु सुफल सबके नयन सुंदर बदन दिखाइ ॥ २२२ ॥

मुनि-पद-कमल बंदि दोउ भ्राता • चले लोक-लोचन सुख दाता
बालकबृंद देखि अति सोभा • लगे संग लोचन मन लोभा
पीत बसन परिकर कटि भाथा • चारु चाप सर सोहत हाथा

तन अनुहरत सुचंदन खोरी * स्यामल गौर मनोहर जोरी
केहरि-कंधर बाहु बिसाला * उर अति रुचिर नागमनि-माला
सुभग सोन सरसीरुह लोचन * बदन मयंक तापत्रय-मोचन
कानन्हि कनक-फूल छवि देहीं * चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं
चितवनि चारु भृकुटि बर बाँकी * तिलक-रेख-सोभा जनु चाकी

दो० रुचिर चौतनी सुभग सिर मेचक कुंचित केस।
नख-सिख सुंदर बंधु दोउ सोभा सकल सुदेस २२०॥

देखन नगर भूप-सुत आये * समाचार पुरबासिन्ह पाये
धाये धाम काम सब त्यागी * मनहुँ रंक निधि लूटन लागी
निरखि सहज सुंदर दोउ भाई * होहिं सुखी लोचन फल पाई
जुबती भवन झरोखन्हि लागीं * निरखहिं राम-रूप अनुरागीं
कहहिं परस्पर बचन सप्रीती * सखि इन्ह कोटि-कामछबि जीती
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं * सोभा असि कहुँ सुनिअत नाहीं
बिष्नु चारिभुज बिधि मुखचारी * बिकट बेष मुख-पंच पुरारी
अपर देव अस कोउ न आही * यह छबि सखी पटतरिअ जाही

दो० बय किसोर सुखमा-सदन स्याम गौर सुख-धाम।
अंग अंग पर वारिअहिं कोटि कोटि सत काम २२१॥

कहहु सखी अस को तनुधारी * जो न मोह अस रूप निहारी
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी * जो मैं सुना सो सुनहु सयानी
ए दोउ दसरथ के ढोटा * बाल मरालन्हि के कल जोटा
मुनि कौसिक मख के रखवारे * जिन्ह रन-अजिर निसाचर मारे
स्यामगात कल-कंज बिलोचन * जो मारीच सुभुज-मद-मोचन
कौसल्या-सुत सो सुख खानी * नामु रामु धनु-सायक-पानी

जय जय गिरिवर राज किसोरी • जय महेस मुख चंद-चकोरी
जय गज बदन-षडानन माता • जगतजननिदामिनि-दुति-गाता
नहिं तव आदि मध्य अवसाना • अमित प्रभाव बेद नहिं जाना
भव-भव विभव-पराभव कारिनि • बिस्वविमोहनिस्वबसबिहारिनि
दो• पतिदेवता सुतीय महँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदासेष २३०
सेवत तोहि सुलभ फल चारी • बरदायिनि त्रिपुरारि पियारी
देबि। पूजि पदकमल तुम्हारे • सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे
मोर मनोरथ जानहु नीके। • बसहु सदा उर पुर सबही के
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेही • अस कहि चरन गहे बैदेही
बिनय प्रेम बस भई भवानी • खसी माल मूरति मुसुकानी
सादर सिय प्रसाद सिर धरेऊ • बोली गौरि हरष हिय भरेऊ
सुनु सिय सत्य असीस हमारी • पूजिहि मन-कामना तुम्हारी
नारद-बचन सदा सुचि साँचा • सो बर मिलिहि जाहि मन राँचा
छं• मनजाहि राँचेउ मिलिहि सोबरसहजसुंदर साँवरो।
करुनानिधान सुजान सील सनेह जानत रावरो॥
एहिभाँतिगौरिअसीससुनि सियसहित हियहरषी अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदितमन मंदिरचली॥
सो• जानि गौरि अनुकूल सिय-हिय-हरष न जात कहि।
मंजुल-मंगल-मूल बाम अंग फरकन लगे॥ २३१॥
हृदय सराहत सीय-लोनाई • गुरु समीप गवने दोउ भाई
राम कहा सब कौसिक पाहीं • सरल सुभाव छुआ छल नाहीं
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही • पुनि असीस दुहुँ भाइन्ह दीन्ही

सफल मनोरथ होहिं तुम्हारे * राम लखन सुनि भये सुखारे
करि भोजन मुनिवर विज्ञानी * लगे कहन कछु कथा पुरानी
बिगत दिवस गुरु-आयसु पाई * संध्या करन चले दोउ भाई
प्राची दिसि ससि उयेउ सुहावा * सिय-मुख-सरिस देखि सुख पावा
बहुरि बिचार कीन्ह मन माहीं * सीय-बदन-सम हिमकर नाहीं

दो० जनम सिंधु पुनि बंधु बिष दिन मलीन सकलंक।
सिय-मुख-समता पाव किमि चन्द बापुरो रंक॥२४१॥

घटइ बढ़इ बिरहिनि-दुख दाई * ग्रसइ राहु निज संधिहि पाई
कोक सोक प्रद पंकज द्रोही * अवगुन बहुत चंद्रमा तोही
बैदेही मुख पटतर दीन्हे * होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे
सियमुखछबि बिधु ब्याज बखानी * गुरु पहिं चले निसा बड़ि जानी
करि मुनि चरन सरोज प्रनामा * आयसु पाइ कीन्ह बिस्रामा
बिगत निसा रघुनायक जागे * बंधु बिलोकि कहन अस लागे
उयेउ अरुन अवलोकहु ताता * पंकज कोक लोक सुख दाता
बोले लखन जोरि जुग पानी * प्रभु-प्रभाव सूचक मृदु बानी

दो० अरुनोदय सकुचे कुमुद उडुगन-जोति मलीन।
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भये नृपति बलहीन॥२४२॥

नृप सब नखत करहिं उजियारी * टारि न सकहिं चाप तम भारी
कमल कोक मधुकर खग नाना * हरषे सकल निसा अवसाना
ऐसेहि प्रभु सब भगत तुम्हारे * होइहहिं टूटे धनुष सुखारे
उयेउ भानु बिनु श्रम तम नासा * दुरे नखत जग तेज प्रकासा
रबि निज-उदय-ब्याज रघुराया * प्रभु-प्रताप सब नृपन्ह दिखाया
तव भुज-बल महिमा उदघाटी * प्रगटी धनु बिघटन परिपाटी

बंधु-बचन सुनि प्रभु मुसुकाने • होइ सुचि सहज पुनीत नहाने
नित्य क्रिया करि गुरपहिं आये • चरन-सरोज सुभग सिर नाये
सतानंद तब जनक बोलाये • कौसिकमुनि पहिं तुरत पठाये
जनक-बिनय तिन्ह आनि सुनाई • हरषे बोलि लिये दोउ भाई

दो॰ सतानंद-पद बंदि प्रभु बैठे गुरु पहिं जाइ।
चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बोलाइ॥२३१॥

मास पारायण ८ दिन—नवाह्न-पारायण २ दिन

सीय स्वयंबर देखिय जाई • ईस काहि धौं देइ बड़ाई
लखन कहा जस भाजन सोई • नाथ कृपा तव जापर होई
हरषे मुनि सब सुनि बर बानी • दीन्ह असीस सबहिं सुख मानी
पुनि मुनि बृंद-समेत कृपाला • देखन चले धनुष मख-साला
रंगभूमि आये दोउ भाई • असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई
चले सकल गृह काज बिसारी • बाल जुबान जरठ नर नारी
देखी जनक भीर भइ भारी • सुचि सेवक सब लिये हँकारी
तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू • आसन उचित देहु सब काहू

दो॰ कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह बैठारे नर नारि।
उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि॥२३२॥

राजकुँअर तेहि अवसर आये • मनहुँ मनोहरता तन छाये
गुन सागर नागर बर बीरा • सुंदर स्यामल गौर सरीरा
राज समाज बिराजत रूरे • उडगन महँ जनु जुग बिधु पूरे
जिन्हकें रही भावना जैसी • प्रभु-मूरति तिन्ह देखी तैसी
देखहिं भूप महा रनधीरा • मनहुँ बीररस धरे सरीरा
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी • मनहुँ भयानक मूरति भारी

रहे असुर छल छोनिप-बेषा * तिन्ह प्रभु प्रगट काल-सम देखा
पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई * नर-भूषन लोचन सुख-दाई

दो॰ नारि बिलोकहिं हरषि हिय निज निज रुचि अनुरूप।
जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप ॥२४१॥

बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीसा * बहुमुख-कर-पग-लोचन-सीसा
जनक-जाति अवलोकहिं कैसे * सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे
सहित बिदेह बिलोकहिं रानी * सिसु-सम प्रीति न जाइ बखानी
जोगिन्ह परम-तत्त्व-मय भासा * सांत-सुद्ध-सम सहज प्रकासा
हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता * इष्टदेव इव सब सुख दाता
रामहि चितव भाव जेहि सीया * सो सनेहु सुख नहिं कथनीया
उर अनुभवति न कहि सक सोऊ * कवन प्रकार कहइ कबि कोऊ
जेहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ * तेहि तस देखेउ कोसलराऊ

दो॰ राजत राजसमाज महँ कोसल - राज किसोर।
सुंदर स्यामल गौर तनु बिस्व-बिलोचन-चोर ॥२४२॥

सहज मनोहर मूरति दोऊ * कोटि-काम-उपमा लघु सोऊ
सरद-चंद-निंदक मुख नीके * नीरज नयन भावते जी के
चितवनि चारु मार-मद-हरनी * भावति हृदय जाति नहिं बरनी
कल कपोल श्रुति-कुंडल लोला * चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला
कुमुद-बंधु-कर-निंदक हाँसा * भ्रुकुटी बिकट मनोहर नासा
भाल बिसाल तिलक झलकाहीं * कच बिलोकि अलि-अवलि लजाहीं
पीत चौतनी सिरन्ह सुहाईं * कुसुम-कली बिच बीच बनाईं
रेखा रुचिर कंबु-कल-ग्रीवाँ * जनु त्रिभुवन-सोभा की सीवाँ

दो॰ कुंजर-मनि कंठा कलित उरन्हि तुलसिका - माल।

वृषभ-कंध केहरि-ठवनि बल-निधि बाहु बिसाल ॥ २४७ ॥
कटि तूनीर पीत पट बाँधे * कर-सर धनुष-बाम-बर-काँधे
पीत जग्य-उपबीत सोहाये * नख-सिख-मंजु महाछबि छाये
देखि लोग सब भये सुखारे * एकटक लोचन टरत न टारे
हरषे जनक देखि दोउ भाई * मुनि-पद-कमल गहे तब जाई
करि बिनती निज कथा सुनाई * रंग अवनि सब मुनिहि देखाई
जहँ जहँ जाहिं कुँअरबर दोऊ * तहँ तहँ चकित चितव सब कोऊ
निज निज रुख रामहिं सब देखा * कोउ न जान कछु मरम बिसेखा
भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ * राजा मुदित महासुख लहेऊ
दो० सब मंचन्ह ते मंच एक सुंदर बिसद बिसाल ।
मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल ॥ २४८ ॥
प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे * जनु राकेस उदय भये तारे
अस प्रतीति सबके मन माहीं * राम चाप तोरब सक नाहीं
बिनु भंजेहु भव-धनुष बिसाला * मेलिहि सीय राम-उर माला
अस बिचारि गवनहु घर भाई * जस प्रताप बल तेज गँवाई
बिहँसे अपर भूप सुनि बानी * जे अबिबेक अंध अभिमानी
तोरेहु धनुष ब्याह अवगाहा * बिनु तोरे को कुँअरि बिआहा
एक बार कालहु किन होऊ * सिय-हित समर जितब हम सोऊ
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने * धरम-सील हरि-भगत सयाने
सो० सीय बिआहब राम गरब दूरि करि नृपन्ह को ।
जीति को सक संग्राम दसरथ के रन-बाँकुरे ॥ २४९ ॥
ब्यथा मरहु जनि गाल बजाई * मन-मोदकन्हि कि भूख बुताई
सिख हमार सुनि परम पुनीता * जगदंबा जानहु जिय सीता

जगतपिता रघुपतिहि बिचारी * भरि लोचन छबि लेहु निहारी
सुंदर सुखद सकल-गुन-रासी * ए दोउ बंधु संभु-उर-बासी
सुधा समुद्र समीप बिहाई * मृगजल निरखि मरहु कत धाई
करहु जाइ जा कहँ जोइ भावा * हम तौ आजु जनम-फल पावा
अस कहि भले भूप अनुरागे * रूप अनूप बिलोकन लागे
देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना * बरषहिं सुमन करहिं कल गाना

दो० जानि सुअवसर सीय तब पठई जनक बोलाइ ।
चतुर सखी सुंदर सकल सादर चलीं लेवाइ ॥२४९॥

सिय-सोभा नहिं जाइ बखानी * जगदंबिका रूप-गुन-खानी
उपमा सकल मोहिं लघु लागी * प्राकृत नारि अंग - अनुरागी
सीय बरनि तेहि उपमा देई * कुकबि कहाइ अजस को लेई
जौं पटतरिय तीय सम सीया * जग असजुबति कहाँ कमनीया
गिरा-मुखर तनु अरध भवानी * रति अति दुखित अतनपति जानी
बिष - बारुनी - बंधु प्रिय जेही * कहिअ रमा सम किमि बैदेही
जौं छबि-सुधा पयोनिधि होई * परम-रूप मय कच्छप सोई
सोभा रजु मंदिर सिंगारू * मथइ पानि पंकज निज मारू

दो० एहि बिधि उपजइ लच्छि जब सुंदरता सुख-मूल ।
तदपि सकोच समेत कबि कहहिं सीय-समतूल २५० ॥

चलीं संग लइ सखी सयानी * गावति गीत मनोहर बानी
सोह नवल तनु सुंदर सारी * जगतजननि अतुलितछबिभारी
भूषन सकल सुदेस सुहाये * अंग अंग रचि सखिन्ह बनाये
रंगभूमि जब सिय पग धारी * देखि रूप मोहे नर नारी
हरषि सुरन्ह दुंदुभी बजाई * बरषि प्रसून अपछरा गाई

कही जनक जसि अनुचित बानी * बिद्यमान रघुकुल-मनि जानी
सुनहु भानुकुल पंकज-भानू * कहउँ सुभाव न कछु अभिमानू
जौं तुम्हार अनुसासन पावउँ * कंदुक इव ब्रह्मांड उठावउँ
काँचे घट जिमि डारउँ फोरी * सकौं मेरु मूलक इव तोरी
तव प्रताप महिमा भगवाना * का बापुरो पिनाक पुराना
नाथ जानि अस आयसु होऊ * कौतुक करउँ बिलोकिअ सोऊ
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावउँ * जोजन सत प्रमान लै धावउँ
दो० तोरउँ छत्रक-दंड जिमि, तव प्रताप-बल नाथ।
जौं न करउँ प्रभुपद सपथ कर न धरउँ धनु-भाथ॥२४९॥
लखन सकोप बचन जब बोले * डगमगानि महि दिग्गज डोले
सकल लोक सब भूप डेराने * सिय हिय हरष जनक सकुचाने
गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं * मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं
सयनहिं रघुपति लखन निवारे * प्रेम समेत निकट बैठारे
बिस्वामित्र समय सुभ जानी * बोले अति सनेह मय बानी
उठहु राम भंजहु भव चापा * मेटहु तात जनक-परितापा
सुनि गुरुबचन चरन सिर नावा * हरष बिषाद न कछु उर आवा
ठाढ़ भये उठि सहज सुभाये * ठवनि जुबा मृगराज लजाये
दो० उदित उदय-गिरि मंच पर रघुबर बाल पतंग।
बिगसे संत-सरोज सब हरषे लोचन-भृंग॥२५०॥
नृपन्ह केरि आसा निसि नासी * बचन-नखत-अवली न प्रकासी
मानी-महिप-कुमुद सकुचाने * कपटी भूप उलूक लुकाने
भये बिसोक कोक मुनि देवा * बरषहिं सुमन जनावहिं सेवा
गुरु-पद बंदि सहित अनुरागा * राम मुनिन्ह सन आयसु माँगा

सहजहि चले सकल जग-स्वामी * मत्त मंजु बर कुँजर-गामी
चलत राम सब पुर नर-नारी * पुलक पूरि तन भये सुखारी
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे * जौं कछु पुन्य प्रभाव हमारे
तौ सिव धनु मृनाल की नाईं * तोरहिं राम गनेस गोसाईं
दो॰ रामहिं प्रेम-समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ ।
सीतामातु सनेह-बस बचन कहइ बिलखाइ ॥ २४८ ॥
सखि सब कौतुक देखनि हारे * जेउ कहावत हितू हमारे
कोउ न बुझाइ कहइ नृप पाहीं * ए बालक अस हठ भल नाहीं
रावन बान छुआ नहिं चापा * हारे सकल भूप करि दापा
सो धनु राजकुँअर कर देहीं * बालमराल कि मंदर लेहीं
भूप-सयानप सकल सिरानी * सखिबिधिगतिकछुजातिनजानी
बोली चतुर सखी मृदु बानी * तेजवंत लघु गनिय न रानी
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा * सोखेउ सुजस सकल संसारा
रबिमंडल देखत लघु लागा * उदय तासु त्रिभुवन-तम भागा
दो॰ मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब ।
महामत्त गज-राज कहँ बस कर अंकुस खर्ब ॥ २४९ ॥
काम कुसुम धनु-सायक लीन्हे * सकल भुवन अपने बस कीन्हे
देबि तजिय संसय अस जानी * भंजब धनुष राम सुनु रानी
सखी-बचन सुनि भइ परतीती * मिटा बिषाद बढ़ी अति प्रीती
तब रामहिं बिलोकि बैदेही * सभय हृदय बिनवति जेहि तेही
मनहीं मन मनाव अकुलानी * होउ प्रसन्न महेस भवानी
करहु सुफल आपन सेवकाई * करि हित हरहु चाप-गरुआई
गननायक बर दायक देवा * आजु लगे कीन्हेउँ तव सेवा

बूड़ सो सकल समाज चढ़े जो प्रथमहिं मोह-बस ॥२६०॥
प्रभु दोउ चाप-खंड महि डारे * देखि लोग सब भये सुखारे
कौसिक रूप पयोनिधि पावन * प्रेम-बारि अवगाह सुहावन
राम - रूप राकेस निहारी * बढ़त बीचि पुलकावलि भारी
बाजे नभ गहगहे निसाना * देववधू नाचहिं करि गाना
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा * प्रभुहि प्रसंसहिं देहिं असीसा
बरषहिं सुमन रंग बहु माला * गावहिं किंनर गीत रसाला
रही भुवन भरि जय जय बानी * धनुष-भंग-धुनि जात न जानी
मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी * भंजेउ राम संभु धनु भारी
दो॰ बंदी मागध सूतगन बिरद बदहिं मतिधीर ।
करहिं निछावरि लोग सब हय गय धन मनि चीर ॥२६१॥
झाँझि मृदंग संख सहनाई * भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई
बाजहिं बहु बाजने सुहाये * जहँ तहँ जुवतिन मंगल गाये
सखिन्ह सहित हरषी सब रानी * सूखत धान परा जनु पानी
जनक लहेउ सुख सोच बिहाई * पैरत थके थाह जनु पाई
श्रीहत भये भूप धनु टूटे * जैसे दिवस दीप छवि छूटे
सीय सुखहि बरनिय केहि भाँती * जनु चातकी पाइ जल स्वाती
रामहिं लखन बिलोकत कैसे * ससिहि चकोर किसोरक जैसे
सतानंद तब आयसु दीन्हा * सीता गमन राम पहिं कीन्हा
दो॰ संग सखी सुंदरि सकल गावहिं मंगलचार ।
गवनी बाल-मराल-गति सुखमा अंग अपार ॥२६२॥
सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसी * छबि-गन-मध्य महाछबि जैसी
कर सरोज जयमाल सुहाई * बिस्व-बिजय-सोभा जेहि छाई

तन सकोच मन परम उछाहू * गूढ़ प्रेम लखि परै न काहू
जाय समीप राम-छबि देखी * रहि जनु कुँअरि चित्र-अवरेखी
चतुर सखी लखि कहा बुझाई * पहिरावहु जयमाल सुहाई
सुनत जुगल कर माल उठाई * प्रेम-बिबस पहिराइ न जाई
सोहत जनु जुग जलज सनाला * ससिहि सभीत देत जयमाला
गावहिं छबि अवलोकि सहेली * सिय जयमाल राम-उर मेली

सो० रघुबर उर जयमाल देखि देव बरषहिं सुमन।
सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रबि कुमुदगन ॥२१२॥

पुर अरु ब्योम बाजने बाजे * खल भये मलिन साधु सब राजे
सुर किन्नर नर नाग मुनीसा * जय जय जय कहि देहिं असीसा
नाचहिं गावहिं बिबुध-बधूटी * बार बार कुसुमावलि छूटी
जहँ तहँ बिप्र बेद धुनि करहीं * बंदी बिरदावलि उच्चरहीं
महि पाताल ब्योम जस ब्यापा * राम बरी सिय भंजेउ चापा
करहिं आरती पुर-नर-नारी * देहिं निछावरि बित्त बिसारी
सोहति सीय राम कै जोरी * छबि सिंगार मनहुँ एक ठौरी
सखी कहहिं प्रभु-पद गहु सीता * करत न चरन-परस अति भीता

दो० गौतम तिय-गति सुरति करि नहिं परसति पगपानि।
मन बिहँसे रघुबंस-मनि प्रीति अलौकिक जानि ॥२१३॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे * कूर कपूत मूढ़ मन माखे
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे * जहँ तहँ गाल बजावन लागे
लेहु छड़ाय सीय कह कोऊ * धरि बाँधहु नृप-बालक दोऊ
तोरे धनुष चाँड़ नहिं सरई * जीवत हमहिं कुँअरि को बरई
जौ बिदेह कछु करइ सहाई * जीतहु समर सहित दोउ भाई

साधु भूप बोले सुनि बानी * राजसमाजहिं लाज लजानी
बल प्रताप बीरता बड़ाई * नाक पिनाकहि संग सिधाई
सोइ सूरता कि अब कहुँ पाई * असि बुधि तौ बिधि मुँह मसि लाई
दो० देखहु रामहि नयन भरि तजि इरषा मद कोहु।
लखन-रोष पावक प्रबल जानि सलभ जनि होहु॥२१७॥
बैनतेय-बलि जिमि चह कागू * जिमि सस चहइ नाग-अरि-भागू
जिमि चह कुसल अकारन कोही * सब संपदा चहइ सिव-द्रोही
लोभी लोलुप कीरति चहई * अकलंकता कि कामी लहई
हरि-पद बिमुख परमगति चाहा * तस तुम्हार लालच नरनाहा
कोलाहल सुनि सीय सकानी * सखी लेवाइ गईं जहँ रानी
राम सुभाय चले गुरु पाहीं * सिय-सनेह बरनत मन माहीं
रानिन्ह सहित सोचबस सीया * अब धौं बिधिहि काह करनीया
भूप बचन सुनि इत उत तकहीं * लखन रामडर बोलि न सकहीं
दो० अरुन-नयन भृकुटी-कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप।
मनहु मत्त-गज-गन निरखि सिंहकिसोरहि चोप॥२१८॥
खरभर देखि बिकल पुर-नारी * सब मिलि देहिं महीपन गारी
तेहि अवसर सुनि सिवधनु-भंगा * आये भृगु-कुल कमल पतंगा
देखि महीप सकल सकुचाने * बाज-झपट जनु लवा लुकाने
गौर सरीर भूति भलि भ्राजा * भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा
सीस-जटा ससि बदन सुहावा * रिस-बस कछुक अरुन होइ आवा
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते * सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते
बृषभ कंध उर बाहु बिसाला * चारु जनेउ माल मृगछाला
कटि मुनि बसन तून दुइ बाँधे * धनु-सर-कर कुठार कल काँधे

दो० संत-बेष करनी कठिन बरनि न जाइ सरूप।
धरि मुनितनु जनु बीररस आयउ जहँ सब भूप॥२६९॥

देखत भृगुपति बेष कराला * उठे सकल भय-बिकल भुआला
पितुसमेत कहिनिजनिज नामा * लगे करन सब दंड प्रनामा
जेहिसुभाय चितवहिंहित जानी * सो जानइ जनु आयु खुटानी
जनक बहोरि आइ सिर नावा * सीय बोलाइ प्रनाम करावा
आसिस दीन्हि सखीं हरषानी * निज समाज लेइ गईं सयानी
बिस्वामित्र मिले पुनि आई * पद सरोज मेले दोउ भाई
राम लखन दसरथ के ढोटा * दीन्हि असीस देखि भल जोटा
रामहिं चितइ रहे भरि लोचन * रूप अपार-मार मद मोचन

दो० बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीर।
पूछत जानि अजानजिमि ब्यापेउ कोपसरीर॥२७०॥

समाचार कहि जनक सुनाये * जेहि कारन महीप सब आये
सुनत बचन फिरि अनत निहारे * देखे चाप-खंड महि डारे
अति रिस बोले बचन कठोरा * कहु जड़ जनक धनुष केइ तोरा
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू * उलटउँ महि जहँ लगि तव राजू
अति डर उतर देत नृप नाहीं * कुटिल भूप हरषे मन माहीं
सुर मुनि नाग नगर-नर-नारी * सोचहिं सकल त्रास उर भारी
मन पछिताति सीय-महतारी * बिधि सँवारि सब बात बिगारी
भृगुपति कर सुभाव सुनि सीता * अरध निमेष कलप-सम बीता

दो० सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु।
हृदय न हरष बिषाद कछु बोले श्रीरघुबीरु॥२७१॥

मास पारायण ९ दिन

नाथ संभु - धनु भंजनिहारा । होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥
आयसु काह कहिअ किन मोही । सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ॥
सेवकु सो जो करइ सेवकाई । अरि करनी करि करिअ लराई ॥
सुनहु राम जेइ सिव-धनु तोरा । सहसबाहु - सम सो रिपु मोरा ॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा । न त मारे जैहहिं सब राजा ॥
सुनिमुनि-बचन लपन मुसुकाने । बोले परसुधरहि अपमाने ॥
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं । कबहुँ न असिरिस कीन्हिगोसाईं ॥
एहि धनु पर ममता केहि हेतू । सुनि रिसाइ कह भृगु कुल-केतू ॥
दो० रे नृप-बालक काल - बस बोलत तोहि न सँभार ।
धनुहीं सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार॥१०२॥
लपन कहा हँसि हमरे जाना । सुनहु देव सब धनुष समानां ॥
का छति लाभ जून धनु तोरे । देखा राम नये के भोरे ॥
छुअत टूट रघुपतिहु न दोषू । मुनि बिनु काम करिअ कत रोषू ॥
बोले चितइ परसु की ओरा । रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ॥
बालक बोलि बधउँ नहिं तोही । केवल मुनि जड़ जानहि मोही ॥
बाल - ब्रह्मचारी अति कोही । बिस्व-बिदितछत्रिय-कुल-द्रोही ॥
भुज-बल भूमि भूप-बिनु कीन्हीं । बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ॥
सहसबाहु भुज छेदनिहारा । परसु बिलोकु महीप - कुमारा ॥
दो० मातुपितहि जनि सोच बस करसि महीप किसोर ।
गरभन के अरभक-दलन परसुमोरअति घोर ॥१०३॥
बिहँसि लखन बोले मृदु बानी । अहो मुनीस महाभट मानी ॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू । चहत उड़ावन फूँकि पहारू ॥
इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं । जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥

देखि कुठार सरासन बाना * मैं कछु कहेउँ सहित अभिमाना
भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी * जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई * हमरे कुल इन्ह पर न सुराई
बधे पाप अपकीरति हारे * मारत हूँ पाँ परिय तुम्हारे
कोटिकुलिस-सम बचन तुम्हारा * व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा
दो॰ जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगु-बंस-मनि बोले गिरा गँभीर॥२७४॥
कौसिक सुनहु मंद यह बालक * कुटिल कालबस निजकुल घालक
भानु बंस राकेस कलंकू * निपट निरंकुस अबुध असंकू
काल कवल होइहि छन माहीं * कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाहीं
तुम्ह हटकहु जौ चहहु उबारा * कहि प्रताप बल रोष हमारा
लखन कहेउ मुनि सुजस तुम्हारा * तुम्हहिं अछत को बरनइ पारा
अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी * बार अनेक भाँति बहु बरनी
नहिं संतोष तौ पुनि कछु कहहू * जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा * गारी देत न पावहु सोभा
दो॰ सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आप।
बिद्यमान रिपु पाइ रन कायर करहिं प्रलाप॥२७५॥
तुम्ह तौ काल हाँक जनु लावा * बार बार मोहि लागि बोलावा
सुनत लखन के बचन कठोरा * परसु सुधारि धरेउ कर घोरा
अब जनि देइ दोष मोहि लोगू * कटुबादी बालक बधजोगू
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा * अब यहु मरनिहार भा साँचा
कौसिक कहा छमिय अपराधू * बाल दोष गुन गनहिं न साधू
कर कुठार मैं अकरुन - कोही * आगे अपराधी गुरु - द्रोही

नाथ संभु - धनु भंजनिहारा • होइहि केउ एक दास तुम्हारा
आयसु काह कहिअ किन मोही • सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही
सेवकु सो जो करै सेवकाई • अरि करनी करि करिअ लराई
सुनहु राम जेहिं सिव धनु तोरा • सहसबाहु - सम सो रिपु मोरा
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा • न त मारे जैहहिं सब राजा
सुनिमुनि-बचन लखन मुसुकाने • बोले परसुधरहि अपमाने
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं • कबहुँ न असिरिस कीन्हिगोसाईं
एहि धनु पर ममता केहि हेतू • सुनि रिसाइ कह भृगु कुल-केतू
दो० रे नृप-बालक काल - बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार॥२७१॥
लखन कहा हँसि हमरें जाना • सुनहु देव सब धनुष समाना
का छति लाभ जून धनु तोरें • देखा राम नये के भोरें
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू • मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू
बोले चितइ परसु की ओरा • रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही • केवल मुनि जड़ जानहि मोही
बाल ब्रह्मचारी अति कोही • बिस्व-बिदित-छत्रिय-कुल-द्रोही
भुज-बल भूमि भूप-बिनु कीन्ही • बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही
सहसबाहु भुज छेदनिहारा • परसु बिलोकु महीप कुमारा
दो० मातुपितहि जनि सोच बस करसि महीप किसोर।
गरभन्ह के अरभक-दलन परसुमोरअति घोर॥२७२॥
बिहँसि लखन बोले मृदु बानी • अहो मुनीसु महाभट मानी
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू • चहत उड़ावन फूँकि पहारू
इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं • जे तरजनी देखि मरि जाहीं

देखि कुठार सरासन बाना * मैं कछु कहेउँ सहित अभिमाना
भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी * जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई * हमरे कुल इन्ह पर न सुराई
बधे पाप अपकीरति हारे * मारत हूँ पाँ परिअ तुम्हारे
कोटिकुलिस-सम बचन तुम्हारा * ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा
दो० जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगु-बंस-मनि बोले गिरा गँभीर ॥२७४॥
कौसिक सुनहु मंद यह बालक * कुटिल कालबस निजकुल घालक
भानु बंस राकेस कलंकू * निपट निरंकुस अबुध असंकू
काल कवल होइहि छन माहीं * कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाहीं
तुम्ह हटकहु जौ चहहु उबारा * कहि प्रताप बल रोष हमारा
लखन कहेउ मुनि सुजस तुम्हारा * तुम्हहि अछत को बरनै पारा
अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी * बार अनेक भाँति बहु बरनी
नहिं संतोष त पुनि कछु कहहू * जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा * गारी देत न पावहु सोभा
दो० सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आप।
बिद्यमान रिपु पाइ रन कायर करहिं प्रलाप ॥२७५॥
तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा * बार बार मोहि लागि बोलावा
सुनत लखन के बचन कठोरा * परसु सुधारि धरेउ कर घोरा
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू * कटुबादी बालक बधजोगू
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा * अब यहु मरनिहार भा साँचा
कौसिक कहा छमिअ अपराधू * बाल दोष-गुन गनहिं न साधू
कर कुठार मैं अकरुन कोही * आगे अपराधी गुरु-द्रोही

आजु दैव दुख दुसह सहावा * सुनि सौमित्र बहुरि सिर नावा
बाउ कृपा मूरति - अनुकूला * बोलत बचन झरत जनु फूला
जौं पै कृपा जरहिं मुनि गाता * क्रोध भये तन राख बिधाता
देखु जनक हठि बालक एहू * कीन्ह चहत जड़ जमपुर गेहू
बेगि करहु किन आँखिन ओटा * देखत छोट खोट नृप ढोटा
बिहँसे लखन कहा मन माहीं * मूँदे आँखि कतहुँ कोउ नाहीं
दो० परसुराम तब राम प्रति बोले उर अति क्रोध।
संभु-सरासन तोरि सठ करसि हमार प्रबोध ॥२८१॥
बंधु कहइ कटु संमत तोरें * तू छल बिनय करसि कर जोरें
करु परितोष मोर संग्रामा * नाहिं त छाड़ु कहाउब रामा
छल तजि करहि समर सिवद्रोही * बंधु सहित न त मारउँ तोही
भृगुपति बकहिं कुठार उठाये * मन मुसुकाहिं राम सिर नाये
गुनह लखन कर हम पर रोषू * कतहुँ सुधाइहु तें बड़ दोषू
टेढ़ जानि सब बंदइ काहू * बक्र चंद्रमहि ग्रसइ न राहू
राम कहेउ रिस तजिय मुनीसा * कर कुठार आगे यह सीसा
जेहि रिस जाइ करिय सोइ स्वामी * मोहि जानिय आपन अनुगामी
दो० प्रभु सेवकहि समर कस तजहु बिप्रबर रोस।
बेष बिलोकि कहेसि कछु बालकहू नहिं दोस ॥२८२॥
देखि कुठार बान धनु धारी * भइ लरिकहि रिस बीर बिचारी
नाम जान पै तुम्हहिं न चीन्हा * बंस सुभाय उतर तेहि दीन्हा
जौं तुम्ह अवतेहु मुनि की नाईं * पद-रज सिर सिसु धरत गोसाईं
छमहु चूक अनजानत केरी * चहिय बिप्र उर कृपा घनेरी
हमहिं तुम्हहिं सरबरि कस नाथा * कहहु न कहाँ चरन कहँ माथा

राम मात्र लघु नाम हमारा * परसु-सहित बड़ नाम तुम्हारा
देव एक गुन धनुष हमारे * नव गुन परम पुनीत तुम्हारे
सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे * छमहु बिप्र अपराध हमारे
दो॰ बार बार मुनि बिप्रबर कहा राम सन राम ।
बोले भृगुपति सरुष होइ तहूँ बंधुसमवाम ॥२८३॥
निपटहि द्विज करि जानहि मोही * मैं जस बिप्र सुनावउँ तोही
चाप-स्रुवा सर-आहुति जानू * कोप मोर अति घोर कृसानू
समिधि सेन चतुरंग सुहाई * महा-महीप भये पसु आई
मैं यहि परसु काटि बलि दीन्हे * समरजग्य जग कोटिन्ह कीन्हे
मोर प्रभाव बिदित नहिं तोरे * बोलसि निदरि बिप्र के भोरे
भंजेउ चाप दाप बड़ बाढ़ा * अहमिति मनहुँ जीति जग ठाढ़ा
राम कहा मुनि कहहु बिचारी * रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी
छुअतहि टूट पिनाक पुराना * मैं केहि हेतु करउँ अभिमाना
दो॰ जौं हम निदरहिं बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ ।
तौ अस को जगसुभटजेहि भयबस नावहिं माथ ॥२८४॥
देव दनुज भूपति भट नाना * सम बल अधिक होउ बलवाना
जौं रन हमहिं पचारइ कोऊ * लरहिं सुखेन काल किन होऊ
छत्रिय-तन धरि समर सकाना * कुल-कलंक तेहि पामर जाना
कहउँ सुभाव न कुलहि प्रसंसी * कालहु डरहिं न रन रघुबंसी
बिप्र-बंस कै असि प्रभुताई * अभय होइ जो तुम्हहि डेराई
सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के * उघरे पटल परसुधर-मति के
राम रमापति कर धनु लेहू * खैंचहु मिटइ मोर संदेहू
देत चाप आपुहि चलि गयऊ * परसुराम मन बिसमय भयऊ

जनक भवन कै सोभा जैसी * गृह गृह प्रति पुर देखिय तैसी
जेहि तिरहुति तेहि समय निहारी * तेहि लघु लाग भुवन दस चारी
जो सपदा नीच गृह सोहा * सो बिलोकि सुरनायक मोहा

दो० बसइ नगर जेहि लच्छि करि कपट नारि बर बेष।
तेहि पुर कै सोभा कहत सकुचहिं सारद सेष ॥२१०॥

पहुँचे दूत रामपुर पावन * हरषे नगर बिलोकि सुहावन
भूप द्वार तिन्ह खबर जनाई * दसरथ नृप सुनि लिए बोलाई
करि प्रनाम तिन्ह पाती दीन्ही * मुदित महीप आपु उठि लीन्ही
बारि बिलोचन बाँचत पाती * पुलक गात आई भरि छाती
राम-लखन उर कर-बर-चीठी * रहि गये कहत न खाटी मीठी
पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची * हरषी सभा बात सुनि साँची
खेलत रहे तहाँ सुधि पाई * आये भरत सहित हित भाई
पूछत अति सनेह सकुचाई * तात कहाँ तें पाती आई

दो० कुसल प्रानप्रिय बंधु दोउ अहहिं कहहु केहि देस।
सुनि सनेह साने बचन बाँची बहुरि नरेस ॥२११॥

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता * अधिक सनेह समात न गाता
प्रीति पुनीत भरत कै देखी * सकल सभा सुख लहेउ बिसेखी
तब नृप दूत निकट बैठारे * मधुर मनोहर बचन उचारे
भैया कहहु कुसल दोउ बारे * तुम्ह नीके निज नयन निहारे
स्यामल गौर धरे धनु भाथा * बयकिसोर कौसिकमुनि साथा
पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभाऊ * प्रेम बिबस पुनि पुनि कह राऊ
जा दिन तें मुनि गए लेवाई * तब तें आजु साँचि सुधि पाई
कहहु बिदेह कवन बिधि जाने * सुनि प्रिय बचन दूत मुसुकाने

दो० सुनहु महीपति-मुकुट-मनि तुम्ह सम धन्य न कोउ।
राम लखन जिन्हके तनय विस्व-विभूषन दोउ॥२११॥

पूछन जोग न तनय तुम्हारे * पुरुपसिंह तिहुँ पुर उजियारे
जिनके जस प्रताप के आगे * ससि मलीन रवि सीतल लागे
तिन्ह कहँ कहिअ नाथ किमि चीन्हे * देखिअ रबि कि दीप कर लीन्हे
सीय स्वयंबर भूप अनेका * समिटे सुभट एक तें एका
संभु-सरासन काहु न टारा * हारे सकल बीर बरियारा
तीन लोक महँ जे भटमानी * सबकै सकति संभु धनु भानी
सकइ उठाइ सुरासुर मेरू * सोउ हिय हारि गयउ करि फेरू
जेहि कौतुक सिव-सैलु उठावा * सोउ तेहि सभा पराभउ पावा

दो० तहाँ राम रघुबंस - मनि सुनिअ महा - महिपाल।
भंजेउ चाप प्रयास बिनु जिमि गज पंकज नाल॥२१२॥

सुनि सरोप भृगुनायक आये * बहुत भाँति तिन्ह आँखि देखाए
देखि राम-बल निज धनु दीन्हा * करि बहुबिनय गवनबन कीन्हा
राजन राम अतुलबल जैसे * तेज निधान लखन पुनि तैसे
कंपहिं भूप बिलोकत जाके * जिमि गज हरि-किसोरके ताके
देव देखि तव बालक दोऊ * अब न आँखि तर आवत कोऊ
दूत बचन रचना प्रिय लागी * प्रेम प्रताप-बीर रस पागी
सभा समेत राउ अनुरागे * दूतन्ह देन निछावरि लागे
कहि अनीति ते मूँदहिं काना * धरम बिचारि सबहिं सुख माना

दो० तब उठि भूप बसिष्ठ कहँ दीन्हि पत्रिका जाइ।
कथा सुनाई गुरुहि सब सादर दूत बोलाइ॥२१३॥

सुनि बोले गुरु अति सुख पाई * पुन्य-पुरुष कहँ महि सुख छाई

सब सुंदर सब भूषनधारी * कर सर चाप तून कटि भारी
दो० छरे छबीले छैल सब सूर सुजान नबीन।
जुग पदचर असवार प्रति जे असि-कला-प्रबीन॥२९८॥
बाँधे बिरद बीर रनगाढ़े * निकसि भये पुर बाहिर ठाढ़े
फेरहिं चतुर तुरग गति नाना * हरषहिं सुनि सुनि पनव निसाना
रथ सारथिन्ह बिचित्र बनाए * ध्वज पताक मनि भूषन लाए
चँवर चारु किंकिनि धुनि करहीं * भानु जान सोभा अपहरहीं
स्यामकरन अगनित हय होते * ते तिन्ह रथन्हि सारथिन्ह जोते
सुंदर सकल अलंकृत सोहे * जिन्हहिं बिलोकत मुनि मन मोहे
जे जल चलहिं थलहि की नाईं * टाप न बूड़ बेग अधिकाईं
अस्त्र सस्त्र सब साज बनाई * रथी सारथिन्ह लिए बोलाई
दो० चढ़ि चढ़ि रथ बाहिर नगर लागी जुरन बरात।
होत सगुन सुन्दर सबन्हि जो जेहि कारज जात॥२९९॥
कलित करिबरन्हि परीं अँबारी * कहि न जाइ जेहि भाँति सँवारी
चले मत्तगज घंट बिराजी * मनहुँ सुभग सावन घन राजी
बाहन अपर अनेक बिधाना * सिबिका सुभग सुखासन जाना
तिन्ह चढ़ि चले बिप्रबर बृन्दा * जनु तनु धरे सकल-स्रुति-छंदा
मागध सूत बंदि गुनगायक * चले जान चढ़ि जो जेहि लायक
बेसर ऊँट बृषभ बहु जाती * चले बस्तु भरि अगनित भाँती
कोटिन्ह काँवरि चले कहारा * बिबिध बस्तु को बरनइ पारा
चले सकल सेवक समुदाई * निज निज साज समाज बनाई
दो० सबके उर निर्भर हरष पूरित पुलक सरीर।
कबहि देखिबइ नयनभरि रामलखन दोउबीर॥३००॥

गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा * रथ-रव बाजि-हिंस चहुँ ओरा
निदरि घनहिं घुम्मरहिं निसाना * निज पराइ कछु सुनिअ न काना
महाभीर भूपति के द्वारे * रज होइ जाइ पषान पबारे
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नारी * लिए आरती मंगल थारी
गावहिं गीत मनोहर नाना * अति आनन्द न जाइ बखाना
तब सुमंत्र दुइ स्यंदन साजी * जोते रबि हय निंदक बाजी
दोउ रथ रुचिरभूप पहिं आने * नहिं सारद पहिं जाहिं बखाने
राजसमाज एक रथ साजा * दूसर तेजपुंज अति भ्राजा
दो॰ तेहि रथ रुचिर बसिष्ठ कहँ हरषि चढ़ाइ नरेस।
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि हर गुरु गौरि गनेस ॥३०१॥
सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसे * सुरगुरु संग पुरंदर जैसे
करि कुल-रीति बेद-बिधि राऊ * देखि सबहि सब भाँति बनाऊ
सुमिरि राम गुरु-आयसु पाई * चले महीपति संख बजाई
हरषे बिबुध बिलोकि बराता * बरषहिं सुमन सुमंगल-दाता
भयउ कोलाहल हय गय गाजे * ब्योम बरात बाजने बाजे
सुर-नर-नारि सुमंगल गाई * सरस राग बाजहिं सहनाई
घंट-घंटि धुनि बरनि न जाहीं * सरव करहिं पायक फहराहीं
करहिं बिदूषक कौतुक नाना * हास-कुसल कल गान सुजाना
दो॰ तुरग नचावहिं कुँअर बर अकनि मृदंग निसान।
नागरनट चितवहिं चकित डगहिं न ताल बँधान ॥३०२॥
बनइ न बरनत बनी बराता * होहिं सगुन सुंदर सुभदाता
चारा चाष बाम दिसि लेई * मनहुँ सकल मंगलकहि देई
दाहिन काग सुखेत सुहावा * नकुल दरस सब काहू पावा

सानुकूल बह त्रिविध बयारी ॥ सघट सबाल आव बर नारी
सोभा फिरि फिरि दरस देखावा ॥ सुरभी सनमुख सिसुहि पियावा
मृगमाला फिरि दाहिनि आई ॥ मंगलगन जनु दीन्हि देखाई
छेमकरी कह छेम बिसेषी ॥ स्यामा बाम सुतरु पर देखी
सनमुख आयउ दधि अरु मीना ॥ कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना

दो० मंगलमय कल्यानमय अभिमत - फल - दातार।
जनु सब साँचे होन हित भए सगुन एक बार ॥ ३०३॥

मंगल सगुन सुगम सब ताकें ॥ सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाकें
राम-सरिस बर दुलहिनि सीता ॥ समधी दसरथु जनकु पुनीता
सुनि अस ब्याहु सगुन सब नाचे ॥ अब कीन्हे बिरंचि हम साँचे
एहि बिधि कीन्ह बरात पयाना ॥ हय गय गाजहिं हने निसाना
आवत जानि भानु-कुल-केतू ॥ सरितन्हि जनक बँधाए सेतू
बीच बीच बर बास बनाए ॥ सुर-पुर-सरिस संपदा छाए
असन सयन बर बसन सुहाए ॥ पावहिं सब निज निज मन भाए
नित नूतन सुख लखि अनुकूले ॥ सकल बरातिन्ह मंदिर भूले

दो० आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निसान।
सजि गज रथ पदचर तुरग लेन चले अगवान ॥ ३०४॥

मास-पारायण १० दिन

कनक कलस कल कोपर थारा ॥ भाजन ललित अनेक प्रकारा
भरे सुधासम सब पकवाने ॥ भाँति भाँति नहिं जाहिं बखाने
फल अनेक बर बस्तु सुहाईं ॥ हरषि भेंट हित भूप पठाईं
भूषन बसन महामनि नाना ॥ खग मृग हय गय बहुबिधि जाना
मंगल सगुन सुगंध सुहाए ॥ बहुत भाँति महिपाल पठाए

दधि चिउरा उपहार अपारा * भरि भरि काँवरि चले कहारा
अगवानन्ह जब दीखि बराता * उर आनंद पुलक भर गाता
देखि बनाव सहित अगवाना * मुदित बरातिन्ह हने निसाना
दो० हरषि परसपर मिलनहित कछुक चले बगमेल ।
जनु आनद-समुद्र दुइ मिलत बिहाइ सुबेल ॥३०५॥
बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहिं * मुदित देव दुंदुभी बजावहिं
बस्तु सकल राखी नृप आगे * बिनय कीन्ह तिन्ह अति अनुरागे
प्रेम समेत राव सब लीन्हा * भइ बकसीस जाचकन्हि दीन्हा
करि पूजा मान्यता बड़ाई * जनवासे कहँ चले लेवाई
बसन बिचित्र पाँवड़े परहीं * देखि धनद-धन-मद परिहरहीं
अति सुंदर दीन्हेउ जनवासा * जहँ सब कहँ सब भाँति सुपासा
जानी सिय बरात पुर आई * कछु निज महिमा प्रगटि जनाई
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बोलाई * भूप-पहुनई करन पठाई
दो० सिधि सब सिय आयसु अकनि गई जहाँ जनवास ।
लिए संपदा सकल सुख सुरपुर-भोग-बिलास ॥३०६॥
निज निज बास बिलोकि बराती * सुर सुख सकल सुलभ सब भाँती
बिभव भेद कछु कोउ न जाना * सकल जनक कर करहिं बखाना
सिय-महिमा रघुनायक जानी * हरषे हृदय हेतु पहिचानी
पितु-आगमन सुनत दोउ भाई * हृदय न अति आनद अमाई
सकुचन्ह कहि न सकत गुरु पाहीं * पितु-दरसन लालच मन माहीं
बिस्वामित्र बिनय बड़ि देखी * उपजा उर संतोष बिसेखी
हरषि बंधु दोउ हृदय लगाए * पुलक अंग अंबक जल छाए
चले जहाँ दसरथ जनवासे * मनहुँ सरोबर तकेउ पियासे

दो॰ भूप बिलोके जबहिं मुनि आवत सुतन्ह समेत।
उठे हरषि सुखसिंधु महुँ चले थाह सी लेत॥३०७॥

मुनिहि दंडवत कीन्ह महीसा • बार बार पद-रज धरि सीसा
कौसिक राउ लिए उर लाई • कहि असीस पूछी कुसलाई
पुनि दंडवत करत दोउ भाई • देखि नृपति उर सुख न समाई
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे • मृतक सरीर प्रान जनु भेंटे
पुनि बसिष्ठ-पद सिर तिन्ह नाए • प्रेम मुदित मुनिबर उर लाए
बिप्र बृंद बंदे दुहुँ भाई • मन भावती असीसें पाई
भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा • लिए उठाइ लाइ उर रामा
हरषे लखन देखि दोउ भ्राता • मिले प्रेम परिपूरित गाता

दो॰ पुरजन परिजन जातिजन जाचक मंत्री मीत।
मिले जथाबिधि सबहिं प्रभु परम कृपालु बिनीत॥३०८॥

रामहि देखि बरात जुड़ानी • प्रीति कि रीति न जाति बखानी
नृप-समीप सोहहिं सुत चारी • जनु धन धरमादिक तनुधारी
सुतन्ह समेत दसरथहि देखी • मुदित नगर-नर-नारि बिसेषी
सुमन बरषि सुर हनहिं निसाना • नाक-नटी नाचहिं करि गाना
सतानंद अरु बिप्र सचिवगन • मागध सूत बिदुष बंदीजन
सहित बरात राउ सनमाना • आयसु माँगि फिरे अगवाना
प्रथम बरात लगन तें आई • तातें पुर प्रमोद अधिकाई
ब्रह्मानंद लोग सब लहहीं • बढ़हु दिवस निसि बिधि सन कहहीं

दो॰ राम सीय सोभा अवधि सुकृत अवधि दोउ राज।
जहँ जहँ पुरजन कहहिं अस मिलि नर नारि समाज॥३०९॥

जनक-सुकृत मूरति बैदेही • दसरथ-सुकृत राम धरे देही

इन्ह सम काहु न सिव अवराधे • काहु न इन्ह समान फल लाधे
इन्हसम कोउन भयउ जगमाहीं • है नहिं कतहूँ होनेउ नाहीं
हम सब सकल सुकृत कै रासी • भये जग जनमि जनकपुर-बासी
जिन्ह जानकी-राम छबि देखी • को सुकृती हम सरिस बिसेखी
पुनि देखब रघुबीर बिआहू • लेब भली बिधि लोचन लाहू
कहहिं परस्पर कोकिल बयनी • एहि बिआह बड़ लाभ सुनयनी
बड़े भाग बिधि बात बनाई • नयन अतिथिहोइहहिं दोउ भाई

दो• बारहिं बार सनेह-बस जनक बोलाउब सीय।
लेन आइहहिं बन्धु दोउ कोटि काम कमनीय ॥३१०॥

बिबिध भाँति होइहि पहुनाई • प्रिय न काहि अस सासुर माई
तब तब राम लखनहिं निहारी • होइहहिं सब पुर लोग सुखारी
सखि जस राम लखन कर जोटा • तैसइ भूप संग दुइ ढोटा
स्याम गौर सब अंग सुहाए • ते सब कहहिं देखि जे आए
कहा एक मैं आजु निहारे • जनु बिरंचि निजहाथ सँवारे
भरत राम ही की अनुहारी • सहसा लखि न सकहिं नरनारी
लखन सत्रुसूदन एक रूपा • नख सिखतें सब अंग अनूपा
मन भावहिं मुख बरनि न जाहीं • उपमाकहँ त्रिभुवन कोउ नाहीं

छं• उपमा न कोउ कह दास तुलसी कतहुँ कबि कोबिद कहहिं।
बल-बिनय-बिद्या-सील-सोभा-सिंधु इन्ह सम एइ अहहिं ॥
पुर-नारि सकल पसारि अंचल बिधिहि बचन सुनावहीं।
ब्याहियहु चारिउ भाइ एहि पुर हम सुमंगल गावहीं ॥

सो• कहहिं परसपर नारि बारिबिलोचन पुलक तन।
सखि सब करब पुरारि पुन्य-पयोनिधि भूप दोउ ३५॥

एहि विधि सकल मनोरथ करहीं * आनँद उमगि उमगि उर भरहीं
जे नृप सीय - स्वयंवर आए * देखि बंधु सब तिन्ह सुख पाए
कहत राम जस विसद विसाला * निज निज भवन गए महिपाला
गए बीति कछु दिन एहि भाँती * प्रमुदित पुरजन सकल बराती
मंगल-मूल लगन दिन आवा * हिम-रितु अगहन-मास-सुहावा
ग्रह तिथि नखत जोग वर वारू * लगनसोधिविधि कीन्ह विचारू
पठइ दीन्हि नारद सन सोई * गनी जनक के गनकन्ह जोई
सुनी सकल लोगन्ह यह बाता * कहहिं जोतिषी आहिं विधाता

दो॰ धेनुधूरि - बेलाविमल सकल सुमंगल-मूल।
विप्रन्ह कहेउ विदेहसन जानि सगुन अनुकूल ॥३११॥

उपरोहितहि कहेउ नरनाहा * अब विलंब कर कारन काहा
सतानंद तब सचिव बोलाए * मंगल सकल साजि सब ल्याए
संख निसान पनव बहु बाजे * मंगल कलस सगुन सुभ साजे
सुभग सुआसिनि गावहिं गीता * करहिं वेद धुनि विप्र पुनीता
लेन चले सादर एहि भाँती * गए जहाँ जनवास बराती
कोसलपति कर देखि समाजू * अति लघु लाग तिन्हहि सुरराजू
भयउ समउ अब धारिय पाऊ * यह सुनि परा निसानहि घाऊ
गुरुहि पूछिकरि कुल विधि राजा * चले संग मुनि-साधु समाजा

दो॰ भाग्य विभव अवधेस कर देखि देव ब्रह्मादि।
लगे सराहन सहस-मुख जानि जनम निजबादि ॥३१२॥

सुरन्ह सुमंगल अवसर जाना * बरषहिं सुमन बजाइ निसाना
सिव ब्रह्मादिक विबुध बरूथा * चढ़े विमानन्हि नाना जूथा
प्रेम-पुलक-तन हृदय उछाहू * चले विलोकन राम - बिआहू

देखि जनकपुर सुर अनुरागे * निज निज लोक सबहिं लघु लागे
चितवहिं चकित बिचित्र बिताना * रचना सकल अलौकिक नाना
नगर नारि नर रूप निधाना * सुघर सुधरम सुसील सुजाना
तिन्हहिं देखि सब सुर-सुरनारी * भये नखत जनु बिधु उँजियारी
बिधिहि भयउ आचरज बिसेखी * निज करनी कछु कतहुँ न देखी

दो॰ सिव समुझाये देव सब जनि आचरज भुलाहु ।
हृदय बिचारहु धीर धरि सिय-रघुबीर-बियाहु ॥३१३॥

जिन्ह कर नाम लेत जग माहीं * सकल अमंगल-मूल नसाहीं
करतल होहिं पदारथ चारी * तेइ सिय राम कहेउ कामारी
एहि बिधि संभु सुरन्ह समुझावा * पुनि आगे बर बसह चलावा
देवन्ह देखे दसरथ जाता * महा मोद मन पुलकित गाता
साधु - समाज संग महिदेवा * जनु तनु धरे करहिं सुख सेवा
सोहत साथ सुभग सुत चारी * जनु अपबरग सकल तनुधारी
मरकत कनक बरन बर जोरी * देखि सुरन्ह भइ प्रीति न थोरी
पुनि रामहिं बिलोकि हिय हरषे * नृपहिं सराहिं सुमन तिन्ह बरषे

दो॰ रामरूप नख - सिख - सुभग बारहिं बार निहारि ।
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि ॥३१४॥

केकि कंठ - दुति स्यामल अंगा * तड़ित बिनिंदक बसन सुरंगा
ब्याह बिभूषन बिबिध बनाए * मंगलमय सब भाँति सुहाए
सरद-बिमल-बिधुबदन सुहावन * नयन नवल - राजीव लजावन
सकल अलौकिक सुंदरताई * कहि न जाइ मनहीं मन भाई
बंधु मनोहर सोहहिं संगा * जात नचावत चपल तुरंगा
राजकुँअर बर बाजि देखावहिं * बंस - प्रसंसक बिरद सुनावहिं

ब्रह्मादि सुरवर विप्र वेष बनाइ कौतुक देखहीं।
अवलोकि रघुकुल-कमल-रवि-छवि सुफल जीवन लेखहीं॥

दो० नाऊ बारी भाट नट राम - निछावरि पाइ।
मुदित असीसहिं नाइ सिर हरष न हृदय समाइ॥३१८॥

मिले जनक दसरथ अति प्रीती * करि बैदिक लौकिक सब रीती
मिलत महा दोउ राज बिराजे * उपमा खोजि खोजि कबि लाजे
लही न कतहुँ हारि हिय मानी * इन्ह सम इइ उपमा उर आनी
सामध देखि देव अनुरागे * सुमन बरषि जस गावन लागे
जग बिरंचि उपजावा जब ते * देखे सुने ब्याह बहु तब ते
सकल भाँति सम साज समाजू * सम समधी देखे हम आजू
देव-गिरा सुनि सुंदर साँची * प्रीति अलौकिक दुहु दिसि माँची
देत पाँवड़े अरघ सुहाए * सादर जनक मंडपहिं ल्याए

छं० मंडप बिलोकि बिचित्र रचना रुचिरता मुनिमन हरे।
निज पानि जनक सुजान सब कहँ आनि सिंहासन धरे॥
कुल-इष्ट-सरिस बसिष्ठ पूजे बिनय करि आसिष लही।
कौसिकहिं पूजत परमप्रीति कि रीति तौ न परइ कही॥

दो० बामदेव आदिक रिषय पूजे मुदित महीस।
दिये दिब्य आसन सबहि सबसन लही असीस॥३१९॥

बहुरि कीन्ह कोसलपति पूजा * जानि ईस - सम भाव न दूजा
कीन्हि जोरि कर बिनय बड़ाई * कहि निज भाग्य बिभव बहुताई
पूजे भूपति सकल बराती * समधी-सम सादर सब भाँती
आसन उचित दिए सब काहू * कहउँ काह मुख एक उछाहू
सकल बरात जनक सनमानी * दान मान बिनती बर बानी

बिधि हरि हर दिसिपति दिनराऊ * जे जानहिं रघुबीर - प्रभाऊ
कपट बिप्र - बर बेष बनाए * कौतुक देखहिं अति सचुपाए
पूजे जनक देव - सम जाने * दिए सुआसन बिनु पहिचाने

छं॰ पहिचानि को केहि जान सबहिं अपानसुधि भोरी भई
आनंदकंद बिलोकि दूलहु उभय दिसि आनँदमई ॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दए ।
अवलोकिसील सुभाउ प्रभुकोबिबुधमनप्रमुदितभए ॥

दो॰ रामचंद्र - मुख चंद्र - छबि लोचन चारु चकोर ।
करत पान सादर सकल प्रेम प्रमोद न थोर ॥३२० ॥

समय बिलोकि बसिष्ठ बोलाए * सादर सतानंद मुनि आए
बेगि कुँअरि अब आनहु जाई * चले मुदित मुनि-आयसु पाई
रानी सुनि उपरोहित बानी * प्रमुदित सखिन्ह समेत सयानी
बिप्र-बधू कुल - बृद्ध बोलाईं * करि कुल - रीति सुमंगल गाईं
नारि- बेष जे सुर बर बामा * सकल सुभाय सुंदरी स्यामा
तिन्हहिं देखि सुख पावहिं नारीं * बिनु पहिचानि प्रान तें प्यारी
बार बार सनमानहिं रानी * उमा - रमा-सारद - सम जानी
सीय - सँवारि समाज बनाई * मुदित मंडपहिं चलीं लेवाई

छं॰ चलिल्याइ सीतहि सखी सादर सजिसुमंगलभामिनी ।
नव सप्त साजे सुंदरी सब मत्त - कुंजर - गामिनी ॥
कलगान सुनि मुनिध्यान त्यागहिं कामकोकिललाजहीं
मंजीर नूपुर कलित कंकन ताल-गति बर बाजहीं ॥

दो॰ सोहति बनिता-बृंद महँ सहज सुहावनि सीय ।
छबि-ललना-गन मध्य जनु सुखमा तिय कमनीय ॥३२१॥

राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं * जगमगाति मनि खंभन माहीं
मनहुँ मदन-रति धरि बहु रूपा * देखत राम बिआहु अनूपा
दरस-लालसा सकुच न थोरी * प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी
भये मगन सब देखनिहारे * जनक समान अपान बिसारे
प्रमुदित मुनिन्ह भाँवरी फेरी * नेगि सहित सब रीति निबेरी
राम सीय सिर सेंदुर देहीं * सोभा कहि न जाति बिधि केहीं
अरुन-पराग जलज भरि नीके * ससिहि भूष अहि लोभ अमीके
बहुरि बसिष्ठ दीन्ह अनुसासन * बर दुलहिनि बैठे एक आसन

छं॰ बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दसरथ भए।
तन पुलक पुनिपुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फल नये॥
भरि भुवन रहा उछाह राम बिबाह भा सबही कहा।
केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक यह मंगल महा॥
तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याहसाज सँवारि कै।
माँडवी स्रुतिकीरति उर्मिला कुँअरि लईं हँकारि कै॥
कुस-केतु-कन्या प्रथम जो गुन-सील-सुख-सोभा-मई।
सब रीति प्रीति-समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दई॥
जानकी-लघु-भगिनी सकल-सुंदर-सिरोमनि जानि कै।
सो तनय दीन्ही ब्याहि लखनहि सकल बिधि सनमानि कै॥
जेहि नाम स्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सब-गुन आगरी।
सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप - सील उजागरी॥
अनुरूप बर दुलहिनि परसपर लखि सकुचि हिय हरषहीं।
सब मुदित सुंदरता सराहहिं सुमन सुरगन बरषहीं॥
सुंदरी सुंदर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं।

जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिभुन सहित बिराजहीं॥
दो० मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह-समेत निहारि।
जनु पाये महिपाल-मनि क्रियन्ह सहित फल चारि॥३२७॥
जसि रघुबीर ब्याह बिधि बरनी * सकल कुँअर ब्याहे तेहि करनी
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी * रहा कनक मनि मंडप पूरी
कंबल बसन बिचित्र पटोरे * भाँति भाँति बहुमोल न थोरे
गज रथ तुरग दास अरु दासी * धेनु अलंकृत कामदुहा सी
बस्तु अनेक करिय किमि लेखा * कहि न जाइ जानहिं जिन्ह देखा
लोकपाल अवलोकि सिहाने * लीन्ह अवधपति सब सुख माने
दीन्ह जाचकहिं जो जेहि भावा * उबरा सो जनवासहिं आवा
तब करजोरि जनक मृदुबानी * बोले सब बरात सनमानी
छं० सनमानि सकल बरात आदर दान बिनय बड़ाइ कै।
प्रमुदित महा मुनिबृंद बंदे पूजि प्रेम लड़ाइ कै॥
सिर नाइ देव मनाइ सब सन कहत करसंपुट किए।
सुर साधु चाहत भाव सिंधु कि तोष जल अंजलि दिए॥
करजोरि जनक बहोरि बंधुसमेत कोसलराय सों।
बोले मनोहर बयन सानि सनेह सील सुभाय सों॥
संबंध राजन रावरे हम बड़े अब सब बिधि भये।
एहि राज साज समेत सेवक जानिबी बिनु गथ लये॥
ए दारिका परिचारिका करि पालबी करुनामई।
अपराध छमिबो बोलि पठये बहुत हौं ढीठ्यो दई॥
पुनि भानु-कुल-भूषन सकल-सनमान निधि समधी किए।
कहि जात नहिं बिनती परसपर प्रेम परिपूरन हिए

सुपारकासम सुमन नृपहिं राउ जनवासहिं चले।
दुंदुभी-जय धुनि बेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले॥
तब सखी मंगल-गान करत मुनीस-आयसु पाइ कै।
दूलह दुलहिनिन्ह सहित सुंदर चलीं कोहबर ल्याइ कै॥

दो॰ पुनि पुनि रामहिं चितव सिय सकुचति मन सकुचै न।
हरत मनोहर मीन-छबि प्रेम-पियासे नैन॥ ३२६॥

मास पारायण ११ दिन

स्याम सरीर सुभाय सुहावन • सोभा कोटि मनोज लजावन
जावक जुत पद-कमल सुहाए • मुनि-मन-मधुप रहत जिन्ह छाये
पीत पुनीत मनोहर धोती • हरत बाल-रवि दामिनि-जोती
कल किंकिनि कटिसूत्र मनोहर • बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर
पीत जनेउ महाछबि देई • कर-मुद्रिका चोरि चित लेई
सोहत ब्याह-साज सब साजे • उर आयत भूषन वर राजे
पियर उपरना काखा सोती • दुहुँ आँचरन्हि लगे मनि मोती
नयन-कमल कल कुंडल काना • बदन सकल सौंदर्ज-निधाना
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा • भालतिलक रुचिरता-निवासा
सोहत मौर मनोहर माथे • मंगलमय मुकुता मनि गाथे

छं॰ गाथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं।
पुर-नारि सुर-सुंदरी बरहिं बिलोकि सब तृन तोरहीं॥
मनि बसन भूषन वारि आरति करहिं मंगल गावहीं।
सुर सुमन बरिसहिं सूत मागध बंदि सुजस सुनावहीं॥
कोहबरहिं आने कुँअर कुँअरि सुआसिनिन्ह सुख पाइ कै।
अतिप्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइ कै॥

लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सन सारद कहहिं।
रनिवास हास बिलास-रस-बस जनमको फल सब लहहिं॥
निज-पानि-मनिमहँ देखि प्रतिमूरति सरूप-निधान की।
चालति न भुजबल्ली बिलोकनि बिरह-भय-बस जानकी॥
कौतुक बिनोद-प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अलीं।
बर कुँअरि सुंदर सकल सखी लिवाइ जनवासहि चलीं॥
तेहि समय सुनिय असीस जहँ तहँ नगर नभ आनँद महा।
चिरजियहु जोरी चारु चारिउ मुदित मन सबही कहा॥
जोगीन्द्र सिद्ध मुनीस देव बिलोकि प्रभु दुंदुभि हनी।
चले हरषि बरषि प्रसून निज-निज लोक जयजय जयभनी॥

दो० सहित बधूटिन्ह कुँअर सब तब आए पितु पास।
सोभा मंगल मोद भरि उमँगेउ जनु जनवास॥३२६॥

पुनि जेवनार भई बहु भाँती • पठये जनक बोलाइ बराती।
परत पाँवड़े बसन अनूपा • सुतन्ह समेत गवन किय भूपा॥
सादर सब के पाय पखारे • यथाजोग पीढ़न बैठारे।
धोए जनक अवधपति चरना • सील सनेह जाइ नहिं बरना॥
बहुरि राम पद पंकज धोए • जे हर-हृदय-कमल महँ गोए।
तीनिउ भाइ राम-सम जानी • धोए चरन जनक निज पानी॥
आसन उचित सबहि नृप दीन्हे • बोलि सूपकारी सब लीन्हे।
सादर लगे परन पनवारे • कनक-कील मनि पान सँवारे॥

दो० सूपोदन सुरभी - सरपि सुंदर स्वादु पुनीत।
छन महँ सबके परुसिगे चतुर सुआर बिनीत॥३२७॥

पंच-कवल करि जेवन लागे • गारि गान सुनि अति अनुरागे।

भाँति अनेक परे पकवाने * सुधा-सरिस नहिं जाहिं बखाने
परुसन लगे सुआर सुजाना * बिंजन बिबिध नाम को जाना
चारि भाँति भोजन बिधि गाई * एक एक बिधि बरनि न जाई
छ रस रुचिर बिंजन बहु जाती * एक एक रस अगनित भाँती
जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी * लइ लइ नाम पुरुष अरु नारी
समय सुहावनि गारि बिराजा * हँसत राउ सुनि सहित समाजा
एहि बिधि सबही भोजन कीन्हा * आदर सहित आचमन दीन्हा

दो० देइ पान पूजे जनक दसरथ सहित समाज ।
जनवासेहि गवने मुदित सकल-भूप सिरताज ॥३२८॥

नित नूतन मंगल पुर माहीं * निमिष-सरिसदिनजामिनिजाहीं
बड़े भोर भूपति - मनि जागे * जाचक गुनगन गावन लागे
देखि कुँअर बर बधुन्ह समेता * किमि कहि जात मोद मन जेता
प्रातक्रिया करि गे गुर पाहीं * महा प्रमोद प्रेम मन माहीं
करि प्रनाम पूजा कर जोरी * बोले गिरा अमिय जनु बोरी
तुम्हरी कृपा सुनहु मुनिराजा * भयउँ आजु मैं पूरन काजा
अब सब बिप्र बोलाइ गोसाँई * देहु धेनु सब भाँति बनाई
सुनि गुर करि महिपाल बड़ाई * पुनि पठये मुनि बृंद बोलाई

दो० बामदेव अरु देवरिषि बालमीकि जाबालि ।
आयमुनिबर निकर तब कौसिकादि तपसालि ॥३२९॥

दंड प्रनाम सबहि नृप कीन्हे * पूजि सप्रेम बरासन दीन्हे
चारि लच्छ बर - धेनु मँगाई * काम सुरभि-सम सील सुहाई
सब बिधि सकल अलंकृत कीन्ही * मुदित महीप महिदेवन्ह दीन्ही
करत बिनय बहु बिधि नरनाहू * लहेउँ आजु जग जीवन लाहू

पाइ असीस महीस अनंदा * लिए बोलि पुनि जाचक बृंदा
कनक बसन मनि हय गज स्यंदन * दिये बूझि रुचि रबिकुल-नंदन
चले पढ़त गावत गुन-गाथा * जय जय जय दिनकर-कुल-नाथा
एहि बिधि राम-बिवाह-उछाहू * सकइ न बरनि सहस मुख जाहू
दो० बार बार कौसिकचरन सीस नाइ कह राउ।
यह सब सुख मुनिराज तव कृपा-कटाच्छ-प्रसाउ ३२० ॥
जनक सनेह सील करतूती * भूप सब भाँति सराहत बीती
दिन उठि बिदा अवधपति माँगा * राखहिं जनक सहित अनुरागा
नित नूतन आदर अधिकाई * दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई
नित नव नगर अनंद उछाहू * दसरथ-गवन सुहाइ न काहू
बहुत दिवस बीते एहि भाँती * जनु सनेह-रजु बँधे बराती
कौसिक सतानंद तब जाई * कहा बिदेह नृपहि समुझाई
अब दसरथ कहँ आयसु देहू * जद्यपि छाँडि न सकहु सनेहू
भलेहि नाथ कहि सचिव बोलाए * कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए
दो० अवधनाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाउ।
भये प्रेमबस सचिव सुनि बिप्र सभासद राउ ॥३२१॥
पुरबासी सुनि चलिहि बराता * बूझत बिकल परस्पर बाता
सत्य गवन सुनि सब बिलखाने * मनहुँ साँझ सरसिज सकुचाने
जहँ जहँ आवत बसे बराती * तहँ तहँ सिद्ध चला बहुभाँती
बिबिध भाँति मेवा पकवाना * भोजन-साज न जाइ बखाना
भरि भरि बसह अपार कहारा * पठये जनक अनेक सुआरा
तुरग लाख रथ सहस पचीसा * सकल सँवारे नख अरु सीसा
मत्त सहस दस सिंधुर साजे * जिन्हहि देखि दिसि-कुंजर लाजे

भाँति अनेक परे पकवाने * सुधा-सरिस नहिं जाहिं बखाने
परुसन लगे सुआर सुजाना * बिंजन बिबिध नाम को जाना
चारि भाँति भोजन बिधि गाई * एक एक बिधि बरनि न जाई
छ रस रुचिर बिंजन बहु जाती * एक एक रस अगनित भाँती
जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी * लइ लइ नाम पुरुष अरु नारी
समय सुहावनि गारि बिराजा * हँसत राउ सुनि सहित समाजा
एहि बिधि सबहीं भोजन कीन्हा * आदर सहित आचमन दीन्हा

दो० देइ पान पूजे जनक दसरथ सहित समाज।
जनवासेहि गवने मुदित सकल-भूप सिरताज ॥३२८॥

नित नूतन मंगल पुर माहीं * निमिष-सरिस दिन जामिनि जाहीं
बड़े भोर भूपति - मनि जागे * जाचक गुनगन गावन लागे
देखि कुँअर बर बधुन्ह समेता * किमि कहि जात मोद मन जेता
प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं * महा प्रमोद प्रेम मन माहीं
करि प्रनाम पूजा कर जोरी * बोले गिरा अमिय जनु बोरी
तुम्हरी कृपा सुनहु मुनिराजा * भयउँ आजु मैं पूरन काजा
अब सब बिप्र बोलाइ गोसाईं * देहु धेनु सब भाँति बनाई
सुनि गुरु करि महिपाल बड़ाई * पुनि पठये मुनि बृंद बोलाई

दो० बामदेव अरु देवरिषि बालमीकि जाबालि।
आए मुनिबर निकर तब कौसिकादि तपसालि ॥३२९॥

दंड प्रनाम सबहि नृप कीन्हे * पूजि सप्रेम बरासन दीन्हे
चारि लच्छ बर धेनु मँगाईं * काम सुरभि-सम सील सुहाईं
सब बिधि सकल अलंकृत कीन्हीं * मुदित महीप महिदेवन्ह दीन्हीं
करत बिनय बहु बिधि नरनाहू * लहेउँ आजु जग जीवन लाहू

पाइ असीस महीस अनंदा * लिए बोलि पुनि जाचक बृंदा
कनक बसन मनि हय गय स्यंदन * दिये बूझि रुचि रबिकुल-नंदन
चले पढ़त गावत गुन-गाथा * जय जय जय दिनकर-कुल-नाथा
एहि बिधि राम-बिआह-उछाहू * सकइ न बरनि सहस मुख जाहू
दो० बार बार कौसिकचरन सीस नाइ कह राउ ।
यह सब सुख मुनिराज तव कृपा-कटाच्छ-प्रसाउ॥३३०॥
जनक सनेह सील करतूती * नृप सब भाँति सराहत बिभूती
दिन उठि बिदा अवधपति माँगा * राखहिं जनक सहित अनुरागा
नित नूतन आदर अधिकाई * दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई
नित नव नगर अनंद उछाहू * दसरथ-गवन सुहाइ न काहू
बहुत दिवस बीते एहि भाँती * जनु सनेह-रजु बँधे बराती
कौसिक सतानंद तब जाई * कहा बिदेह नृपहि समुझाई
अब दसरथ कहँ आयसु देहू * जद्यपि छाँड़ि न सकहु सनेहू
भलेहि नाथ कहि सचिव बोलाए * कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए
दो० अवधनाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाउ ।
भये प्रेमबस सचिव सुनि बिप्र सभासद राउ ॥३३१॥
पुरबासी सुनि चलिहि बराता * बूझत बिकल परस्पर बाता
सत्य गवन सुनि सब बिलखाने * मनहुँ साँझ सरसिज सकुचाने
जहँ जहँ आवत बसे बराती * तहँ तहँ सिद्ध चला बहुभाँती
बिबिध भाँति मेवा पकवाना * भोजन-साज न जाइ बखाना
भरि भरि बसह अपार कहारा * पठये जनक अनेक सुआरा
तुरग लाख रथ सहस पचीसा * सकल सँवारे नख अरु सीसा
मत्त सहस दस सिंधुर साजे * जिन्हहिं देखि दिसि-कुंजर लाजे

मानहुँ कीन्ह बिदेहपुर करुना-बिरह निवास ॥३३८॥
सुक सारिका जानकी ज्याए • कनक-पिंजरन्हि राखि पढ़ाए
ब्याकुल कहहिं कहाँ बैदेही • सुनि धीरजु परिहरइ न केही
भये बिकल खग मृग एहि भाँती • मनुज-दसा कैसे कहि जाती
बंधु-समेत जनक तब आए • प्रेम उमगि लोचन जल छाए
सीय बिलोकि धीरता भागी • रहे कहावत परम बिरागी
लीन्हि राय उर लाइ जानकी • मिटी महा मरजाद ज्ञान की
समुझावत सब सचिव सयाने • कीन्ह बिचार अनवसर जाने
बारहिं बार सुता उर लाई • सजि सुंदर पालकी मँगाई
दो० प्रेम-बिबस परिवार सब जानि सुलगन नरेस।
कुँअरि चढ़ाई पालकिन्ह सुमिरे सिद्ध गनेस ॥३३९॥
बहुबिधि भूप सुता समुझाई • नारि धरम कुल-रीति सिखाई
दासी दास दिये बहुतेरे • सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे
सीय चलत ब्याकुल पुरबासी • होहिं सगुन सुभ मंगलरासी
भूसुर सचिव समेत समाजा • संग चले पहुँचावन राजा
समय बिलोकि बाजने बाजे • रथ गज बाजि बरातिन्ह साजे
दसरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे • दान मान परिपूरन कीन्हे
चरन सरोज-धूरि धरि सीसा • मुदित महीपति पाइ असीसा
सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना • मंगल मूल सगुन भये नाना
दो० सुर प्रसून बरषहिं हरषि करहिं अपछरा गान।
चले अवधपति अवधपुर मुदित बजाइ निसान ॥३४०॥
नृप करि बिनय महाजन फेरे • सादर सकल माँगने टेरे
बसन बाजि गज दीन्हे • प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे

बार बार मिलत्राबति माली * फिरे सकल रामहिं उर राखी
बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं * जनक प्रेम-बस फिरन न चहहीं
पुनि कह भूपति बचन सुहाए * फिरिअ महीस दूरि बड़ि आए
राउ बहोरि उतरि भए ठाढ़े * प्रेम - प्रबाह बिलोचन बाढ़े
तब बिदेह बोले कर जोरी * बचन सनेह - सुधा जनु बोरी
करउँ कवन बिधि बिनय बनाई * महाराज मोहि दीन्हि बड़ाई
दो० कोसलपति समधी सजन सनमाने सब भाँति।
मिलनि परसपर बिनय अति प्रीति न हृदय समाति॥३३९॥
मुनि मंडलिहि जनक सिर नावा * आसिरबाद सबहि सन पावा
सादर पुनि भेंटे जामाता * रूप-सील-गुन-निधि सब भ्राता
जोरि पंकरुह पानि सुहाए * बोले बचन प्रेम जनु जाए
राम करउँ केहि भाँति प्रसंसा * मुनि-महेस-मन-मानस हंसा
करहिं जोग जोगी जेहि लागी * कोह मोह ममता मद त्यागी
ब्यापक ब्रह्म अलख अबिनासी * चिदानंद निरगुन गुन रासी
मन समेत जेहि जान न बानी * तरकि न सकहिं सकल अनुमानी
महिमा निगम नेति कहि कहई * जो तिहुँ काल एकरस रहई
दो० नयन-बिषय मो कहुँ भयउ सो समस्त सुख-मूल।
सबइ लाभ जग जीव कहँ भये ईस अनुकूल॥३४१॥
सबहि भाँति मोहि दीन्हि बड़ाई * निजजन जानि लीन्ह अपनाई
होहिं सहस दस सारद सेसा * करहिं कलप कोटिक भरि लेखा
मोर भाग्य राउर गुन गाथा * कहि न सिराहिं सुनहु रघुनाथा
मैं कछु कहउँ एक बल मोरे * तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरे
बार बार माँगउँ कर जोरे * मनु परिहरइ चरन जनि भोरे

रिधि-सिधि संपति नदीं सुहाई * उमगि अवध-अंबुधि कहुँ आई
मनिगन पुर-नर नारि-सुजाती * सुचि अमोल सुंदर सब भाँती
कहि न जाइ कछु नगर-बिभूती * जनु एतनिअ बिरंचि करतूती
सब बिधि सब पुर-लोग सुखारी * रामचंद मुख चंदु निहारी
मुदित मातु सब सखीं सहेली * फलित बिलोकि मनोरथ बेली
राम-रूप-गुन सील सुभाऊ * प्रमुदित होइँ देखि सुनि राऊ

दो॰ सब कें उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु ।
आप अछत जुबराज-पद रामहि देउ नरेसु ॥ १ ॥

एक समय सब सहित समाजा * राजसभाँ रघुराजु बिराजा
सकल-सुकृत-मूरति नरनाहू * राम-सुजसु सुनि अतिहि उछाहू
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषें * लोकप करहिं प्रीति रुख राखें
त्रिभुवन तीनि काल जग माहीं * भूरि भाग दसरथ-सम नाहीं
मंगल-मूल रामु सुत जासू * जो कछु कहिअ थोर सबु तासू
राय सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा * बदनु बिलोकि मुकुटु सम कीन्हा
स्रवन-समीप भए सित केसा * मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा
नृप जुबराजु राम कहुँ देहू * जीवन-जनम लाहु किन लेहू

दो॰ यह बिचारु उर आनि नृप सुदिनु सुअवसरु पाइ ।
प्रेम-पुलकि-तन मुदित-मन गुरहि सुनायउ जाइ ॥ २ ॥

कहइ भुआलु सुनिअ मुनिनायक * भए राम सब बिधि सब लायक
सेवक सचिव सकल पुरबासी * जे हमारे अरि मित्र उदासी
सबहि रामप्रिय जेहि बिधि मोही * प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही
बिप्र सहित परिवार गोसाईं * करहिं छोहु सब रौरेहि नाईं
जे गुर-चरन-रेनु सिर धरहीं * ते जनु सकल बिभव बस करहीं

मोहि सम यह अनुभयउ न दूजे * सब पायउँ रज पावनि पूजे
अब अभिलाष एक मन मोरे * पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू * कहेउ नरेस रजायसु देहू

दो० राजन राउर नाम जस सब अभिमत दातार।
फल अनुगामी महिप-मनि मन अभिलाष तुम्हार ॥ ४ ॥

सब बिधि गुरु प्रसन्न जिय जानी * बोलेउ राउ रहँसि मृदु बानी
नाथ राम करियहिं युवराजू * कहिय कृपा करि करिय समाजू
मोहि अछत यह होइ उछाहू * लहहिं लोग सब लोचन लाहू
प्रभु प्रसाद सिव सबइ निबाहीं * यह लालसा एक मन माहीं
पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ * जेहि न होइ पाछे पछिताऊ
सुनि मुनि दसरथ-बचन सुहाए * मंगल-मोद मूल मन भाए
सुनु नृप जासु बिमुख पछिताहीं * जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं
भयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी * राम पुनीत प्रेम अनुगामी

दो० बेगि बिलंब न करिय नृप साजिय सबइ समाज।
सुदिन सुमंगल तबहिं जब राम होहिं युवराज ॥ ५ ॥

मुदित महीपति मंदिर आए * सेवक सचिव सुमंत्र बोलाए
कहि जयजीव सीस तिन्ह नाए * भूप सुमंगल बचन सुनाए
प्रमुदित मोहि कहेउ गुरु आजू * रामहि राय देहु युवराजू
जौ पाँचहि मत लागइ नीका * करहु हरषि हिय रामहि टीका
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी * अभिमत बिरव परेउ जनु पानी
बिनती सचिव करहिं कर जोरी * जियहु जगतपति बरिस करोरी
जगमंगल भल काज बिचारा * बेगिय नाथ न लाइय बारा
नृपहि मोद सुनि सचिव सुभाषा * बढ़त बौंड़ जनु लही सुसाखा

दो० कहेउ भूप मुनिराज कर जोइ जोइ आयसु होइ।
राम-राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ ॥ ६ ॥
हरषि मुनीस कहेउ मृदु बानी * आनहु सकल सुतीरथ पानी
औषध मूल फूल फल पाना * कहे नाम गनि मंगल नाना
चामर चरम बसन बहु भाँती * रोम पाट पट अगनित जाती
मनि गन मंगल बस्तु अनेका * जो जग जोग भूप - अभिषेका
बेद-बिदित कहि सकल बिधाना * कहेउ रचहु पुर बिबिध बिताना
सफल रसाल पूँगफल केरा * रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेरा
रचहु मंजु मनि चौकइ चारू * कहहु बनावन बेगि बजारू
पूजहु गनपति -गुरु - कुलदेवा * सब बिधि करहु भूमिसुर सेवा
दो० ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग।
सिर धरि मुनिबर-बचन सब निज निज काजहिं लाग ॥ ७ ॥
जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा * सो तेहि काज प्रथम जनु कीन्हा
बिप्र साधु सुर पूजत राजा * * करत रामहित मंगलकाजा
सुनत रामअभिषेक सुहावा * बाज गहागह अवध बधावा
राम - सीय - तन सगुन जनाए * फरकहिं मंगल अंग सुहाए
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं * भरत-आगमन - सूचक अहहीं
भये बहुत दिन अति अवसेरी * सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी
भरतसरिस प्रिय को जग माहीं * इहइ सगुन - फल दूसर नाहीं
रामहिं बंधु सोच दिन राती * अंडन्हि कमठ हृदउ जेहि भाँती
दो० एहि अवसर मंगल परम सुनि रहँसेउ रनिवास।
सोभत लखि बिधु बढ़त जनु बारिधि-बीचि-बिलास ॥ ८ ॥
प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाए * भूषन बसन भूरि तिन्ह पाए

प्रेम पुलकि तन मन अनुरागी * मंगल-कलस सजन सब लागी
चौकइँ चारु सुमित्रा पूरी * मनिमय बिबिध-भाँति अतिरूरी
आनँद-मगन राम-महतारी * दिये दान बहु बिप्र हँकारी
पूजी ग्राम देवि सुर नागा * कहेउ बहोरि देन बलि भागा
जेहि बिधि होइ राम कल्यानू * देहु दया करि सो बरदानू
गावहिं मंगल कोकिल-बयनीं * बिधु-बदनी मृग-सावक-नयनी
दो० राम-राज-अभिषेक सुनि हिय हरषे नर नारि ।
लगे सुमंगल सजन सब बिधि अनुकूल बिचारि ॥ ८ ॥
तब नरनाह बसिष्ठ बोलाए * राम धाम सिख देन पठाए
गुरु-आगमन सुनत रघुनाथा * द्वार आइ पद नायउ माथा
सादर अरघ देइ घर आने * सोरह भाँति पूजि सनमाने
गहे चरन सिय सहित बहोरी * बोले राम कमल-कर जोरी
सेवक-सदन स्वामि आगमनू * मंगल मूल अमंगल-दमनू
तदपि उचित जन बोलि सप्रीती * पठइअ काज नाथ असि नीती
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू * भयउ पुनीत आजु यह गेहू
आयसु होइ सो करउँ गोसाईं * सेवक लहइ स्वामि-सेवकाई
दो० सुनि सनेह-साने बचन मुनि रघुबरहि प्रसंस ।
राम कस न तुम्ह कहहु अस हंस-बंस-अवतंस ॥ १० ॥
बरनि राम-गुन-सील-सुभाऊ * बोले प्रेम-पुलकि मुनिराऊ
भूप सजेउ अभिषेक-समाजू * चाहत देन तुम्हहिं जुबराजू
राम करहु सब संजम आजू * जौं बिधि कुसल निबाहइ काजू
गुरु सिख देइ राय पहिं गयऊ * राम हृदय अस बिसमय भयऊ
जनमे एक संग सब भाई * भोजन सयन केलि-लरिकाई

सुदिन सुमंगल दायक सोई • तोर कहा फुर जेहि दिन होई
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई • यह दिनकर-कुल-रीति सुहाई
राम-तिलक जौ साँचेहु काली • देउँ माँगु मन-भावत आली
कौसिल्या - सम सब महतारी • रामहि सहज सुभाय पियारी
मो पर करहिं सनेह बिसेखी • मैं करि प्रीति परीक्षा देखी
जौं बिधि जनम देइ करि छोहू • होहु राम सिय पूत पतोहू
प्रान तें अधिक राम प्रिय मोरें • तिन्हके तिलक छोभ कस तोरें
दो० भरतसपथ तोहि सत्य कहु परिहरि कपट दुराउ।
हरष समय बिसमउ करसि कारन मोहि सुनाउ॥१५॥
एकहिं बार आस सब पूजी • अब कछु कहब जीभ करि दूजी
फोरइ जोग कपार अभागा • भलेउ कहत दुख रउरेहि लागा
कहहिं झूठि फुरि बात बनाई • ते प्रिय तुम्हहि करुइ मैं माई
हमहुँ कहब अब ठकुर सोहाती • नाहिं त मौन रहब दिनराती
करि कुरूप बिधि परबस कीन्हा • बवासो लुनिअ लहिअ जो दीन्हा
कोउ नृप होउ हमहि का हानी • चेरि छाड़ि अब होब कि रानी
जारइ जोग सुभाउ हमारा • अनभल देखि न जाइ तुम्हारा
तातें कछुक बात अनुसारी • छमिय देबि बड़ि चूक हमारी
दो० गूढ़-कपट प्रिय-बचन सुनि तीय-अधर-बुधि रानि।
सुर-माया-बस बैरिनिहि सुहृद जानि पतिआनि॥१६॥
सादर पुनि पुनि पूछति ओही • सबरी गान मृगी जनु मोही
तसि मति फिरी अहइ जसि भाबी • रहसी चेरि घात जनु फाबी
तुम्ह पूछहु मैं कहत डेराऊँ • धरेउ मोर घरफोरी नाऊँ
सजि प्रतीति बहु बिधि गढ़ि छोली • अवध साढ़साती तब बोली

प्रिय सियराम कहा तुम्ह रानी * रामहिं तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी
रहा प्रथम अब ते दिन बीते * समउ फिरे रिपु होहिं पिरीते
भानु कमल कुल पोषनिहारा * बिनु जल जारि करइ सोइ छारा
जरि तुम्हारि चह सवति उखारी * रूँधहु करि उपाउ बर बारी

दो॰ तुम्हहिं न सोचु सोहागबल निज बस जानहु राउ।
मन मलीन मुहँ-मीठ नृप राउर सरल सुभाउ ॥१८॥

चतुर गँभीर राम महतारी * बीचु पाइ निज बात सँवारी
पठये भरत भूप ननिअउरे * राम मातु-मत जानब रउरे
सेवहिं सकल सवति मोहि नीके * गरबित भरत-मातु बल पी के
सालु तुम्हारि कौसिलहि माई * कपट चतुर नहिं होइ जनाई
राजहि तुम्ह पर प्रेम बिसेषी * सवति सुभाउ सकइ नहिं देखी
रचि प्रपंच भूपहि अपनाई * राम तिलक-हित लगन धराई
यह कुल उचित राम कहँ टीका * सबहि सोहाइ मोहिं सुठि नीका
आगिलि बात समुझि डर मोही * देउ दैउ फिरि सो फल ओही

दो॰ रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट-प्रबोध।
कहेसि कथा सत सवति कै जेहि बिधि बाढ़ बिरोध ॥१९॥

भावीबस प्रतीति उर आई * पूछ रानि पुनि सपथ देवाई
का पूछहु तुम्ह अबहुँ न जाना * निज हित अनहित पसु पहिचाना
भयउ पाख दिन सजत समाजू * तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू
खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारे * सत्य कहे नहिं दोष हमारे
जौं असत्य कछु कहब बनाई * तौ बिधि देइहि हमहि सजाई
रामहिं तिलक कालि जौं भयऊ * तुम्ह कहँ बिपति बीज बिधि बयऊ
रेख खँचाइ कहउँ बल भाषी * भामिनि भइहु दूध कइ माखी

जौं सुत सहित करहु सेवकाई • तौ घर रहहु न आन उपाई

दो॰ कद्रू बिनतहि दीन्ह दुख तुम्हहिं कौसिला देब ।
भरत बंदिगृह सेइहहिं लखन राम के नेब ॥ २० ॥

कैकयसुता सुनत कटु बानी • कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी
तन पसेउ कदली जिमि काँपी • कुबरी दसन जीभ तब चाँपी
कहि कहि कोटिक कपट कहानी • धीरज धरहु प्रबोधेसि रानी
कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू • जिमि न नवइ फिरि उकठ कुकाठू
फिरा करम प्रिय लागि कुचाली • बकिहि सराहइ मानि मराली
सुनु मंथरा बात फुरि तोरी • दहिनि आँखि नित फरकइ मोरी
दिन प्रति देखउँ राति कुसपने • कहउँ न तोहि मोह बस अपने
काह करउँ सखि सूध सुभाऊ • दाहिनि बाम न जानउँ काऊ

दो॰ अपने चलत न आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह ।
केहि अघ एकहिबार मोहि दैव दुसह दुख दीन्ह ॥ २१ ॥

नैहर जनम भरब बरु जाई • जियत न करबि सवति-सेवकाई
अरिबस दैव जिआवत जाही • मरन नीक तेहि जीव न चाही
दीन बचन कह बहुबिधि रानी • सुनि कुबरी तिय माया ठानी
अस कस कहहु मानि मन ऊना • सुख सोहाग तुम्ह कहँ दिन दूना
जेहि राउर अति अनभल ताका • सोइ पाइहि यह फल परिपाका
जब तें कुमत सुना मैं स्वामिनि • भूख न बासर नींद न जामिनि
पूछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची • भरत भुआल होहिं यह साँची
भामिनि करहु त कहउँ उपाऊ • है तुम्हरी सेवा बस राऊ

दो॰ परउँ कूप तुअ बचन पर सकउँ पूत पति त्यागि ।
कहसि मोर दुख देखि बड़ कस न करब हित लागि ॥ २२ ॥

कुबरी करि कबुली कैकेई * कपट छुरी उर पाहन टेई
लखइ न रानि निकट दुख कैसे * चरइ हरित तृन बलि-पशु जैसे
सुनत बात मृदु अंत कठोरी * देति मनहुँ मधु माहुर घोरी
कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं * स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पाहीं
दुइ बरदान भूप सन थाती * माँगहु आजु जुड़ावहु छाती
सुतहि राज रामहि बनबासू * देहु लेहु सब सवति हुलासू
भूपति राम सपथ जब करई * तब माँगेहु जेहि बचन न टरई
होइ अकाज आजु निसि बीते * बचन मोर प्रिय मानेहु जी ते
दो॰ बड़ कुघात करि पातकिनि कहेसि कोपगृह जाहु।
काज सँवारेहु सजग सब सहसा जनि पतियाहु ॥२१॥
कुबरिहि रानि प्रान प्रिय जानी * बार बार बड़ि बुद्धि बखानी
तोहि सम हितु न मोर संसारा * बहे जात कइ भइसि अधारा
जौं बिधि पुरब मनोरथ काली * करौं तोहि चखपूतरि आली
बहुबिधि चेरिहि आदर देई * कोपभवन गवनी कैकेई
बिपति बीज बरषा रितु चेरी * भुइँ भइ कुमति कैकेई केरी
पाइ कपट जल अंकुर जामा * बर दोउ दल दुख-फल परिनामा
कोप-समाज साजि सब सोई * राज करत निज कुमति बिगोई
राउर नगर कोलाहल होई * यह कुचालि कछु जान न कोई
दो॰ प्रमुदित पुर-नर नारि सब सजहिं सुमंगलचार।
एक प्रबिसहिं एक निर्गमहिं भीर भूप-दरबार ॥२२॥
बालसखा सुनि हिय हरषाहीं * मिलि दस पाँच राम पहिं जाहीं
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिचानी * पूछहिं कुसल-खेम मृदु बानी
फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई * करत परसपर राम बड़ाई

जेहि देखउँ अब नयन भरि भरत राज अभिषेक ॥२९॥

सिबिर मीन बरु बारिबिहीना • मनि बिनु फनिक जियइ दुखदीना
कहउँ सुभाउ न छल मन माहीं • जीवन मोर राम बिनु नाहीं
समुझि देखु जिय प्रिया प्रबीना • जीवन राम दरस आधीना
सुनि मृदु बचन कुमति अति जरई • मनहुँ अनल आहुति घृत परई
कहइ करहु किन कोटि उपाया • इहाँ न लागिहि राउरि माया
देहु कि लेहु अजस करि नाहीं • मोहि न बहुत प्रपंच सुहाहीं
राम साधु तुम्ह साधु सयाने • राम मातु भलि सब पहिचाने
जस कौसिला मोर भल ताका • तस फल उन्हहि देउँ करि साका

दो॰ होत प्रात मुनिबेष धरि जौं न राम बन जाहिं ।
मोर मरन राउर अजस नृप समुझिय मन माहिं ॥३०॥

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी • मानहुँ रोष-तरंगिनि बाढ़ी
पाप पहार प्रगट भइ सोई • भरी क्रोध-जल जाइ न जोई
दोउ बर कूल कठिन हठ धारा • भँवर कूबरी-बचन-प्रचारा
ढाहत भूप रूप तरु मूला • चली बिपति-बारिधि अनुकूला
लखी नरेस बात सब साँची • तियमिस मीचु सीस पर नाची
गहि पद बिनय कीन्हि बैठारी • जनि दिनकर-कुल होसि कुठारी
माँगु माथ अबहीं देउँ तोही • राम बिरह जनि मारसि मोही
राखु राम कहँ जेहि तेहि भाँती • नाहि त जरिहि जनमभरि छाती

दो॰ देखी ब्याधि असाधि नृप परेउ धरनि धुनि माथ ।
कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ ॥३१॥

ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता • करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता
कंठ सूख मुख आव न बानी • जनु पाठीन दीन बिनु पानी

पुनि कह कटु कठोर कैकेई • मनहुँ घाय महुँ माहुर देई
जौं अंतहु अस करतब रहेऊ • माँगु माँगु तुम्ह केहि बल कहेऊ
दुइ कि होहिं एक समय भुआला • हँसब ठठाइ फुलाउब गाला
दानि कहाउब अरु कृपनाई • होइ कि खेम - कुसल रौताई
छाँड़हु बचन कि धीरज धरहू • जनि अबला जिमि करुना करहू
तनु तिय तनय धाम धन धरनी • सत्यसंध कहँ तृनसम बरनी
दो० मरम बचन सुनि राउ कह कहु कछु दोष न तोर।
लागेउ तोहि पिसाच जिमि काल कहावत मोर॥१२॥
चहत न भरत भूपतहि भोरे • बिधि-बसकुमति बसी जिय तोरे
सो सब मोर पाप परिनामू • भयउ कुठाहर जेहि बिधि बामू
सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई • सब गुन धाम राम प्रभुताई
करिहहिं भाइ सकल सेवकाई • होइहि तिहुँ पुर राम बड़ाई
तोर कलंक मोर पछिताऊ • मुयेहु न मिटिहि न जाइहि काऊ
अब तोहि नीक लाग कर सोई • लोचन - ओट बैठु मुहुँ गोई
जब लगि जियउँ कहउँ कर जोरी • तब लगि जनि कछु कहेसि बहोरी
फिरि पछितैहसि अंत अभागी • मारसि गाइ नाहरू लागी
दो० परेउ राउ कहि कोटिबिधि काहे करसि निदान।
कपटसयानिन कहति कछु जागति मनहुँ मसान॥१३॥
राम राम रट बिकल भुआलू • जनु बिनु पंख बिहग बेहालू
हृदय मनाव भोर जनि होई • रामहिं जाइ कहइ जनि कोई
उदउ करहु जनि रबि रघुकुल-गुर • अवध बिलोकि सूल होइहि उर
भूप प्रीति कैकइ कठिनाई • उभय अवधि बिधि रची बनाई
बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा • बीना - बेनु - संख - धुनि द्वारा

पढहिं भाट गुन गावहिं गायक • सुनत नृपहि जनु लागहिं सायक
मंगल सकल सुहाहिं न कैसे • सहगामिनिहि बिभूषन जैसे
तेहि निसि नींद परी नहिं काहू • रामदरस लालसा उछाहू
दो॰ द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रबि देखि।
जागेउ अजहुँ न अवधपति कारन कवन बिसेखि॥३७॥
पछिले पहर भूप नित जागा • आजु हमहिं बड़ अचरज लागा
जाहु सुमंत्र जगावहु जाई • कीजिय काज रजायसु पाई
गये सुमंत्र तब राउर माहीं • देखि भयावन जात डेराहीं
धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा • मानहुँ बिपति बिषाद बसेरा
पूछे कोउ न ऊतर देई • गये जेहि भवन भूप कैकेई
कहि जयजीव बैठ सिर नाई • देखि भूप गति गयउ सुखाई
सोच-बिकल बिबरन महि परेऊ • मानहुँ कमल मूल परिहरेऊ
सचिव सभीत सकइ नहिं पूछी • बोली असुभ - भरी सुभ-छूछी
दो॰ परी न राजहिं नींद निसि हेतु जान जगदीस।
रामराम रटि भोर किय कहइ न मरम महीस॥३८॥
आनहु रामहिं बेगि बोलाई • समाचार तब पूछेहु आई
चलेउ सुमंत्र राय - रुख जानी • लखी कुचालि कीन्हि कछु रानी
सोच-बिकल मग परइ न पाऊ • रामहिं बोलि कहिहि का राऊ
उर धरि धीरज गयउ दुआरे • पूछहिं सकल देखि मनमारे
समाधान करि सो सबही का • गयउ जहाँ दिनकर कुल-टीका
राम सुमंत्रहि आवत देखा • आदर कीन्ह पिता - सम लेखा
निरखि बदन कहि भूप - रजाई • रघुकुल - दीपहिं चलेउ लेवाई
राम कुभाँति सचिव-सँग जाहीं • देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं

दो० जाइ देखि रघुबंस - मनि नरपति निपट कुसाजु ।
सहमि परेउ लखि सिंघिनिहि मनहु बृद्ध गजराजु ॥३९॥
सूखहिं अधर जरइ सब अंगू * मनहुँ दीन मनि - हीन भुअंगू
सरुस समीप दीख कैकेई * मानहुँ मीचु घरी गनि लेई
करुनामय मृदु राम सुभाऊ * प्रथम दीख दुख सुना न काऊ
तदपि धीर धरि समउ बिचारी * पूछी मधुर बचन महतारी
मोहि कहु मातु तात-दुख-कारन * करिय जतन जेहि होइ निवारन
सुनहु राम सब कारन एहू * राजहिं तुम पर बहुत सनेहू
देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना * माँगेउँ जो कछु मोहि सुहाना
सो सुनि भयउ भूप-उर सोचू * छाँड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू
दो० सुत - सनेह इत बचन उत संकट परेउ नरेस ।
सकहु त आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेस ॥४०॥
निधरक बैठि कहइ कटु बानी * सुनत कठिनता अति अकुलानी
जीभ कमान बचन सर नाना * मनहुँ महिप मृदु-लच्छ-समाना
जनु कठोरपन धरे सरीरू * सिखइ धनुष - बिद्या बरबीरू
सब प्रसंग रघुपतिहि सुनाई * बैठि मनहुँ तनु धरि निठुराई
मन मुसुकाइ भानुकुल - भानू * राम सहज आनंद निधानू
बोले बचन बिगत सब दूषन * मृदु मंजुल जनु बाग-बिभूषन
सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी * जो पितु-मातु-बचन-अनुरागी
तनय मातु पितु - तोषनिहारा * दुर्लभ जननि सकल संसारा
दो० मुनिगन मिलन बिसेषि बन सबहि भाँति हितमोर।
तेहि महँ पितु-आयसु बहुरि संमत जननी तोर ॥४१॥
भरत प्रान-प्रिय पावहिं राजू * बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू

जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा ● प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समाजा
सेवहिं अरँडु कलपतरु त्यागी ● परिहरि अमृत लेहिं बिषु माँगी
तेउ न पाइ अस समउ चुकाहीं ● देखु बिचारि मातु मन माहीं
अंब एक दुखु मोहि बिसेषी ● निपट बिकल नरनायकु देखी
थोरिहि बात पितहि दुख भारी ● होति प्रतीति न मोहि महतारी
राउ धीर गुन उदधि अगाधू ● भा मोहि तें कछु बड़ अपराधू
जातें मोहि न कहत कछु राऊ ● मोरि सपथ तोहि कहु सतिभाऊ
दो० सहज सरल रघुबर-बचन कुमति कुटिल करि जान ।
चलइ जोंक जल बक्र-गति जद्यपि सलिलु समान ॥४२॥
रहसी रानि राम रुख पाई ● बोली कपट सनेहु जनाई
सपथ तुम्हार भरत कइ आना ● हेतु न दूसर मैं कछु जाना
तुम्ह अपराध जोग नहिं ताता ● जननी जनक बंधु -सुख दाता
राम सत्य सब जो कछु कहहू ● तुम्ह पितु-मातु-बचन -रत अहहू
पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई ● चौथेंपन जेहिं अजस न होई
तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहिं दीन्हे ● उचित न तासु निरादर कीन्हे
लागहिं कुमुख बचन सुभ कैसे ● मगहँ गयादिक तीरथ जैसे
रामहि मातु बचन सब भाए ● जिमि सुरसरि गत-सलिल सुहाए
दो० गइ मुरुछा रामहि सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह ।
सचिव राम-आगमन कहि बिनय समय सम कीन्ह ॥४३॥
अवनिप अकनि राम पगु धारे ● धरि धीरजु तब नयन उघारे
सचिव सँभारि राउ बैठारे ● चरन परत नृप राम निहारे
लिये सनेह - बिकल उर लाई ● गइ मनि मनहुँ फनिक फिरि पाई
रामहि चितइ रहेउ नरनाहू ● चला बिलोचन बारि प्रबाहू

सोक-बिबस कछु कहइ न पारा * हृदय लगावति बारहिं बारा
बिधिहि मनाव राउ मन माहीं * जेहि रघुनाथ न कानन जाहीं
सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी * बिनती सुनहु सदासिव मोरी
आसुतोष तुम्ह अवढरदानी * आरति हरहु दीन जन जानी
दो० तुम्ह प्रेरक सबके हृदय सो मति रामहि देहु ।
बचन मोर तजि रहहिं घर परिहरि सील सनेहु ॥४४॥
अजस होउ जग सुजस नसाऊ * नरक परउँ बरु सुरपुर जाऊ
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं * लोचन ओट राम जनि होहीं
अस मन गुनइ राउ नहिं बोला * पीपर पात-सरिस मन डोला
रघुपति पितहि प्रेम-बस जानी * पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी
देस काल अवसर अनुसारी * बोले बचन बिनीत बिचारी
तात कहउँ कछु करउँ ढिठाई * अनुचित छमब जानि लरिकाई
अति लघु बात लागि दुख पावा * काहु न मोहि कहि प्रथम जनावा
देखि गोसाँइहि पूछेउँ माता * सुनि प्रसंग भये सीतल गाता
दो० मंगल-समय सनेह-बस सोच परिहरिअ तात ।
आयसु देइअ हरषि हिय कहि पुलके प्रभुगात ॥४५॥
धन्य जनम जगतीतल तासू * पितहि प्रमोद चरित सुनि जासू
चारि पदारथ करतल ताके * प्रिय पितु-मातु प्रान सम जाके
आयसु पालि जनम फल पाई * ऐहउँ बेगिहि होउ रजाई
बिदा मातु सन आवउँ माँगी * चलिहउँ बनहिं बहुरि पग लागी
अस कहि राम गवन तब कीन्हा * भूप सोक बस उतर न दीन्हा
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी * छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी
सुनि भये बिकल सकल नरनारी * बेलि बिटप जिमि देखि दवारि

तेहु कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी॥४९॥
उतर न देइ दुसह रिस रूखी * मृगिन्ह चितव जनु बाघिनि भूखी
ब्याधि असाधि जानि तिन्ह त्यागी * चलीं कहत मतिमंद अभागी
राज करत यह दैव बिगोई * कीन्हेसि अस जस करइ न कोई
एहि बिधि बिलपहिं पुर-नर-नारी * देहिं कुचालिहि कोटिक गारी
जरहिं बिषम-जर लेहिं उसासा * कवनि राम बिनु जीवन-आसा
बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी * जनु जलचरगन सूखत पानी
अति बिषाद-बस लोग लोगाई * गये मातु पहिं राम गोसाईं
मुख प्रसन्न चित-चौगुन चाऊ * मिटा सोच जनि राखै राऊ

दो० नवगयंद रघुबीर-मन राज अलानसमान।
छूट जानि बनगवन सुनि उर अनंद अधिकान॥५०॥

रघुकुल-तिलक जोरि दोउ हाथा * मुदित मातु-पद नायउ माथा
दीन्हि असीस लाइ उर लीन्हे * भूषन-बसन निछावरि कीन्हे
बार बार मुख चुंबति माता * नयन-नेह-जल पुलकित गाता
गोद राखि पुनि हृदय लगाये * स्रवत प्रेम रस पयद सुहाये
प्रेम-प्रमोद न कछु कहि जाई * रंक धनद-पदवी जनु पाई
सादर सुंदर बदन निहारी * बोली मधुर बचन महतारी
कहहु तात जननी बलिहारी * कबहिं लगन मुद-मंगल-कारी
सुकृत सील सुख-सींव सुहाई * जनम-लाभ कइ अवधि अघाई

दो० जेहि चाहत नर नारि सब अतिआरत एहि भाँति।
जिमि चातक चातकि तृषित बृष्टि सरद-रितु स्वाति॥५१॥

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू * जो मन भाव मधुर कछु खाहू
पितु-समीप तब आयेहु भैया * भइ बड़ि बार जाइ बलि मैया

मातु-बचन सुनि अति अनुकूला * जनु सनेहसुरतरु के फूला
सुख-मकरंद भरे श्रिय-मूला * निरखि राम मन-भँवर न भूला
धरम धुरीन धरम गति जानी * कहेउ मातु सन अति मृदु बानी
पिता दीन्ह मोहि कानन राजू * जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू
आयसु देहि मुदित मन माता * जेहि मुद-मंगल कानन जाता
जनि सनेह बस डरपसि भोरे * आनँदु अंब अनुग्रह तोरे
दो० बरस चारि दस बिपिनबसि करि पितु बचन-प्रमान।
आइ पायँ पुनि देखिहउँ मन जनि करसि मलान॥५२॥
बचन बिनीत मधुर रघुबर के * सर-सम लगे मातु-उर करके
सहमि सूखि सुनि सीतल बानी * जिमि जवास परे पावस पानी
कहि न जाइ कछु हृदय बिषादू * मनहुँ मृगी सुनि केहरि-नादू
नयन सजल तन थरथर काँपी * माँजहि खाइ मीन जनु मापी
धरि धीरज-सुत-बदन निहारी * गदगद बचन कहति महतारी
तात पितहि तुम्ह प्रान पियारे * देखि मुदित नित चरित तुम्हारे
राज देन कहँ सुभदिन साधा * कहेउ जान बन केहि अपराधा
तात सुनावहु मोहि निदानू * को दिनकर-कुल भयउ कृसानू
दो० निरखि रामरुख सचिव-सुत कारन कहेउ बुझाइ।
सुनि प्रसंग रहि मूक जिमि दसा बरनि नहिं जाइ॥५३॥
राखि न सकइ न कहि सक जाहू * दुहूँ भाँति उर दारुन दाहू
लिखित सुधाकर गा लिखि राहू * बिधि गति बाम सदा सब काहू
धरम सनेह उभय मति घेरी * भइ गति साँप छुछुंदरि केरी
राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू * धरम जाइ अरु बंधु बिरोधू
कहउँ जान बन तौ बड़ि हानी * संकट-सोच-बिबस भइ रानी

बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी • रामु भरतु दोउ सुत सम जानी
सरल सुभाउ राम - महतारी • बोली बचन धीर धरि भारी
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका • पितु आयसु सब धरमक टीका
दो० राजु देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुख - लेसु।
तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु॥२१॥
जौं केवल पितु आयसु ताता • तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना • तौ कानन सत - अवध - समाना
पितु - बनदेव मातु - बनदेवी • खग-मृग चरन-सरोरुह सेवी
अंतहु उचित नृपहि बनबासू • बय बिलोकि हिय होइ हराँसू
बड़भागी बनु अवध अभागी • जो रघुबंस तिलक तुम्ह त्यागी
जौं सुत कहौं संग मोहि लेहू • तुम्हरे हृदय होइ संदेहू
पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के • प्रान प्रान के जीवन जी के
ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ • मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊँ
दो० यह बिचारि नहिं करउँ हठ झूठ सनेहु बढ़ाइ।
मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ॥२२॥
देव पितर सब तुम्हहि गोसाईं • राखहु पलक नयन की नाईं
अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना • तुम्ह करुनाकर धरम धुरीना
अस बिचारि सोइ करहु उपाई • सबहि जियत जेहि भेंटहु आई
जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ • करि अनाथ जन-परिजन-गाऊँ
सब कर आजु सुकृत फल बीता • भयउ कराल काल बिपरीता
बहु बिधि बिलपि चरन लपटानी • परम अभागिनि आपुहि जानी
दारुन दुसह दाहु उर ब्यापा • बरनि न जाइ बिलाप-कलापा
राम उठाइ मातु उर लाई • कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई

दो० समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ।
जाइ सासु-पद-कमल जुग बंदि बैठि सिर नाइ॥२६॥

दीन्हि असीस सासु मृदुबानी * अति सुकुमारि देखि अकुलानी
बैठि नमित मुख सोचति सीता * रूप-रासि पति प्रेम पुनीता
चलन चहत बन जीवन-नाथू * केहि सुकृती सन होइहि साथू
की तनु-प्रान कि केवल प्राना * बिधि-करतब कछु जाइ न जाना
चारु चरन-नख लेखति धरनी * नूपुर-मुखर मधुर कबि बरनी
मनहुँ प्रेम-बस बिनती करहीं * हमहिं सीय-पद जनि परिहरहीं
मंजु बिलोचन मोचति बारी * बोली देखि राम महतारी
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी * सासु-ससुर-परिजनहिं पियारी

दो० पिता जनक भूपाल-मनि ससुर भानुकुल भानु।
पति रबिकुल-कैरव-बिपिनबिधु गुण-रूप-निधानु॥२०॥

मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई * रूप रासि गुन सील सुहाई
नयन-पुतरि करि प्रीति बढ़ाई * राखेउँ प्रान जानकिहिं लाई
कलपबेलिजिमिबहुबिधिलाली * सींचि सनेह-सलिल प्रतिपाली
फूलत फलत भयउ बिधि बामा * जानि न जाइ काह परिनामा
पलँग-पीठ तजि गोद हिंडोरा * सिय न दीन्ह पग अवनिकठोरा
जिअनमूरिजिमि जोगवत रहऊँ * दीप-बाति नहिं टारन कहऊँ
सोइ सियचलन चहतिबनसाथा * आयसु काह होइ रघुनाथा
चंद किरन रस-रसिक चकोरी * रबि-रुखनयनसकइ किमिजोरी

दो० करि केहरि निसिचर चरहिं दुष्ट जन्तु बन भूरि।
बिष-बाटिका कि सोह सुत सुभग सजीवनि-मूरि॥२८॥

बनहित कोल किरात किसोरी * रची बिरंचि बिषय-सुख-भोरी

नृपसनेह लखि धुनेउ सिर पापिनि दीन्ह कुदाउ ॥७१॥

धीरज धरेउ कुअवसर जानी * सहज सुहृद बोली मृदुबानी
तात तुम्हारि मातु बैदेही * पिता राम सब भाँति सनेही
अवध तहाँ जहँ राम-निवासू * तहँइँ दिवस जहँ भानु प्रकासू
जौं पै सीय-राम बन जाहीं * अवध तुम्हार काज कछु नाहीं
गुर पितु मातु बंधु सुर साईं * सेइअहिं सकल प्रान की नाईं
राम प्रान-प्रिय जीवन जी के * स्वारथ-रहित सखा सबही के
पूजनीय प्रिय परम जहाँ ते * सब मानिअहिं राम के नाते
अस जियँ जानि संग बन जाहू * लेहु तात जग जीवन लाहू

दो० भूरि भागभाजन भयहु मोहि समेत बलि जाउँ ।
जौं तुम्हरे मन छाँड़ि छल कीन्ह राम पद ठाउँ ॥७२॥

पुत्रवती जुबती जग सोई * रघुपति-भगत जासु सुत होई
नतरु बाँझ भलि बादि बिआनी * राम बिमुख सुत तें हित हानी
तुम्हरेहिं भाग राम बन जाहीं * दूसर हेतु तात कछु नाहीं
सकल सुकृत कर बड़ फल एहू * राम-सीय पद सहज सनेहू
राग रोष इरिषा मद मोहू * जनि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू
सकल प्रकार बिकार बिहाई * मन क्रम बचन करेहु सेवकाई
तुम्ह कहुँ बन सब भाँति सुपासू * सँग पितु मातु राम सिय जासू
जेहिं न राम बन लहहिं कलेसू * सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू

छं० उपदेस यह जेहि तात तुम्हरे राम-सिय सुख पावहीं ।
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं ॥
तुलसी सुतहि सिख देइ आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई ।
रति होउ अबिरल अमल सिय-रघुबीर-पद नित नित नई ॥

सो० मातु चरन सिर नाइ चले तुरत संकित हृदय ।
बागुर विषम तोराइ मनहुँ भाग मृग भाग-बस ॥३॥

गये लखन जहँ जानकिनाथू * भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू
बंदि राम सिय चरन सुहाए * चले संग नृपमंदिर आए
कहहिं परसपर पुर-नर-नारी * भलि बनाइ बिधि बात बिगारी
तन कृस मन दुख बदन मलीने * बिकल मनहुँ माखी मधु छीने
कर मीजहिं सिर धुनि पछिताहीं * जनु बिन पंख बिहँग अकुलाहीं
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा * बरनि न जाइ बिषाद अपारा
सचिव उठाइ राउ बैठारे * कहि प्रिय बचन राम पग धारे
सिय-समेत दोउ तनय निहारी * ब्याकुल भयउ भूमिपति भारी

दो० सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अकुलाइ ।
बारहिं बार सनेह-बस राउ लेइ उर लाइ ॥ ७६ ॥

सकइ न बोलि बिकल नरनाहू * सोक-जनित उर दारुन दाहू
नाइ सीस पद अति अनुरागा * उठि रघुबीर बिदा तब माँगा
पितु असीस आयसु मोहि दीजै * हरषसमय बिसमउ कत कीजै
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू * जस जग जाइ होइ अपबादू
सुनि सनेह बस उठि नरनाहा * बैठारे रघुपति गहि बाँहा
सुनहु तात तुम कहँ मुनि कहहीं * राम चराचर-नायक अहहीं
सुभ अरु असुभ करम अनुहारी * ईस देइ फल हृदय बिचारी
करइ जो करम पाव फल सोई * निगम नीति असि कह सब कोई

दो० अउर करइ अपराध कोउ अउर पाव फल भोग ।
अति बिचित्र भगवंत-गति को जग जानइ जोग ॥७७॥

राय राम राखन हित लागी * बहुत उपाय किये छल त्यागी

सखी रामरस रहस न जाने * धरम धुरंधर धीर सयाने
तब नृप सीय लाइ उर लीन्ही * अतिहित बहुत भाँति सिख दीन्ही
कहि बन के दुख दुसह सुनाए * सासु ससुर पितु सुख समुझाए
सिय मन राम चरन अनुरागा * घरु न सुगमु बनु बिषमु न लागा
औरउ सबहि सीय समुझाई * कहि कहि बिपिन बिपति अधिकाई
सचिव नारि गुर नारि सयानी * सहित सनेह कहहिं मृदु बानी
तुम्ह कहुँ तौ न दीन्ह बनबासू * करहु जो कहहिं ससुर-गुर-सासू

दो० सिख सीतलि हित मधुर मृदु सुनि सीतहि न सोहानि।
सरद-चंद-चंदनि लगत जनु चकई अकुलानि ॥७८॥

सीय सकुचबस उतरु न देई * सो सुनि तमकि उठी कैकेई
मुनि-पट-भूषन भाजन आनी * आगे धरि बोली मृदु बानी
नृपहि प्रानप्रिय तुम्ह रघुबीरा * सील सनेह न छाँड़िहि भीरा
सुकृत सुजस परलोक नसाऊ * तुम्हहिं जान बन कहिहि न काऊ
असबिचारि सोइ करहु जो भावा * राम जननि सिख सुनि सुखपावा
भूपहि बचन बानसम लागे * करहिं न प्रान पयान अभागे
लोग बिकल मुरछित नरनाहू * काह करिअ कछु सूझ न काहू
राम तुरत मुनि बेष बनाई * चले जनक जननिहि सिर नाई

दो० सजि बन - साज समाज सब बनिता - बंधु-समेत।
बंदि बिप्र-गुर-चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत ॥७९॥

निकसि बसिष्ठद्वार भये ठाढ़े * देखे लोग बिरह दव दाढ़े
कहि प्रियबचन सकल समुझाए * बिप्रबृंद रघुबीर बोलाए
गुर सन कहि बरषासन दीन्हे * आदरदान बिनय - बस कीन्हे
जाचक दान मान संतोषे * मीत पुनीत प्रेम परितोषे

दासी दास बोलाइ बहोरी * गुरहिं सौंपि बोले कर जोरी
सब कै सार सँभार गोसाईं * करबि जनक जननी की नाईं
बारहिं बार जोरि जुग पानी * कहत राम सब सन मृदु बानी
सोइ सब भाँति मोर हितकारी * जेहि तें रहइ भुआल सुखारी
दो० मातु सकल मोरे बिरह जेहि न होहिं दुख दीन।
सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब पुरजन परमप्रबीन ॥ ८० ॥
एहि बिधि राम सबहि समुझावा * गुरु-पद-पदुम हरषि सिर नावा
गनपति गौरि गिरीस मनाई * चले असीस पाइ रघुराई
राम चलत अति भयउ बिषादू * सुनि न जाइ पुर आरत नादू
कुसगुन लंक अवध अति सोकू * हरष-बिषाद - बिबस सुरलोकू
गइ मुरछा तब भूपति जागे * बोलि सुमंत्र कहन अस लागे
राम चले बन प्रान न जाहीं * केहि सुख लागि रहत तन माहीं
एहि तें कवन ब्यथा बलवाना * जो दुख पाइ तजहिं तन प्राना
पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू * लै रथ संग सखा तुम्ह जाहू
दो० सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि।
रथ चढ़ाइ देखराइ बन फिरेहु गये दिन चारि ॥ ८१ ॥
जौं नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई * सत्यसंध दृढ़ब्रत रघुराई
तौ तुम्ह बिनय करेहु कर जोरी * फेरिअ प्रभु मिथिलेस - किसोरी
जब सिय कानन देखि डेराई * कहेहु मोर सिख अवसर पाई
सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू * पुत्रि फिरिअ बन बहुत कलेसू
पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी * रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी
एहि बिधि करेहु उपाय कदंबा * फिरइ त होइ प्रान - अवलंबा
नाहिं त मोर मरन परिनामा * कछु न बसाइ भये बिधि बामा

असकहि मुरछि परा महि राऊ * राम लखन सिय आनि देखाऊ
दो० पाइ रजायसु नाय सिर रथ अतिबेग बनाइ।
गयउ जहाँ बाहेर नगर सीय सहित दोउ भाइ ॥८०॥
तब सुमंत्र नृप - बचन सुनाए * करि बिनती रथ राम चढ़ाए
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई * चले हृदय अवधहि सिर नाई
चलत रामलखि अवध अनाथा * बिकल लोग सब लागे साथा
कृपासिंधु बहुबिधि समुझावहिं * फिरहिं प्रेम बस पुनि फिरि आवहिं
लागति अवध भयावनि भारी * मानहुँ काल - राति अँधियारी
घोर जंतु-सम पुर - नर नारी * डरपहिं एकहिं एक निहारी
घर मसान परिजन जनु भूता * सुत हित मीत मनहुँ जमदूता
बागन्ह बिटप बेलि कुम्हिलाहीं * सरित सरोवर देखि न जाहीं
दो० हय गय कोटिन्ह केलि मृग पुर-पसु चातक-मोर।
पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर ॥८१॥
राम बियोग बिकल सब ठाढ़े * जहँ तहँ मनहुँ चित्रलिखि काढ़े
नगर सफल बन गहबर भारी * खग-मृग बिपुल सकल नरनारी
बिधि कैकेइ किरातिनि कीन्ही * जेइ दवदुसह दसहुँदिसि दीन्ही
सहि न सके रघुबर बिरहागी * चले लोग सब ब्याकुल भागी
सबहिं बिचार कीन्ह मनमाहीं * राम-लखन सिय बिनु सुख नाहीं
जहाँ राम तहँ सबइ समाजू * बिनु रघुबीर अवध नहिं काजू
चले साथ अस मंत्र दृढ़ाई * सुर-दुर्लभ सुख सदन बिहाई
राम-चरन-पंकज प्रिय जिन्हहीं * बिषयभोग बस करहिं कि तिन्हहीं
दो० बालक बृद्ध बिहाइ गृह लगे लोग सब साथ।
तमसा तीर निवास किय प्रथम दिवस रघुनाथ ॥८२॥

रघुपति प्रजा प्रेम - बस देखी * सदय हृदय दुख भयउ बिसेसी
करुनामय रघुनाथ गोसाँई * बेगि पाइअहि पीर पराई
कहि सप्रेम मृदुबचन सुहाए * बहुबिधि राम लोग समुझाए
किए धरम - उपदेस घनेरे * लोग प्रेम बस फिरहिं न फेरे
सील सनेह छाँड़ि नहिं जाई * असमंजस - बस भे रघुराई
लोग सोग-स्रम बस गए सोई * कछुक देव माया मति मोई
जबहिं जाम जुग जामिनि बीती * राम सचिव सन कहेउ सप्रीती
खोज मारि रथ हाँकहु ताता * आन उपाय बनिहि नहिं बाता

दो० राम लखन सिय जान चढ़ि संभुचरन सिर नाइ।
सचिव चलायउ तुरत रथ इत उत खोज दुराइ ॥८३॥

जागे सकल लोग भये भोरू * गे रघुनाथ भयउ अतिसोरू
रथकर खोज कतहुँ नहिं पावहिं * राम राम कहि चहुँदिसि धावहिं
मनहुँ बारिनिधि बूड़ जहाजू * भयउ बिकल बड़ बनिक-समाजू
एकहिं एक देहिं उपदेसू * तजे राम हम जानि कलेसू
निंदहिं आपु सराहहिं मीना * धिग जीवन रघुबीर - बिहीना
जौं पै प्रियबियोग बिधि कीन्हा * तौ कस मरन न माँगे दीन्हा
एहिबिधि करत प्रलाप-कलापा * आये अवध भरे परितापा
बिषम बियोग न जाइ बखाना * अवधिआस सब राखहिं प्राना

दो० राम-दरस-हित नेम ब्रत लगे करन नर नारि।
मनहुँ कोक-कोकी कमल दीन बिहीन तमारि ॥८४॥

सीता-सचिव-सहित दोउ भाई * सृंगबेरपुर पहुँचे जाई
उतरे राम देवसरि देखी * कीन्ह दंडवत हरष बिसेखी
लखन सचिव सिय किये प्रनामा * सबहिं सहित सुख पायउ रामा।

फिरे सब प्रिय बचन कहि लिये लाइ मन साथ॥११८॥

फिरत नारिनर अति पछिताहीं • दैअहि दोष देहिं मन माहीं
सहित बिषाद परसपर कहहीं • बिधि करतब उलटे सब अहहीं
निपट निरंकुस निठुर निसंकू • जेहि ससि कीन्ह सरुज सकलंकू
रूख कलपतरु सागर खारा • तेहि पठये बन राजकुमारा
जौं पै इन्हहिं दीन्ह बनबासू • कीन्ह बादि बिधि भोग बिलासू
ए बिचरहिं मग बिनु पदत्राना • रचे बादि बिधि बाहन नाना
ए महि परहिं डासि कुस पाता • सुभग सेज कत सृजत बिधाता
तरुबरबास इन्हहिं बिधि दीन्हा • धवल धाम रचि रचि स्रम कीन्हा

दो॰ जौं ए मुनि-पट धर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार।
बिबिध भाँति भूषन बसन बादि किये करतार॥११९॥

जौं ए कंद मूल फल खाहीं • बादि सुधादि असन जग माहीं
एक कहहिं ए सहज सुहाये • आप प्रगट भये बिधि न बनाये
जहँ लगि बेद कही बिधिकरनी • स्रवन नयन मन गोचर बरनी
देखहु खोजि भुवन दसचारी • कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी
इन्हहिं देखि बिधि मन अनुरागा • पटतर जोग बनावइ लागा
कीन्ह बहुत स्रम एक न आये • तेहि इरिषा बन आनि दुराये
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं • आपुहि परम धन्य करि मानहिं
ते पुनि पुन्य-पुंज हम लेखे • जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे

दो॰ एहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिं नयन भरि नीर।
किमि चलिहहिं मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर॥१२०॥

नारि सनेह बिकल बस होहीं • चकई साँझ समय जनु सोहीं
मृदु-पद-कमल कठिन मग जानी • गहबरि हृदय कहहिं बर बानी

परसत मृदुल चरन अरुनारे • सकुचति महि जिमि हृदय हमारे
जौं जगदीस इन्हहि बन दीन्हा • कस न सुमनमय मारग कीन्हा
जौं माँगा पाइय बिधि पाहीं • ए रखिअहिं सखि आँखिन्ह माहीं
जे नर नारि न अवसर आये • तिन्ह सिय राम न देखन पाये
सुनि सरूप बूझहिं अकुलाई • अब लगि गये कहाँ लगि भाई
समरथ धाइ बिलोकहिं जाई • प्रमुदित फिरहिं जनम फल पाई

दो• अबला बालक बृद्ध जन कर मीजहिं पछिताहिं।
होहिं प्रेम-बस लोग इमि राम जहाँ जहँ जाहिं॥११८॥

गाँव गाँव अस होइ अनंदू • देखि भानु-कुल-कैरव-चंदू
जे कछु समाचार सुनि पावहिं • ते नृप रानिहि दोष लगावहिं
कहहिं एक अति भल नरनाहू • दीन्ह हमहि जेहि लोचनलाहू
कहहिं परसपर लोग लोगाईं • बातें सरल सनेह सुहाईं
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाये • धन्य सो नगर जहाँ तें आये
धन्य सो देस सैल बन गाऊँ • जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ
सुख पायउ बिरंचि रचि तेही • ए जेहि के सब भाँति सनेही
राम-लषन पथि कथा सुहाई • रही सकल मग कानन छाई

दो• एहि बिधि रघु-कुल-कमल-रबि मग-लोगन्ह सुख देत।
जाहिं चले देखत बिपिन सिय-सौमित्रि-समेत॥११९॥

आगे राम लषन बने पाछें • तापस बेष बिराजत काछें
उभय बीच सिय सोहति कैसे • ब्रह्म-जीव-बिच माया जैसे
बहुरि कहउँ छबि जसि मन बसई • जनु मधु-मदन मध्य रति लसई
उपमा बहुरि कहउँ जिय जोही • जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही
प्रभु-पद-रेख बीच बिच सीता • धरति चरन मग चलति सभीता

सीय-राम पद-अंक बरायें * लखन चलहिं मग दाहिन लायें
राम-लखन-सिय-प्रीति सुहाई * बचन अगोचर किमि कहि जाई
खग मृग मगन देखि छबि होहीं * लिये चोरि चित राम बटोहीं

दो० जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दोउ भाइ।
भव-मग अगम अनंद तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ॥१२०॥

अजहुँ जासु उर सपनेहु काऊ * बसहिं लखन-सिय-राम बटाऊ
राम-धाम-पथ पाइहि सोई * जो पथ पाव कबहुँ मुनि कोई
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी * देखि निकट बट सीतल पानी
तहँ बसि कंद मूल फल खाई * प्रात नहाइ चले रघुराई
देखत बन सर सैल सुहाये * बालमीकि आस्रम प्रभु आये
राम दीख मुनि बास सुहावन * सुंदर गिरि कानन जल पावन
सरनि सरोज बिटप बन फूले * गुंजत मंजु मधुप रस भूले
खग मृग बिपुल कोलाहल करहीं * बिरहित बैर मुदित मन चरहीं

दो० सुचि सुंदर आस्रम निरखि हरषे राजिवनैन।
सुनि रघुबर आगमन मुनि आगे आयउ लेन॥१२१॥

मुनि कहँ राम दंडवत कीन्हा * आसिरबाद बिप्रबर दीन्हा
देखि राम-छबि नयन जुड़ाने * करि सनमान आस्रमहिं आने
मुनिबर अतिथि प्रान प्रिय पाये * कंद मूल फल मधुर मँगाये
सिय सौमित्रि राम फल खाये * तब मुनि आसन दिये सुहाये
बालमीकि मन आनँद भारी * मंगल-मूरति नयन निहारी
तब कर-कमल जोरि रघुराई * बोले बचन स्रवन-सुखदाई
तुम्ह त्रिकाल दरसी मुनिनाथा * बिस्व बदर जिमि तुम्हरे हाथा
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी * जेहि जेहि भाँति दीन्ह बन रानी

दो० तात-बचन पुनि मातु-हित भाइ भरत अस राउ।
मो कहँ दरस तुम्हार प्रभु सब मम पुन्यप्रभाउ॥१२२॥

देखि पाँव मुनिराय तुम्हारे * भये सुकृत सब सुफल हमारे
अब जहँ राउर आयसु होई * मुनि उदबेग न पावइ कोई
मुनि तापस जिन्ह तें दुख लहहीं * ते नरेस बिनु पावक दहहीं
मंगल-मूल बिप्र-परितोषू * दहइ कोटि कुल भूसुर-रोषू
अस जिय जानि कहिअ सोइ ठाऊँ * सिय-सौमित्रि-सहित जहँ जाऊँ
तहँ रचि रुचिरपरन-तृन-साला * बास करउँ कछु काल कृपाला
सहज सरल सुनि रघुबरबानी * साधु साधु बोले मुनि ग्यानी
कस न कहहु अस रघुकुल-केतू * तुम्ह पालक संतत श्रुतिसेतू

छं० श्रुति-सेतु-पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी।
जो सृजति जग पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की॥
जो सहससीस अहीस महि धर लखन सचराचर धनी।
सुरकाज धरि नरराजतनु चले दलन खल-निसिचर अनी॥

सो० राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर।
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह॥१२३॥

जग पेखन तुम्ह देखनिहारे * बिधि-हरि संभु-नचावनिहारे
तेउ न जानहिं मरम तुम्हारा * अउर तुम्हहिं को जाननिहारा
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई * जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई
तुम्हरिहि कृपा तुम्हहिं रघुनंदन * जानहिं भगत भगत-उर-चंदन
चिदानंदमय देह तुम्हारी * बिगत बिकार जान अधिकारी
नरतनु धरेउ संत-सुर-काजा * कहहु करहु जस प्राकृत राजा
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे * जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे

तुम्ह जो कहहु करहु सब साँचा • जस काछिय तस चाहिय नाचा

दो० पूछेहु मोहिं कि रहउँ कहँ मैं पूछत सकुचाउँ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहिं देखावउँ ठाउँ ॥१२३॥

सुनि मुनिबचन प्रेमरस-साने • सकुचि राम मनमहँ मुसुकाने
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी • बानी मधुर अमियरस बोरी
सुनहु राम अब कहउँ निकेता • जहाँ बसहु सिय लखन समेता
जिन्हके स्रवन समुद्रसमाना • कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे • तिन्हके हिय तुम्ह कहँ गृह रूरे
लोचन चातक जिन्ह करि राखे • रहहिं दरस जलधर अभिलाखे
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी • रूपबिंदु - जल होहिं सुखारी
तिन्हके हृदयसदन सुखदायक • बसहु-बंधु-सिय -सह रघुनायक

दो० जस तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु।
मुकुताहल गुनगनचुनइ राम बसहु हिय तासु ॥१२४॥

प्रभुप्रसाद सुचि सुभग सुबासा • सादर जासु लहइ नित नासा
तुम्हहिं निवेदित भोजन करहीं • प्रभुप्रसाद पट भूषन धरहीं
सीस नवहिं सुरगुरुद्विज देखी • प्रीतिसहित करि बिनय बिसेखी
कर नित करहिं रामपद पूजा • रामभरोस हृदय नहिं दूजा
चरन रामतीरथ चलि जाहीं • राम बसहु तिन्हके मन माहीं
मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा • पूजहिं तुम्हहिं सहित परिवारा
तरपन होम करहिं बिधिनाना • बिप्र जेवाँइ देहिं बहुदाना
तुम्हतें अधिक गुरहिं जियजानी • सकल भाय सेवहिं सनमानी

दो० सब करि माँगहिं एक फल राम-चरन - रति होउ।
तिन्हके मनमंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ ॥१२५॥

काम कोह मद मान न मोहा * लोभ न छोभ न राग न द्रोहा
जिन्हके कपट दम नहिं माया * तिन्हके हृदय बसहु रघुराया
सबके प्रिय सब के हितकारी * दुख-सुख-सरिस प्रसंसा गारी
कहहिं सत्य प्रियबचन बिचारी * जागत सोवत सरन तुम्हारी
तुम्हहिं छाँडि गति दूसरि नाहीं * राम बसहु तिन्हके मनमाहीं
जननीसम जानहिं परनारी * धन पराव बिष तें बिष भारी
जे हरषहिं परसंपति देखी * दुखित होहिं परबिपति बिसेखी
जिन्हहिं राम तुम्ह प्रान पियारे * तिन्हके मन सुभ सदन तुम्हारे

दो० स्वामि सखा पितु मातु गुरु जिनके सब तुम्ह तात।
मनमंदिर तिन्हके बसहु सीयसहित दोउ भ्रात ॥१२९॥

अवगुन तजि सबके गुन गहहीं * बिप्र-धेनु हित संकट सहहीं
नीतिनिपुनजिन्हकइ जगलीका * घर तुम्हार तिन्ह कर मन नीका
गुन तुम्हार समुझइ निजदोसा * जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा
रामभगत प्रिय लागहिं जेही * तेहि उर बसहु सहित बैदेही
जाति पाँति धन धरम बड़ाई * प्रिय परिवार सदन सुखदाई
सब तजि तुम्हहिं रहइ उरलाई * तेहि के हृदय रहहु रघुराई
सरग नरक अपबरग समाना * जहँ तहँ देख धरे धनुबाना
करम-बचन-मन राउर चेरा * राम करहु तेहि के उर डेरा

दो० जाहि न चाहिय कबहुँ कछु तुम्हसन सहज सनेह।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निजगेह ॥१३०॥

एहिबिधि मुनिवर भवन देखाये * बचन सप्रेम राम मन भाये
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक * आस्रम कहउँ समय सुखदायक
चित्रकूट गिरि करहु निवासू * तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू

सैल सुहावन कानन चारू * करि-केहरि-मृग बिहँग-बिहारू
नदी पुनीत पुरान बखानी * अत्रिप्रिया निज-तप-बल आनी
सुरसरिधार नाउँ मंदाकिनि * जो सब पातक-पोतक-डाकिनि
अत्रिआदि मुनिबर बहु बसहीं * करहिं जोग जप तप तन कसहीं
चलहु सफल स्रम सब कर करहू * राम देहु गौरव गिरिबरहू
दो॰ चित्रकूट-महिमा अमित कही महामुनि गाइ।
आइ नहाये सरितबर सियसमेत दोउ भाइ॥११८॥
रघुबर कहेउ लखन भल घाटू * करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू
लखन दीख पय उतर करारा * चहुँदिसि फिरेउ धनुषजिमिनारा
नदी पनच-सर सम दम दाना * सकलकलुष कलिसाउज नाना
चित्रकूट जनु अचल अहेरी * चुकइ न घात मार मुठभेरी
अस कहि लखन ठाँव देखरावा * थल बिलोकि रघुबर सुख पावा
रमेउ राममन देवन्ह जाना * चले सहित सुर थपति-प्रधाना
कोल किरात-बेष सब आये * रचे परन-तृन-सदन सुहाये
बरनि न जाहिं मंजु दुइ साला * एक ललित लघु एक बिसाला
दो॰ लखन - जानकी - सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत।
सोह मदन मुनिबेष जनु रति रितु-राज-समेत॥११९॥

मास-पारायण १७ दिन

अमर नाग किंनर दिसिपाला * चित्रकूट आये तेहि काला
राम प्रनाम कीन्ह सब काहू * मुदित देव लहि लोचनलाहू
बरषि सुमन कह देव-समाजू * नाथ सनाथ भये हम आजू
करि बिनती दुख दुसह सुनाये * हरषित निज निज-सदनसिधाये
चित्रकूट रघुनंदन आये * समाचार सुनि सुनि मुनि आये

आवत देखि मुदित मुनिवृन्दा * कीन्ह दण्डवत रघुकुल चन्दा
मुनि रघुबरहिं लाइ उर लेहीं * सुफल होन हित आसिष देहीं
सिय सौमित्रि-राम-छबि देखहिं * साधन सकल सफलकरिलेखहिं

दो॰ जथाजोग सनमानि प्रभु बिदा किय मुनिवृंद ।
करहिं जोग जप जाग तप निज आस्रमनि सुछंद ॥१२०॥

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई * हरषे जनु नवनिधि घर आई
कन्द मूल फल भरि भरि दोना * चले रंक जनु लूटन सोना
तिन्हमहँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता * अपर तिन्हहिं पूछहिंमगजाता
कहत सुनत रघुबीर निकाई * आइ सबन्हि देखे रघुराई
करहिं जोहार भेंट धरि आगे * प्रभुहिं बिलोकहिं अति अनुरागे
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े * पुलक सरीर नयन जल बाढ़े
राम सनेह मगन सब जाने * कहि प्रियबचन सकल सनमाने
प्रभुहिं जोहारि बहोरि बहोरी * बचन बिनीत कहहिं कर जोरी

दो॰ अब हम नाथ सनाथ सब भये देखि प्रभुपाय ।
भाग हमारे आगमन राउर कोसलराय ॥१२१॥

धन्य भूमि बन पंथ पहारा । जहँ जहँ नाथ पाउँ तुम्ह धारा
धन्य बिहँग मृग काननचारी * सफलजनमभये तुम्हहिं निहारी
हम सब धन्य सहित परिवारा * दीख दरस भरि नयन तुम्हारा
कीन्ह बास भल ठाउँ बिचारी * इहाँ सकल रितु रहब सुखारी
हम सब भाँति करबि सेवकाई * करि-केहरि-अहि बाघ बराई
बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा * सब हमार प्रभु पग पग जोहा
जहँ तहँ तुम्हहिं अहेर खेलाउब * सर निरझर जल ठाउँ देखाउब
हम सेवक परिवारसमेता * नाथ न सकुचब आयसु देता

दो० बेदबचन - मुनिमन - अगम ते प्रभु करुनाअयन।
बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक-बयन॥११॥

रामहि केवल प्रेम पियारा * जानि लेउ जो जाननिहारा
राम सकल बनचर तब तोषे * कहि मृदुबचन प्रेम परिपोषे
बिदा किये सिर नाइ सिधाये * प्रभुगुन कहत सुनत घर आये
एहिबिधि सियसमेत दोउ भाई * बसहिं बिपिनसुर मुनि-सुखदाई
जब तें आइ रहे रघुनायक * तब तें भयउ बन मंगलदायक
फूलहिं फलहिं बिटप बिधिनाना * मंजु-बलित-बर-बेलि बिताना
सुर-तरु-सरिस सुभाय सुहाये * मनहुँ बिबुधबन परिहरि आये
गुंज मंजुतर मधुकर श्रेनी * त्रिबिध बयारि बहइ सुखदेनी

दो० नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्क चकोर।
भाँति भाँति बोलहिं बिहँग स्रवनसुखद चितचोर॥१२॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा * बिगतबैर बिचरहिं सब संगा
फिरत अहेर रामछबि देखी * होहिं मुदित मृगबृंद बिसेखी
बिबुधबिपिन जहँ लगि जगमाहीं * देखि रामबन सकल सिहाहीं
सुरसरि सरसइ दिन-कर-कन्या * मेकलसुता गोदावरि धन्या
सब सर सिंधु नदी नद नाना * मंदाकिनि कर करहिं बखाना
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू * मंदर मेरु सकल-सुर बासू
सैल हिमाचल आदिक जेते * चित्रकूट जस गावहिं तेते
बिंधि मुदित मन सुख न समाई * स्रम बिन बिपुल बड़ाई पाई

दो० चित्रकूट के बिहँग मृग बेलि बिटप तृन जाति।
पुन्यपुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिनराति॥१३॥

नयनवंत रघुबरहि बिलोकी * पाइ जनमफल होहिं बिसोकी

रासि परनरज अचर सुखारी * भये परमपद के अधिकारी
ो बन सैल सुभाय सुहावन * मंगलमय अति-पावन-पावन
महिमा कहिअ कवनि बिधि तासु * सुखसागर जहँ कीन्ह निवासु
पयपयोधि तजि अवध बिहाई * जहँ सिय-लखन-राम रहे आई
कहि न सकहिं सुखमा जसि कानन * जौं सत सहस होहिं सहसानन
सो मैं बरनि कहौं बिधि केही * डाबर कमठ कि मंदर लेही
सेवहिं लखन करम-मन-बानी * जाइ न सील सनेह बखानी
दो॰ छिनु छिनु लखि सिय-राम-पद जानि आपु पर नेहु।
करत न सपनेहुँ लखन चित बंधु मातु-पितु-गेहु॥१३९॥
रामसंग सिय रहति सुखारी * पुर-परिजन-गृह-सुरति बिसारी
छिनुछिनुपिय-बिधुबदननिहारी * प्रमुदित मनहुँ चकोर-कुमारी
नाहनेहु नित बढ़त बिलोकी * हरषितरहति दिवस जिमि कोकी
सियमन रामचरन अनुरागा * अवध-सहस-सम बनप्रिय लागा
परनकुटी प्रिय प्रियतम संगा * प्रिय परिवार कुरंग बिहंगा
सासससुर सम मुनितिय मुनिबर * असन अमिय सम कंद मूल फर
नाथसाथ साथरी सुहाई * मयन-सयन-सय-सम सुखदाई
लोकप होहिं बिलोकत जासु * तेहिकि मोहिसक बिषय-बिलासु
दो॰ सुमिरत रामहिं तजहिं जन तृनसम बिषय-बिलासु।
रामप्रिया जगजननि सिय कछु न आचरजु तासु॥१४०॥
सीयलखन जेहिबिधि सुखलहहीं * सोइ रघुनाथ करहिं सोइ कहहीं
कहहिं पुरातन कथा कहानी * सुनहिं लखन सिय अतिसुखमानी
जब जब राम अवध-सुधि करहीं * तब तब बारि बिलोचन भरहीं
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई * भरत-सनेह सील सेवकाई

पुछिहहिं दीन दुखित सब माता * कहब काह मैं तिन्हहिं बिधाता
पूँछिहि जबहिं लखन-महतारी * कहिहउँ कवन सँदेस सुखारी
रामजननि जब आइहि धाई * सुमिरि बच्छ जिमि धेनु लवाई
पूछत उतर देब मैं तेही * गे बन राम लखन बैदेही
जोइ पुछिहि तेहि ऊतर देबा * जाइ अवध अब येहु सुख लेबा
पुछिहि जबहिं राउ दुखदीना * जिवन जासु रघुनाथ अधीना
देहउँ उतर कवन मुँह लाई * आयउँ कुसल कुँअर पहुँचाई
सुनत लखन-सिय-राम-सँदेसू * तृन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू

दो० * हृदय न बिदरेउ पंक जिमि बिछुरत प्रीतम-नीर।
जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि यह जातना-सरीर॥१४१॥

एहि बिधि करत पंथ पछितावा * तमसातीर तुरत रथ आवा
बिदा किये करि बिनय निषादा * फिरे पाँय परि बिकल-बिषादा
पैठत नगर सचिव सकुचाई * जनु मारेसि गुरु-बाम्हन-गाई
बैठि बिटपतर दिवस गँवावा * साँझ समय तब अवसर पावा
अवधप्रबेस कीन्ह अँधियारे * पैठि भवन रथ राखि दुआरे
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाये * भूपद्वार रथ देखन आये
रथ पहिचानि बिकल लखि घोरे * गरहिं गात जिमि आतप ओरे
नगर-नारि-नर ब्याकुल कैसे * निघटत नीर मीनगन जैसे

दो० * सचिव आगमन सुनत सब बिकल भयउ रनिवास।
भवन भयंकर लाग तेहि मानहु प्रेतनिवास॥१४२॥

अति आरति सब पूँछहिं रानी * उतर न आव बिकल भइ बानी
सुनइ न स्रवन नयन नहिं सूझा * कहहु कहाँ नृप तेहि तेहि बूझा
दासिन्ह दीख सचिव-बिकलाई * कौसल्यागृह गईं लेवाई

आइ सुमंत्र दीख कस राजा * अमियरहित जनु चंद बिराजा
आसन-सयन बिभूषन हीना * परेउ भूमितल निपट मलीना
लेइ उसास सोच एहि भाँती * सुरपुर तें जनु खसेउ जजाती
लेत सोच भरि छिन छिन छाती * जनु जरि पंख परेउ संपाती
राम राम कह राम सनेही * पुनि कह राम लखन बैदेही
दो॰ देखि सचिव जय जीव कहि कीन्हेउ दंड प्रनाम ।
सुनत उठेउ ब्याकुल नृपति कहु सुमंत्र कहँ राम॥१४४॥
भूप सुमंत्र लीन्ह उर लाई * बूड़त कछु अधार जनु पाई
सहित सनेह निकट बैठारी * पूछत राउ नयन भरि बारी
रामकुसल कहु सखा सनेही * कहँ रघुनाथ लखन बैदेही
आने फेर कि बनहिं सिधाये * सुनत सचिवलोचन जल छाये
सोक बिकल पुनि पूँछ नरेसू * कहु सिय - राम - लखन -सँदेसू
राम-रूप - गुन सील-सुभाऊ * सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ
राउ सुनाइ दीन्ह बनबासू * सुनि मन भयउ न हरष हरासू
सो सुत बिछुरत गये न प्राना * को पापी बड़ मोहि समाना
दो॰ सखा राम - सिय-लखन जहँ तहाँ मोहि पहुँचाउ ।
नाहिं त चाहत चलन अब प्रान कहउँ सतिभाउ॥१४५॥
पुनि पुनि पूछत मंत्रिहि राऊ * प्रियतम सुअन - सँदेस सुनाऊ
करहि सखा सोइ बेगि उपाऊ * राम-लखन सिय नयन देखाऊ
सचिव धीर धरि कह मृदुबानी * महाराज तुम्ह पंडित ज्ञानी
बीर सुधीर - धुरंधर देवा * साधु समाज सदा तुम्ह सेवा
जनम मरन सब दुख सुख भोगा * हानिलाभप्रिय -मिलन बियोगा
काल करम बस होहिं गोसाईं * बरबस राति दिवस की नाईं

सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं * दोउ सम धीर धरहिं मनमाहीं
धीरज धरहु बिबेक बिचारी * छाँड़िय सोच सकल हितकारी

दो० प्रथम बास तमसा भयउ दूसर सुरसरि-तीर।
न्हाइ रहे जलपान करि सियसमेत दोउ बीर ॥ १४१॥

केवट कीन्हि बहुत सेवकाई * सो जामिनि सिंगरौर गँवाई
होत प्रात बट - छीर मँगावा * जटा मुकुट निज सीस बनावा
रामसखा तब नाव मँगाई * प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई
लखन बान - धनु धरे बनाई * आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई
बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरा * बोले मधुर बचन धरि धीरा
तात प्रनाम तात सन कहेहु * बार बार पद पंकज गहेहु
करबि पाँय परि बिनय बहोरी * तात करिय जनि चिंता मोरी
बन-मग मंगल कुसल हमारे * कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारे

छं० तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं।
प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाँय पुनि फिरि आइहौं॥
जननी सकल परितोषि परि परि पाँय करि बिनती घनी।
तुलसी करेहु सोइ जतन जेहि कुसली रहहिं कोसलधनी॥

सो० गुरु सन कहब सँदेस बार बार पद - पदुम गहि।
करब सोइ उपदेस जेहि न सोच मोहि अवधपति॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी * तात सुनायेहु बिनती मोरी
सोइ सब भाँति मोर हितकारी * जा तें रह नरनाह सुखारी
कहब सँदेस भरत के आये * नीति न तजिय राज पद पाये
पालेहु प्रजहि करम-मन-बानी * सेयेहु मातु सकल सम जानी
ओर निबाहेहु भायप भाई * करि पितु-मातु-सुजन-सेवकाई

तात भाँति तेहि राखब राऊ * सोच मोर जेहि करइ न काऊ
लषन कहे कछु बचन कठोरा * बरजि राम पुनि मोहि निहोरा
बार बार निज सपथ दिवाई * कहबि न तात लषन-लरिकाई
दो॰ कहि प्रनाम कछु कहन लिय सिय भइ सिथिल-सनेह ।
थकित-बचन लोचन-सजल पुलक-पल्लवित देह ॥१४७॥
तेहि अवसर रघुबर रुख पाई * केवट पारहि नाव चलाई
रघुकुल तिलक चले एहि भाँती * देखेउँ ठाढ़ कुलिस धरि छाती
मैं आपन किमि कहउँ कलेसू * जिअत फिरेउँ लेइ राम-सँदेसू
असकहि सचिवबचनरहि गयऊ * हानि-गलानि-सोच -बस भयऊ
सूत - बचन सुनतहि नरनाहू * परेउ धरनि उर दारुन दाहू
तलफत बिषम मोह मन मापा * माँजा मनहुँ मीन कहुँ ब्यापा
करि बिलाप सब रोवहिं रानी * महा बिपति किमि जाइ बखानी
सुनि बिलाप दुखहू दुख लागा * धीरजहू कर धीरज भागा
दो॰ भयउ कोलाहल अवध अति सुनि नृप-राउर सोर।
बिपुलबिहँग-बनपरेउनिसिमानहुँ कुलिसकठोर १४८
प्रान कंठगत भयउ भुआलू * मनिबिहीन जनु ब्याकुलब्यालू
इंद्री सकल बिकल भइँ भारी * जनुसर-सरसिज-बन बिनु बारी
कौसल्या नृप दीख मलाना * रबिकुल-रबि अथयउजियजाना
उर धरि धीर राम महतारी * बोली बचन समय अनुसारी
नाथ समुझि मनकरिअबिचारू * राम - बियोग -पयोधि अपारू
करनधार तुम अवध - जहाजू * चढ़ेउसकल-प्रिय-पथिक-समाजू
धीरज धरिय त पाइय पारू * नाहि त बूड़िहि सब परिवारू
जौंजिय धरिय बिनय पियमोरी * राम-लषन सिय मिलहिं बहोरी

दो॰ प्रियाबचन मृदु सुनत नृप चितयउ आँखि उघारि ।
तलफत मीन मलीन जनु सींचत सीतल बारि॥१४९॥

धरि धीरज उठि बैठि भुआलू • कहु सुमंत्र कहँ राम कृपालू
कहाँ लखन कहँ रामसनेही • कहँ प्रिय पुत्र - बधू बैदेही
बिलपत राउ बिकल बहु भाँती • भइ जुग-सरिस सिराति न राती
तापस- अंध - साप सुधि आई • कौसल्यहि सब कथा सुनाई
भयउ बिकल बरनत इतिहासा • राम-रहित धिग जीवन-आसा
सो तनु राखि करब मैं काहा • जेहि न प्रेम-पन मोर निबाहा
हा रघुनन्दन प्रान पिरीते • तुम्ह बिनु जियत बहुत दिन बीते
हा जानकी लखन हा रघुबर • हा पितु हित चितचातकजलधर

दो॰ राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुबर बिरह राउ गये सुरधाम ॥१५०॥

जियन मरन फल दसरथ पावा • अंड अनेक अमल जस छावा
जियत राम-बिधुबदन निहारा • राम -बिरह करि मरन सँवारा
सोक-बिकल सब रोवहिं रानी • रूप सील बल तेज बखानी
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा • परहिं भूमितल बारहिं बारा
बिलपहिं बिकल दास अरु दासी • घर घर रुदन करहिं पुरबासी
अथयउ आज भानुकुल-भानू • धरम अवधि गुन-रूप निधानू
गारी सकल कैकइहि देहीं • नयनबिहीन कीन्ह जग जेहीं
एहि बिधि बिलपत रैनि बिहानी • आये सकल महामुनि ग्यानी

दो॰ तब बसिष्ठमुनि समयसम कहि अनेक इतिहास ।
सोक नेवारेउ सबहिं कर निज बिग्यान प्रकास ॥१५१॥

तेल नाव भरि नृपतन राखा • दूत बोलाइ बहुरि अस भाखा

चलहु बेगि भरत पहिं जाहू * नृप-सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू
एतनेइ कहेहु भरत सन जाई * गुरु बोलाइ पठयउ दोउ भाई
सुनि मुनि आयसु धावन धाये * चले बेगि बर बाजि लजाये
अनरथ अवध अरंभेउ जब तें * कुसगुन होहिं भरत कहँ तब तें
देखहिं राति भयानक सपना * जागि करहिं कटु कोटि कलपना
बिप्र जेवाँइ देहिं दिन दाना * सिव-अभिषेक करहिं बिधि नाना
माँगहिं हृदय महेस मनाई * कुसल मातु पितु परिजन भाई
दो० एहि बिधि सोचत भरत मन धावन पहुँचे आइ ।
गुरु अनुसासन श्रवन सुनि चले गनेस मनाइ ॥१५२॥
चले समीर बेग हय हाँके * नाँघत सरित सैल बन बाँके
हृदय सोच बड़ कछु न सोहाई * अस जानहिं जिय जाउँ उड़ाई
एक निमेष बरषसम जाई * एहि बिधि भरत नगर नियराई
असगुन होहिं नगर पैठारा * रटहिं कुभाँति कुखेत करारा
खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला * सुनि सुनि होइ भरत-मन सूला
श्रीहत सर सरिता बन बागा * नगर बिसेषि भयावन लागा
खगमृग हय गय जाहिं न जोये * राम बियोग कुरोग बिगोये
नगर-नारि नर निपट दुखारी * मनहुँ सबन्हि सब संपति हारी
दो० पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु गवहिं जोहारहिं जाहिं ।
भरत कुसल पूँछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं ॥१५३॥
हाट बाट नहिं जाहि निहारी * जनु पुर दह दिसि लागि दवारी
आवत सुत सुनि कैकय नंदिनि * हरषी रबि-कुल-जलरुह-चंदिनि
सजि आरती मुदित उठि धाई * द्वारहिं भेंटि भवन लेइ आई
भरत दुखित परिवार निहारा * मानहुँ तुहिन बनज-बन मारा

कैकेई हरषित एहि भाँती * मनहुँ मुदित दव लाइ किराती
सुतहि ससोच देखि मन मारे * पूछति नैहर कुसल हमारे
सकल कुसल कहि भरत सुनाई * पूछी निज-कुल-कुसल भलाई
कहु कहँ तात कहाँ सब माता * कहँ सिय-राम-लखन प्रियभ्राता
दो॰ सुनि सुत-बचन - सनेह-मय कपट-नीर भरि नैन ।
भरत-स्रवन-मन-सूल सम पापिनि बोली बैन॥१५४॥
तात बात मैं सकल सँवारी * भइ मंथरा सहाय बिचारी
कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ * भूपति सुरपति-पुर पगु धारेउ
सुनत भरत भय बिबसबिषादा * जनु सहमेउ करि केहरि - नादा
तात तात हा तात पुकारी * परे भूमि तल ब्याकुल भारी
चलत न देखन पायउँ तोही * तात न रामहि सौंपेहु मोही
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी * कहु पितु-मरन हेतु महतारी
सुनि सुत-बचन कहति कैकेयी * मरम पाँछि जनु माहुर देई
आदिहु तें सब आपनि करनी * कुटिल कठोर मुदित मन बरनी
दो॰ भरतहि बिसरेउ पितु-मरन सुनत राम-बन - गौन ।
हेतु अपनपउ जानि जिय थकित रहे धरि मौन॥१५५॥
बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति * मनहुँ जरे पर लोन लगावति
तात राउ नहिं सोचइ जोगू * बिढ़इ सुकृत जस कीन्हेउ भोगू
जीवत सकल जनम फल पाये * अंत अमरपति - सदन सिधाये
अस अनुमानि सोच परिहरहू * सहित समाज राज पुर करहू
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू * पाके छत जनु लाग अँगारू
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा * पापिनि सबहि भाँति कुल नासा
जौ पै कुरुचि रही अति तोही * जनमत काहे न मारेसि मोही

पेड़ काटि तैं पालउ सींचा * मीन जिअन निति बारि उलीचा

दो० हंस-बंस दसरथ जनक राम-लखन से भाइ।
जननी तू जननी भई बिधि सन कछु न बसाइ ॥१२६॥

जब तैं कुमति कुमत जियठयऊ * खंड खंड होइ हृदय न गयऊ
बर माँगत मन भइ नहिं पीरा * गरि न जीह मुँह परेउ न कीरा
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही * मरनकाल बिधि मतिहरि लीन्ही
बिधिहु न नारिहृदयगति जानी * सकल कपट अघ अवगुन खानी
सरल सुसील धरम - रत राऊ * सो किमि जानइ तीय सुभाऊ
अस को जीव-जंतु जग माहीं * जेहि रघुनाथ प्रान - प्रिय नाहीं
भे अति अहित राम तेउ तोही * को तू अहसि सत्य कहु मोही
जो हसि सो हसि मुँह मसि लाई * आँखि ओट उठि बैठहि जाई

दो० राम बिरोधी - हृदय तें प्रगट कीन्ह बिधि मोहि।
मो समान को पातकी बादि कहउँ कछु तोहि ॥ १२७ ॥

सुनि सत्रुघन मातु कुटिलाई * जरहिं गात रिस कछु न बसाई
तेहि अवसर कुबरी तहँ आई * बसन बिभूषन बिबिध बनाई
लखि रिस भरेउ लखन लघुभाई * बरत अनल घृत आहुति पाई
हुमगि लात तकि कूबर मारा * परि मुँहभरि महि करत पुकारा
कूबर टूटेउ फूट कपारू * दलितदसनमुख रुधिर - प्रचारू
आह दइव मैं काह नसावा * करत नीक फल अनइस पावा
सुनिरिपुहनलखिनखसिख खोटी * लगे घसीटन धरि धरि झोंटी
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई * कौसल्या पहिं गे दोउ भाई

दो० मलिन-बसन बिबरन बिकल कृस सरीर दुख भार।
कनक कलप बर बेलि बन मानहुँ हनी तुसार ॥१२८॥

भरतहि देखि मातु उठि धाई • मुरछित अवनि परी झइँ आई
देखत भरत बिकल भये भारी • परे चरन तनदसा बिसारी
मातु तात कहँ देहि देखाई • कहँ सिय-राम-लखन दोउ भाई
कैकेइ कत जनमी जग माँझा • जौं जनमित भइ काहे न बाँझा
कुल-कलंक जेहि जनमेउ मोही • अपजस-भाजन-प्रियजन द्रोही
को तिभुवन मोहि सरिस अभागी • गति असि तोरि मातु जेहि लागी
पितु सुरपुर बन रघुबर-केतु • मैं केवल सब अनरथ हेतु
धिग मोहि भयउँ बेनु-बन-आगी • दुसह दाह दुख दूषन भागी
दो० मातु भरत के बचन मृदु सुनि पुनि उठी सँभारि।
लिये उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति बारि॥१५९॥
सरल सुभाय माय हिय लाये • अतिहित मनहुँ राम फिरि आये
भेंटेउ बहुरि लखन लघु-भाई • सोक-सनेह न हृदय समाई
देखि सुभाउ कहत सब कोई • राम-मातु अस काहे न होई
माता भरत गोद बैठारे • आँसु पोंछि मृदुबचन उचारे
अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू • कुसमउ समुझि सोक परिहरहू
जनि मानहु हिय हानि गलानी • कालकरमगति अघटित जानी
काहुहि दोस देहु जनि ताता • भा मोहि सबबिधि बामबिधाता
जो एतेहु दुख मोहि जियावा • अजहुँ को जानइ का तेहि भावा
दो० पितुआयसु भूषन बसन तात तजे रघुबीर।
बिसमउ हरष न हृदय कछु पहिरे बलकल चीर॥१६०॥
मुख प्रसन्न मन राग न रोषु • सबकर सब बिधि करि परितोषु
चले बिपिन सुनि सिय सँगलागी • रहइ न राम-चरन-अनुरागी
सुनतहि लखन चले उठि साथा • रहहिं न जतन किये रघुनाथा

तब रघुपति सबही सिरनाई • चले संग सिय अरु लघु भाई
राम-लखन-सिय बनहिं सिधाये • गइउँ न संग न प्रान पठाये
यह सब भा इन्ह आँखिन आगे • तउ न तजा तन जीव अभागे
मोहि न लाज निज नेह निहारी • राम-सरिस सुत मैं महतारी
जियइ मरइ भल भूपति जाना • मोर हृदय सत-कुलिस-समाना
दो• कौसल्या के बचन सुनि भरत सहित रनिवास ।
ब्याकुल बिलपत राजगृह मानहुँ सोकनिवास ॥१६१॥
बिलपहिं बिकल भरत दोउ भाई • कौसल्या लिये हृदय लगाई
भाँति अनेक भरत समुझाये • कहि बिवेकमय बचन सुनाये
भरतहु मातु सकल समुझाईं • कहि पुरान-श्रुति कथा सुहाईं
छलबिहीन सुचि सरल सुबानी • बोले भरत जोरि जुगपानी
जे अघ मातु पिता-सुत मारे • गाइ गोठ महिसुर-पुर जारे
जे अघ तिय-बालक-बध कीन्हे • मीत महीपति माहुर दीन्हे
जे पातक उपपातक अहहीं • करम बचन मनभव कविकहहीं
ते पातक मोहि होहु बिधाता • जौ यहु होइ मोर मत माता
दो• जे परिहरि हरि-हरचरन भजहिं भूत-गन घोर ।
तिन्हकइगतिमोहि देउबिधि जौ जननीमतमोर ॥१६२॥
बेचहिं बेद धरम दुहि लेहीं • पिसुन पराय पाप कहि देहीं
कपटी कुटिल कलह-प्रिय क्रोधी • बेद बिदूषक बिस्व बिरोधी
लोभी लंपट लोलुप चारा • जे ताकहिं पर धन पर दारा
पावउँ मैं तिन्हकै गति घोरा • जौ जननी यह संमत मोरा
जे नहिं साधु-संग अनुरागे • परमारथ-पथ बिमुख अभागे
जे न भजहिं हरि नर-तन पाई • जिन्हहिं न हरिहरसुजस सुहाई

तजि श्रुति पथ बाम-पथ चलहीं • बंचक बिरचि बेष जग छलहीं
तिन्ह कइ गति मोहि संकर देऊ • जननी जौं यह जानउँ भेऊ

दो० मातु भरत के बचन सुनि साँचे सरल सुभाय ।
कहति रामप्रिय तात तुम्ह सदा बचन मन काय ॥१६८॥

राम प्रान ते प्रान तुम्हारे • तुम रघुपतिहिं प्रान ते प्यारे
बिधु बिष चवइ स्रवइ हिम आगी • होइ बारिचर बारि बिरागी
भये ज्ञान बरु मिटइ न मोहू • तुम्ह रामहिं प्रतिकूल न होहू
मत तुम्हार यह जो जग कहहीं • सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं
अस कहि मातु भरत हिय लाये • थन पय स्रवहिं नयन जल छाये
करत बिलाप बहुत एहि भाँती • बैठेहि बीति गई सब राती
बामदेव बसिष्ठ तब आये • सचिव महाजन सकल बोलाये
मुनि बहु भाँति भरत उपदेसे • कहि परमारथ बचन सुदेसे

दो० तात हृदय धीरज धरहु करहु जो अवसर आज ।
उठे भरत गुरु-बचन सुनि करन कहेउ सब काज ॥१६९॥

नृप-तनु बेद-बिदित अन्हवावा • परम बिचित्र बिमान बनावा
गहि पग भरत मातु सब राखी • रहीं रानि दरसन अभिलाषी
चंदन अगर भार बहु आये • अमित अनेक सुगंध सुहाये
सरजु-तीर रचि चिता बनाई • जनु सुर पुर-सोपान सुहाई
एहि बिधि दाह क्रिया सब कीन्ही • बिधिवत न्हाइ तिलांजलि दीन्ही
सोधि सुमृति सब बेद पुराना • कीन्ह भरत दसगात बिधाना
जहँ जस मुनिबर आयसु दीन्हा • तहँ तस सहस भाँति सब कीन्हा
भये बिसुद्ध दिये सब दाना • धेनु बाजि गज बाहन नाना

दो० सिंहासन भूषण बसन अन्न धरनि धन धाम ।

दिये भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरन काम ॥ १६८ ॥

पितुहित भरतकीन्हिजसि करनी * सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी
सुदिन सोधि मुनिबर तब आये * सचिव महाजन सकल बोलाये
बैठे राजसभाँ सब जाई * पठये बोलि भरत दोउ भाई
भरत बसिष्ठ निकट बैठारे * नीति-धरम-मय बचन उचारे
प्रथम कथा सब मुनिबर बरनी * कैकइ कुटिल कीन्हि जसि करनी
भूप धरमब्रत सत्य सराहा * जेहि तनु परिहरि प्रेम निबाहा
कहत राम-गुन-सील-सुभाऊ * सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ
बहुरि लखन-सिय प्रीति बखानी * सोक-सनेह मगन मुनि ज्ञानी

दो० सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस बिधि हाथ ॥ १६९ ॥

अस बिचारि केहि देइअ दोषू * व्यरथ काहि पर कीजिअ रोषू
तात बिचार करहु मन माहीं * सोच जोग दसरथ नृप नाहीं
सोचिअ बिप्र जो बेद-बिहीना * तजि निज धरम बिषयलयलीना
सोचिअ नृपति जो नीति न जाना * जेहि न प्रजाप्रिय प्रान समाना
सोचिअ बयस कृपन धनवानू * जो न अतिथि-सिव-भगति सुजानू
सोचिअ सूद्र बिप्र अपमानी * मुखर मान-प्रिय ज्ञान गुमानी
सोचिअ पुनि पति-बंचक नारी * कुटिल कलह-प्रिय इच्छाचारी
सोचिअ बटु निजब्रत परिहरई * जो नहिं गुर आयसु अनुसरई

दो० सोचिअ गृही जो मोहबस करइ करम-पथ त्याग ।
सोचिअ जती प्रपंच-रत बिगत बिबेक-बिराग ॥ १७० ॥

बैखानस सोइ सोचन जोगू * तप बिहाइ जेहि भावइ भोगू
सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी * जननि-जनक-गुर-बंधु-बिरोधी

सब बिधि सोचिअ पर अपकारी * निज-तनु-पोषक निरदय भारी
सोचनीय सबही बिधि सोई * जो न छाँड़ि छल हरिजन होई
सोचनीय नहिं कोसलराऊ * भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ
भयउ न अहइ न अब होनिहारा * भूप भरत जस पिता तुम्हारा
बिधि हरिहरसुरपति दिसिनाथा * बरनहिं सब दसरथ-गुन-गाथा

दो० कहहु तात केहि भाँति कोउ करिहि बड़ाई तासु ।
रामलखन तुम्ह सत्रुहन सरिस सुअन सुचि जासु १६८

सब प्रकार भूपति बड़भागी * बादि बिषाद करिअ तेहि लागी
यह सुनिसमुझि सोच परिहरहू * सिर धरि राज रजायसु करहू
राय राज-पद तुम्ह कहँ दीन्हा * पिता-बचन फुर चाहिअ कीन्हा
तजे राम जेहि बचनहिं लागी * तनु परिहरेउ राम - बिरहागी
नृपहिं बचन प्रिय नहिं प्रियप्राना * करहु तात पितुबचन प्रमाना
करहु सीस धरि भूप - रजाई * है तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई
परसुराम पितु अग्या राखी * मारी मातु लोग सब साखी
तनय जजातिहि जौबन दयऊ * पितुअग्या अघ-अजसु न भयऊ

दो० अनुचित उचित बिचार तजि जे पालहिं पितु बयन ।
ते भाजन सुख-सुजस के बसहिं अमरपति-अयन १६९

अवसि नरेस बचन फुर करहू * पालहु प्रजा सोक परिहरहू
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू * तुम्ह कहँ सुकृत सुजस नहिं दोषू
बेद - बिदित संमत सबही का * जेहि पितु देइ सो पावइ टीका
करहु राज परिहरहु गलानी * मानहु मोर बचन हित जानी
सुनि सुख लहब राम बैदेही * अनुचित कहब न पंडित केही
कौसल्यादि सकल महतारी * तेउ प्रजा - सुख होहिं सुखारी

भरत तुम्हार राम कर जानहि • सोसबबिधि तुम्हसनमसमानहि
सौंपेहु राज राम के आये • सेवा करेहु सनेह सुहाये
दो० कीजिय गुरु-आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि ।
रघुपति आये उचित जस तस तब करब बहोरि १७०॥
कौसल्या धरि धीरज कहई • पूत पथ्य गुर आयसु अहई
सो आदरिअ करिअ हितमानी • तजिअ बिषाद काल-गतिजानी
बन रघुपति सुरपुर नरनाहू • तुम्ह एहि भाँति तात कदराहू
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा • तुम्हही सुत सब कहँ अवलंबा
लखि बिधि बाम काल कठिनाई • धीरज धरहु मातु बलि जाई
सिर धरि गुर आयसु अनुसरहू • प्रजा पालि परिजन - दुख हरहू
गुर के बचन सचिव अभिनंदन • सुने भरत हिय हित जनु चंदन
सुनी बहोरि मातु मृदुबानी • सील-सनेह सरल - रससानी
छं० सानी सरल रस मातुबानी सुनि भरत ब्याकुल भये ।
लोचन सरोरुह स्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नये ॥
सो दसा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की ।
तुलसी सराहत सकल सादर सीवँ सहज सनेह की ॥
सो० भरत कमलकर जोरि धीर-धुरंधर धीर धरि ।
बचन अमिय जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहिं ॥

मास पारायण १८ दिन

मोहि उपदेस दीन्ह गुरु नीका • प्रजा सचिव संमत सबही का
मातु उचित धरि आयसु दीन्हा • अवसि सीस धरि चाहउँ कीन्हा
गुर पितु मातु स्वामि हित बानी • सुनि मनमुदित करिअ भलजानी
उचित कि अनुचित किये बिचारू • धरम जाइ सिर पातक भारू

करि सब जतन राखि रखवारे ● राम – मातु पहिं भरत सिधारे

दो० आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान।

कहेउ बनावन पालकी सजन सुखासन जान॥१८०॥

चक्क चक्कि जिमि पुर-नर - नारी ● चहत प्रात उर आरत भारी

जागत सबनिसि भयउ बिहाना ● भरत बुलाये सचिव सुजाना

कहेउ लेहु सब तिलक-समाजू ● बनहिं देव मुनि रामहिं राजू

बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे ● तुरत तुरग रथ नाग सँवारे

अरुंधती अरु अगिनि - समाऊ ● रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ

विप्रबृंद चढ़ि बाहन नाना ● चले सकल तप-तेज निधाना

नगरलोग सब सजिसजि जाना ● चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना

सिबिकासुभग न जाहिं बखानी ● चढ़ि चढ़ि चलत भईं सब रानी

दो० सौंपि नगर सुचि सेवकन सादर सबहिं चलाइ।

सुमिरि राम-सिय-चरन तब चले भरत दोउ भाय॥१८१॥

राम - दरस बस सब नरनारी ● जनु करि करिनि चले तकि बारी

बन सियराम समुझि मन माहीं ● सानुज भरत पयादेहि जाहीं

देखि सनेह लोग अनुरागे ● उतरि चले हय गय रथ त्यागे

जाइ समीप राखि निज डोली ● राम मातु मृदु बानी बोली

तात चढ़हु रथ बलि महतारी ● होइहि प्रिय परिवार दुखारी

तुम्हरे चलत चलिहि सब लोगू ● सकल सोक-कृस नहिं मग जोगू

सिर धरि बचन चरन सिर नाई ● रथ चढ़ि चलत भये दोउ भाई

तमसा प्रथम दिवस करि बासू ● दूसर गोमति - तीर निवासू

दो० पय अहार फल असन एक निसि भोजन एक लोग।

करत रामहित नेम व्रत परिहरि भूषन भोग॥१८२॥

सई तीर बसि चले बिहाने * सृंगबेरपुर सब नियराने
समाचार सब सुने निषादा * हृदय बिचार करइ सबिषादा
कारन कवन भरत बन जाहीं * है कछु कपट भाउ मन माहीं
जौं पै जिय न होति कुटिलाई * तौ कत लीन्हि संग कटकाई
जानहिं सानुज रामहि मारी * करउँ अकंटक राज सुखारी
भरत न राजनीति उर आनी * तब कलंक अब जीवन हानी
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा * रामहि समर न जीतनिहारा
का आचरज भरत अस करहीं * नहिं बिषबेलि अमियफल फरहीं
दो॰ अस बिचारि गुह ज्ञाति सन कहेउ सजग सब होहु।
हथवाँसहु बोरहु तरनि कीजिय घाटारोहु ॥ १८३ ॥
होहु सँजोइल रोकहु घाटा * ठाटहु सकल मरइ के ठाटा
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ * जियत न सुरसरि उतरन देऊँ
समर मरन पुनि सुरसरि तीरा * राम-काज छन-भंग सरीरा
भरत भाइ नृप मैं जन नीचू * बड़े भाग असि पाइय मीचू
स्वामि-काज करिहउँ रन रारी * जस धवलिहउँ भुवन दसचारी
तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरे * दुहूँ हाथ मुद मोदक मोरे
साधु-समाज न जाकर लेखा * राम भगत महँ जासु न रेखा
जाय जियत जग सो महिभारू * जननी-जौबन-बिटप कुठारू
दो॰ बिगत बिषाद निषादपति सबहि बढ़ाइ उछाहु।
सुमिरि राम माँगेउ तुरत तरकस धनुष सनाहु ॥ १८४ ॥
बेगहु भाइहु सजहु सँजोऊ * सुनि रजाइ कदराइ न कोऊ
भलेहि नाथ सब कहहिं सहरषा * एकहि एक बढ़ावहि करषा
चले निषाद जोहारि जोहारी * सूर सकल रन रूचइ रारी

सुमिरि राम पद पंकज पनहीं * भाथी बाँधि चढ़ाइन्हि धनहीं
अँगरी पहिरि कूँड़ि सिर धरहीं * फरसा बाँस, सेल सम करहीं
एक कुसल अति ओड़न खाँड़े * कूदहिं गगन मनहुँ छिति छाँड़े
निज निज साजु समाजु बनाई * गुह राउतहि जोहारे जाई
देखि सुभट सब लायक जाने * लेइ लेइ नाम सकल सनमाने

दो॰ भाइहु लावहु धोख जनि आजु काज बड़ मोहिं।
सुनि सरोष बोले सुभट बीर अधीर न होहिं ॥१८९॥

राम प्रताप नाथ बल तोरे * करहिं कटकु बिनु भट बिनु घोरे
जीवत पाउ न पाछे धरहीं * रुंड मुंड मय मेदिनि करहीं
दीख निषादनाथ भल टोलू * कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू
एतना कहत छींक भइ बाँये * कहेउ सगुनिअन्ह खेत सुहाये
बूढ़ु एक कह सगुन बिचारी * भरतहि मिलिअ न होइहि रारी
रामहि भरत मनावन जाहीं * सगुन कहइ अस बिग्रहु नाहीं
सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा * सहसा करि पछिताहिं बिमूढ़ा
भरत-सुभाउ सील बिनु बूझे * बड़ि हितहानि जानि बिनु जूझे

दो॰ गहहु घाट भट सिमिटि सब लेउँ मरम मिलि जाइ।
बूझि मित्र अरि मध्य गति तस तब करिहउँ आइ ॥१९०॥

लखब सनेह सुभाय सुहाये * बैर प्रीति नहिं दुरइ दुराये
अस कहि भेंट सँजोवन लागे * कंद मूल फल खग मृग माँगे
मीन पीन पाठीन पुराने * भरि भरि भार कहारन्ह आने
मिलन साजु सजि मिलन सिधाये * मंगल मूल सगुन सुभ पाये
देखि दूरि ते कहि निज नामू * कीन्ह मुनीसहि दंड प्रनामू
जानि राम प्रिय दीन्हि असीसा * भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीसा

राम-सखा सुनि स्यन्दन त्यागा • चले उतरि उमगत अनुरागा
गाँव जाति गुह नाँउ सुनाई • कीन्ह जोहार माथ महि लाई
दो॰ करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ।
मनहु लखन सन भेंट भइ प्रेम न हृदय समाइ॥१८७॥
भेंटत भरत ताहि अति प्रीती • लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती
धन्य धन्य धुनि मंगल मूला • सुर सराहि तेहि बरिसहिं फूला
लोक बेद सब भाँतिहि नीचा • जासु छाँह छुइ लेइअ सींचा
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता • मिलत पुलक परिपूरित गाता
राम राम कहि जे जमुहाहीं • तिन्हहिं न पाप-पुंज समुहाहीं
यहि तौ राम लाइ उर लीन्हा • कुलसमेत जग पावन कीन्हा
करमनास जल सुरसरि परई • तेहि को कहहु सीस नहिं धरई
उलटा नाम जपत जग जाना • बालमीकि भये ब्रह्म - समाना
दो॰ स्वपच सबर खस जमन जड़ पाँवर कोल किरात।
राम कहत पावन परम होत भुवन विख्यात॥१८८॥
नहिं अचरज जुगजुग चलिआई • केहि न दीन्ह रघुबीर बड़ाई
राम नाम महिमा सुर कहहीं • सुनि सुनि अवधलोग सुख लहहीं
रामसखहिं मिलि भरत सप्रेमा • पूछी कुसल सुमंगल खेमा।
देखि भरत कर सील सनेहू • भा निषाद तेहि समय बिदेहू।
सकुच सनेह मोद मन बाढ़ा • भरतहिं चितवत एकटक ठाढ़ा
धरि धीरज पद बंदि बहोरी • बिनय-सप्रेम करत कर जोरी।
कुसल - मूल पद पंकज पेखी • मैं तिहुँ काल कुसल निज लेखी
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे • सहित कोटि कुल मंगल मोरे।
दो॰ समुझि मोरि करतूति कुल प्रभु महिमा जिय जोइ।

जो न भजइ रघुबीर-पद जग बिधिबंचित सोइ ॥१८९॥

कपटी कायर कुमति कुजाती * लोक बेद बाहेर सब भाँती
राम कीन्ह आपन जबहीं तें * भयउँ भुवन भूषन तबही तें
देखि प्रीति सुनि बिनय सुहाई * मिलेउ बहोरि भरत-लघु-भाई
कहि निषाद निजनाम सुबानी * सादर सकल जोहारी रानी
जानि लखन-सम देहिं असीसा * जिअहु सुखी सय लाख बरीसा
निरखि निषाद नगर नर-नारी * भये सुखी जनु लखन निहारी
कहहिं लहेउ एहि जीवन-लाहू * भेंटेउ रामभद्र भरि बाहू
सुनि निषाद निजभाग बड़ाई * प्रमुदित मन लै चलेउ लेवाई

दो॰ सनकारे सेवक सकल चले स्वामि - रुख पाइ ।
घर तरु तर सर बाग बन बास बनायन्हि जाइ ॥ १९० ॥

सृंगबेरपुर भरत दीख जब * भे सनेह सब अंग सिथिल तब
सोहत दिये निषादहि लागू * जनु तनु धरे बिनय अनुरागू
एहि बिधि भरत सेन सब संगा * दीखि जाइ जग - पावनि गंगा
रामघाट कहँ कीन्ह प्रनामू * भा मन मगन मिले जनु रामू
करहिं प्रनाम नगर नर नारी * मुदित ब्रह्म मय बारि निहारी
करि मज्जन माँगहिं कर जोरी * रामचंद्र पद प्रीति न थोरी
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू * सकल-सुखद सेवक सुर धेनू
जोरि पानि बर माँगउँ एहू * सीय - राम पद सहज सनेहू

दो॰ एहि बिधि मज्जन भरत करि गुरु-अनुसासन पाइ ।
मातु नहानी जानि सब डेरा चले लवाइ ॥ १९१ ॥

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा * भरत सोध सबही कर लीन्हा
सुर सेवा करि आयसु पाई * राम-मातु पहिं गे दोउ भाई

चरन चाँपि कहि कहि मृदुबानी * जननी सकल भरत सनमानी
भाइहि सौंपि मातु - सेवकाई * आप निषादहि लीन्ह बोलाई
चले सखा कर सों कर जोरे * सिथिल सरीर सनेह न थोरे
पूछत सखहि सो ठाउँ देखाऊ * नेक नयन मन जरनि जुड़ाऊ
जहँ सिय राम लखन निसि सोये * कहत भरे जल लोचन - कोये
भरत-बचन सुनि भयउ बिषादू * तुरत तहाँ लइ गयउ निषादू
दो० जहँ सिंसुपा-पुनीत तरु रघुबर किय बिस्राम ।
अति सनेह सादर भरत कीन्हेउ दंड प्रनाम ॥ १९२ ॥
कुस साथरी निहारि सुहाई * कीन्ह प्रनाम प्रदच्छिन जाई
चरन-रेख रज आँखिन्ह लाई * बनइ न कहत प्रीति अधिकाई
कनक बिंदु दुइ चारिक देखे * राखे सीस सीय सम लेखे
सजल बिलोचन हृदय गलानी * कहत सखा सन बचन सुबानी
श्रीहत सीय-बिरह दुति हीना * जथा अवध नर - नारि मलीना
पिता जनक देउँ पटतर केही * करतल भोग जोग जग जेही
ससुर भानुकुल - भानु भुआलू * जेहि सिहात अमरावति - पालू
प्राननाथ रघुनाथ गोसाँई * जो बड़ होत सो राम बड़ाई
दो० पतिदेवता सुतीयमनि सीय साथरी देखि ।
बिहरत हृदय न हहरि हर पबि तें कठिन बिसेखि ॥ १९३ ॥
लालन जोग लखन लघु लोने * भे न भाइ अस अहहिं न होने
पुरजन प्रिय पितु - मातु दुलारे * सिय रघुबीरहि प्रान - पियारे
मृदुमूरति सुकुमार सुभाऊ * तात बाउ तन लाग न काऊ
ते बन सहहिं बिपति सब भाँती * निदरे कोटिक कुलिस एहि छाती
राम जनमि जग कीन्ह उजागर * रूप सील सुख सब-गुन-सागर

पुरजन परिजन गुरु पितु माता * राम सुभाउ सबहिं सुखदाता
बैरिउ राम बड़ाई करहीं * बोलनि मिलनि बिनय मन हरहीं
सादर कोटि कोटि सत सेसा * करि न सकहिं प्रभु-गुन-गन-लेखा
दो० सुखसरूप रघुबंस-मनि मंगल-मोद निधान।
ते सोवत कुस डासि महि बिधि गति अति बलवान॥२००॥
राम सुना दुख कान न काऊ * जीवन-तरु जिमि जोगवइ राऊ
पलक नयन फनिमनि जेहि भाँती * जोगवहिं जननि सकल दिनराती
ते अब फिरत बिपिन पदचारी * कंद मूल फल-फूल अहारी
धिग कैकेइ अमंगल मूला * भइसि प्रान प्रियतम प्रतिकूला
मैं धिग धिग अघउदधि अभागी * सब उतपात भयउ जेहि लागी
कुल-कलंक करि सृजेउ बिधाता * साईं द्रोह मोहि कीन्ह कुमाता
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू * नाथ करिय कत बादि बिषादू
राम तुम्हहिं प्रिय तुम प्रिय रामहिं * यह निरजोस दोष बिधि बामहिं
छं० बिधि बाम की करनी कठिन जेहि मातु कीन्ही बावरी।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सराहना रावरी॥
तुलसी न तुम्ह सों राम प्रीतम कहत हौं सौंहें किये।
परिनाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये॥
सो० अंतरजामी राम सकुच सप्रेम कृपायतन।
चलिय करिय बिश्राम यह बिचारि दृढ़ आनि मन॥२०१॥
सखा-बचन सुनि उर धरि धीरा * बास चले सुमिरत रघुबीरा
यह सुधि पाइ नगर नर नारी * चले बिलोकन आरत भारी
परदछिना करि करहिं प्रनामा * देहिं कैकइहि खोरि निकामा
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं * बाम बिधातहि दूषन देहीं

एक सराहहिं भरत सनेहू * कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू
निंदहिं आपु सराहि निषादहि * को कहि सकइ बिमोह बिषादहि
एहिबिधि राति लोग सब जागा * भा भिनुसार गुदारा लागा
गुरहि सुनाव चढ़ाइ सुहाईं * नईं नाव सब मातु चढ़ाईं
दंड चारि महँ भा सब पारा * उतरि भरत तब सबहिं सँभारा

दो॰ प्रातक्रिया करि मातु-पद बंदि गुरहि सिरनाइ।
आगे किये निषादगन दीन्हेउ कटकचलाइ ॥१९७॥

कियउ निषादनाथ अगुआईं * मातु पालकी सकल चलाईं
साथ बुलाइ भाइ लघु दीन्हा * बिप्रन सहित गमन गुरु कीन्हा
आपु सुरसरिहिं कीन्ह प्रनामू * सुमिरे लषनसहित सिय रामू
गवने भरत पयादेहि पाये * कोतल संग जाहिं डोरिआये
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा * होइय नाथ अश्व असवारा
राम पयादेहि पाय सिधाये * हम कहँ रथ गज बाजि बनाये
सिर भर जाउँ उचित अस मोरा * सब तें सेवक-धरम कठोरा
देखि भरत-गति सुनि मृदुबानी * सब सेवकगन गरहिं गलानी

दो॰ भरत तीसरे पहर कहँ कीन्ह प्रबेस प्रयाग।
कहत रामसिय रामसिय उमगिउमगि अनुराग ॥१९८॥

झलका झलकत पायन कैसे * पंकज कोस ओस-कन जैसे
भरत पयादेहि आये आजू * भयउ दुखित सुनि सकल समाजू
खबरि लीन्ह सब लोग नहाये * कीन्ह प्रनाम त्रिबेनिहि आये
सबिधि सितासित नीर नहाने * दिये दान महिसुर सनमाने
देखत स्यामल-धवल हलोरे * पुलकि सरीर भरत कर जोरे
सकल-काम-प्रद तीरथ राऊ * बेद-बिदित जग प्रगट प्रभाऊ

माँगउँ भीख त्यागि निज धरमू * आरत काह न करइ कुकरमू
अस जियँ जानि सुजान सुदानी * सफल करहिं जग जाचक बानी
दो० अरथ न धरम न कामरुचि गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति राम-पद यह बरदानु न आन॥२०४॥
जानहु राम कुटिल करि मोही * लोग कहउ गुरु-साहिब-द्रोही
सीता-राम-चरन रति मोरे * अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरे
जलद जनमभरि सुरति बिसारेउ * जाँचत जल पबि पाहन डारेउ
चातक रटनि घटे घटि जाई * बढ़े प्रेम सब भाँति भलाई
कनकहि बान चढ़इ जिमि दाहे * तिमि प्रियतम-पद नेम निबाहे
भरत-बचन सुनि माँझ त्रिबेनी * भइ मृदुबानि सुमंगल-देनी
तात भरत तुम्ह सब बिधि साधू * राम-चरन अनुराग अगाधू
बादि गलानि करहु मन माहीं * तुम्ह सम रामहिं कोउ प्रिय नाहीं
दो० तनु पुलकेउ हिय हरष सुनि बेनि-बचन अनुकूल।
भरत धन्य कहि धन्य सुर हरषित बरषहिं फूल॥२०५॥
प्रमुदित तीरथराज-निवासी * बैखानस बटु गृही उदासी
कहहिं परसपर मिलि दस पाँचा * भरत सनेह सील सुचि साँचा
सुनत राम-गुन-ग्राम सुहाये * भरद्वाज मुनिबर पहिं आये
दंडप्रनाम करत मुनि देखे * मूरतिमंत भाग निज लेखे
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे * दीन्ह असीस कृतारथ कीन्हे
आसन दीन्ह नाइ सिर बैठे * चहत सकुच गृह जनु भजि पैठे
मुनि पूछब कछु यह बड़ सोचू * बोले रिषि लखि सील सँकोचू
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई * बिधिकरतब पर कछु न बसाई
दो० तुम्ह गलानि जिय जनि करहु समुझि मातु करतूति।

तात कैकइहि दोष नहिं गई गिरा मति धूति ॥ १९९ ॥

यहउ कहतभल कहिहि न कोऊ • लोक बेद बुध-संमत दोऊ
तात तुम्हार बिमल जस गाई • पाइहि लोकउ बेद बड़ाई
लोक-बेद समत सब कहई • जेहि पितु देइ राज सो लहई
राउ सत्यब्रत तुम्हहि बोलाई • देत राज सुख धरम बड़ाई
राम-गवन बन अनरथ-मूला • जो सुनि सकल बिस्व भइ सूला
सो भावी बस रानि अयानी • करि कुचालि अंतहु पछितानी
तहँउ तुम्हार अलप अपराधू • कहइ सो अधम अयान असाधू
करेहु राज त तुम्हहि न दोषू • रामहि होत सुनत संतोषू

दो॰ अब अति कीन्हेउ भरत भल तुम्हहि उचित मत एहु ।
सकल सुमंगल-मूल जग रघुबर-चरन सनेहु ॥ २०० ॥

सो तुम्हार धन जीवन प्राना • भूरि-भाग को तुम्हहि समाना
यह तुम्हार आचरज न ताता • दसरथ-सुअन राम प्रिय भ्राता
सुनहु भरत रघुबर मन माहीं • प्रेमपात्र तुम्ह सम कोउ नाहीं
लखन राम सीतहि अति प्रीती • निसि सब तुम्हहि सराहत बीती
जाना मरम नहात प्रयागा • मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा
तुम्ह पर अस सनेह रघुबर के • सुख जीवन जग जस जड़ नरके
यह न अधिक रघुबीर बड़ाई • प्रनत कुटुंब - पाल रघुराई
तुम्ह तउ भरत मोर मत एहू • धरे देह जनु राम सनेहू

दो॰ तुम्ह कहँ भरत कलंक यह हम सब कहँ उपदेस ।
राम-भगति-रससिद्धि-हित भा यह समय गनेस ॥ २०१ ॥

नव बिधु बिमल तात जस तोरा • रघुबर-किंकर-कुमुद चकोरा
उदित सदा अथइहि कबहूँ ना • घटिहि न जग नभ दिनदिन दूना

दो० रामबिरह ब्याकुल भरत सानुज सहित समाज ।
पहुनाई करि हरहु श्रम कहा मुदित मुनिराज ॥२०६॥

रिधिसिधिसिरधरि मुनिबर बानी * बड़भागिनि आपुहि अनुमानी
कहहिं परसपर सिधि-समुदाई * अतुलित अतिथि राम-लघु-भाई
मुनिपद बंदि करिअ सोइ आजू * होइ सुखी सब राज समाजू
असकहिं रचेउ रुचिर गृह नाना * जेहि बिलोकि बिलखाहिं बिमाना
भोग बिभूति भूरि भरि राखे * देखत जिन्हहिं अमर अभिलाखे
दासी दास साज सब लीन्हे * जोगवत रहहिं मनहिं मन दीन्हे
सबसमाज सजि सिधि पलमाहीं * जे सुख सुरपुर सपनेहुँ नाहीं
प्रथमहिं बास दिये सब केही * सुंदर सुखद जथारुचि जेही

दो० बहुरि सपरिजन भरत कहँ रिषि अस आयसु दीन्ह ।
बिधि-बिसमयदायकबिभवमुनिबरतपबलकीन्ह॥२०७॥

मुनि प्रभाउ जब भरत बिलोका * सब लघु लगे लोकपति लोका
सुख-समाज नहिं जाइ बखानी * देखत बिरति बिसारहिं ग्यानी
आसन सयन सुबसन बिताना * बन बाटिका बिहँग मृग नाना
सुरभि फूलफल अमिय समाना * बिमल जलासय बिबिधबिधाना
असनपान सुचि अमिय अमीसे * देखि लोग सकुचात जमी से
सुर-सुरभी सुरतरु सबही के * लखि अभिलाष सुरेस सची के
रितु बसंत बह त्रिबिध बयारी * सब कहँ सुलभ पदारथ चारी
स्रक चंदन बनितादिक भोगा * देखि हरष-बिसमय-बस लोगा

दो० संपति चकई भरत चक मुनि-आयसु खेलवार ।
तेहि निसि आश्रमपींजरा राखे भा भिनुसार॥२०८॥

मास-पारायण १९ दिन

भेंटि निषादहि तीरथराजा ॥ नाइ मुनिहि सिर सहित समाजा
रिषि-आयसु असीस सिर राखी ॥ करि दंडवत बिनय बहु भाखी
पथ-गति-कुसल साथ सब लीन्हे ॥ चले चित्रकूटहि चित दीन्हे
राम-सखा कर दीन्हे लागू ॥ चलत देह धरि जनु अनुरागू
नहिं पदत्रान सीस नहिं छाया ॥ प्रेम नेम ब्रत धरम अमाया
लखन-राम-सिय पंथ-कहानी ॥ पूछत सखहि कहत मृदु बानी
राम-बास थल बिटप बिलोके ॥ उर अनुराग रहत नहिं रोके
देखि दसा सुर बरसहिं फूला ॥ भइ मृदु महि मग मंगलमूला

दो॰ किये जाहिं छाया जलद सुखद बहइ बर बात।
तस मग भयउ न राम कहँ जस भा भरतहि जात॥२०९॥

जड़ चेतन मग जीव घनेरे ॥ जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे
ते सब भये परम पद जोगू ॥ भरत-दरस मेटा भव-रोगू
यह बड़ि बात भरत कइ नाहीं ॥ सुमिरत जिनहिं राम मनमाहीं
बारक राम कहत जग जेऊ ॥ होत तरनतारन नर तेऊ
भरत राम प्रिय पुनि लघु भ्राता ॥ कस न होइ मग मंगलदाता
सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं ॥ भरतहि निरखि हरष हियलहहीं
देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू ॥ जग भल भलेहि पोच कहँ पोचू
गुरु सन कहेउ करिअ प्रभु सोई ॥ रामहि भरतहि भेंट न होई

दो॰ राम सँकोची प्रेमबस भरत सुप्रेम पयोधि।
बनी बात बिगरन चहति करिअ जतन छल सोधि॥२१०॥

बचन सुनत सुरगुरु मुसकाने ॥ सहसनयन बिनु लोचन जाने
कह गुर बादि छोभ छल छाँड़ू ॥ इहाँ कपट कर होइहि भाँड़ू
माया पति सेवक सन माया ॥ करइ त उलटि परइ सुरराया

बयरु बिहाइ चरहिं एक संगा • जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा
झरना झरहिं मत्तगज गाजहिं • मनहुँ निसान बिबिधि बिधि बाजहिं
चक चकोर चातक सुक पिकगन • कूजत मंजु मराल मुदितमन
अलिगन गावत नाचत मोरा • जनु सुराज मंगल चहुँ ओरा
बेलि बिटप तृन सफल सफूला • सब समाज मुद-मंगल मूला

दो० रामसैल सोभा निरखि भरत हृदय अतिप्रेम।
तापसतपफल पाइ जिमि सुखी सिराने नेम ॥ २२८॥

मास-पारायण २० दिन—नवाह्न-पारायण ५ दिन

तब केवट ऊँचे चढ़ि धाई • कहेउ भरत सन भुजा उठाई
नाथ देखिअहि बिटप बिसाला • पाकरि जंबु रसाल तमाला
तिन्ह तरुबरन्ह मध्य बट सोहा • मंजु बिसाल देखि मन मोहा
नील सघन पल्लव फल लाला • अबिरल छाँह सुखद सब काला
मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी • बिरची बिधि सकेलि सुखमासी
ए तरु सरितसमीप गोसाँई • रघुबर परनकुटी जहँ छाई
तुलसी तरुबर बिबिध सुहाये • कहुँ कहुँ सिय कहुँ लखन लगाये
बटछाया बेदिका बनाई • सिय निज-पानि-सरोज सुहाई

दो० जहाँ बैठि मुनि-गन-सहित नित सिय राम सुजान।
सुनहिं कथा इतिहाससब आगम निगम पुरान॥२२९॥

सखाबचन सुनि बिटप निहारी • उमगे भरत बिलोचन बारी
करत प्रनाम चले दोउ भाई • कहत प्रीति सारद सकुचाई
हरषहिं निरखि राम-पद-अंका • मानहुँ पारस पायउ रंका
रजसिरधरिहियनयनन्हि लावहिं • रघुबर मिलन सरिस सुखपावहिं
देखि भरतगति अकथ अतीवा • प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा

तरहिं सनेह बिबस मग भूला • करि सुपथ सुर बरसहिं फूला
निरखि सिद्धसाधक अनुरागे • सहजसनेहु सराहन लागे
होत न भूतल भाउ भरत को • अचर सचर चर अचर करत को
दो• प्रेम अमिय मंदर बिरह भरत पयोधि गँभीर।
मथि प्रगटे सुर-साधु हित कृपासिंधु रघुबीर ॥ २३८ ॥
सखासमेत मनोहर जोटा • लखेउ न लखन सघन बन ओटा
भरत दीख प्रभु आश्रम पावन • सकल-सुमंगल सदन सुहावन
करत प्रवेस मिटे दुखदावा • जनु जोगी परमारथ पावा
देखे भरत लखन प्रभु आगे • पूछे बचन कहत अनुरागे
सीस जटा कटि मुनिपट बाँधे • तून कसे कर सर धनु काँधे
बेदी पर मुनि -साधु - समाजू • सीय सहित राजत रघुराजू
बलकलबसन जटिलतनु स्यामा • जनु मुनिबेष कीन्ह रतिकामा
करकमलनि धनुसायक फेरत • जिय की जरनि हरत हँसि हेरत
दो• लसत मंजु मुनि-मंडली - मध्य सीय रघुचंद।
ज्ञानसभा जनु तनु धरे भगति सच्चिदानंद ॥ २३९ ॥
सानुज सखा समेत मगन मन • बिसरे हरष-सोक-सुख-दुख गन
पाहि नाथ कहि पाहि गोसाइँ • भूतल परे लकुट की नाइँ
बचन सप्रेम लखन पहिचाने • करत प्रनाम भरत जिय जाने
बंधुसनेह सरस एहि ओरा • उत साहिब सेवा बस जोरा
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई • सुकबि लखन मनकी गति भनई
रहे राखि सेवा पर भारू • चढ़ी चंग जनु खैंच खेलारू
कहत सप्रेम नाइ महि माथा • भरत प्रनाम करत रघुनाथा
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा • कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा

दो० भरतम लिये उठाइ उर लाये कृपानिधान।
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहिं अपान॥२४१॥
मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी ॥ कबिकुल अगम करम मन बानी।
परम - प्रेम पूरन दोउ भाई ॥ मन बुधि चित अहमिति बिसराई।
कहहु सुप्रेम प्रगट को करई ॥ केहि छाया कबिमति अनुसरई।
कबिहिं अरथ आखर बल साँचा ॥ अनुहरि ताल गतिहि नट नाचा।
अगमसनेह भरत रघुबर को ॥ जहँ न जाइ मन बिधिहरिहर को।
सो मैं कुमति कहउँ केहि भाँती ॥ बाज सुराग कि गाँडर ताँती।
मिलनि बिलोकि भरत रघुबर की ॥ सुरगन सभय धकधकी धरकी।
समुझाये सुरगुरु जड़ जागे ॥ बरषि प्रसून प्रसंसन लागे।
दो० मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं केवट भेंटेउ राम।
भूरि भाय भेंटे भरत लछिमन करत प्रनाम॥२४२॥
भेंटेउ लषन ललकि लघु भाई ॥ बहुरि निषाद लीन्ह उर लाई।
पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्ह बंदे ॥ अभिमत आसिष पाइ अनंदे।
सानुज भरत उमगि अनुरागा ॥ धरि सिर सिय-पद-पदुम परागा।
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाये ॥ सिर करकमल परसि बैठाये।
सीय असीस दीन्हि मन माहीं ॥ मगन सनेह देहसुधि नाहीं।
सब बिधि सानुकूल लखि सीता ॥ भे निसोच उर अपडर बीता।
कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूछा ॥ प्रेम भरा मन निजगति छूछा।
तेहि अवसर केवट धीरज धरि ॥ जोरि पानि बिनवत प्रनाम करि।
दो० नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुरलोग।
सेवक सेनप सचिव सब आये बिकल बियोग॥२४३॥
सीलसिंधु सुनि गुरुआगवनू ॥ सिय समीप राखे रिपुदवनू।

भये सबेग राम तेहि काला • धीर-धरम-धुर दीनदयाला
गुरहि देखि सानुज अनुरागे • दंडप्रनाम करन प्रभु लागे
मुनिवर धाइ लिये उर लाई • प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू • कीन्ह दूरि तें दंडप्रनामू
रामसखा रिषि बरबस भेंटा • जनु महि लुठत सनेह समेटा
रघुपति भगति सुमंगल मूला • नभ सराहि सुर बरिसहिं फूला
एहिसम निपट नीच कोउ नाहीं • बड़ बसिष्ठ सम को जग माहीं
दो• जेहि लखि लखनहुँ तें अधिक मिले मुदित मुनिराउ ।
सो सीता-पति-भजनका प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥२१९॥
आरत लोग राम सब जाना • करुनाकर सुजान भगवाना
जो जेहि भाय रहा अभिलाषी • तेहि तेहिकै तसि तसि रुख राखी
सानुज मिलि पल महँ सब काहू • कीन्ह दूरि दुख-दारुन-दाहू
यह बड़ि बात राम कै नाहीं • जिमि घट कोटि एक रवि छाहीं
मिलि केवटहि उमगि अनुरागा • पुरजन सकल सराहहिं भागा
देखी राम दुखित महतारीं • जनु सुबेलि अवली हिम मारीं
प्रथम राम भेंटी कैकेई • सरल सुभाय भगति मति भेई
पग परि कीन्ह प्रबोध बहोरी • काल करम बिधि सिर धरि खोरी
दो• भेंटी रघुबर मातु सब करि प्रबोध परितोष ।
अब ईस आधीन जग काहु न देइय दोष ॥२२०॥
गुर-तिय पद बंदे दुहुँ भाई • सहित बिप्रतिय जे सँग आई
गंग-गौरि सम सब सनमानी • देहिं असीस मुदित मृदुबानी
गहि पद लगे सुमित्राअंका • जनु भेंटी संपति अति रंका
पुनि जननी चरननि दोउ भ्राता • परे प्रेम-ब्याकुल सब गाता

अति अनुराग अंब उर लाये * नयन सनेह सलिल अन्हवाये
तेहि अवसर कर हरष विषादू * किमि कवि कहइ मूक जिमि स्वादू
मिलि जननिहि सानुज रघुराऊ * गुरु सन कहेउ कि धारिय पाऊ
पुरजन पाइ मुनीस-नियोगू * जल थल तकि तकि उतरे लोगू

दो॰ महिसुर मंत्री मातु गुरु गने लोग लिये साथ।
पावन आश्रम गवन किय भरत लषन रघुनाथ॥२३७॥

सीय आइ मुनि-वर-पग लागी * उचित असीस लही मन-माँगी
गुरुपतिनिहि मुनितियन्ह समेता * मिली प्रेम कहि जाइ न जेता
बंदि बंदि पग सिय सबही के * आसिर बचन लहे प्रिय जी के
सासु सकल जब सीय निहारी * मूँदे नैन सहमि सुकुमारी
परी बधिक-बस मनहुँ मराली * काह कीन्ह करतार कुचाली
तिन्ह सिय निरखि निपट दुख पावा * सो सब सहिय जो दैव सहावा
जनक-सुता तब उर धरि धीरा * नील-नलिन-लोयन भरि नीरा
मिली सकल सासुन्ह सिय जाई * तेहि अवसर करुना महि छाई

दो॰ लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग।
हृदय असीसहिं प्रेम-बस रहियहु भरी सोहाग॥२३८॥

विकल सनेह सीय सब रानी * बैठन सबहि कहेउ गुरु ज्ञानी
कहि जग-गति मायिक मुनिनाथा * कहे कछुक परमारथ-गाथा
नृप कर सुरपुर गवन सुनावा * सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा
मरन-हेतु निज नेह बिचारी * भे अति विकल धीर-धुर धारी
कुलिस-कठोर सुनत कटु बानी * बिलपति लषन सीय सब रानी
सोक-विकल अति सकल समाजू * मानहुँ राज अकाजेउ आजू
मुनिवर बहुरि राम समुझाये * सहित समाज सुसरित नहाये

व्रत निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा • मुनिहु कहें जल काहु न लीन्हा
दो॰ भोर भये रघुनंदनहिं जो मुनि आयसु दीन्ह ।
श्रद्धा-भगति-समेत प्रभु सो सब सादर कीन्ह ॥२४७॥
करि पितु क्रिया बेद जसि बरनी • भे पुनीत पातक तम - तरनी
जासु नाम पावक अघ - तूला • सुमिरत सकल सुमंगल मूला
सुद्ध सो भयउ साधु-संमत अस • तीरथ आवाहन सुरसरि जस
सुद्ध भये दुइ बासर बीते • बोले गुरु सन राम पिरीते
नाथ लोग सब निपट दुखारी • कंद-मूल फल-अंबु-अहारी
सानुज भरत सचिव सब माता • देखि मोहि पल जिमि जुग जाता
सब समेत पुर धारिय पाऊ • आप इहाँ अमरावति राऊ
बहुत कहेउँ सब कियउँ ढिठाई • उचित होइ तस करिय गुसाँई
दो॰ धरम-सेतु करुनायतन कस न कहहु अस राम ।
लोग दुखित दिन दुइ दरस देखि लहहुँ बिस्राम ॥२४८॥
राम बचन सुनि सभय समाजू • जनु जलनिधि महँ बिकल जहाजू
सुनि गुरगिरा सुमंगल मूला • भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला
पावन पय तिहुँ काल नहाहीं • जो बिलोकि अघ ओघ नसाहीं
मंगल-मूरति लोचन भरि भरि • निरखहिं हरषि दंडवत करि करि
राम- सैल - बन देखन जाहीं • जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं
झरना झरहिं सुधा-सम बारी • त्रिबिध-ताप-हर त्रिबिध बयारी
बिटप बेलि तृन अगनित जाती • फल प्रसून पल्लव बहु भाँती
सुंदर सिला सुखद तरु छाहीं • जाइ बरनि बन छबि केहि पाहीं
दो॰ सरनि सरोरुह जल बिहग कूजत गुंजत भृंग ।
बैर-बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग ॥२४९॥

कोल किरात भिल्ल बनबासी • मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधासी
भरि भरि परन-पुटी रचि रूरी • कंद मूल फल अंकुर जूरी
सबहिं देहिं करि बिनय प्रनामा • कहि कहि स्वादु भेद गुन नामा
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं • फेरत राम दोहाई देहीं
कहहिं सनेह मगन मृदु बानी • मानत साधु प्रेम पहिचानी
तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा • पावा दरसन राम-प्रसादा
हमहिं अगम अति दरस तुम्हारा • जस मरु-धरनि देवधुनि-धारा
राम-कृपाल निषाद नेवाजा • परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा
दो॰ यह जिय जानि सकोच तजि करिअ छोह लखि नेहु।
हमहिं कृतारथ करन लगि फल-तृन-अंकुर लेहु॥२५१॥
तुम्ह प्रिय पाहुन बन पग धारे • सेवा जोग न भाग हमारे
देब काह हम तुम्हहिं गोसाँई • ईंधन पात किरात मिताई
यह हमारि अति बड़ि सेवकाई • लेहिं न बासन बसन चोराई
हम जड़-जीव जीवगन - घाती • कुटिल कुचाली कुमति कुजाती
पाप करत निसि बासर जाहीं • नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं
सपनेहु धरम - बुद्धि कस काऊ • यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ
जब तें प्रभु-पद-पदुम निहारे • मिटे दुसह - दुख दोष हमारे
बचन सुनत पुरजन अनुरागे • तिन्हके भाग सराहन लागे
छं॰ लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं।
बोलनि मिलनि सिय-राम चरन-सनेह लखि सुख पावहीं॥
नर-नारि निदरहिं नेह निज सुनि कोलभिल्लनि की गिरा।
तुलसी कृपा रघुबंस-मनि की लोह लेइ लौका तिरा॥
सो॰ बिहरहिं बन चहुँ ओर प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब।

जल ज्यों दादुर मोर भये पीन पावस प्रथम ॥१०॥

पुरजन नारि मगन अतिप्रीती * बासर जाहिं पलक सम बीती
सीय सासु प्रति बेष बनाई * सादर करइ सरिस सेवकाई
लखी न मरम राम बिनु काहूँ * माया सब सिय - माया माहूँ
सीय सासु सेवा बस कीन्ही * तिन्हलहिसुखसिखआसिषदीन्ही
लखि सियसहितसरल दोउ भाई * कुटिल रानि पछितानि अघाई
अवनि जमहि जाँचति कैकेई * महि न बीच बिधि मीच न देई
लोकहु बेदबिदित कबि कहहीं * राम-बिमुख थल नरक न लहहीं
यह संसउ सबके मन माहीं * रामगवन बिधि अवध कि नाहीं

दो० निसि न नींद नहि भूख दिन भरत बिकल सुठि सोच।
नीच कीच बिच मगन जस मीनहि सलिल सँकोच॥२५१॥

कीन्हि मातुमिस काल कुचाली * ईति भीति जस पाकत साली
केहि बिधि होइ राम अभिषेकू * मोहि अवकलत उपाउ न एकू
अवसिफिरहिं गुरु आयसु मानी * मुनि पुनिकहब राम रुचि जानी
मातु कहेहु बहुरहिं रघुराऊ * राम-जननि हठ करबि कि काऊ
मोहि अनुचर कर केतिक बाता * तेहि महँ कुसमउ बाम बिधाता
जौं हठ करउँ त निपट कुकरमू * हरगिरि तें गुरु सेवकधरमू
एकउ जुगुति न मन ठहरानी * सोचत भरतहि रैनि बिहानी
प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई * बैठत पठये रिषय बोलाई

दो० गुरु-पद-कमल प्रनाम करि बैठे आयसु पाइ।
बिप्र-महाजन सचिव सब जुरे सभासद आइ॥२५२॥

बोले मुनिबर समय समाना * सुनहु सभासद भरत सुजाना
धरमधुरीन भानुकुल भानू * राजा राम स्वबस भगवानू

सत्यसंध पालक श्रुतिसेतू • रामजनम जग मंगलहेतू
गुरु-पितु-मातु-बचन-अनुसारी • खल-दल-दलन देव-हित-कारी
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ • कोउ न रामसम जान जथारथ
बिधिहरिहरससिरबि दिसिपाला • माया जीव करम कुलि काला
अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई • जोग सिद्धि निगमागम गाई
करि बिचार जिय देखहु नीके • राम रजाइ सीस सबही के
दो० राखें राम-रजाइ रुख हम सब कर हित होइ ।
समुझि सयाने करहु अब सब मिलि सम्मत सोइ॥२५२॥
सब कहँ सुखद राम अभिषेकू • मंगल - मोद मूल मग एकू
केहि बिधि अवध चलहिं रघुराऊ • कहहु समुझिसोइ करिअउपाऊ
सब सादर सुनि मुनिबर - बानी • नय-परमारथ स्वारथ - सानी
उतर न आव लोग भये भोरे • तब सिर नाइ भरत कर जोरे
भानु - बंस भये भूप घनेरे • अधिक एक तें एक बड़ेरे
जनम हेतु सब कहँ पितु-माता • करम सुभासुभ देइ बिधाता
दलि दुख सजइ सकल कल्याना • अस असीस राउरि जगजाना
सोइ गोसाईं बिधिगति जेहिं छेंकी • सकइ को टारि टेक जो टेकी
दो० बूझिअ मोहि उपाउ अब सो सब मोर अभाग ।
सुनि सनेह-मय बचन गुरु उर उमगा अनुराग॥२५३॥
तात बात फुरि राम कृपाहीं • रामबिमुख सिधि सपनेहु नाहीं
सकुचउँ तात कहत एक बाता • अरध तजहिं बुध सरबस जाता
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई • फेरिअहि लखन सीय रघुराई
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता • भे प्रमोद - परिपूरन गाता
मन प्रसन्न तन तेज बिराजा • जनु जिय राउ राम भये राजा

बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी * सम दुख सुख सब रोवहिं रानी
कहहिं भरत मुनिकहा सो कीन्हे * फलु जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे
कानन करउँ जनम भरि बासू * एहि तें अधिक न मोर सुपासू
दो० अंतर जामी रामसिय तुम्ह सरबग्य सुजान।
जौं फुर कहहु त नाथ निज कीजिअ बचन प्रमान॥२४७॥
भरतबचन सुनि देखि सनेहू * सभा सहित मुनि भयउ बिदेहू
भरत महामहिमा जल-रासी * मुनि-मति ठाढ़ि तीर अबलासी
गा चह पार जतन हिय हेरा * पावति नाव न बोहित बेरा
अउर करिहि को भरत बड़ाई * सरसी सीपि कि सिंधु समाई
भरत मुनिहिं मनभीतर भाये * सहितसमाज राम पहिं आये
प्रभु प्रनाम करि दीन्ह सुआसन * बैठे सब सुनि मुनि अनुसासन
बोले मुनिबर बचन बिचारी * देस काल अवसर अनुहारी
सुनहु राम सरबग्य सुजाना * धरम-नीतिगुन ज्ञान निधाना
दो० सबके उर अंतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ।
पुरजन-जननी भरत हित होय सो कहिअ उपाउ॥२४८॥
आरत कहहिं बिचारि न काऊ * सूझ जुआरिहि आपन दाऊ
सुनि मुनिबचन कहत रघुराऊ * नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ
सब कर हित रुख राउरि राखे * आयसु किये मुदित फुर भाखे
प्रथम जो आयसु मो कहँ होई * माथे मानि करउँ सिख सोई
पुनि जेहि कहँ जस कहब गोसाँई * सो सब भाँति घटिहि सेवकाई
कह मुनि राम सत्य तुम्ह भाखा * भरत-सनेह बिचार न राखा
तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी * भरत भगति बसभइमति मोरी
मोरे जान भरत रुचि राखी * जो कीजिअ सो सुभ सिवसाखी

दो० भरत बिनय सादर सुनिअ करिअ बिचारु बहोरि।
करब साधु-मत-लोक-मत-नृप-नय-निगम-निचोरि ॥२१९॥

गुर-अनुराग भरत पर देखी • राम हृदय आनंद बिसेषी
भरतहि धरम-धुरंधर जानी • निज सेवक तन-मानस-बानी
बोले गुर-आयसु अनुकूला • बचन मंजु मृदु मंगल-मूला
नाथ सपथ पितु चरन दोहाई • भयउ न भुवन भरत सम-भाई
जे गुर-पद-अंबुज अनुरागी • ते लोकहु बेदहु बड़भागी
राउर जा पर अस अनुरागू • को कहि सकइ भरत कर भागू
लखि लघु-बंधु बुद्धि सकुचाई • करत बदन पर भरत-बड़ाई
भरत कहहिं सोइ किए भलाई • अस कहि राम रहे अरगाई

दो० तब मुनि बोले भरत सन सब सँकोच तजि तात।
कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कइ बात ॥ २२० ॥

सुनि मुनिबचन रामरुख पाई • गुरु साहिब अनुकूल अघाई
लखि अपने सिर सब छरभारू • कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू
पुलकि सरीर सभा भये ठाढ़े • नीरज-नयन नेह जल बाढ़े
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा • एहि तें अधिक कहउँ मैं काहा
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ • अपराधिहु पर कोह न काऊ
मो पर कृपा सनेह बिसेषी • खेलत खुनिस न कबहूँ देखी
सिसुपन तें परिहरेउ न संगू • कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू
मैं प्रभु कृपा-रीति जिय जोही • हारेहु खेल जितावहिं मोही

दो० महूँ सनेह-सकोच-बस सनमुख कहे न बयन।
दरसन तृपित न आजु लगि प्रेम-पियासे नयन ॥२२१॥

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा • नीच बीच जननी मिस पारा

यहउ कहत मोहि आजु न सोभा * अपनी समुझि साधु सुचि को भा
मातु मंद मैं साधु सुचाली * उर अस आनत कोटि कुचाली
फरइ कि कोदव बालि सुसाली * मुकुता प्रसव कि संबुक काली
सपनेहु दोस कलेस न काहू * मोर अभाग उदधि अवगाहू
बिनु समुझे निज-अघ-परिपाकू * जारिउँ जाय जननि कहि काकू
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा * एकहि भाँति भलेहि भल मोरा
गुरु-गोसाईं साहिब सियरामू * लागत मोहि नीक परिनामू

दो० साधु सभा गुरु-प्रभु निकट कहउँ सुथल सतिभाउ।
प्रेम प्रपंच कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ॥२५२॥

भूपति मरन प्रेमपन राखी * जननी कुमति जगत सब साखी
देखि न जाहिं बिकल महतारी * जरहिं दुसह जर पुर-नर-नारी
महीं सकल अनरथ कर मूला * सो सुनि समुझि सहेउँ सब सूला
सुनि बन-गवन कीन्ह रघुनाथा * करि मुनि-बेष लखन-सिय-साथा
बिनु पानहिन्ह पयादेहि पाये * संकर साखि रहेउँ एहि घाये
बहुरि निहारि निषाद-सनेहू * कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू
अब सब आँखिन्ह देखेउँ आई * जिअत जीव जड़ सबइ सहाई
जिन्हहिं निरखि मग साँपिनि बीछी * तजहिं बिषम बिष तामसतीछी

दो० तेइ रघुनन्दन लखन सिय अनहित लागे जाहि।
तासु तनय तजि दुसह दुख दैव सहावइ काहि॥२५३॥

सुनि अति बिकल भरत-बर-बानी * आरति-प्रीति बिनय - नयसानी
सोकमगन सब सभा खभारू * मनहुँ कमल-बन परेउ तुसारू
कहि अनेक बिधि कथा पुरानी * भरत-प्रबोध कीन्ह मुनि ज्ञानी
बोले उचित बचन रघुनंदू * दिनकर-कुल कैरव-बन - चंदू

बात जाय जिय करहु गलानी • ईस अधीन जीवगति जानी
तीनि काल त्रिभुवन मत मोरे • पुन्यसिलोक तात तर तोरे
उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई • जाइ लोक परलोक नसाई
दोष देहिं जननिहि जड़ तेई • जिन्ह गुर-साधु-सभा नहिं सेई
दो० मिटिहहिं पाप प्रपंच सब अखिल अमंगल भार।
लोकसुजसपरलोकसुखसुमिरतनाम तुम्हार ॥२२४॥
कहउँ सुभाउ सत्य सिव साखी • भरत भूमि रह राउरि राखी
तात कुतरक करहु जनि जाये • बैर प्रेम नहिं दुरइ दुराये
मुनिगननिकट बिहग मृगजाहीं • बाधक बधिक बिलोकि पराहीं
हित अनहित पसुपच्छिउ जाना • मानुष-तन-गुन-ग्यान निधाना
तात तुम्हहिं मैं जानउँ नीके • करउँ काह असमंजस जी के
राखेउ राउ सत्य मोहि त्यागी • तनु परिहरेउ प्रेम पन लागी
तासु बचन मेटत मन सोचू • तेहि तें अधिक तुम्हार सँकोचू
ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा • अवसिजोकहहुचहउँसोइकीन्हा
दो० मन प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करउँ सोइ आज।
सत्य-सन्ध रघुबर बचन सुनिभा सुखी समाज ॥२२५॥
सुरगन सहित सभय सुरराजू • सोचहिं चाहत होन अकाजू
बनत उपाउ करत कछु नाहीं • राम-सरन सब गे मन माहीं
बहुरि बिचारि परसपर कहहीं • रघुपतिभगत-भगति-बसअहहीं
सुधि करि अंबरीष दुरबासा • भे सुर-सुरपति निपट निरासा
सहे सुरन्ह बहुकाल बिषादा • नरहरि किये प्रगट प्रहलादा
लगिलगिकानकहहिं धुनिमाथा • अब सुर-काज भरत के हाथा
आन उपाउ न देखिय देवा • मानत राम सुसेवक सेवा

हिय सप्रेम सुमिरहु सब भरतहि * निज गुन सील रामबस करतहि

दो० सुनि सुर-मत सुरगुरु कहेउ भल तुम्हार बड़भाग।
सकल सुमंगल-मूल जग भरत-चरन अनुराग॥२१९॥

सीतापति सेवक सेवकाई * कामधेनु सय - सरिस सुहाई
भरत भगति तुम्हरे मन आई * तजहु सोच बिधि बात बनाई
देखु देवपति भरत प्रभाऊ * सहज सुभाय बिबस रघुराऊ
मन थिर करहु देव डर नाहीं * भरतहि जानि राम परिछाहीं
सुनि सुरगुरु-सुर - संमत सोचू * अंतरजामी प्रभुहि सकोचू
निज सिर भार भरत जिय जाना * करत कोटिबिधि उर अनुमाना
करि बिचार मन दीन्ही ठीका * राम रजायसु आपन नीका
निज पन तजि राखेउ पन मोरा * छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा

दो० कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब बिधि सीतानाथ।
करि प्रनाम बोले भरत जोरि जलज जुग हाथ॥२२०॥

कहौं कहावौं का अब स्वामी * कृपा-अंबु निधि अंतरजामी
गुर प्रसन्न साहिब अनुकूला * मिटी मलिन मन-कलपित सूला
अपडर डरेउँ न सोच समूलें * रबिहि न दोष देवदिसि भूलें
मोर अभाग मातु - कुटिलाई * बिधिगति बिषम काल-कठिनाई
पाउँ रोपि सब मिलि मोहि घाला * प्रनतपाल पन आपन पाला
यह नइ रीति न राउरि होई * लोकहु बेद बिदित नहिं गोई
जग अनभल भल एक गोसाँई * कहिअ होइ भल कासु भलाई
देउ देवतरु - सरिस सुभाऊ * सनमुख बिमुख न काहुहि काऊ

दो० जाइ निकट पहिचानि तरु छाँह समनि सब सोच।
मागत अभिमत पाव जग राउ रंक भल पोच॥२२१॥

लखि सब बिधि गुर स्वामि-सनेहू • मिटेउ छोभ नहिं मन संदेहू
अब करुना कर कीजिअ सोई • जन हित प्रभु-चित छोभ न होई
जो सेवक साहिबहि सँकोची • निज हित चहइ तासु मति पोची
सेवक हित साहिब सेवकाई • करइ सकल सुख लोभ बिहाई
स्वारथ नाथ फिरे सबही का • किये रजाइ कोटि बिधि नीका
यह स्वारथ परमारथ सारू • सकल-सुकृत-फल-सुगति सिंगारू
देव एक बिनती सुनि मोरी • उचित होइ तस करब बहोरी
तिलक-समाज साजि सब आना • करिअ सुफल प्रभु जौ मन माना

दो॰ सानुज पठइअ मोहिं बन कीजिअ सबहिं सनाथ।
नतरु फेरिअहिं बंधु दोउ नाथ चलउँ मैं साथ॥२६८॥

नतरु जाहिं बन तीनिउँ भाई • बहुरिअ सीय - सहित रघुराई
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई • करुनासागर कीजिअ सोई
देव दीन्ह सब मोहि अभारू • मोरे नीति न धरम बिचारू
कहउँ बचन सब स्वारथ हेतू • रहत न आरत के चित चेतू
उतर देइ सुनि स्वामि रजाई • सो सेवक लखि लाज लजाई
अस मैं अवगुन उदधि अगाधू • स्वामि सनेह सराहत साधू
अब कृपाल मोहि सो मत भावा • सकुच स्वामि मन जाइ न पावा
प्रभु-पद-सपथ कहउँ सतिभाऊ • जग-मंगल- हित एक उपाऊ

दो॰ प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देब।
सो सिर धरि धरि करिहि सब मिटिहि अनट अवरेब॥२६९॥

भरतबचन सुचि सुनि सुर हरषे • साधु सराहि सुमन सुर बरषे
असमंजस-बस अवध-निवासी • प्रमुदित मन तापस बन बासी
चुपहि रहे रघुनाथ सँकोची • प्रभुगति देखि सभा सब सोची

जनक-दूत तेहि अवसर आये * मुनि वसिष्ठ सुनि बेगि बोलाये
करि प्रनाम तिन राम निहारे * भेष देखि भये निपट दुखारे
दूतन्ह मुनिवर बूझी बाता * कहहु विदेह भूप कुसलाता
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा * बोले चर बर जोरे हाथा
बूझब राउर सादर साईं * कुसल-हेतु सो भयउ गोसाईं
दो० नाहिं त कोसलनाथ के साथ कुसल गइ नाथ ।
मिथिला अवध विसेषतें जग सब भयउ अनाथ ॥ २११ ॥
कोसलपति गति सुनि जनकौरा * भे सब लोक सोक-बस बौरा
जेहि देखे तेहि समय विदेहू * नाम सत्य अस लाग न केहू
रानि-कुचालि सुनत नरपालहि * सूझनकछुजसमनिबिनुब्यालहि
भरत राज्य रघुबर - बनबासू * भा मिथिलेसहि हृदय हरासू
नृप बूझे बुध-सचिव समाजू * कहहु बिचार उचित का आजू
समुझि अवध असमंजस दोऊ * चलिअकिरहिअनकहकछुकोऊ
नृपहिं धीर धरि हृदय बिचारी * पठये अवध चतुर चर चारी
बूझि भरत सतिभाउ कुभाऊ * आयेहु बेगि न होइ लखाऊ
दो० गये अवध चर भरतगति बूझि देखि करतूति ।
चले चित्रकूटहि भरत चार चले तिरहूति ॥ २१२ ॥
दूतन्ह आइ भरत कइ करनी * जनक-समाज जथामति बरनी
सुनिगुरपरिजनसचिव महीपति * भे सब सोच सनेह बिकलअति
धरि धीरज करि भरत बड़ाई * लिये सुभट साहनी बोलाई
घर पुर देस राखि रखवारे * हय गय रथ बहु जान सँवारे
दुघरी साधि चले ततकाला * किय बिस्राम न मग महिपाला
भोरहिं आइ नहाइ प्रयागा * चले जमुन उतरन सब लागा

सपदि सेन हम पठवे मामा • तिन्हकहि अस महि नामउ भामा
साथ किरात छसातक दीन्हे • मुनिबर तुरत बिदा चर कीन्हे
दो• सुजस जनक आगमन सुनि हरषेउ अवध-समाज।
रघुनंदनहिं सकोच बड़ सोच-बिबस सुरराज॥२११॥
गरइ गलानि कुटिल कैकेई • काहि कहइ केहि दूषन देई
अस मन आनि मुदित नर-नारी • भयउ बहोरि रहब दिन चारी
एहि प्रकार गत बासर सोऊ • प्रात नहान लाग सब कोऊ
करि मज्जन पूजहिं नर-नारी • गनपति गौरि पुरारि तमारी
रमा रमन-पद बंदि बहोरी • बिनवहिं अंजलि अंचल जोरी
राजा राम जानकी रानी • आनँद-अवधि अवध रजधानी
सुबस बसउ फिरि सहित समाजा • भरतहिं राम करहु जुबराजा
एहि सुख-सुधा सींचि सब काहू • देव देहु जग जीवन लाहू
दो• गुरुसमाज भाइन्ह सहित रामराज पुर होउ।
अछत राम राजा अवध मरिअ माँग सब कोउ॥२१४॥
सुनि सनेहमय पुरजन बानी • निंदहिं जोग बिरति मुनि ग्यानी
एहिबिधि नित्य करम करि पुरजन• रामहिं करहिं प्रनाम पुलकितन
ऊँच नीच मध्यम नर-नारी • लहहिं दरस निज निज अनुहारी
सावधान सबही सनमानहिं • सकल सराहत कृपानिधानहिं
लरिकाइहि तें रघुबर बानी • पालत नीति प्रीति पहिचानी
सील-सँकोच सिंधु रघुराऊ • सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ
कहत राम-गुन गन अनुरागे • सब निज भाग सराहन लागे
हम सम पुन्य पुंज जग थोरे • जिन्हहिं राम जानत करि मोरे
दो• प्रेममगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेस।

सचिवसमेत सम्भ्रम उठेउ रबिकुल-कमल दिनेस॥२१२॥

भाइ सचिव गुर पुरजन साथा • आगें गवन कीन्ह रघुनाथा
गिरिबर दीख जनकपति जबहीं • करि प्रनाम रथ त्यागेउ तबहीं
राम दरस लालसा उछाहू • पथ-स्रम लेस कलेस न काहू
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही • बिनु मन तन दुखसुखसुधि केही
आवत जनक चले एहि भाँती • सहित-समाज प्रेम-मति माती
आये निकट देखि अनुरागे • सादर मिलन परसपर लागे
लगे जनक मुनिजन पद बंदन • रिषिन्ह प्रनाम कीन्ह रघुनंदन
भाइन्हसहित राम मिलि राजहि • चले लेवाइ समेत समाजहि

दो०• आश्रम सागर सांतरस पूरन पावन-पाथ।
सेन मनहुँ करुना-सरित लिये जाहिं रघुनाथ॥२११॥

बोरति ज्ञान - बिराग करारे • बचन ससोक मिलत नद नारे
सोच उसास समीर तरंगा • धीरज तट तरुबर कर भंगा
बिषम बिषाद तोरावति धारा • भय भ्रम भँवर अबर्त अपारा
केवट - बुध बिद्या बड़ि नावा • सकहिं न खेइ एक नहिं आवा
बनचर कोल किरात बिचारे • थके बिलोकि पथिक हिय हारे
आश्रम उदधि मिली जब जाई • मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई
सोक बिकल दोउ राज-समाजा • रहा न ज्ञान न धीरज लाजा
भूप रूप गुन सील सराही • रोवहिं सोकसिंधु अवगाही

छं०• अवगाहि सोक-समुद्र सोचहिं नारि नर ब्याकुल महा।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं बाम बिधि कीन्हो कहा॥
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा बिदेह की।
तुलसी न समरथ कोउ जो तरि सकइ सरित सनेह की॥

सो० किये अमित उपदेस जहँ तहँ लोगन्ह मुनिबरन्ह ।
धीरज धरिअ नरेस कहेउ बसिष्ठ बिदेह सन ॥२७७॥

जासु ज्ञानरबि भवनिसि नासा ॥ बचनकिरन मुनिकमल बिकासा
तेहि कि मोह ममता निअराई ॥ यह सिय राम सनेह बड़ाई
बिषयी साधक सिद्ध सयाने ॥ त्रिबिध जीव जग बेद बखाने
राम सनेह सरस मन जासू ॥ साधु सभा बड़ आदर तासू
सोह न राम प्रेम बिनु ज्ञानू ॥ करनधार बिनु जिमि जलजानू
मुनि बहु बिधि बिदेह समुझाये ॥ रामघाट सब लोग नहाये
सकल-सोक संकुल नरनारी ॥ सो बासर बीतेउ बिनु बारी
पसुखगमृगन्ह न कीन्ह अहारू ॥ प्रिय परिजनकर कवन बिचारू

दो० दोउ समाज निमिराज रघु-राज नहाने प्रात ।
बैठे सब बट-बिटप तर मन मलीन कृसगात ॥२७८॥

जे महिसुर दसरथपुर बासी ॥ जे मिथिलापति नगर-निवासी
हंस बंस गुरु जनकपुरोधा ॥ जिन्ह जग मग परमारथ सोधा
लगे कहन उपदेस अनेका ॥ सहित धरम नय बिरति बिबेका
कौसिक कहि कहि कथा पुरानी ॥ समुझाई सब सभा सुबानी
तब रघुनाथ कौसिकहिं कहेऊ ॥ नाथ कालि जल बिनु सब रहेऊ
मुनि कह उचित कहत रघुराई ॥ गयउ बीति दिन पहर अढ़ाई
रिषिरुख लखि कह तिरहुतिराजू ॥ इहाँ उचित नहिं असन अनाजू
कहा भूप भल सबहि सुहाना ॥ पाइ रजायसु चले नहाना

दो० तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार ।
लेइ आये बनचर बिपुल भरि भरि काँवरि भार॥२७९॥

कामद भे गिरि रामप्रसादा ॥ अवलोकत अपहरत बिषादा

सर सरिता बन भूमि बिभागा * जनु उमगत आनँद अनुरागा
बेलि बिटप सब सफल सफूला * बोलत खग मृग अलि अनुकूला
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू * त्रिबिध समीर सुखद सब काहू
जाइ न बरनि मनोहरताई * जनु महि करति जनक पहुनाई
तब सब लोग नहाइ नहाई * राम-जनक - मुनि आयसु पाई
देखि देखि तरुबर अनुरागे * जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे
दल फल मूल कंद बिधि नाना * पावन सुंदर सुधा समाना
दो० सादर सब कहँ रामगुरु पठये भरि भरि भार।
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु लगे करन फलहार॥१९९॥

एहि बिधि बासर बीते चारी * राम निरखि नर नारि सुखारी
दुहुँ समाज अस रुचि मनमाहीं * बिनु सिय-राम फिरब भल नाहीं
सीताराम संग बनबासू * कोटि अमरपुर सरिस सुपासू
परिहरि लखन राम बैदेही * जेहि घर भाव बाम बिधि तेही
दाहिन दैव होइ जब सबहीं * राम समीप बसिअ बन तबहीं
मंदाकिनि मज्जन तिहुँ काला * राम-दरस मुद - मंगल माला
अटन रामगिरिबन तापसथल * असन अमियसम कंद मूल फल
सुख - समेत संबत दुइ साता * पलसम होहिं न जनिअहिं जाता
दो० एहि सुख जोग न लोग सब कहहिं कहाँ अस भाग।
सहज सुभाय समाज दुहुँ राम-चरन अनुराग॥२००॥

एहिबिधिसकल मनोरथ करहीं * बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं
सीयमातु तेहि समय पठाईं * दासी देखि सुअवसर आईं
सावकास सुनि सब सिय सासू * आयउ जनक - राज रनिवासू
कौसल्या सादर सनमानी * आसन दिये समयसम आनी

सुनि सुरसरि-सम पावनि बानी * भईं सनेह बिकल सब रानी
दो० कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देवि मिथिलेसि ।
को बिबेक-निधि-बल्लभहिं तुम्हहिं सकइ उपदेसि २७३॥
रानि राय सन अवसर पाई * अपनी भाँति कहब समुझाई
रखिअहिं लखनु भरतु गवनहिं बन * जौं यह मत मानइ महीपमन
तौ भल जतनु करब सुबिचारी * मोरे सोचु भरत कर भारी
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं * रहें नीक मोहि लागत नाहीं
लखि सुभाउ सुनि सरल सुबानी * सब भइँ मगन करुनरस रानी
नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि * सिथिल सनेह सिद्ध जोगी मुनि
सबु रनिवासु बिथकि लखि रहेऊ * तब धरि धीर सुमित्रा कहेऊ
देबि दंड जुग जामिनि बीती * राम-मातु सुनि उठी सप्रीती
दो० बेगि पाउ धारिअ थलहि कह सनेह सतिभाय ।
हमरे तौ अब ईस-गति कै मिथिलेस सहाय ॥२७४॥
लखि सनेह सुनि बचन बिनीता * जनक-प्रिया गहि पाय पुनीता
देबि उचित असि बिनय तुम्हारी * दसरथ घरनि राम - महतारी
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं * अगिनि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं
सेवक राउ करम मन बानी * सदा सहाय महेस भवानी
रउरे अंग जोग जग को है * दीप सहाय कि दिनकर सोहै
राम जाइ बन करि सुर काजू * अचल अवधपुर करिहहिं राजू
अमर नाग नर राम-बाहु बल * सुख बसिहहिं अपने अपने थल
यह सब जागबलिक कहि राखा * देबि न होइ मुधा मुनि भाषा
दो० अस कहि पग परि प्रेम अति सिय हित बिनय सुनाइ ।
सिय समेत सियमातु तब चली सुआयसु पाइ ॥२७५॥

प्रिय परिजनहि मिली बैदेही ॰ जो जेहि जोग भाँति तेहि तेही
तापस - बेष जानकी देखी ॰ भा सब बिकल बिषाद बिसेषी
जनक राम-गुर - आयसु पाई ॰ चले थलहि सिय देखी आई
लीन्ह लाइ उर जनक जानकी ॰ पाहुनि पावन प्रेम प्रान की
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू ॰ भयउ भूप -मन मनहुँ प्रयागू
सिय -सनेह - बट बाढ़त जोहा ॰ तापर राम -प्रेम सिसु सोहा
चिरजीवी मुनि ज्ञानबिकलजनु ॰ बूड़त लहेउ बाल अवलंबनु
मोह-मगन-मति नहि बिदेह की॰ महिमा सिय-रघुबर - सनेह की
दो॰ सिय पितु-मातु-सनेह-बस बिकल न सकी सँभारि ।
धरनि-सुता धीरज धरेउ समउ सुधरम बिचारि॥२८६॥
तापस - बेष जनक सिय देखी ॰ भयउ प्रेम परितोष बिसेषी
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ ॰ सुजस धवल जग कह सब कोऊ
जिति सुरसरिकीरति - सरि तोरी ॰ गवन कीन्ह बिधि - अंड करोरी
गंग अवनिथल तीनि बड़ेरे ॰ एहि किय साधु समाज घनेरे
पितु कह सत्य सनेह सुबानी ॰ सीय सकुचि महुँ मनहुँ समानी
पुनि पितु-मातु लीन्हि उर लाई ॰ सिख आसिष हित दीन्हि सुहाई
कहति न सीय सकुचि मन माहीं ॰ इहाँ बसब रजनी भल नाहीं
लखि रुख रानि जनायउ राऊ ॰ हृदय सराहत सील सुभाऊ
दो॰ बार बार मिलि भेंटि सिय बिदा कीन्ह सनमानि ।
कही समय सिर भरत गति रानि सुबानि सयानि॥२८७॥
सुनि भूपाल भरत ब्यवहारू ॰ सोन सुगंध सुधा ससि सारू
मूँदि सजल नयन पुलके तन ॰ सुजस सराहन लगे मुदित मन
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि ॰ भरत कथा भव-बंध-बिमोचनि

धरम राज नय ब्रह्म-बिचारू * इहाँ जथामति मोर प्रचारू
सो मति मोरि भरत महिमाहीं * कहइ काह छलि छुअति न छाँहीं
बिधि गनपति अहिपति सिव सारद * कबि कोबिद बुध बुद्धि-बिसारद
भरत चरित कीरति करतूती * धरम सील गुन बिमल बिभूती
समुझत सुनत सुखद सब काहू * सुचि सुरसरि रुचि निदर सुधाहू
दो० निरवधि-गुन निरुपम-पुरुष भरत भरत-सम जानि।
कहिअ सुमेरु कि सेर सम कबिकुल-मति सकुचानि॥२७८॥
अगम सबहिं बरनत बर बरनी * जिमि जल-हीन मीनगम धरनी
भरत अमित महिमा सुनु रानी * जानहिं राम न सकहिं बखानी
बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ * तिय जियकी रुचि लखि कह राऊ
बहुरहिं लखन भरत बन जाहीं * सब कर भल सबके मन माहीं
देबि परन्तु भरत रघुबर की * प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी
भरत अवधि सनेह ममता की * जद्यपि राम सींव समता की
परमारथ स्वारथ सुख सारे * भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे
साधन सिद्धि राम-पग-नेहू * मोहि लखि परत भरत-मत-एहू
दो० भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं मनसहुँ राम-रजाइ।
करिअ न सोच सनेह-बस कहेउ भूप बिलखाइ॥२७९॥
राम-भरत गुन गनत सप्रीती * निसि दंपतिहिं पलक सम बीती
राज-समाज प्रात जुग जागे * न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे
गे नहाइ गुर पहिं रघुराई * बंदि चरन बोले रुख पाई
नाथ भरत पुरजन महतारी * सोक-बिकल बनबास दुखारी
सहित समाज राउ मिथिलेसू * बहुत दिवस भये सहत कलेसू
उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा * हित सबही कर रौरे हाथा

दो॰ जौं सुधारि सनमानि जन किये साधु सिरमोर।
को कृपालु बिनु पालिहइ बिरदावलिबरजोर ॥२८९॥

सोक सनेह कि बाल सुभायें * आयउँ लाइ रजायसु बायें
तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा * सबहि भाँति भल मानेउ मोरा
देखेउँ पाय सुमंगल मूला * जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला
बड़े समाज बिलोकेउँ भागू * बड़ी चूक साहिब अनुरागू
कृपा अनुग्रह अंग अघाई * कीन्हि कृपानिधि सब अधिकाई
राखा मोर दुलार गोसाँई * अपने सील सुभाय भलाई
नाथ निपट मैं कीन्हि ढिठाई * स्वामि समाज सकोच बिहाई
अबिनय बिनय जथारुचि बानी * छमिहि देव अति आरत जानी

दो॰ सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बड़ि खोरि।
आयसु देइय देव अब सबइ सुधारिय मोरि॥ २९०॥

प्रभु-पद पदुम-पराग दोहाई * सत्य-सुकृत-सुख - सीवँ सुहाई
सो करि कहउँ हिये अपने की * रुचि जागत सोवत सपने की
सहज सनेह स्वामि सेवकाई * स्वारथ छल फल चारि बिहाई
अग्या सम न सुसाहिब सेवा * सो प्रसाद जन पावहि देवा
अस कहि प्रेम-बिबस भये भारी * पुलक सरीर बिलोचन बारी
प्रभु-पद -कमल गहे अकुलाई * समउ सनेह न सो कहि जाई
कृपासिंधु सनमानि सुबानी * बैठाये समीप गहि पानी
भरतबिनय सुनि देखि सुभाऊ * सिथिल सनेह सभा रघुराऊ

छं॰ रघुराउसिथिलसनेहसाधु- समाजमुनिमिथिलाधनी।
मनमहँ सराहत भरत-भायप भगति की महिमाघनी॥
भरतहिंप्रसंसत बिबुधबरषत सुमन मानस मलिनसे।

तुलसी विकल सब लोग सुनि सकुचे निसागमन दिन सेष॥

सो० देखि दुखारी दीन दुहुँ समाज नर नारि सब।
मघवा महा मलीन मुयेहि मारि मंगल चहत ॥ ३१० ॥

कपट-कुचालि सीँव सुरराजू ॥ पर अकाज प्रिय आपन काजू
काकसमान पाक-रिपु रीती ॥ छली मलीन कतहुँ न प्रतीती
प्रथम कुमत करि कपट सकेला ॥ सो उचाट सबके सिर मेला
सुर माया सब लोग बिमोहे ॥ राम प्रेम अतिसय न बिछोहे
भये उचाटबस मन थिर नाहीं ॥ छन बन रुचि छन सदन सुहाहीं
दुबिध मनोगत प्रजा दुखारी ॥ सरित सिंधु संगम जनु बारी
दुचित कतहुँ परितोष न लहहीं ॥ एक एक सन मरम न कहहीं
लखि हिय हँसि कह कृपानिधानू ॥ सरिस स्वान मघवान जुवानू

दो० भरत जनक मुनिजन सचिव साधु सचेत बिहाइ।
लागि देव-माया सबहिं जथाजोग जन पाइ ॥ ३११ ॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे ॥ निजसनेह सुरपति छल भारे
सभा राउ गुरु महिसुर मंत्री ॥ भरतभगति सब कै मति जंत्री
रामहिं चितवत चित्र लिखे से ॥ सकुचत बोलत बचन सिखे से
भरत प्रीति-नति बिनय-बड़ाई ॥ सुनत सुखद बरनत कठिनाई
जासु बिलोकि भगति लवलेसू ॥ प्रेममगन मुनिगन मिथिलेसू
महिमा तासु कहइ किमि तुलसी ॥ भगतिसुभाय सुमतिहिय हुलसी
आपु छोटि महिमा बड़ि जानी ॥ कबिकुल-कानि मानि सकुचानी
कहि न सकति गुनरुचि अधिकाई ॥ मतिगति बालबचन की नाईं

दो० भरत-बिमल-जसबिमलबिधु सुमतिचकोर-कुमारि।
उदित बिमल जनहृदय-नभ एकटक रही निहारि ॥ ३१२ ॥

भरत सुभाउ न सुगम निगमहूँ • लघुमति चापलता कबि छमहूँ
कहत सुनत सतिभाउ भरत को • सीय-राम-पद होइ न रत को
सुमिरत भरतहि प्रेम राम को • जेहि न सुलभ तेहिसरिसबामको
देखि दयाल दसा सबही की • राम सुजान जानि जन जी की
धरम धुरीन धीर नय नागर • सत्य-सनेह-सील-सुख सागर
देस काल लखि समउ समाजू • नीति प्रीति - पालक रघुराजू
बोले बचन बानि सरबस से • हित परिनाम सुनत ससि-रस से
तात भरत तुम्ह धरम धुरीना • लोक-बेद - बिद प्रेम प्रबीना
दो॰ करम बचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात ।
गुरुसमाज लघु-बंधु-गुन कुसमय किमिकहिजात२२३॥
जानहु तात तरनि -कुल - रीती • सत्यसंध पितु - कीरति प्रीती
समउ समाज लाज गुरुजन की • उदासीन हित अनहित मन की
तुम्हहि बिदित सबही कर करमू • आपन मोर परम हित धरमू
मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा • तदपि कहउँ अवसर अनुसारा
तात तात बिनु बात हमारी • केवल गुरु-कुल कृपा सँभारी
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू • हमहि सहित सब होत खुआरू
जौं बिनु अवसर अथव दिनेसू • जग केहि कहहु न होइ कलेसू
तस उतपात तात बिधि कीन्हा • मुनि मिथिलेस राखिसब लीन्हा
दो॰ रामकाज सब लाज पति धरम धरनि धन धाम ।
गुरुप्रभाव पालिहि सबहि भलहोइहि परिनाम॥२२४॥
सहित समाज तुम्हार हमारा • घर बन गुरुप्रसाद रखवारा
मातु-पिता-गुरु-स्वामि -निदेसू • सकलधरम धरनीधर सेसू
सो तुम्ह करहु करावहु मोहू • तात तरनि-कुल - पालक होहू

साधक एक सकलसिधि देनी * कीरति सुगति भूति-मय बेनी
सो बिचारि सहि संकट भारी * करहु प्रजा परिवार सुखारी
बाँटी बिपति सबहिं मोहि भाई * तुम्हहिं अवधिभरिबड़िकठिनाई
जानि तुम्हहिं मृदु कहउँ कठोरा * कुसमय तात न अनुचित मोरा
होहिं कुठाँय सुबंधु सहाये * ओड़िअहिं हाथ असनि के घाये
दो॰ सेवक कर-पद-नयन से मुख सो साहिब होइ ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकबिसराहहिंसोइ॥२२८॥
सभासकल सुनि रघुबर बानी * प्रेम-पयोधि अमिय जनु सानी
सिथिल समाज सनेह समाधी * देखि दसा चुप सारद साधी
भरतहिं भयउ परम संतोषू * सनमुख स्वामि बिमुख दुख दोषू
मुख प्रसन्न मन मिटा बिषादू * भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू
कीन्ह सप्रेम प्रनाम बहोरी * बोले पानि पंकरुह जोरी
नाथ भयउ सुख साथ गये को * लहेउँ लाहु जग जनम भये को
अब कृपाल जस आयसु होई * करउँ सीस धरि सादर सोई
सो अवलंब देव मोहिं देई * अवधि पार पावउँ जेहि सेई
दो॰ देव देव अभिषेक हित गुरु अनुसासन पाइ ।
आनेउँ सब तीरथ-सलिल तेहि कहँ काह रजाइ॥२२९॥
एक मनोरथ बड़ मन माहीं * सभय सकोच जात कहि नाहीं
कहहु तात प्रभुआयसु पाई * बोले बानि सनेह सुहाई
चित्रकूट सुचि थलतीरथ बन * खगमृग सरिसर निर्झरगिरिगन
प्रभु-पद अंकित अवनि बिसेषी * आयसु होइ त आवउँ देखी
अवसि अत्रिआयसु सिर धरहू * तात बिगत-भय कानन चरहू
मुनिप्रसाद बन मंगल दाता * पावन परम सुहावन भ्राता

अब नृप भरत सभा अवलोकी • सकुचि रामफिरिअवनिबिलोकी
सील सराहि सभा सब सोची • कहुँ न रामसम स्वामि सँकोची
भरत सुजान रामरुख देखी • उठि सप्रेम धरि धीर बिसेखी
करि दंडवत कहत कर जोरी • राखी नाथ सकल रुचि मोरी
मोहि लागि सबहि सहेउ संतापू • बहुत भाँति दुख पावा आपू
अब गोसाईं मोहि देउ रजाई • सेवउँ अवध अवधि भरि जाई

दो० जेहि उपाय पुनि पाय जनु देखइ दीनदयाल ।
सो सिख देइअ अवधि लगि कोसलपालकृपाल३०२॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं • सब सुचि सरस सनेह सगाईं
राउर बदि भल भव-दुख-दाहू • प्रभु बिनु बादि परम-पद लाहू
स्वामि सुजानु जानि सबही की • रुचि लालसा रहनि जन जी की
प्रनतपाल पालहि सब काहू • देउ दुहूँ दिसि ओर निबाहू
असमोहि सब बिधिभूरि भरोसो • किये बिचार न सोच खरोसो
आरति मोर नाथ कर छोहू • दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठ हठि मोहू
यह बड़ दोष दूरि करि स्वामी • तजि सँकोच सिखइअ अनुगामी
भरतबिनय सुनि सबहि प्रसंसी • खीर-नीर बिबरन गति हंसी

दो० दीनबंधु सुनि बंधु के बचन दीन छलहीन ।
देस काल अवसर सरिस बोले राम प्रबीन॥३०३॥

तात तुम्हारि मोरि परिजन की • चिंतागुरहि नृपहि घर बन की
माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू • हमहि तुम्हहि सपनेहुँ न कलेसू
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ • स्वारथ सुजस धरम परमारथ
पितु-आयसु पालिअ दुहुँ भाई • लोक बेद भल भूप - भलाई
गुर पितु मातुस्वामि सिख पाले • चलेहु कुमग पग परहिं न खाले

अस बिचारि सब सोच बिहाई • पालहु अवध अवधि भरि जाई
देस कोस पुरजन परिवारू • गुरु-पद-रजहिं लाग छरभारू
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी • पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी
दो• मुखिया मुख सो चाहिये खान पान कहँ एक।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक॥३०४॥
राज - धरम - सरबस एतनोई • जिमि मन माँह मनोरथ गोई
बंधु प्रबोध कीन्ह बहु भाँती • बिनु अधार मन तोष न साँती
भरत-सील गुरु-सचिव-समाजू • सकुच सनेह - बिबस रघुराजू
प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्ही • सादर भरत सीस धरि लीन्ही
चरनपीठ करुना निधान के • जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के
संपुट भरत सनेह रतन के • आखर जुग जनु जीव जतन के
कुल-कपाट कर कुसल करम के • बिमलनयन सेवा सुधरम के
भरत मुदित अवलंब लहे तें • अस सुख जस सिय-राम रहे तें
दो• माँगेउ बिदा प्रनाम करि राम लिये उर लाइ।
लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसर पाइ॥ ३०५॥
सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी • अवधि आससम जीवन जी की
नतरु लखन-सिय राम बियोगा • हहरि मरत सब लोग कुरोगा
रामकृपा अवरेब सुधारी • बिबुध-धारि भइ गुनद गोहारी
भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो • राम-प्रेम-रस कहि न परत सो
तन मन बचन उमग अनुरागा • धीर - धुरंधर धीरज त्यागा
बारिज - लोचन मोचत बारी • देखि दसा सुर - सभा दुखारी
मुनिगन गुरु धुर धीर जनक से • ज्ञान अनल मन कसे कनक से
जे बिरंचि निरलेप उपाये • पदुमपत्र जिमि जग जलजाये

एक बार चुनि कुसुम सुहाये * निज कर भूषन राम बनाये
सीतहि पहिराये प्रभु सादर * बैठे फटिक-सिला पर सुंदर
सुरपति-सुत धरि बायस बेषा * सठ चाहत रघुपति बल देखा
जिमि पिपीलिका सागर थाहा * महा-मंद मति पावन चाहा
सीता-चरन चोंच हति भागा * मूढ़ मंद-मति - कारन कागा
चला रुधिर रघुनायक जाना * सींक-धनुष - सायक संधाना

दो० अति कृपालु रघुनायक सदा दीन पर नेह ।
ता सन आइ कीन्ह छलु मूरख अवगुन-गेह ॥ १ ॥

प्रेरितमंत्र ब्रह्म - सर धावा * चला भाजि बायस भय पावा
धरि निजरूप गयउ पितु पाहीं * राम - बिमुख राखा तेहि नाहीं
भा निरास उपजी मन त्रासा * जथा चक्र -भय रिषि दुर्बासा
ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका * फिरा स्रमित ब्याकुल भय सोका
काहू बैठन कहा न ओही * राखि को सकइ राम कर द्रोही
मातु मृत्यु पितु समन समाना * सुधा होइ बिष सुनु हरिजाना
मित्र करइ सत -रिपु कै करनी * ता कहँ बिबुध - नदी बैतरनी
सब जगु ताहि अनलहु तें ताता * जो रघुबीर बिमुख सुनु भ्राता

दो० जिमि जिमि भाजत सक्रसुत ब्याकुल अति दुखदीन ।
तिमि तिमि धावत रामसर पाछे परम प्रबीन ॥ २ ॥

बचहिं, उरग बर मसे खगेसा * रघुबर -सर छुटि गगन बँदेसा
नारद, देखा बिकल जयंता * लागि दया कोमलचित संता
दूरिहि तें कहि प्रभु - प्रभुताई * भजे जात बहु बिधि समुझाई
पठवा तुरत राम पहिं ताही * कहेसि पुकारि प्रनत हित पाही
आतुर सभय गहेसि पद जाई * त्राहि त्राहि दयाल रघुराई

अनुचित-बहु अनुचित-प्रभुताई * मैं मति-मंद जानि नहिं पाई
निजकृतकर्मजनित फलपायउँ * अब प्रभु पाहि सरनतकिआयउँ
सुनि कृपाल अति-आरत-बानी * एक नयन करि तजा भवानी
सो० कीन्ह मोहबस द्रोह जद्यपि तेहिकर बध उचित।
प्रभु छाँड़ेउ करि छोह को कृपालु रघुबीर सम ॥ २ ॥
रघुपति चित्रकूट बसि नाना * चरित किये श्रुति सुधा समाना
बहुरि राम अस मन अनुमाना * होइहि भीर सबहिं मोहिं जाना
सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई * सीतासहित चले दोउ भाई
अत्रि के आस्रम जब प्रभु गयऊ * सुनत महामुनि हरषित भयऊ
पुलकित-गात अत्रि उठि धाये * देखि राम आतुर चलि आये
करत दंडवत मुनि उर लाये * प्रेम-बारि दोउ जन अन्हवाये
देखि राम छबि नयन जुड़ाने * सादर निज आस्रम तब आने
करी पूजा कहि बचन सुहाये * दिये मूल फल प्रभु मन भाये
सो० प्रभु आसन-आसीन भरि लोचन सोभा निरखि।
मुनिबर परमप्रबीन जोरि पानि अस्तुति करत ॥ ३ ॥
छं० नमामि भक्तवत्सलं कृपालु-शील कोमलं।
भजामि ते पदाम्बुजं अकामिनां स्वधामदं ॥
निकाम-श्याम-सुन्दरं भवाम्बु नाथ-मन्दरं।
प्रफुल्ल कंज-लोचनं मदादि-दोष-मोचनं ॥
प्रलम्ब बाहु-विक्रमं प्रभोऽप्रमेयवैभवं।
निषङ्ग-चाप सायकं धरं त्रिलोक नायकं ॥
दिनेश-वंश-मण्डनं महेश चाप-खण्डनं।
मुनीन्द्र-सन्त-रञ्जनं सुरारि-वृन्द-भञ्जनं ॥

अनोज - वैरि - वन्दितं अजादि - देव-सेवितं ।
विशुद्ध बोध विग्रहं समस्त - दूषणापहं ॥
नमामि इन्दिरापतिं सुखाकरं सतां गतिं ।
भजे सशक्ति सानुजं शची पति - प्रियानुजं ॥
त्वदङ्घ्रिमूल ये नरा भजन्ति हीन मत्सरा
पतन्ति नो भवार्णवे वितर्क-वीचि - संकुले ॥
विविक्तवासिनस्सदा भजन्ति मुक्तये मुदा ।
निरस्य इन्द्रियादिकं प्रयान्ति ते गतिं स्वकं ॥
त्वमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं ।
जगद्गुरुं च शाश्वतं तुरीयमेव केवलं ॥
भजामि भाववल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं ।
स्वभक्त-कल्प पादपं समं सुसेव्यमन्वहं ॥
अनूप - रूप भूपतिं नतोऽहमुर्विजापतिं ।
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहि मे ॥
पठन्ति ये स्तवं इदं नरादरेण ते पदं ।
व्रजन्ति नात्र संशयः त्वदीयभक्तिसंयुता ॥

दो॰ बिनती करि मुनि नाइ सिर कह कर जोरि बहोरि ।
चरन-सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजइ मति मोरि ॥४॥

नमन अनम तव पद सुखकंदा * मइह प्रेम चकोर जिमि चंदा
देखि राम मुनि बिनय प्रनामा * बिबिध भाँति पायउ बिस्रामा
अनसुया के पद गहि सीता * मिली बहोरि सुसील बिनीता
श्री सिय सकल लोक सुखदाता * चलित लोक मर्याद कि माता
तेउ पाइ मुनिवर मुनि भामिनि * सुखी भई [illegible]

रिषि-पतिनी-मन सुख अधिकाई * आसिष देइ निकट बैठाई
दिब्य बसन भूषन पहिराये * जे नित नूतन अमल सुहाये
जाहि निरखि दुख दूरि पराहीं * गरुड जानि जिमि पन्नग जाहीं
दो० ऐसे बसन बिचित्र सुठि दिये सीय कहँ आनि।
अनमानी प्रिय बचन कहि प्रीति न जाइ बखानि॥४॥
कह रिषिबधू सरस मृदु बानी * नारिधरम कछु ब्याज बखानी
मातु पिता भ्राता हितकारी * मितप्रद सब सुनु राजकुमारी
अमित दानि भर्ता बैदेही * अधम सो नारि जो सेव न तेही
धीरज धरम मित्र अरु नारी * आपदकाल परखियहि चारी
बृद्ध रोग-बस जड़ धनहीना * अंध बधिर क्रोधी अति दीना
ऐसेहु पतिकर किय अपमाना * नारि पाव जमपुर दुख नाना
एकइ धरम एक ब्रत नेमा * काय बचन मन पतिपद प्रेमा
जगपतिब्रता चारिबिधि अहहीं * बेद पुरान संत सब कहहीं
दो० उत्तम मध्यम नीच लघु सकल कहउँ समुझाइ।
आगे सुनहिं ते भव तरहिं सुनहु सीय चितलाइ॥५॥
उत्तम के अस बस मन माहीं * सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं
मध्यम पर पति देखइ कैसे * भ्राता पिता पुत्र निज जैसे
धरमबिचारि समुझि कुल रहई * सो निकृष्ट तिय स्रुति अस कहई
बिनु अवसर भय तें रह जोई * जानहु अधम नारि जग सोई
पति बंचक पर-पति-रति करई * रौरव - नरक कलपसत परई
छन सुख लागि जनम सत कोटी * दुख न समुझ तेहि सम को खोटी
बिनु स्रम नारि परमगति लहई * पतिब्रत-धरम छाँडि छल गहई
पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई * बिधवा होइ पाइ तरुनाई

सो० सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ।
जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय॥
सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं।
तोहि प्रानप्रिय राम कहेउँ कथा संसार हित॥ ५॥

सुनि जानकी परम सुख पावा • सादर तासु चरन सिर नावा
तब मुनि सन कह कृपानिधाना • आयसु होइ जाउँ बन आना
संतत मोपर कृपा करेहू • सेवक जानि तजेहु जनि नेहू
धरम - धुरंधर प्रभु कै बानी • सुनि सप्रेम बोले मुनि ग्यानी
जासु कृपा अज सिव सनकादी • चहत सकल परमारथबादी
ते तुम्ह राम अकाम - पियारे • दीनबंधु मृदु बचन उचारे
अब जानी मैं श्रीचतुराई • भजिअ तुम्हहिं सब देव बिहाई
जेहि समान अतिसय नहिं कोई • ता कर सील कस न अस होई
केहिबिधि कहउँ जाहु अबस्वामी • कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी
असकहि प्रभु बिलोकि मुनि धीरा • लोचन जल बह पुलक सरीरा

छं० तन पुलक निर्भर प्रेमपूरन नयन मुख पंकज दिये।
मन-ग्यानगुन-गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किये॥
जपजोग धरम समूह ते नर भगति अनुपम पावई।
रघुबीर-चरित पुनीत निसि दिन दासतुलसी गावई॥

दो० कलि-मल-समन दमन दुख रामसुजस सुख मूल।
सादर सुनहिं जे तिन्हहिं पर राम रहहिं अनुकूल॥६॥

सो० कठिन काल मल-कोस धरम न ग्यान न जोग जप।
-परिहरि सकल भरोस रामहिं भजहिं ते चतुर नर॥६॥

मुनि-पद-कमल नाइ करि सीसा • चले बनहिं सुर-नर- मुनि-ईसा

आगे राम अनुज पुनि पाछे • मुनिवर-बेष बने अति काछे
उभय बीच सिय सोहइ कैसी • ब्रह्म जीव बिच माया जैसी
सरिता बन गिरि अवघट घाटा • पति पहिचानि देहिं बर बाटा
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया • करहिं मेघ तहँ तहँ नभ छाया
आस्रम बिपुल देखि मग माहीं • देवसदन तेहि पटतर नाहीं
बहु तड़ाग सुन्दरि अँबराई • भाँति भाँति सब मुनिन्ह लगाई
तेहिदिन तहँ प्रभु कीन्ह निवासा • सकलमुनिन्हमिलिकीन्हसुपासा
दो० आनि सुधासम मुदितमन पूछि पहुनई कीन्ह ।
कंद मूल फल अमियसम आनि रामकहँ दीन्ह ॥० ॥
अनुज-सीय-सेइ भोजन कीन्हा • जो जेहि भाव सुभग बर दीन्हा
होत प्रभात मुनिन्ह सिर नावा • आसिरबाद सबन्हि सन पावा
सुमिरि उमा सिव सिद्धि गनेसा • पुनि प्रभु चले सुनहु उरगेसा
बन अनेक सुंदर गिरि नाना • नाँघत चले जाहिं भगवाना
मिला असुर बिराध मग जाता • गरजत घोर कठोर रिसाता
रूप भयंकर मानहुँ काला • बेगवंत धायउ जिमि ब्याला
गगन देव मुनि किन्नर नाना • तेहि छन हृदय हारि कछु माना
धरतहि सो सीतहि लइ चलेऊ • राम हृदय कछु बिस्मय भयेऊ
सम्भ्रम हृदय कैकई - जननी • कहा अनुज सन बहुबिधि बरनी
बहुरि लखन रघुबरहि प्रबोधा • पाँच बान छाँड़े करि क्रोधा
छं० अपिक्रुद्धलखन सँधानि धनुसरमारि तेहिब्याकुलकियो।
पुनि उठानिसिचर राखि सीतहि मूल लइ छाँडतभयो॥
जनु कालदंड कराल धावा बिकल सब खग मृग भये ।
धनु तानि श्रीरघुबंसमनि पुनि मारि तन अजर किये ॥

दो० बहुरि एक सर मारा परा धरनि धुनि माथ।
उठेउ प्रबल पुनि गरजेउ चलेउ जहाँ रघुनाथ ॥ ८ ॥

ऐसइ करत निसाचर आवा * अब नहिं बचहु तुम्हहिं मैं खावा
धाम प्रबल यहिबिधि जनु भूधर * दौरहि भट करहिं ब्याकुल सुर
धाए तेज सत मरत समीतो * टूटहिं तरु उखरहिं पाखाना
भीत जंतु जहँ लगि रहे जेते * ब्याकुल भाजि चले तहँ तेते
उरगसमान जोरि सर सावा * आवत ही रघुबीर निपाता
तुरतहिं रुचिर रूप तेहिं पावा * देखि दुखी निज धाम पठावा
तासु अस्थि गाड़ेउ प्रभु खनी * देवन्ह हरषि दुंदुभी हनी
सीता आइ चरन लपटानी * अनुज सहित तब चले भवानी
पुनि आये जहँ मुनि सरभंगा * सुंदर अनुज जानकी संगा

दो० देखि राम-मुख-पंकज मुनिबर-लोचन भृंग।
सादर पान करत अति धन्य जनम सरभंग ॥ ९ ॥

कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला * संकर - मानस - राजमराला
जात रहेउँ बिरंचि के धामा * सुनेउँ स्रवन बन अइहहिं रामा
चितवत पंथ रहेउँ दिन राती * अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती
नाथ सकल साधन मैं हीना * कीन्ही कृपा जानि जन दीना
सो कछु देव न मोहि निहोरा * निज पन राखेहु जन-मन चोरा
तब लगि रहहु दीनहित लागी * जबलगिमिलउँ तुम्हहितनुत्यागी
जोग जग्य जप तप व्रत कीन्हा * प्रभु कहँ देइ भगति-बर लीन्हा
एहिबिधि सररचि मुनि सरभंगा * बैठे हृदय छाँड़ि सब संगा

दो० सीता अनुज-समेत प्रभु नील-जलद-तनु स्याम।
मम हिय बसहु निरंतर सगुन-रूप श्रीराम ॥ १० ॥

अस कहि जोग अगिनि तनु जारा * रामकृपा बैकुंठ सिधारा
ताते मुनि हरिलीन न भयऊ * प्रथमहिं भेद भगति बर लयऊ
रिषि-निकाय मुनिबरगति देखी * सुखी भये सब हृदय बिसेषी
अस्तुति करहिं सकल मुनिबृंदा * जयति प्रनतहित करुनाकंदा
पुनि रघुनाथ चले बन आगे * मुनिबर-बृंद बिपुल सँग लागे
अस्थिसमूह देखि रघुराया * पूछा मुनिन्ह लागि अति दाया
जानतहू पूछिअ कस स्वामी * सबदरसी तुम्ह अंतरजामी
निसिचरनिकर सकलमुनि खाये * सुनि रघुबीर नयन जल छाये

दो० निसिचर-हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह ।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुखदीन्ह ॥११॥

मुनि अगस्त्य कर सिष्य सुजाना * नाम सुतीछन रति भगवाना
मन-क्रम-बचन राम-पद-सेवक * सपनेहु आन भरोस न देवक
प्रभु-आगवन स्रवन सुनि पावा * करत मनोरथ आतुर धावा
हे बिधि दीनबंधु रघुराया * मोसे सठ पर करिहहिं दाया
सहित अनुज मोहिं राम गोसाईं * मिलिहहिं निज सेवक की नाईं
मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं * भगति बिरति न ज्ञान मन माहीं
नहिं सतसंग जोग जप जागा * नहिं दृढ़ चरनकमल अनुरागा
एक बानि करुनानिधान की * सो प्रिय जाके गति न आनकी

छं० सोउ प्रिय अति पातकी जिन्ह कबहुँ प्रभुसुमिरन करयो ।
ते आजु मैं निजनयनदेखिहउँ पुरिसपुलकित हियभरयो ॥
जे पदसरोज अनेक मुनि कर ध्यान कबहुँ न आवहीं ।
ते राम श्रीरघुबंस-मनि प्रभु प्रेम तें सुख पावहीं ॥

दो० पन्नगारि सुनु प्रेमसम भजन न दूसर आन ।

तुम्हहिं नीक लागइ रघुराई * सो मोहिं देहु दास सुखदाई
अबिरल भगति बिरति बिज्ञाना * होहु सकल गुन-ग्यान निधाना
प्रभु जो दीन्ह सो बर मैं पावा * अब सो देहु, मोहिं जो भावा
दो० अनुज-जानकी-सहित प्रभु चाप-बान धर राम।
मम हिय-गगन इंदु इव बसहु सदा निःकाम ॥११॥

एवमस्तु करि रमानिवासा * हरषि चले कुंभज-रिषि पासा
मुनि प्रनाम करि कहकर जोरी * सुनहु नाथ कछु बिनती मोरी
बहुत दिवस गुरुदरसन पाये * भये मोहिं एहि आस्रम आये
अब प्रभुसंग जाउँ गुरु पाहीं * तुम्ह कहँ नाथ निहोरा नाहीं
चले जात मग तव पदकंजा * देखिहउँ जो निरावमद-गंजा
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई * लिये संग बिहँसि दोउ भाई
पंथ कहत निज भगति अनूपा * मुनिआस्रम पहुँचे सुरभूपा
आस्रम देखि महा सुचि सुंदर * सरित सरोबर हरषित भूधर
बनचर जलचर जीव जहाँ तें * बैर न करहिं प्रीति सबहीं तें
दो० खगबर बिबिधि बिहंगमय बोलत बिबिध प्रकार।
बसहिं सिद्धमुनि तप करहिं महिमा-गुन-आगार ॥१२॥

तुरत सुतीच्छन गुरु पहिं गयऊ * करि दंडवत कहत अस भयऊ
नाथ कोसलाधीस - कुमारा * आये मिलन जगत आधारा
राम अनुज समेत बैदेही * निसि दिन देव जपत हहु जेही
सुनत अगस्त तुरत उठि धाये * हरि बिलोकि लोचन जल छाये
मुनि-पद-कमल परे दोउ भाई * रिषि अति प्रीति लिये उर लाई
सादर कुसल पूछि मुनि ग्यानी * आसन पर बैठारे आनी
पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा * मोहि सम भागवंत नहिं दूजा

तहँ लगि रहे अपर मुनिबृंदा * हरषे सब बिलोकि सुखकंदा

दो०— मुनि-समूह महँ बैठे सनमुख सबकी ओर।
सरद-इंदु तन चितवत मानहुँ निकर चकोर ॥ १९ ॥

पाइ सुमन सब हरषित मीना * पारस पाइ सुखी जिमि दीना
प्रभुहिं निरखिसुख मा परितोषी * चातक जिमि पाये जल स्वाती
तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं * तुम्ह सन प्रभु दुराउ कछु नाहीं
तुम्ह जानहु जेहि कारन आयउँ * ताते तात न कहि समुझायउँ
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही * जेहि प्रकार मारउँ मुनिद्रोही
मुनि मुसकाने सुनि प्रभु बानी * पूछेहु नाथ मोहि का जानी
तुम्हरेइ भजन प्रभाव अघारी * जानउँ महिमा कछुक तुम्हारी
ऊमरि-तरु बिसाल तव माया * फल ब्रह्मांड अनेक निकाया
जीव चराचर जंतु - समाना * भीतर बसहिं न जानहिं आना
ते फलभच्छक कठिन कराला * तव भय डरत सदा सोउ काला
ते तुम्ह सकल-लोकपति-साईं * पूछेहु मोहि मनुज की नाईं
यह बर माँगउँ कृपा निकेता * बसहु हृदय सिय-अनुज-समेता
अबिरल भगति बिरति सतसंगा * चरन - सरोरुह प्रीति असंगा
जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता * अनुभव गम्य भजहिं जेहि संता
अस तव रूप बखानउँ जानउँ * फिरिफिरिसगुन ब्रह्म-रति मानउँ
संतत दासन्ह देहु बड़ाई * ता तें मोहि पूछेहु रघुराई
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ * पावन पंचबटी तेहि नाऊँ
गोदावरि पुनीत तहँ बहई * चारिहु जुग प्रसिद्ध सो अहई
दंडक बन पुनीत प्रभु करहू * उग्र साप मुनिबर कर हरहू
बास करहु तहँ रघुकुल-राया * कीजिय सकल मुनिन्ह पर दाया

होइ बिकल सक मनहि न रोकी * जिमिरबिमनिद्रवरबिहिबिलोकी

दो० अधम निसाचरि कुटिल अति चली करन उपहास।
सुनु खगेस भावी प्रबल भा चह निसिचरनास ॥२१॥

रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई * बोली बचन बहुत मुसुकाई
तुम सम पुरुष न मोसम नारी * यह सँजोग बिधि रचा बिचारी
मम अनुरूप पुरुष जग माहीं * देखेउँ खोजि लोक तिहुँ नाहीं
तातें अब लगि रहिउँ कुमारी * मन माना कछु तुम्हहि निहारी
सीतहि चितइ कही प्रभु बाता * अहइ कुमार मोर लघु भ्राता
गइ लछिमन रिपुभगिनी जानी * प्रभु बिलोकि बोले मृदुबानी
सुंदरि सुनु मैं उन्ह कर दासा * पराधीन नहिं तोर सुपासा
प्रभु समरथ कोसलपुर - राजा * जो कछु करहिं उन्हहि सब छाजा

दो० केहरिसम नहिं करिवर बना कि बाघ-समाज।
प्रभुसेवक तुमि जानहु मानहु बचन प्रमान ॥२२॥

सेवक सुख चह मान भिखारी * ब्यसनी धन सुभगति बिभिचारी
लोभी जस चह चार गुमानी * नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी
पुनि फिरि राम निकट सो आई * प्रभु लछिमन पहिं बहुरि पठाई
लछिमन कहा तोहि सो बरई * जो तृन तोरि लाज परिहरई
तब खिसिआनि राम पहिं गई * रूप भयंकर प्रगटत भई
बिथुरे केस रदन बिकराला * भृकुटी कुटिल करन लगि गाला
सीतहि सभय देखि रघुराई * कहा अनुज सन सैन बुझाई
अनुज राम-मन की गति जानी * उठ रिसाइ तब सुनहु भवानी

दो० लछिमन अति लाघव सों नाक कान बिनु कीन्हि।
ताके कर रावन कहँ मनहुँ चुनौती दीन्हि ॥ २३ ॥

नाक कान बिनु भइ बिकरारा • जनु स्रव सैल गेरु कै धारा
स्यामघटा देखत घन फेरी • तहँ बासव-धनु मनहुँ उघेरी
खरदूषन पहिं गइ बिलपाता • धिग धिग तव पौरुषबल भ्राता
तेहि पूछा सब कहेसि बुझाई • जातुधान सुनि सेन बनाई
चौदह सहस सुभट सँग लीन्हे • जिन्ह सपनेहुँ रनपीठि न दीन्हे
धाये निसिचर-निकर बरूथा • जनु सपच्छ कज्जल गिरि जूथा
नाना बाहन नानाकारा • नानायुध धर घोर अपारा
सुपनखा आगे करि लीन्ही • असुभरूप श्रुति-नासा-हीनी
दो॰ भिन्न भिन्न बल सब मिलिकरहिं पुकारहिं एक सुभाइ ।
बाजन लाग जुझाऊ हरष न हृदय समाइ ॥२१॥
असगुन अमित होहिं भयकारी • गनहिं न मृत्यु-बिबस सब झारी
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं • देखि कटक भट अति हरषाहीं
कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई • धरि मारहु तिय लेहु छुड़ाई
कोउ कह सुनहु सत्य हम कहहीं • कानन फिरहिं बीर कोउ अहहीं
एक कहा भट भे रहहु • खर के आगे अस जनि कहहु
बहु बिधि कहत बचन रनधीरा • आये सकल जहाँ रघुबीरा
धूरि पूरि नभ-मंडल रहा • राम बोलाइ अनुज सन कहा
लै जानकिहि जाहु गिरि-कंदर • आवा निसिचर-कटक भयंकर
रहेहु सजग सुनि प्रभु कै बानी • चले सहित सियसर धनु-पानी
देखि राम रिपु-दल चलि आवा • बिहँसि कठिन कोदंड चढ़ावा
छं॰ कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जटजूट बाँधत सोह क्यों ।
मरकत सैल पर लरत दामिनि कोटि सों जुग भुजग ज्यों ॥
कटिकसि निषंगबिसालभुजगहिचापबिसिखसुधारिकै ।

दो० नाना बिधि बिनती करि प्रभु प्रसन्न जिय जानि।
नारद बोले बचन तब जोरि सरोरुह-पानि ॥ ४१ ॥

सुनहु उदार परम रघुनायक • सुंदर अगम सुगम बरदायक
देहु एक बर माँगउँ स्वामी • जद्यपि जानत अंतरजामी
जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ • जन सन कबहुँ कि करउँ दुराऊ
कवनिबस्तुअसि प्रियमोहिलागी • जो मुनिबर न सकहु तुम्ह माँगी
जन कहँ कछु अदेय नहिं मोरे • अस बिस्वास तजहु जनि भोरे
तब नारद बोले हरषाई • अस बर माँगउँ करउँ ढिठाई
जद्यपि प्रभु के नाम अनेका • श्रुति कह अधिक एक तें एका
राम सकल नामन्ह तें अधिका • होउनाथअघ-खग-गन-बधिका

दो० राका रजनी भगति तव राम नाम सोइ सोम।
अपर नाम उडुगन बिमल बसहु भगत-उर-ब्योम॥४२॥
एवमस्तु मुनि सन कहेउ कृपासिंधु रघुनाथ।
तब नारद मन हरष अति प्रभुपद नायउ माथ॥४३॥

अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी • पुनि नारद बोले मृदुबानी
राम जबहिं प्रेरेहु निज माया • मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया
तब बिबाह मैं चाहउँ कीन्हा • प्रभु केहि कारन करइ न दीन्हा
सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा • भजहिं जेमोहितजिसकलभरोसा
करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी • जिमि बालकहि राख महतारी
गह सिसु-बच्छ-अनल अहि धाई • तहँ राखइ जननी अरगाई
प्रौढ़ भये तेहि सुत पर माता • प्रीति करइ नहिं पाछिलि बाता
मेरे प्रौढ़ - तनय - सम ग्यानी • बालक-सुत सम दास अमानी
जनहिं मोर बल निजबल ताही • दुहुँ कहँ काम क्रोध रिपु आही

यह बिचारि पंडितमोहि भजहीं * पायेहु ज्ञान भगति नहिं तजहीं

दो० काम क्रोध-लोभादि-मद प्रबल मोह कै धारि।
तिन्ह महँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि ॥ ४३ ॥

सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता * मोह बिपिन कहँ नारि बसंता
जप तप नेम जलाश्रय झारी * होइ ग्रीसम सोखइ सब नारी
काम क्रोध मद मत्सर भेका * इन्हहिं हरषप्रद बरषा एका
दुर्बासना कुमुद - समुदाई * तिन कहँ सदा सरद सुखदाई
धर्म सकल सरसीरुह - बृंदा * होइ हिम तिन्हहिं देति दुख दंदा
पुनि ममता जवास बहुताई * पलुहइ नारि सिसिर रितु पाई
पाप उलूक निकर सुखकारी * नारि निबिड़ रजनी अँधियारी
बुधि बल सील सत्य सब मीना * बंसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना

दो० अवगुन-मूल सूल-प्रद प्रमदा सब दुख-खानि।
तातें कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जिय जानि ॥ ४४ ॥

सुनि रघुपति के बचन सुहाये * मुनि तन पुलक नयन भरि आये
कहहु कवन प्रभु कै अस रीती * सेवक पर ममता अरु प्रीती
जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी * ज्ञान रंक नर मंद अभागी
पुनि सादर बोले मुनि नारद * सुनहु राम बिज्ञान बिसारद
संतन्ह के लच्छन रघुबीरा * कहहु नाथ भव भंजन भीरा
सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ * जिन्ह तें मैं उन्ह के बस रहऊँ
षट-बिकार-जित अनघ अकामा * अचल अकिंचन सुचि सुखधामा
अमित-बोध अनीह मित-भोगी * सत्यसार कबि कोबिद जोगी
सावधान मानद मद - हीना * धीर भगति पथ परम प्रबीना

दो० गुनागार संसार दुख - रहित बिगत संदेह।

तजि मम चरन-सरोज प्रिय जिन्ह कहँ देह न गेह॥४८॥

निजगुन स्रवनसुनत सकुचाहीं ॰ परगुन सुनत अधिक हरषाहीं
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती ॰ सरल सुभाव सबहिं सन प्रीती
जप तप ब्रत दम संजम नेमा ॰ गुरु-गोबिंद बिप्र-पद प्रेमा
स्रद्धा छमा मयत्री दाया ॰ मुदिता मम पद प्रीति अमाया
बिरति बिबेक बिनय बिज्ञाना ॰ बोध जथारथ बेद-पुराना
दंभ मान मद करहिं न काऊ ॰ भूलि न देहिं कुमारग पाऊ
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला ॰ हेतु-रहित पर-हित-रत-सीला
सुनु मुनि साधुन के गुन जेते ॰ कहि न सकहिं सारद श्रुति तेते

छं॰ कहि सक न सारद सेष नारद सुनत पद पंकज गहे।
अस दीनबंधु कृपाल अपने भगत-गुन निज-मुख कहे॥
सिर नाइ बारहिं बार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गये।
ते धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरि रँग रये॥

दो॰ रावनारि-जस पावन गावहिं सुनहिं जे लोग।
राम भगति दृढ़ पावहीं बिनु बिराग जपजोग॥४९॥
दीप सिखा-सम जुबतितन मन जनि होसि पतंग।
भजहिं राम तजि काम मद करहिं सदा सतसंग॥५०॥

मास-पारायण २२ दिन

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलवैराग्यसम्पादनो नाम तृतीयः
सोपानः समाप्तः।

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामचरितमानस

चतुर्थ सोपान

(किष्किन्धाकाण्ड)

श्लोकौ

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥१॥
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥२॥

सो० मुक्तिजन्म-महि जानि ज्ञानखानि अघहानिकर ।
जहँ बस सम्भुभवानि सो कासी सेइय कस न ॥ १ ॥
जरत सकल सुरवृन्द विषम गरल जेहि पान किय ।
तेहि न भजसि मन मंद को कृपाल संकरसरिस ॥२ ॥

आगे चले बहुरि रघुराया • रिष्यमूक पर्बत निअराया
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा • आवत देखि अतुल-बल-सींवा
अति सभीत कह सुनु हनुमाना • पुरुष जुगल बल-रूप निधाना
धरि बटु-रूप देखु तैं जाई • कहेसु जानि जिय सैन बुझाई
पठये बालि होहिं मन मैला • भागउँ तुरत तजउँ यह सैला
बिप्र-रूप धरि कपि तहँ गयऊ • माथ नाइ पूछत अस भयऊ
को तुम्ह स्यामल-गौर सरीरा • छत्री-रूप फिरहु बन बीरा
कठिनभूमि कोमल-पद-गामी • कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी
मृदुल मनोहर सुंदर गाता • सहत दुसह बन आतप-बाता
की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ • नर नारायन की तुम्ह दोऊ
दो० जग-कारन तारन-भव भंजन धरनी भार।
की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार॥१॥
हँसि बोले रघुबंस कुमारा • बिधि कर लिखा को मेटनहारा
कोसलेस दसरथ के जाये • हम पितु-बचन मानि बन आये
नाम राम लछिमन दोउ भाई • संग नारि सुकुमारि सुहाई
इहाँ हरी निसिचर बैदेही • बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही
आपन चरित कहा हम गाई • कहहु बिप्र निज कथा बुझाई
प्रभुपहिचानि परेउ गहि चरना • सो सुख उमा जाइ नहिं बरना
पुलकिततन मुख आव न बचना • देखत रुचिर बेष कै रचना
पुनि धीरज धरि अस्तुति कीन्ही • हरष हृदय निज नाथहिं चीन्ही
मोर न्याउ मैं पूछा साईं • तुम्ह पूछहु कस नर की नाईं
तव माया-बस फिरउँ भुलाना • तातें मैं नहिं प्रभु पहिचाना
दो० एक मंद मैं मोह-बस कुटिल हृदय अग्यान।

पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान ॥ २ ॥

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरे • सेवक प्रभुहि परइ जनि भोरे
नाथ जीव तव माया मोहा • सो निस्तरइ तुम्हारेहि छोहा
ता पर मैं रघुबीर दोहाई • जानउँ नहिं कछु भजन उपाई
सेवक सुत पति मातु भरोसे • रहइ असोच बनइ प्रभु पोसे
अस कहि परेउ चरन अकुलाई • निज-तनु प्रगटि प्रीति उर छाई
तब रघुपति उठाइ उर लावा • निज-लोचन-जल-सींचि जुड़ावा
सुनु कपि जियमानसि जनि ऊना • तैं मम प्रिय लछिमन तें दूना
समदरसी मोहि कह सब कोऊ • सेवकप्रिय अनन्य गति सोऊ

दो० सो अनन्य जाके असि मति न टरइ हनुमंत ।
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत ॥ ३ ॥

देखि पवनसुत पति अनुकूला • हृदय हरष बीती सब सूला
नाथ सैल पर कपिपति रहई • सो सुग्रीव दास तव अहई
तेहि सन नाथ मयत्री कीजे • दीन जानि तेहि अभय करीजे
सो सीता कर खोज कराइहि • जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि
एहिबिधि सकल कथा समुझाई • लिये दुअउ जन पीठि चढ़ाई
जब सुग्रीव राम कहँ देखा • अतिसय जनम धन्य करि लेखा
सादर मिलेउ नाइ पद माथा • भेंटेउ अनुज - सहित रघुनाथा
कपि कर मन बिचार एहि रीती • करिहहिं बिधि मोसन ये प्रीती

दो० तब हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाइ ।
पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढ़ाइ ॥ ४ ॥

कीन्हि प्रीति कछु बीच न राखा • लछिमन रामचरित सब भाखा
कह सुग्रीव नयन भरि बारी • मिलिहि नाथ मिथिलेस-कुमारी

मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक बारा • बैठ रहेउँ मैं करत बिचारा
गगन - पंथ देखी मैं जाता • परबस परी बहुत बिलपाता
राम राम हा राम पुकारी • हमहिं देखि दीन्हेउ पट डारी
माँगा राम तुरत तेहिं दीन्हा • पट उर लाइ सोच अति कीन्हा
कह सुग्रीवँ सुनहु रघुबीरा • तजहु सोच मन आनहु धीरा
सब प्रकार करिहउँ सेवकाई • जेहिबिधि मिलिहि जानकी आई

दो॰ सखा-बचन सुनि हरषे कृपासिंधु बल-सींवँ ।
कारन कवन बसहु बन मोहिं कहहु सुग्रीवँ ॥ ५ ॥

नाथ बालि अरु मैं द्वौ भाई • प्रीति रही कछु बरनि न जाई
मय सुत मायावी तेहि नाऊँ • आवा सो प्रभु हमरें गाऊँ
अर्धराति पुर - द्वार पुकारा • बाली रिपु बल सहइ न पारा
धावा बालि देखि सो भागा • मैं पुनि गयउँ बंधु - सँग लागा
गिरिबर गुहाँ पैठ सो जाई • तब बालीं मोहि कहा बुझाई
परिखेसु मोहि एक पखवारा • नहिं आवौं तब जानेसु मारा
मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी • निसरी रुधिर धार तहँ भारी
बालि हतेसि मोहि मारिहि आई • सिला देइ तहँ चलेउँ पराई
मंत्रिन्ह पुर देखा बिनु साईं • दीन्हेउ मोहि राज बरिआईं
बाली ताहि मारि गृह आवा • देखि मोहि जियँ भेद बढ़ावा
रिपुसम मोहि मारेसि अतिभारी • हरि लीन्हेसि सर्बसु अरु नारी
ताकें भय रघुबीर कृपाला • सकलभुवन मैं फिरेउँ बिहाला
इहाँ साप बस आवत नाहीं • तदपि सभीत रहउँ मन माहीं
सुनि सेवक दुख दीनदयाला • फरकि उठीं द्वै भुजा बिसाला

दो॰ सुनु सुग्रीवँ मारिहउँ बालिहि एकहिं बान ।

ब्रह्म-रुद्र-सरनागत गये न उबरिहिं प्रान ॥ ६ ॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी • तिन्हहिं बिलोकत पातक भारी
निज-दुखगिरि-समरजकरिजाना • मित्र के दुख रज मेरु-समाना
जिन्ह के असिमतिसहज न आई • ते सठ कत हठि करत मिताई
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा • गुन प्रगटइ अवगुनहिं दुरावा
देत लेत मन संक न धरई • बल अनुमान सदा हित करई
बिपति-काल कर सतगुन नेहा • श्रुति कह संत मित्र गुन एहा
आगे कह मृदु - बचन बनाई • पाछे अनहित मन कुटिलाई
जाकर चित अहि-गति-सम भाई • अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई
सेवक-सठ नृप कृपन कुनारी • कपटी मित्र सूलसम चारी
सखा सोच त्यागहु बल मोरे • सब बिधि घटब काज मैं तोरे
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा • बालि महाबल अति रनधीरा
दुंदुभि अस्थि ताल देखराये • बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती • बालि बधब इन्ह भइ परतीती
बार बार नावइ पद सीसा • प्रभुहिं जानि मन हरष कपीसा
उपजा ज्ञान बचन तब बोला • नाथ कृपा मन भयउ अलोला
सुख संपति परिवार बड़ाई • सब परिहरि करिहउँ सेवकाई
ए सब राम भगति के बाधक • कहहिं संत तब पद अवराधक
सत्रु मित्र सुख दुख जग माहीं • माया - कृत परमारथ नाहीं
बालि परमहित जासु प्रसादा • मिलेहु राम तुम्ह समन बिषादा
सपने जेहि सन होइ लराई • जागे समुझत मन सकुचाई
अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती • सब तजि भजन करउँ दिन राती
सुनि बिराग संजुत कपि-बानी • बोले बिहँसि राम धनु - पानी

सुमन-माल जिमि कंठ तें गिरत न जानइ नाग ॥१०॥
राम बालि निजधाम पठावा • नगर लोग सब ब्याकुल धावा
नाना बिधि बिलाप कर तारा • छूटे केस न देह सँभारा
तारा बिकल देखि रघुराया • दीन्ह ज्ञान हरि लीन्ही माया
छिति जल पावक गगन समीरा • पंच-रचित अति अधम सरीरा
प्रगट सो तनु तव आगे सोवा • जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोवा
उपजा ज्ञान चरन तब लागी • लीन्हेसि परम भगति -बर मागी
उमा दारु - जोषित की नाईं • सबहिं नचावत राम गोसाईं
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा • मृतक-कर्म बिधिवत सब कीन्हा
राम कहा अनुजहि समुझाई • राज देहु सुग्रीवहिं जाई
रघुपति-चरन नाइ करि माथा • चले सकल प्रेरित रघुनाथा
दो० लछिमन तुरत बोलाये पुरजन बिप्र-समाज ।
राज दीन्ह सुग्रीवँ कहुँ अंगद कहँ जुबराज ॥ ११ ॥
उमा रामसम हित जगमाहीं • गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं
सुर नर मुनि सब कै यह रीती • स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती
बालि त्रास-ब्याकुल दिन राती • तन बहु ब्रन चिंता जर छाती
सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ • अति कृपालु रघुबीर - सुभाऊ
जानतहूँ अस प्रभु परिहरहीं • काहे न बिपति-जाल नर परहीं
पुनि सुग्रीवहिं लीन्ह बोलाई • बहु प्रकार नृप - नीति सिखाई
कह सुग्रीवँ सुनहु रघुराया • दीन जानि पुर कीजिय दाया
कह प्रभु सुनु सुग्रीवँ हरीसा • पुर न जाउँ दस - चारि बरीसा
गत ग्रीषम बरषा रितु आई • रहिहउँ निकट सैल पर छाई
अंगद-सहित करहु तुम्ह राजू • संतत हृदय धरेहु मम काजू

तब सुग्रीवँ भवन फिरि आये * राम प्रबरषन गिरि पर छाये

दो॰ प्रथमहिँ देवन्ह गिरि-गुहा राखी रुचिर बनाइ।
राम कृपानिधि कछुक दिन बास करहिँगे आइ॥१२॥

सुंदर बन कुसुमित अति सोभा * गुंजत मधुपनिकर मधुलोभा
कंद मूल फल पत्र सुहाये * भये बहुत जब तें प्रभु आये
देखि मनोहर सैल अनूपा * रहे तहँ अनुज सहित सुरभूपा
मधुकर-खग-मृग-तनुधरि देवा * करहिँ सिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा
मंगल-रूप भयउ बन तब तें * कीन्ह निवास रमापति जब तें
फटिक-सिला अति सुभ्र सुहाई * सुख - आसीन तहाँ दोउ भाई
कहत अनुज सन कथा अनेका * भगतिबिरतिनृप नीति बिबेका
बरषाकाल मेघ नभ छाये * गर्जत लागत परम सुहाये

दो॰ लछिमन देखहु मोरगन नाचत बारिद पेखि।
गृही बिरति-रत हरष जस बिष्णुभगत कहँ देखि॥१३॥

घन घमंड नभ गरजत घोरा * प्रिया हीन डरपत मन मोरा
दामिनिदमकि रह न घनमाहीँ * खल कै प्रीति जथा थिर नाहीँ
बरसहिँ जलद भूमि नियराये * जथा नवहिँ बुध बिद्या पाये
बुंद अघात सहहिँ गिरि कैसे * खल के बचन संत सह जैसे
छुद्र-नदी भरि चलीं तोराई * जस थोरेहु धन खल इतराई
भूमि परत भा ढाबर पानी * जिमि जीवहि माया लपटानी
सिमिटि २ जल भरहिँ तलावा * जिमि सदगुन सज्जनपहिँ आवा
सरिता-जल जलनिधिमहँ जाई * होइ अचल जिमिजिवहरिपाई

दो॰ हरित भूमि तृनसंकुल समुझि परहि नहिँ पंथ।
जिमि पाखंड बिबाद तें गुप्त होहिँ सदग्रंथ॥१४॥

दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई • बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई
नव पल्लव भये बिटप अनेका • साधक मन जस मिले बिबेका
अर्क जवास पात बिनु भयऊ • जस सुराज खल उद्यम गयऊ
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी • करइ क्रोध जिमि धर्महिं दूरी
ससि-संपन्न सोह महि कैसी • उपकारी कै संपति जैसी
निसि तम घन खद्योत बिराजा • जनु दंभिन कर मिला समाजा
महावृष्टि चलि फूटि कियारी • जिमि सुतंत्र भये बिगरहिं नारी
कृषी निरावहिं चतुर किसाना • जिमि बुध तजहिं मोह-मद-माना
देखिअत चक्रवाक खग नाहीं • कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं
ऊसर बरषइ तृन नहिं जामा • जिमि हरिजन हिय उपज न कामा
बिबिध जंतुसंकुल महि भ्राजा • प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना • जिमि इंद्रियगन उपजे ज्ञाना

दो० कबहुँ प्रबल बह मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ।
जिमि कपूत के उपजे कुल सद्धर्म नसाहिं ॥ १५ ॥
कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग ।
बिनसइ उपजइ ज्ञान जिमि पाइ कुसंग सुसंग ॥१६॥

बरषा बिगत सरद रितु आई • लछिमन देखहु परम सुहाई
फूले कास सकल महि छाई • जनु बरषाकृत प्रगट बुढ़ाई
उदित अगस्त पथ-जल सोखा • जिमि लोभहि सोखहि संतोषा
सरिता-सर निर्मल जल सोहा • संतहृदय जस गत-मद-मोहा
रस रस सूख सरित-सर-पानी • ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी
जानि सरद-रितु खंजन आये • पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये
पंक न रेनु सोह असि धरनी • नीति-निपुन नृप कै जसि करनी

जल संकोच बिकल भइ मीना * अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना
बिनु घन निर्मल सोह अकासा * हरिजन इव परिहरि सब आसा
कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी * कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी
दो० चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि ।
जिमि हरिभगति पाइ श्रम तजहिं आस्रमी चारि ॥१७॥
सुखी मीन जे नीर अगाधा * जिमि हरि-सरन न एकउ बाधा
फूले कमल सोह सर कैसे * निर्गुन ब्रह्म सगुन भये जैसे
गुंजत - मधुकर मुखर अनूपा * सुंदर खगरव नाना रूपा
चक्रबाक-मन दुख निसि पेखी * जिमि दुरजन परसंपति देखी
चातक रटत तृषा अति ओही * जिमि सुख लहइ न संकर-द्रोही
सरदातप निसि ससि अपहरई * संत दरस जिमि पातक टरई
देखि इंदु चकोर - समुदाई * चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई
मसक दंस बीते हिमत्रासा * जिमि द्विज-द्रोह किये कुलनासा
दो० भूमि जीव-संकुल रहे गये सरद रितु पाइ ।
सदगुरु मिलें जाहिं जिमि संसय-भ्रम-समुदाइ ॥१८॥
बरषा गत निर्मल रितु आई * सुधि न तात सीता कै पाई
एक बार कैसेहुँ सुधि जानउँ * कालहु जीति निमिष महँ आनउँ
कतहुँ रहउ जौं जीवति होई * तात जतन करि आनउँ सोई
सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी * पावा राज कोस - पुर - नारी
जेहि सायक मारा मैं बाली * तेहि सर हतउँ मूढ़ कहँ काली
जासु कृपा छूटहिं मद मोहा * ता कहँ उमा कि सपनेहु कोहा
जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी * जिन्ह रघुबीर-चरन - रतिमानी
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना * धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना

दो० तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुनासींव ।
भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥१९॥

इहाँ पवनसुत हृदय बिचारा • रामकाज सुग्रीवँ बिसारा
निकट जाइ चरनन्हि सिर नावा • चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा
सुनि सुग्रीवँ परम भय माना • बिषय मोर हरि लीन्हेउ ग्याना
अब मारुत सुत दूत-समूहा • पठवहु जहँ तहँ बानरजूहा
कहहु पाख महँ आव न जोई • मोरे कर ताकर बध होई
तब हनुमंत बोलाये दूता • सब कर करि सनमान बहूता
भय अरु प्रीति नीति देखराई • चले सकल चरनन्हि सिरनाई
एहि अवसर लछिमन पुर आये • क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाये

दो० धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करउँ पुर छार ।
ब्याकुल नगर देखि तब आयउ बालि-कुमार ॥२०॥

चरन नाइ सिर बिनती कीन्हीं • लछिमन अभय बाँह तेहि दीन्हीं
क्रोधवंत लछिमन सुनि काना • कह कपीस अतिसय अकुलाना
सुनु हनुमंत संग लइ तारा • करि बिनती समुझाउ कुमारा
तारा सहित जाइ हनुमाना • चरन बंदि प्रभु सुजस बखाना
करि बिनती मंदिर लइ आये • चरन पखारि पलँग बैठाये
तब कपीस चरनन्हि सिर नावा • गहि भुज लछिमन कंठ लगावा
नाथ बिषयसम मद कछु नाहीं • मुनिमन मोह करइ छन माहीं
सुनत बिनीत बचन सुख पावा • लछिमन तेहि बहुबिधि समुझावा
पवन-तनय सब कथा सुनाई • जेहि बिधि गये दूत-समुदाई

दो० हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ ।
रामानुज आगे करि आये जहँ रघुनाथ ॥२१॥

नाइ चरन सिर कह करजोरी * नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी
अतिसय प्रबल देव तव माया * छूटइ राम करहु जौ दाया
बिषयबस्य सुरनर मुनि स्वामी * मैं पामर पसु कपि अतिकामी
नारि-नयन-सर जाहि न लागा * घोर क्रोध तम निसि जो जागा
लोभ-पास जेहि गर न बँधाया * सो नर तुम समान रघुराया
यह गुन साधन तें नहिं होई * तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई
तब रघुपति बोले मुसुकाई * तुम्हप्रिय मोहि भरत जिमि भाई
अब सोइ जतन करहु मन लाई * जेहि बिधि सीता कै सुधि पाई
दो॰ एहि बिधि होत बतकही आये बानर-जूथ ।
नाना बरन सकल दिसि देखिय कीस-बरूथ ॥२२॥
बानर कटक उमा मैं देखा * सो मूरख जो कर चह लेखा
आइ राम-पद नावहिं माथा * निरखि बदन सब होहिं सनाथा
अस कपि एक न सेना माहीं * राम कुसल जेहि पूछी नाहीं
यह कछु नहिं प्रभु कै अधिकाई * बिस्व रूप ब्यापक रघुराई
ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई * कह सुग्रीव सबहि समुझाई
रामकाज अरु मोर निहोरा * बानर-जूथ जाहु चहुँ ओरा
जनकसुता कहँ खोजहु जाई * मास दिवस महँ आयहु भाई
अवधि मेटि जो बिनु सुधि पाये * आवइ बनिहि सो मोहि मराये
दो॰ बचन सुनत सब बानर जहँ तहँ चले तुरंत ।
तब सुग्रीवँ बोलाये अंगद नल हनुमंत ॥ २१ ॥
सुनहु नील अंगद हनुमाना * जामवंत मतिधीर सुजाना
सकलसुभट मिलि दच्छिन जाहू * सीतासुधि पूछेहु सब काहू
मनक्रमबचन सो जतन बिचारेहु * रामचंद्र कर काज सँवारेहु

सगुन-उपासक संग तहँ रहइ मोच्छ-सुख त्यागि ॥२७॥

ऐहि बिधि कथा कहहिं बहु भाँती • गिरि कंदरा सुना संपाती
बाहेर होइ देखे बहु कीसा • मोहि अहार दीन्ह जगदीसा
आजु सबन्ह कहँ भच्छन करऊँ • दिन बहु चले अहार बिनु मरऊँ
कबहुँ न मिल भरि उदर अहारा • आजु दीन्ह बिधि एकहि बारा
डरपे गीध बचन सुनि काना • अब भा मरन सत्य हम जाना
कपि सब उठे गीध कहँ देखी • जामवंत मन सोच बिसेषी
कह अंगद बिचारि मन माहीं • धन्य जटायु सम कोउ नाहीं
राम-काज - कारन तनु त्यागी • हरिपुर गयउ परम-बड़-भागी
सुनि खग हरष-सोक-जुत बानी • आवा निकट कपिन्ह भय मानी
तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई • कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई
सुनि संपाति बंधु कै करनी • रघुपति-महिमा बहुबिधि बरनी

दो० मोहि लै जाहु सिंधु-तट देउँ तिलांजलि ताहि ।
बचन-सहाय करब मैं पैहहु खोजहु जाहि ॥ २८ ॥

अनुज-क्रिया करि सागर - तीरा • कहि निज कथा सुनहु कपिबीरा
हम दोउ बंधु प्रथम तरुनाई • गगन गये रबि - निकट उड़ाई
तेज न सहि सक सो फिरि आवा • मैं अभिमानी रबि निअरावा
जरे पंख अति तेज अपारा • परेउँ भूमि करि घोर पुकारा
मुनि एक नाम चंद्रमा ओही • लागी दया देखि करि मोही
बहु प्रकार तेहि ग्यान सुनावा • देह जनित अभिमान छुड़ावा
त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरिहीं • तासु नारि निसिचर-पति हरिहीं
तासु खोज पठइहि प्रभु दूता • तिन्हहि मिले तैं होब पुनीता
जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता • तिन्हहि देखाइ देहेसु तैं सीता

मुनि कइ गिरा सत्य भइ आजू • सुनि मम बचन करहु प्रभुकाजू
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका • तहँ रह रावन सहज असंका
तहँ असोक-उपवन जहँ रहई • सीता बैठि सोच रत अहई
दो॰ मैं देखउँ तुम्ह नाहीं गीधहि दृष्टि अपार ।
बूढ़ भयउँ न त करतेउँ कछुक सहाय तुम्हार ॥ २९ ॥

जो नाँघइ सतजोजन सागर • करइ सो राम काज मतिआगर
जो कोउ करइ रामकर काजू • तेहि सम धन्य आन नहिं आजू
मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा • रामकृपा कस भयउ सरीरा
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं • अति अपार भवसागर तरहीं
तासु दूत तुम्ह तजि कदराई • राम हृदय धरि करहु उपाई
अस कहि उमा गीध जब गयऊ • तिन्हके मन अति बिसमय भयऊ
निज निज बल सब काहू भाषा • पार जाइ कर संसय राखा
जरठ भयउँ अब कहइ रिछेसा • नहिं तन रहा प्रथम बल-लेसा
जबहिं त्रिबिक्रम भयेउ खरारी • तब मैं तरुन रहेउँ बलभारी
दो॰ बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरनि न जाइ ।
उभय घरी महँ दीन्ह मैं सात प्रदच्छिन धाइ ॥ ३० ॥

अंगद कहइ जाउँ मैं पारा • जिय संसय कछु फिरती बारा
जामवंत कह तुम्ह सब लायक • पठइअ किमि सबही कर नायक
कहा ऋच्छपति सुनु हनुमाना • का चुप साधि रहा बलवाना
पवन-तनय बल पवन-समाना • बुधि बिबेक बिज्ञान-निधाना
कवन सो काज कठिन जगमाहीं • जो नहिं तात होइ तुम्ह पाहीं
राम काज लगि तव अवतारा • सुनतहिं भयउ पर्बताकारा
कनक-बरन तन तेज बिराजा • मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा

जामवंत के बचन सुहाये • सुनि हनुमंत हृदय अति भाये
तबलागि मोहि परिखेहु तुम्हभाई • सहि दुख कंद मूल फल खाई
जब लगि आवउँ सीतहि देखी • होइ काज मोहि हरष बिसेखी
यहकहि नाइ सबन्हि कहँ माथा • चलेउ हरषि हिय धरि रघुनाथा
सिंधुतीर एक भूधर सुंदर • कौतुक कूद चढ़ेउ ता ऊपर
बार बार रघुबीर सँभारी • तरकेउ पवन-तनय बल भारी
जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता • चलि सो गा पाताल तुरंता
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना • येही भाँति चला हनुमाना
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी • तैं मैनाक होहि स्रमहारी

सो॰ सिंधु बचन उर आनि सुरस उठेउ मैनाक तब।
कपि कहँ कीन्ह प्रनाम पुलकित तनु कर जोरि करि॥१॥

दो॰ हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
राम-काज कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिस्राम ॥ १ ॥

जात पवन - सुत देवन्ह देखा • जानइ कहँ बल-बुद्धि बिसेखा
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता • पठइन्हि आइ कही तेहि बाता
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा • सुनत बचन कह पवन-कुमारा
राम-काज करि फिरि मैं आवउँ • सीता कै सुधि प्रभुहि सुनावउँ
तब तव बदन पैठिहउँ आई • सत्य कहउँ मोहि जान दे माई
कवनेहु जतन देइ नहिं जाना • ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना
जोजन भरि तेहि बदन पसारा • कपि तन कीन्ह दुगुन बिस्तारा
सोरह जोजन मुख तेहि ठयऊ • तुरत पवन सुत बत्तिस भयऊ
जस जस सुरसा बदन बढ़ावा • तासु दून कपि रूप देखावा
सत जोजन तेहि आनन कीन्हा • अति लघुरूप पवन-सुत लीन्हा

बदन पइठि पुनि बाहेर आवा * माँगी बिदा ताहि सिर नावा
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा * बुधि बल-मरम तोर मैं पावा
दो० राम-काज सब करिहहु तुम्ह बल-बुद्धि-निधान।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान ॥ २ ॥

निसिचरि एक सिंधु महँ रहई * करि माया नभ के खग गहई
जीव-जंतु जे गगन उड़ाहीं * जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं
गहइ छाँह सक सो न उड़ाई * एहि बिधि सदा गगन-चर खाई
सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा * तासु कपट कपि तुरतहि चीन्हा
ताहि मारि मारुत सुत बीरा * बारिधि पार गयउ मतिधीरा
तहाँ जाइ देखी बन सोभा * गुंजत चंचरीक मधु लोभा
नाना तरु फल फूल सुहाये * खग-मृग बृंद देखि मन भाये
सैल बिसाल देखि एक आगे * ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागे
उमा न कछु कपि कै अधिकाई * प्रभुप्रताप जो कालहिं खाई
गिरि पर चढ़ि लंका तेहि देखी * कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेखी
अति उतंग जलनिधि चहुँपासा * कनक कोट कर परम प्रकासा

छं० कनक-कोट बिचित्र-मनि-कृत सुंदरायतन घना।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं चारु पुर बहुबिधि बना ॥
गजबाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनइ।
बहुरूप निसिचर जूथ अति बल सेन बरनत नहिं बनइ ॥
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापी सोहहीं।
नर-नाग सुर-गंधर्ब कन्या-रूप मुनिमन मोहहीं ॥
कहुँ माल देह बिसाल सैलसमान अति बल गर्जहीं।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥

जननी हृदय धीर धरु जरे निसाचर जानु ॥ १४ ॥
जौं रघुबीर होति सुधि पाई • करते नहिं बिलंब रघुराई
राम-बान रवि उये जानकी • तम-बरूथ कहँ जातुधान की
अबहिं मातु मैं जाउँ लेवाई • प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई
कछुक दिवस जननी धरु धीरा • कपिन सहित अइहहिं रघुबीरा
निसिचर मारि तोहि लेइ जैहहिं • तिहुँ पुर नारदादि जस गैहहिं
हैं सुत कपि सब तुम्हहिं समाना • जातुधान भट अति बलवाना
मोरे हृदय परम संदेहा • सुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा
कनक - भूधराकार सरीरा • समर-भयंकर अति-बल-बीरा
सीता - मन भरोस तब भयऊ • पुनि लघुरूप पवन-सुत लयऊ
दो० सुनु, माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल ।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हिं खाइ परम लघु ब्याल ॥ १५ ॥
मन संतोष सुनत कपि - बानी • भगति-प्रताप-तेज - बल-सानी
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना • होहु तात बल-सील - निधाना
अजर अमर गुननिधि सुत होहू • करहिं बहुत रघुनायक छोहू
करहिं कृपा प्रभु अस सुनि काना • निर्भर प्रेममगन हनुमाना
बार बार नायेसि पद सीसा • बोला बचन जोरि कर कीसा
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता • आसिष तव अमोघ बिख्याता
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा • लागि देखि सुंदर फल रूखा
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी • परम सुभट रजनीचर भारी
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं • जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं
दो० देखि बुद्धि-बल-निपुन कपि कहेउ जानकी जाहु ।
रघुपति-चरन हृदय धरि तात मधुर फल खाहु ॥ १६ ॥

चलेउ नाइ सिर पैठेउ बागा • फल खायेसि तरु तोरइ लागा
रहे तहाँ बहु भट रखवारे • कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे
नाथ एक आवा कपि भारी • तेहि असोक-बाटिका उजारी
खायेसि फल अरु बिटप उपारे • रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे
सुनि रावन पठये भट नाना • तिन्हहिं देखि गर्जेउ हनुमाना
सब रजनीचर कपि संघारे • गये पुकारत कछु अधमारे
पुनि पठयउ तेहि अक्षकुमारा • चला संग लेइ सुभट अपारा
आवत देखि बिटप गहि तर्जा • ताहि निपाति महाधुनि गर्जा
दो॰ कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलयेसि धरि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥ १८ ॥
सुनि सुत बध लंकेस रिसाना • पठयेसि मेघनाद बलवाना
मारेसि जनि सुत बाँधेसु ताही • देखिय कपिहि कहाँ कर आही
चला इन्द्रजित अतुलित जोधा • बन्धु निधन सुनि उपजा क्रोधा
कपि देखा दारुन भट आवा • कटकटाइ गर्जा अरु धावा
अति बिसाल तरु एक उपारा • बिरथ कीन्ह लंकेस-कुमारा
रहे महाभट ताके संगा • गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा
तिन्हहिं निपाति ताहि सन बाजा • भिरे जुगल मानहुँ गजराजा
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई • ताहि एक छन मुरछा आई
उठि बहोरि कीन्हेसि बहुमाया • जीति न जाय प्रभंजन जाया
दो॰ ब्रह्म अस्त्र तेहि साँधा कपि मन कीन्ह बिचार।
जौं न ब्रह्म-सर मानउँ महिमा मिटइ अपार ॥ १९ ॥
ब्रह्म-बान कपि कहँ तेहि मारा • परतिहुँ बार कटक संघारा
तेहि देखा कपि मुरछित भयऊ • नागपास बाँधेसि लेइ गयऊ

जासु नाम जपि सुनहु भवानी * भव बंधन काटहिं नर ग्यानी
तासु दूत कि बंध तरु आवा * प्रभु कारज लगि कपिहिं बँधावा
कपि-बंधन सुनि निसिचर धाये * कौतुक लागि सभा सब आये
दसमुख-सभा दीखि कपि जाई * कहि न जाइ कछु अतिप्रभुताई
कर जोरे सुर दिसिप बिनीता * भृकुटि बिलोकत सकलसभीता
देखि प्रताप न कपि मन संका * जिमि अहिगन महँ गरुड़ असंका

दो० कपिहि बिलोकि दसानन बिहँसा कहि दुर्बाद ।
सुत-बध-सुरति कीन्ह पुनि उपजा हृदय बिषाद॥ १९॥

कह लंकेस कवन तैं कीसा * केहि के बल घालेहि बन खीसा
कीधौं स्रवन सुने नहिं मोही * देखउँ अति असंक सठ तोही
मारे निसिचर केहिं अपराधा * कहु सठ तोहि न प्रान कै बाधा
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया * पाइ जासु बल बिरचति माया
जाके बल बिरंचि हरि ईसा * पालत सृजत हरत दससीसा
जा बल सीस धरत सहसानन * अंडकोस समेत गिरि कानन
धरै जो बिबिध देह सुर त्राता * तुम्ह से सठन्ह सिखावन दाता
हर-कोदंड कठिन जेहि भंजा * तेहि समेत नृप-दल - मद गंजा
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली * बधे सकल अतुलित बल - साली

दो० जा के बल-लवलेस तें जितेहु चराचर झारि ।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥ २० ॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई * सहसबाहु सन परी लराई
समर बालि सन करि जस पावा * सुनि कपिबचन बिहँसि बहरावा
खायउँ फल प्रभु लागी भूखा * कपिसुभाउ तें तोरेउँ रूखा
सबके देह परमप्रिय स्वामी * मारहिं मोहि कुमारग गामी

जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे * तेहि पर बाँधेउ तनय तुम्हारे
मोहि न कछु बाँधे कर लाजा * कीन्ह चहउँ निजप्रभु कर काजा
बिनती करउँ जोरि कर रावन * सुनहु मान तजि मोर सिखावन
देखहु तुम निजकुलहि बिचारी * भ्रम तजि भजहु भगत-भय हारी
जाके डर अति काल डेराई * जो सुर असुर चराचर खाई
तासों बैर कबहुँ नहिं कीजै * मोरे कहे जानकी दीजै

दो॰ प्रनतपाल रघुनायक करुनासिंधु खरारि ।
गये सरन प्रभु राखिहहिं तव अपराध बिसारि ॥ २१ ॥

राम चरन-पंकज उर धरहू * लंका अचल राज तुम्ह करहू
रिषिपुलस्ति-जस बिमलमयंका * तेहि ससिमहँ जनि होहु कलंका
रामनाम बिनु गिरा न सोहा * देखु बिचारि त्यागि मद मोहा
बसनहीन नहिं सोह सुरारी * सब भूषन भूषित बर नारी
रामबिमुख संपति प्रभुताई * जाइ रही पाई बिनु पाई
सजल-मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं * बरषि गए पुनि तबहिं सुखाहीं
सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी * बिमुख राम त्राता नहिं कोपी
संकर सहस बिष्नु अज तोही * सकहिं न राखि राम कर द्रोही

दो॰ मोहमूल बहु सूलप्रद त्यागहु तम अभिमान ।
भजहु राम रघुनायक कृपासिंधु भगवान ॥ २२ ॥

जदपि कहीकपि अतिहित बानी * भगति बिबेक-बिरति-नय-सानी
बोला बिहँसि महाअभिमानी * मिला हमहिं कपि गुरु बड़ ग्यानी
मृत्यु निकट आई खल तोही * लागेसि अधम सिखावन मोही
उलटा होइहि कह हनुमाना * मति भ्रम तोरि प्रगट मैं जाना
सुनिकपि बचन बहुतखिसिआना * बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना

सुनत निसाचर मारन धाये ॰ सचिवन्ह सहित बिभीषन आये
नाइ सीस करि बिनय बहूता ॰ नीति बिरोध न मारिअ दूता
आन दंड कछु करिअ गोसाँई ॰ सबहीं कहा मंत्र भल भाई
सुनत बिहँसि बोला दसकंधर ॰ अंग भंग करि पठइअ बंदर

दो॰ कपि कै ममता पूँछ पर सबहिं कहेउ समुझाइ ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥ २४ ॥

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि ॰ तब सठ निजनाथहि लेइ आइहि
जिन्ह कै कीन्हेसि बहुत बड़ाई ॰ देखउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना ॰ भइ सहाय सारद मैं जाना
जातुधान सुनि रावन - बचना ॰ लागे रचइ मूढ़ सोइ रचना
रहा न नगर बसन घृत तेला ॰ बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला
कौतुक कहँ आये पुरबासी ॰ मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी ॰ नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी
पावक जरत देखि हनुमंता ॰ भयउ परम लघुरूप तुरंता
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारी ॰ भइ सभीत निसाचर - नारी

दो॰ हरि-प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास ।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास ॥ २५ ॥

देह बिसाल परम हरुआई ॰ मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई
जरइ नगर भा लोग बिहाला ॰ झपट लपट बहु कोटि कराला
तात मात हा सुनिअ पुकारा ॰ एहि अवसर को हमहिं उबारा
हम जो कहा यह कपि नहिं होई ॰ बानर - रूप धरे सुर कोई
साधु अवग्या कर फल ऐसा ॰ जरइ नगर अनाथ कर जैसा
जारा नगर निमिष एक माहीं ॰ एक बिभीषन कर गृह नाहीं

ताकर दूत अनल जेहि सिरिजा • जरा न सो तेहि कारन गिरिजा
उलटि पलटि लंका सब जारी • कूदि परा पुनि सिंधु मँझारी
दो० पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघुरूप बहोरि ।
जनकसुता के आगे ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥२२॥
मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा • जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ • हरष-समेत पवन - सुत लयऊ
कहेउ तात अस मोर प्रनामा • सब प्रकार प्रभु पूरन कामा
दीनदयाल बिरुद - संभारी • हरहु नाथ मम संकट भारी
तात सक्र-सुत कथा सुनायहु • बान प्रताप प्रभुहि समुझायहु
मास दिवस महँ नाथ न आवा • तौ पुनि मोहि जियत नहिं पावा
कहु कपि केहि बिधि राखउँ प्राना • तुम्हहूँ तात कहत अब जाना
तोहि देखि सीतल भइ छाती • पुनि मो कहँ सोइ दिन सोइ राती
दो० जनकसुतहि समुझाइ करि बहुबिधि धीरज दीन्ह ।
चरनकमल सिर नाइ कपि गवन राम पहिं कीन्ह ॥२३॥
चलत महाधुनि गर्जेसि भारी • गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचर-नारी
नाँघि सिंधु एहि पारहि आवा • सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा
हरषे सब बिलोकि हनुमाना • नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा • कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा
मिले सकल अति भये सुखारी • तलफत मीन पाव जनु बारी
चले हरषि रघुनायक पासा • पूँछत कहत नवल इतिहासा
तब मधुबन भीतर सब आये • अंगद संमत मधु-फल खाये
रखवारे जब बरजन लागे • मुष्टि - प्रहार हनत सब भागे
दो० जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज ।

सुनि सुग्रीवँ हरष कपि करि आये प्रभुकाज ॥२७॥

जौं न होति सीता सुधि पाई • मधुबन के फल सकहिं कि खाई
एहिबिधि मन बिचारकर राजा • आइ गये कपि सहित समाजा
आइ सबन्हि नावा पद सीसा • मिले सबन्हि अति प्रेम कपीसा
पूँछी कुसल कुसल पद देखी • रामकृपा भा काज बिसेखी
नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना • राखे सकल कपिन्ह के प्राना
सुनि सुग्रीवँ बहुरि तेहि मिलऊ • कपिन्हसहितरघुपतिपहिंचलऊ
राम कपिन्ह जब आवत देखा • किये काज मन हरष बिसेखा
फटिक सिला बैठे दोउ भाई • परे सकल कपि चरनन्हि जाई

दो० प्रीतिसहित सब भेंटे रघुपति करुना-पुंज।
पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद-कंज ॥२८॥

जामवंत कह सुनु रघुराया • जापर नाथ करहु तुम दाया
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर • सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर
सोइ बिजई बिनई गुनसागर • तासु सुजस त्रयलोक उजागर
प्रभु की कृपा भयउ सब काजू • जनम हमार सुफल भा आजू
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी • सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी
पवन तनय के चरित सुहाये • जामवंत रघुपतिहि सुनाये
सुनत कृपानिधि मन अति भाये •'पुनि हनुमान हरषि हिय लाये
कहहु तात केहि भाँति जानकी • रहति करति रच्छा स्वप्रान की

दो० नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज-पद-जंत्रित जाहिं प्रान केहि बाट ॥२९॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही • रघुपति हृदय लाइ सोइ लीन्ही
नाथ जुगल लोचन भरि बारी • बचन कहे कछु जनककुमारी

अनुज-समेत गहेहु प्रभु-चरना * दीनबंधु प्रनतारति हरना
मन क्रम बचन चरन अनुरागी * केहि अपराध नाथ हौं त्यागी
अवगुन एक मोर मैं माना * बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा * निसरत प्रान करहिं हठि बाधा
बिरह-अगिनि तनु तूल समीरा * स्वास जरइ छन माहिं सरीरा
नयन स्रवहिं जलु निजहितलागी * जरै न पाव देह बिरहागी
सीता कै अति बिपति बिसाला * बिनहिं कहे भलि दीनदयाला
दो॰ निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति ।
बेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुजबल खलदलजीति ॥३०॥
सुनि सीतादुख प्रभु सुखअयना * भरि आये जल राजिव नयना
बचन कायमन मम गति जाही * सपनेहुँ बूझिय बिपति कि ताही
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई * जब तव सुमिरन भजन न होई
केतिक बात प्रभु जातुधान की * रिपुहि जीति आनिबी जानकी
सुनु कपि तोहि समान उपकारी * नहिं कोउ सुर नर मुनितनुधारी
प्रति - उपकार करौं का तोरा * सनमुख होइ न सकत मन मोरा
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं * देखेउँ करि बिचार मन माहीं
पुनि पुनि कपिहि चितवसुरत्राता * लोचन नीर पुलक अति गाता
दो॰ सुनि प्रभुबचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत ।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥३१॥
बार बार प्रभु चहइ उठावा * प्रेममगन तेहि उठब न भावा
प्रभु-कर पंकज कपि के सीसा * सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा
सावधान मन करि पुनि संकर * लागे कहन कथा अति सुंदर
कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा * कर गहि परम निकट बैठावा

कहु कपि रावन-पालित लंका • केहि बिधि दहेउ दुर्ग अतिबंका
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना • बोला बचन बिगत-अभिमाना
साखामृग कै बड़ि मनुसाई • साखा तें साखा पर जाई
नाँघि सिंधु हाटकपुर जारा • निसिचरगनबधि बिपिनउजारा
सो सब तव प्रताप रघुराई • नाथ न कछू मोरि प्रभुताई
दो• ता कहँ प्रभु कछु अगम नहिं जापर तुम्ह अनुकूल ।
तव प्रभाव बड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल ॥ ३३ ॥
नाथ भगति अति सुखदायिनी • देहु कृपा करि अनपायिनी
सुनि प्रभु परम सरल कपिबानी • एवमस्तु तब कहेउ भवानी
उमा रामसुभाव जेहि जाना • ताहि भज [illegible] न भावन
यह संवाद जासु उर आवा • रघुपति [illegible]

बीच जोर सगुन जानकिहि होई * असगुन भयउ रावनहि सोई
चला कटक को बरनइ पारा * गर्जहिं बानर भालु अपारा
नख-आयुध गिरि-पादप-धारी * चले गगन महि इच्छाचारी
केहरिनाद भालु कपि करहीं * डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं

छं० चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे।
मन हरष दिनकर सोम सुर मुनि नाग किंनर दुख टरे ॥
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं।
जय राम प्रबलप्रताप कोसलनाथ गुनगन गावहीं ॥
सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई।
गहि दसन पुनि पुनि कमठपृष्ठ कठोर सो किमि सोहई ॥
रघुबीर-रुचिर-प्रयान-प्रस्थिति जानि परम सुहावनी।
जनु कमठ-खर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी ॥

दो० एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर।
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपिबीर ॥३४॥

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका * जब तें जारि गयउ कपि लंका
निजनिजगृह सब करहिं बिचारा * नहिं निसिचर कुल केर उबारा
जासु दूत-बल बरनि न जाई * तेहि आये पुर कवन भलाई
दूतिन्ह सन सुनि पुर-जन-बानी * मंदोदरी अधिक अकुलानी
रहसि जोरि कर पति-पग लागी * बोली बचन नीति-रस पागी
कंत करष हरि सन परिहरहू * मोर कहा अतिहित हिय धरहू
समुझत जासु दूत कइ करनी * स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी
तासु नारि निजसचिव बोलाई * पठवहु कंत जो चहहु भलाई
तवकुल-कमल-बिपिन-दुखदाई * सीता सीत-निसा-सम आई

बुध-पुरान-श्रुति-संमत बानी * कही बिभीषन नीति बखानी
सुनत दसानन उठा रिसाई * खल तोहि निकट मृत्यु अब आई
जियत सदा सठ मोर जियावा * रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा
कहसि न खल असको जग माहीं * भुज-बल जेहि जीता मैं नाहीं
ममपुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती * सठ मिलु जाइ तिन्हहिं कहु नीती
अस कहि कीन्हेसि चरनप्रहारा * अनुज गहे पद बारहिं बारा
उमा संत की इहइ बड़ाई * मंद करत जो करइ भलाई
तुम्हपितुसरिसभलेहिंमोहिं मारा * राम भजे हित नाथ तुम्हारा
सचिव संग लेइ नभ-पथ गयऊ * सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ
दो॰ राम सत्यसंकल्प प्रभु सभा काल-बस तोरि।
मैं रघुबीर-सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि ॥ ४१ ॥
असकहि चला बिभीषन जबहीं * आयू-हीन भये सब तबहीं
साधु अवज्ञा तुरत भवानी * कर कल्यान अखिल कै हानी
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा * भयउ बिभवबिनु तबहिं अभागा
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं * करत मनोरथ बहु मन माहीं
देखिहउँ जाइ चरनजलजाता * अरुन मृदुल सेवक सुख दाता
जे पद परसि तरी रिषि नारी * दंडक-कानन-पावन कारी
जे पद जनक-सुता उर लाये * कपट-कुरंग संग धर धाये
हर-उर-सर-सरोज पद जेई * अहोभाग्य मैं देखिहउँ तेई
दो॰ जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरत रहे मन लाइ।
ते पद आजु बिलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ॥४२
एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा * आयउ सपदि सिंधु एहि पारा
कपिन्ह बिभीषन आवत देखा * जाना कोउ रिपु-दूत बिसेषा

ताहि राखि कपीस पहिं आये * समाचार सब ताहि सुनाये
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई * आवा मिलन दसानन भाई
कह प्रभु सखा बूझिये काहा * कहइ कपीस सुनहु नरनाहा
जानि न जाइ निसाचर माया * काम-रूप केहि कारन आया
भेद हमार लेन सठ आवा * राखिय बाँधि मोहि अस भावा
सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी * मम पन सरनागत-भय-हारी
सुनि प्रभु-बचन हरष हनुमाना * सरनागत - बच्छल भगवाना

दो॰ सरनागत कहँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पाँवर पापमय तिन्हहिं बिलोकत हानि॥४३॥

कोटि बिप्र-बध लागहि जाहू * आये सरन तजउँ नहिं ताहू
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं * जनम कोटि अघ नासहिं तबहीं
पापवंत कर सहज सुभाऊ * भजन मोर तेहि भाव न काऊ
जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होई * मोरे सनमुख आव कि सोई
निर्मल मन जन सो मोहि पावा * मोहि कपट-छल-छिद्र न भावा
भेद लेन पठवा दससीसा * तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा
जग महँ सखा निसाचर जेते * लछिमन हनइ निमिष महँ तेते
जौं सभीत आवा सरनाई * रखिहउँ ताहि प्रान की नाईं

दो॰ उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत ।
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद-हनू-समेत॥४४॥

सादर तेहि आगे करि बानर * चले जहाँ रघुपति करुनाकर
दूरिहि तें देखे दोउ भ्राता * नयनानंद दान के दाता
बहुरि राम छबि -धाम बिलोकी * रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी
भुज प्रलंब कंजारुन - लोचन * स्यामल गात प्रनत-भय मोचन

दो० रावनक्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड।
जरत विभीषन राखेउ दीन्हेउ राज अखंड॥४९॥
जो संपति सिव रावनहिं दीन्हि दिये दसमाथ।
सोइ संपदा विभीषनहिं सकुचि दीन्हि रघुनाथ॥५०॥

अस प्रभु छाँडि भजहिं जे आना • ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना
निजजन जानि ताहि अपनावा • प्रभुसुभावकपि-कुल मनभावा
पुनि सर्बग्य सर्ब - उर - बासी • सर्बरूप सबरहित उदासी
बोले बचन नीति - प्रतिपालक • कारन-मनुजदनुज-कुल घालक
सुनु कपीस लंकापति बीरा • केहिबिधि तरिअजलधि गंभीरा
संकुल मकर उरग झष जाती • अतिअगाध दुस्तर सब भाँती
कह लंकेस सुनहु रघुनायक • कोटि-सिंधु-सोषक तव सायक
जद्यपि तदपि नीति असि गाई • बिनय करिअ सागर सन जाई

दो० प्रभु तुम्हार कुलगुरु जलधि कहिहि उपाय बिचारि।
बिनुप्रयास सागर तरिहि सकल-भालु-कपि धारि॥५१॥

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई • करिअ दैव जौं होइ सहाई
मंत्र न यह लछिमन मन भावा • रामबचन सुनि अति दुख पावा
नाथ दैव कर कवन भरोसा • सोखिअ सिंधु करिअ मनरोसा
कादर मन कहँ एक अधारा • दैव दैव आलसी पुकारा
सुनत बिहँसि बोले रघुबीरा • ऐसेइ करब धरहु मन धीरा
अस कहिप्रभुअनुजहि समुझाई • सिंधु समीप गये रघुराई
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिर नाई • बैठे पुनि तट दर्भ डसाई
जबहिं बिभीषन प्रभुपहिं आये • पाछे रावन दूत पठाये

दो० सकल चरित तिन्ह देखे धरे कपटकपि - देह।

प्रभुगुन हृदय सराहहिं सरनागत पर नेह ॥ २१ ॥
प्रगट बखानहिं राम-सुभाऊ * अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने * सकल बाँधि कपीस पहिं आने
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर * अंग भंग करि पठवहु निसिचर
सुनि सुग्रीव-बचन कपि धाये * बाँधि कटक चहुँ पास फिराये
बहु प्रकार मारन कपि लागे * दीन पुकारत तदपि न त्यागे
जो हमार हर नासा काना * तेहि कोसलाधीस कै आना
सुनि लछिमन सब निकट बोलाये * दया लागि हँसि तुरत छोड़ाये
रावन कर दीन्हेउ यह पाती * लछिमन-बचन बाँचु कुलघाती
दो० कहेउ मुखागर मूढ़ सन मम संदेस उदार ।
सीता देइ मिलहु न त आवा काल तुम्हार ॥ २२ ॥
तुरत नाइ लछिमन पद माथा * चले दूत बरनत गुन-गाथा
कहत राम-जस लंका आये * रावन चरन सीस तिन्ह नाये
बिहँसि दसानन पूँछी बाता * कहसि न सुक आपनि कुसलाता
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी * जाहि मृत्यु आई अति नेरी
करत राज लंका सठ त्यागी * होइहि जव कर कीट अभागी
पुनि कहु भालु कीस कटकाई * कठिन काल प्रेरित चलि आई
जिन्हके जीवन कर रखवारा * भयउ मृदुलचित सिंधु बेचारा
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी * जिन्हके हृदय त्रास अति मोरी
दो० की भइ भेंट कि फिरि गये स्रवन सुजस सुनि मोर ।
कहसि न रिपु-दल-तेज-बल बहुत चकित चित तोर ॥ २३ ॥
नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसे * मानहु कहा क्रोध तजि तैसे
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा * जातहिं राम तिलक तेहि सारा

लछिमन बान सरासन आनू • सोखउँ बारिधि बिसिख-कृसानू
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती • सहज कृपिन सन सुंदर नीती
ममता-रत सन ग्यान-कहानी • अतिलोभी सन बिरति बखानी
क्रोधिहि सम कामिहि हरिकथा • ऊसर बीज बये फल जथा
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा • यह मत लछिमन के मन भावा
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला • उठी उदधि उर अंतर ज्वाला
मकर-उरग-झष-गन अकुलाने • जरत जंतु जलनिधि जब जाने
कनक-थार भरि मनिगन नाना • बिप्र रूप आयउ तजि माना
दो० काटेहि पइ कदली फरइ कोटि जतन कोउ सींच ।
बिनय न मान खगेस सुनु डाँटेहि पै नव नीच ॥ ६० ॥
सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे • छमहु नाथ सब अवगुन मेरे
गगन समीर अनल जल धरनी • इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी
तव प्रेरित माया उपजाये • सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाये
प्रभु-आयसु जेहि कहँ जस अहई • सो तेहि भाँति रहे सुख लहई
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही • मरजादा पुनि तुम्हरिय कीन्ही
ढोल गँवार सूद्र पसु नारी • सकल ताड़ना के अधिकारी
प्रभु-प्रताप मैं जाब सुखाई • उतरिहि कटक न मोर बड़ाई
प्रभु आज्ञा अपेल श्रुति गाई • करउँ सो बेगि जो तुम्हहि सुहाई
दो० सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसकाइ ।
जेहि बिधि उतरइ कपि-कटक तात सो कहहु उपाइ ॥ ६१ ॥
नाथ नील नल कपि दोउ भाई • लरिकाई रिषि आसिष पाई
तिन्हके परस किये गिरि भारे • तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे
मैं पुनि उर धरि प्रभु-प्रभुताई • करिहउँ बल अनुमान सहाई

एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ * जेहिं यह सुजस लोक तिहुँ गाइअ
एहि सर मम उत्तर-तट-बासी * हतहु नाथ खल नर अघरासी
सुनि कृपाल सागर-मन-पीरा * तुरतहिं हरी राम रनधीरा
देखि राम-बल-पौरुष भारी * हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी
सकलचरित कहि प्रभुहि सुनावा * चरन बंदि पाथोधि सिधावा

छं० निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ ।
यह चरित कलिमल-हर जथामति दास तुलसी गायऊ ॥
सुख-भवन संसय-समन दवन बिषाद रघुपति-गुन-गना ।
तजि सकल आस-भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥

दो० सकल सुमंगल-दायक रघुनायक-गुन-गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव-सिंधु बिना जलजान ॥६१॥

मास-पारायण २४ दिन

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुष-
विध्वंसने ज्ञानसम्पादनो नाम
पञ्चम सोपान समाप्तः ।

लछिमन बान सरासन आनू * सोखउँ बारिधि बिसिख-कृसानू
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती * सहज कृपिन सन सुंदर नीती
ममता-रत सन ज्ञान-कहानी * अतिलोभी सन बिरति बखानी
क्रोधिहिं सम कामिहिं हरिकथा * ऊसर बीज बये फल जथा
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा * यह मत लछिमन के मन भावा
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला * उठी उदधि उर अंतर ज्वाला
मकर-उरग-झष-गन अकुलाने * जरत जंतु जलनिधि जब जाने
कनक-थार भरि मनिगन नाना * बिप्र रूप आयउ तजि माना

दो० काटेहिं पइ कदली फरइ कोटि जतन कोउ सींच ।
बिनय न मान खगेस सुनु डाँटेहिं पै नव नीच ॥ १० ॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे * छमहु नाथ सब अवगुन मेरे
गगन समीर अनल जल धरनी * इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी
तव प्रेरित माया उपजाये * सृष्टि हेतु सब ग्रंथन्हि गाये
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई * सो तेहि भाँति रहे सुख लहई
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही * मरजादा पुनि तुम्हरिय कीन्ही
ढोल गँवार सूद्र पसु नारी * सकल ताड़ना के अधिकारी
प्रभुप्रताप मैं जाब सुखाई * उतरिहि कटक न मोर बड़ाई
प्रभु आज्ञा अपेल श्रुति गाई * करउँ सो बेगि जो तुम्हहिं सुहाई

दो० सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसकाइ ।
जेहि बिधि उतरइ कपि-कटक तात सो कहहु उपाइ ॥ ११ ॥

नाथ नील नल कपि दोउ भाई * लरिकाई रिषि आसिष पाई
तिन्हके परस किये गिरि भारे * तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे
मैं पुनि उर धरि प्रभु-प्रभुताई * करिहउँ बल अनुमान सहाई

एहिबिधि नाथ पयोधि बँधाइअ * जेहि यह सुजस लोक तिहुँ गाइअ
एहि सर मम उत्तर-तट-बासी * हतहु नाथ खल नर अघरासी
सुनि कृपाल सागर-मन-पीरा * तुरतहिं हरी राम रनधीरा
देखि राम - बल - पौरुष भारी * हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी
सकलचरितकहि प्रभुहि सुनावा * चरन बंदि पाथोधि सिधावा

छं॰ निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ।
यह चरित कलिमल-हर जथामति दास तुलसी गायऊ॥
सुख-भवन संसय-समन दवन-बिषाद रघुपति-गुन-गना।
तजि सकल आस-भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना॥

दो॰ सकल सुमंगल-दायक रघुनायक-गुन-गान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव-सिंधु बिना जलजान॥६०॥

मास-पारायण २४ दिन

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुष-
विध्वंसने ज्ञानसम्पादनो नाम
पञ्चम सोपान समाप्त।

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामचरितमानस

षष्ठ सोपान

(लंकाकांड)

श्लोकाः

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम्
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं
वन्दे कुन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥ १ ॥
शंखेन्द्वाभमतीव सुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं
कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशाङ्कप्रियम् ।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शङ्करम् ॥२॥
यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ।
खलानां दण्डकृद्योऽसौ शङ्करः शं तनोतु माम् ॥ ३ ॥

दो॰ लव निमेष परमानु जुग बरष कलप सर चंड ।
भजसि न मन तेहि राम कहँ कालु जासु कोदंड ॥ १ ॥

सो० सिंधुबचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ।
अब बिलंब केहि काम करहु सेतु उतरइ कटक ॥ १ ॥
सुनहु भानु-कुल-केतु जामवंत कर जोरि कह ।
नाथ नाम तव सेतु नर चढ़ि भवसागर तरहिं ॥ २ ॥

यह लघु जलधि तरत कति बारा * अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी * सोखेउ प्रथम पयोनिधि बारी
तव रिपु नारि-रुदन जल धारा * भरेउ बहोरि भयउ तेहि खारा
सुनि अति उकुति पवनसुत केरी * हरषे कपि रघुपति तन हेरी
जामवंत बोले दोउ भाई * नल नीलहिं सब कथा सुनाई
रामप्रताप सुमिरि मन माहीं * करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं
बोलि लिये कपिनिकर बहोरी * सकल सुनहु बिनती कछु मोरी
राम चरन पंकज उर धरहू * कौतुक एक भालु कपि करहू
धावहु मरकट बिकट बरूथा * आनहु बिटप गिरिन्ह के जूथा
सुनि कपि भालु चले करि हूहा * जय रघुबीर प्रताप समूहा

दो० अति उतंग तरुसैलगन लीलहिं लेहिं उठाइ ।
आनि देहिं नल नीलहि रचहिं ते सेतु बनाइ ॥ १ ॥

सैल बिसाल आनि कपि देहीं * कंदुक इव नल नील ते लेहीं
देखि सेतु अति-सुंदर-रचना * बिहँसि कृपानिधि बोले बचना
परम रम्य उत्तम यह धरनी * महिमा अमित जाइ नहिं बरनी
करिहउँ इहाँ संभु-थापना * मोरे हृदय परम कलपना
सुनि कपीस बहु दूत पठाये * मुनिबर सकल बोलि लइ आये
लिंग थापि बिधिवत करि पूजा * सिव-समान प्रिय मोहि न दूजा
सिव-द्रोही मम भगत कहावा * सो नर सपनेहु मोहि न पावा –

संकर बिमुख भगति चह मोरी • सो नारकी मूढ़ मति थोरी
दो॰ संकरप्रिय मम द्रोही सिवद्रोही मम दास ।
ते नर करहिं कलप भरि घोर नरक महुँ बास ॥२॥
जो रामेस्वर दरसन करिहहिं • ते तन तजि हरिलोक सिधरिहहिं
जो गंगाजल आनि चढ़ाइहि • सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहि
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि • भगति मोरि तेहि संकर देइहि
मम कृत सेतु जो दरसन करिही • सो बिनु स्रम भवसागर तरिही
राम बचन सबके जिय भाये • मुनिबर निज-निज आस्रम आये
गिरिजा रघुपति कै यह रीती • संतत करहिं प्रनत पर प्रीती
बाँधेउ सेतु नील नल नागर • रामकृपा जस भयउ उजागर
बूड़हिं आनहिं बोरहिं जेई • भये उपल बोहित सम तेई
महिमा यह न जलधि कै बरनी • पाहन गुन न कपिन्ह कै करनी
दो॰ श्री-रघुबीर प्रताप तें सिंधु तरे पाषान ।
ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन ॥३॥
बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा • देखि कृपानिधि के मन भावा
चली सेन कछु बरनि न जाई • गरजहिं मर्कट-भट-समुदाई
सेतुबंध ढिग चढ़ि रघुराई • चितव कृपाल सिंधु बहुताई
देखन कहँ प्रभु करुनाकंदा • प्रगट भये सब जलचर बृंदा
नाना मकर नक्र झष ब्याला • सत-जोजन-तनु परम बिसाला
ऐसेउ एक तिन्हहिं जे खाहीं • एकन्ह कें डर तेपि डेराहीं
प्रभुहि बिलोकहिं टरहिं न टारे • मन हरषित सब भये सुखारे
तिन्हकी ओट न देखिय बारी • मगन भये हरिरूप निहारी
चला कटक कछु बरनि न जाई • को कहि सक कपि-दल-बिपुलाई

दो० सेतुबंध भइ भीर अति कपि नभपथ उड़ाहिं।
अपर जलचरन्हि ऊपर चढ़ि चढ़ि पारहिं जाहिं ॥ २ ॥

अस कौतुक बिलोकि दोउ भाई * बिहँसि चले कृपाल रघुराई
सेनसहित उतरे रघुबीरा * कहि न जाइ कपि-जूथप भीरा
सिंधुपार प्रभु डेरा कीन्हा * सकलकपिन्हकहँ आयसु दीन्हा
खाहु जाइ फल मूल सुहाये * सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाये
सब तरु फरे राम हित लागी * रितु अनरितु अकालगति त्यागी
खाहिं मधुरफल बिटपहलावहिं * लंका सनमुख सिखर चलावहिं
जहँ कहुँ फिरत निसाचर पावहिं * घेरि सकल बहु नाच नचावहिं
दसनन्हि काटि नासिका काना * कहि प्रभु सुजस देहिं तब जाना
जिन्ह कर नासा कान निपाता * तिन्ह रावनहिं कही सब बाता
सुनत स्रवन बारिधि बँधाना * दसमुख बोलि उठा अकुलाना

दो० बाँधे बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस।
सत्य तोयनिधि कंपती उदधि पयोधि नदीस ॥ ५ ॥

व्याकुलता निज समुझि बहोरी * बिहँसि चला गृह करि भय भोरी
मंदोदरी सुनेउ प्रभु आयो * कौतुकही पाथोधि बँधायो
करगहि पतिहि भवन निज आनी * बोली परम मनोहर बानी
चरन नाइ सिर अंचल रोपा * सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा
नाथ बैर कीजे ताही सों * बुधिबलसकिय जीति जाही सों
तुम्हहिं रघुपतिहिं अंतर कैसा * खलु खद्योत दिनकरहि जैसा
अतिबल मधुकैटभ जेहिं मारे * महाबीर छिति-सुत संहारे
जेहिं बलि बाँधि सहसभुजमारा * सोइ अवतरेउ हरन महि-भारा
तासु बिरोध न कीजिय नाथा * काल करम जिव जाके हाथा

दो० रामहिं सौंपिअ जानकी नाइ कमल-पद माथ।
सुत कहुँ राज समर्पि बन जाइ भजिअ रघुनाथ ॥७॥

नाथ दीन दयाल रघुराई • बाघउ सनमुख गये न खाई
चाहिअ करन सो सब करि बीते • तुम्ह सुर असुर चराचर जीते
संत कहहिं असिनीति दसानन • चौथेपन जाइहि नृप कानन
तासु भजन कीजिअ तहँ भरता • जो करता पालक संहरता
सोइ रघुबीर प्रनतअनुरागी • भजहु नाथ ममता सब त्यागी
मुनिबर जतन करहिं जेहि लागी • भूप राज तजि होहिं बिरागी
सोइ कोसलाधीस रघुराया • आये करन तोहि पर दाया
जौं पिय मानहु मोर सिखावन • होइ सुजस तिहुँपुर अतिपावन

दो० अस कहि लोचन बारि भरि गहि पद कंपित गात।
नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिवात ॥ ८ ॥

तब रावन मय-सुता उठाई • कहइ लाग खल निज प्रभुताई
सुनु तैं प्रिया बृथा भय माना • जग जोधा को मोहि समाना
बरुन कुबेर पवन जम काला • भुजबल जितेउँ सकल दिगपाला
देव दनुज नर सब बस मेरे • कवन हेतु उपजा भय तोरे
नानाबिधि तेहि कहेसि बुझाई • सभा बहोरि बैठ सो जाई
मंदोदरी हृदय अस जाना • कालबिबस उपजा अभिमाना
सभा आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा • करब कवनि बिधि रिपु सैं जूझा
कहहिंसचिवसुनु निसिचरनाहा • बार बार प्रभु पूछहु काहा
कहहु कवनभय करिअ बिचारा • नर कपि भालु अहार हमारा

दो० बचन सबहि के श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि।
नीति-बिरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥

कहहिं सचिव सठ ठकुर सोहाती • नाथ न पूर आव एहि भाँती
बारिधि नाँघि एक कपि आवा • तासु चरित मन महुँ सब गावा
छुधा न रही तुम्हहिं तब काहू • जारत नगर न कस धरि खाहू
सुनत नीक आगे दुख पावा • सचिवन्ह अस मत प्रभुहिं सुनावा
जेहि बारीस बँधायेउ हेला • उतरेउ सैन समेत सुबेला
सो भनु मनुज खाब हम भाई • बचन कहहिं सब गाल फुलाई
तात बचन मम सुनु अति आदर • जनि मन गुनहु मोहि करि कादर
प्रियबानी जे सुनहिं जे कहहीं • ऐसे नर निकाय जग अहहीं
बचन परमहित सुनत कठोरे • सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे
प्रथम बसीठ पठव सुनु नीती • सीता देइ करहु पुनि प्रीती

दो० नारि पाइ फिरि जाहिं जौं तौ न बढ़ाइअ रारि।
नाहिं त सनमुख समर महि तात करिअ हठि मारि॥१०॥

यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा • उभय प्रकार सुजस जग तोरा
सुत सन कह दसकंठ रिसाई • असिमतिसठ केहितोहिसिखाई
अबहीं तें उर संसय होई • बेनुमूल सुत भयउ घमोई
सुनि पितु गिरा परुष अतिघोरा • चला भवन कहि बचन कठोरा
हितमत तोहि न लागत कैसे • कालबिबस कहँ भेषज जैसे
संध्यासमय जानि दससीसा • भवन चलेउ निरखत भुज बीसा
लंका सिखर उपर आगारा • अति बिचित्र तहँ होइ अखारा
बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन • लागे किंनर गुनगन गावन
बाजहिं ताल पखाउज बीना • नृत्य करहिं अपछरा प्रबीना

दो• सुनासीर सत सरिस सोइ संतत करइ बिलास।
परम प्रबल रिपु सीस पर तदपि न कछु मन त्रास॥११॥

दो० रामहि सौंपिअ जानकी नाइ कमल-पद माथ।
सुत कहँ राज समर्पि बन जाइ भजिअ रघुनाथ ॥७॥

नाथ दीन-दयाल रघुराई • बाघउ सनमुख गये न खाई
चाहिअ करन सो सबकरि बीते • तुम्ह सुर असुर चराचर जीते
संत कहहिं असिनीति दसानन • चौथेपन जाइहि नृप कानन
तासु भजन कीजिअ तहँ भरता • जो करता पालक संहरता
सोइ रघुबीर प्रनतअनुरागी • भजहु नाथ ममता सब त्यागी
मुनिबर जतन करहिं जेहिलागी • भूप राज तजि होहिं बिरागी
सोइ कोसलाधीस रघुराया • आये करन तोहि पर दाया
जौ पिय मानहु मोर सिखावन • होइ सुजस तिहुँपुर अतिपावन

दो० अस कहि लोचन बारि भरि गहि पद कंपित गात।
नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिवात ॥ ८ ॥

तब रावन मय-सुता उठाई • कहइ लाग खल निज प्रभुताई
सुनु तैं प्रिया बृथा भय माना • जग जोधा को मोहि समाना
बरुन कुबेर पवन जम काला • भुजबल जितेउँसकलदिगपाला
देव दनुज नर सब बस मोरे • कवन हेतु उपजा भय तोरे
नानाबिधि तेहि कहेसि बुझाई • सभा बहोरि बैठ सो जाई
मंदोदरी हृदय अस जाना • कालबिबस उपजा अभिमाना
सभा आइ मंत्रिन्ह तेहि बूझा • करब कवनबिधि रिपु सें जूझा
कहहिंसचिवसुनु निसिचरनाहा • बार बार प्रभु पूछहु काहा
कहहु कवनभय करिअ बिचारा • नर कपि भालु अहार हमारा

दो० बचन सबहि के स्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि।
नीति-बिरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥

कहहिं सचिव सठ ठकुर सोहाती • नाथ न पूर आव एहि भाँती
बारिधि नाँघि एक कपि आवा • तासु चरित मन महँ सब गावा
छुधा न रही तुम्हहि तब काहू • जारत नगर न कस धरि खाहू
सुनत नीक आगे दुख पावा • सचिवन्ह असमत प्रभुहि सुनावा
जेहि बारीस बँधायेउ हेला • उतरेउ सैन समेत सुबेला
सो भनु मनुज खाब हम भाई • बचन कहहिं सब गाल फुलाई
तात बचन मम सुनु अतिआदर • जनि मन गुनहु मोहि करिकादर
प्रियबानी जे सुनहिं जे कहहीं • ऐसे नर निकाय जग अहहीं
बचन परमहित सुनत कठोरे • सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे
प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती • सीता देइ करहु पुनि प्रीती
दो० नारि पाइ फिरि जाहिं जौं तौ न बढ़ाइअ रारि।
नाहिं त सनमुख समर महि तात करिअ हठि मारि॥१०॥
यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा • उभय प्रकार सुजस जग तोरा
सुत सन कह दसकंठ रिसाई • असिमतिसठ केहितोहिसिखाई
अबहीं तें उर संसय होई • बेनुमूल सुत भयउ घमोई
सुनि पितु गिरा परुष अतिघोरा • चला भवन कहि बचन कठोरा
हितमत तोहि न लागत कैसे • कालबिबस कहुँ भेषज जैसे
सन्ध्यासमय जानि दससीसा • भवन चलेउ निरखत भुज बीसा
लंका सिखर उपर आगारा • अति बिचित्र तहँ होइ अखारा
बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन • लागे किंनर गुनगन गावन
बाजहिं ताल पखाउज बीना • नृत्य करहिं अपछरा प्रबीना
दो० सुनासीर सत सरिस सोइ संतत करइ बिलास।
परम-प्रबल रिपु सीस पर तदपि न कछु मन त्रास।१

इहाँ सुबेल सैल रघुबीरा • उतरे सेनसहित अति भीरा
सिखर एक सुंदर देखी • अति उतंग सम सुभ्र बिसेषी
तहँ तरु किसलय-सुमन सुहाये • लछिमन रचि निज हाथ डसाये
ता पर रुचिर मृदुल मृगछाला • तेहि आसन आसीन कृपाला
प्रभु कृत सीस कपीस उछंगा • बाम दहिन दिसि चाप निषंगा
दुहुँ करकमल सुधारत बाना • कह लंकेस मंत्र लगि काना
बड़भागी अंगद हनुमाना • चरनकमल चाँपत बिधि नाना
प्रभु पाछे लछिमन बीरासन • कटि निषंग कर बान सरासन

दो॰ एहि बिधि करुनासील गुन-धाम राम आसीन।
ते नर धन्य जे ध्यान एहि रहत सदा लयलीन ॥१२॥
पूरब दिसा बिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक।
कहत सबहिं देखहु ससिहि मृग-पति-सरिस-असंक १२

पूरबदिसि गिरि-गुहा-निवासी • परम-प्रताप-तेज-बलरासी
मत्त-नाग तम-कुंभ-बिदारी • ससि केसरी गगन-बन-चारी
बिथुरे नभ मुकुताहल तारा • निसि सुंदरी केर सिंगारा
कह प्रभु ससि महँ मेचकताई • कहहु काह निज निज मति भाई
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई • ससि महँ प्रगट भूमि कै झाँई
मारेहु राहु ससिहि कह कोई • उर महँ परी स्यामता सोई
कोउ कह जब बिधि रतिमुख कीन्हा • सारभाग ससि कर हरि लीन्हा
छिद्र सो प्रगट इंदु उर माहीं • तेहि मग देखिय नभ परिछाहीं
प्रभु कह गरल बंधु ससि केरा • अतिप्रिय निज उर दीन्ह बसेरा
बिषसंजुत करनिकर पसारी • जारत बिरहवंत नरनारी

दो॰ कह मारुतसुत सुनहु प्रभु ससि तुम्हार प्रियदास।

तव मूरति बिधुउर बसति सोइ स्यामता अभास ॥१२॥

मषाह्न पारायण ७ दिन

दो॰ पवनतनय के बचन सुनि बिहँसे राम सुजान ।

दच्छिन दिसि अवलोकि पुनि बोले कृपानिधान॥१३॥

देखु बिभीषन दच्छिन आसा • घन घमंड दामिनी बिलासा
मधुर मधुर गरजइ घन घोरा • होइ बृष्टि जनु उपल कठोरा
कहइ बिभीषन सुनहु कृपाला • होइ न तड़ित न बारिदमाला
लंकासिखर रुचिर आगारा • तहँ दसकंधर देख अखारा
छत्र मेघडंबर सिर धारी • सोइ जनु जलद घटा अतिकारी
मंदोदरी - स्रवन ताटंका • सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा • सोइ रव मधुर सुनहु सुरभूपा
प्रभु मुसुकान समुझि अभिमाना • चाप चढ़ाइ बान संधाना

दो॰ छत्र मुकुट ताटंक तब हते एकहीं बान ।

सबके देखत महि परे मरम न कोऊ जान ॥ १६ ॥

अस कौतुक करि रामसर प्रबिसेउ आइ निषंग ।

रावन सभा ससंक सब देखि महा-रस-भंग ॥ १७ ॥

कंप न भूमि न मरुत बिसेषा • अस्त्र सस्त्र कछु नयन न देखा
सोचहिं सब निज हृदय मँझारी • असगुन भयउ भयंकर भारी
दसमुख देखि सभा भय पाई • बिहँसि बचन कह जुगुति बनाई
सिरउ गिरे संतत सुभ जाही • मुकुट परे कस असगुन ताही
सयन करहु निज निज गृह जाई • गवने भवन सकल सिर नाई
मंदोदरी सोच उर बसेऊ • जब तें स्रवनपूर महि खसेऊ
सजल नयन कह जुग कर जोरी • सुनहु प्रानपति बिनती मोरी
कंत रामबिरोध परिहरहू • जानि मनुज जनि मन हठ धरहू

दो० बिस्वरूप रघु बंस-मनि करहु बचन-बिस्वास ।
लोककल्पना बेद कर अंग अंग प्रति जास ॥ १८ ॥
पद पाताल सीस अजधामा * अपर लोक अँग अँग बिस्रामा
भृकुटि बिलास भयंकर-काला * नयन-दिवाकर कच-घन-माला
जासु घ्रान अस्विनीकुमारा * निसि अरु दिवस निमेष अपारा
स्रवन दिसा दस बेद बखानी * मारुत स्वास निगम निज बानी
अधर-लोभ जम-दसन-कराला * माया हास बाहु दिगपाला
आनन अनल अंबुपति जीहा * उतपति पालन प्रलय समीहा
रोमराजि अष्टादस भारा * अस्थि-सैल सरिता नस-जारा
उदर उदधि अधगो जातना * जगमय प्रभु का बहु कलपना
दो० अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान ।
मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान ॥ १९ ॥
अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन बैर बिहाइ ।
प्रीति करहु रघुबीर-पद मम अहिवात न जाइ ॥२० ॥
बिहँसा नारि बचन सुनि काना * अहो मोह-महिमा बलवाना
नारि सुभाउ सत्य कबि कहहीं * अवगुन आठ सदा उर रहहीं
साहस अनृत चपलता माया * भय अबिबेक असौच अदाया
रिपु कर रूप सकल तैं गावा * अति बिसाल भय मोहि सुनावा
सो सब प्रिया सहज बस मोरे * समुझि परा प्रसाद अब तोरे
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई * एहि मिस कहहि मोरि प्रभुताई
तव बतकही गूढ़ मृग-लोचनि * समुझत सुखद सुनत भयमोचनि
मंदोदरि मन महँ अस ठयऊ * पियहि कालबस मतिभ्रम भयऊ
दो० बहुबिधि जल्पेसि सकल निसि प्रात भये दसकंध ।

सहज असंक लंकपति सभा गयउ मदमत ॥ २१ ॥

सो० फूलइ फलइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद ।
मूरख-हृदय न चेत जौ गुरु मिलहिं बिरंचि सिव ॥ १ ॥

इहाँ प्रात जागे रघुराई • पूछा मत सब सचिव बोलाई
कहहु बेगि का करिय उपाई • जामवंत कह पद सिर नाई
सुनु सर्बग्य सकल उररासी • बुधि बल तेज धर्म गुनरासी
मंत्र कहउँ निज-मति-अनुसारा • दूत पठाइय बालिकुमारा
नीक मंत्र सबके मन माना • अंगद सन कह कृपानिधाना
बालि-तनय-बुधि-बल-गुन-धामा • लंका जाहु तात मम कामा
बहुत बुझाइ तुम्हहिं का कहऊँ • परम-चतुर मैं जानत अहऊँ
काज हमार तासु हित होई • रिपु सन करेहु बतकही सोई

सो० प्रभुअग्या धरि सीस चरन बंदि अंगद उठेउ ।
सोइ गुनसागर ईस राम कृपा जा पर करहु ॥ १ ॥
स्वयंसिद्ध सब काज नाथ मोहि आदर दियउ ।
अस बिचारि जुबराज तन पुलकित हरषित हियेउ ॥ २ ॥

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई • अंगद चलेउ सबहि सिर नाई
प्रभुप्रताप उर सहज असंका • रनबाँकुरा बालिसुत बंका
पुर पैठत रावन कर बेटा • खेलत रहा सो होइ गइ भेंटा
बातहिं बात करष बढ़ि आई • जुगल अतुल बल पुनि तरुनाई
तेहि अंगद कहँ लात उठाई • गहि पद पटकेउ भूमि भँवाई
निसिचर निकर देखि भट भारी • जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी
एक एक सन मरम न कहहीं • समुझि तासु बध चुप करि रहहीं
भयउ कोलाहल नगर मँझारी • आवा कपि लंका जेहि जारी

अब धौं कहा करिहि करतारा * अति सभीत सब करहिं बिचारा
बिनु पूँछे मग देहिं देखाई * जेहि बिलोक सोइ जाइ सुखाई
दो० गयउ सभा दरबार तब सुमिरि राम-पद-कंज ।
सिंहठवनि इत उत चितव धीर-बीर-बल-पुंज ॥ १८ ॥
तुरत निसाचर एक पठावा * समाचार रावनहिं जनावा
सुनत बिहँसि बोला दससीसा * आनहु बोलि कहाँ कर कीसा
आयसु पाइ दूत बहु धाये * कपिकुंजरहि बोलि लइ आये
अंगद दीख दसानन बैसा * सहित प्रान कज्जलगिरि जैसा
भुजा बिटप सिर सृंग समाना * रोमावली लता जनु नाना
मुख नासिका नयन अरु काना * गिरिकंदरा खोह अनुमाना
गयउ सभा मन नेकु न मुरा * बालितनय अतिबल बाँकुरा
उठे सभासद कपि कहँ देखी * रावनउर भा क्रोध बिसेखी
दो० जथा मत्तगज-जूथ महँ पंचानन चलि जाइ ।
रामप्रताप सुमिरि मन बैठ सभा सिर नाइ ॥ १९ ॥
कह दसकंठ कवन तैं बंदर * मैं रघुबीर - दूत दसकंधर
मम जनकहि तोहि रही मिताई * तव हितकारन आयउँ भाई
उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती * सिव बिरंचि पूजेहु बहु भाँती
बर पायेहु कीन्हेहु सब काजा * जीतेहु लोकपाल सब राजा
नृप अभिमान मोहबस किंबा * हरि आनेहु सीता जगदंबा
अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा * सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा
दसन गहहु तृन कंठ कुठारी * परिजन सहित संग निजनारी
सादर जनकसुता करि आगे * एहिबिधि चलहु सकल भय त्यागे
दो० प्रनतपाल रघुबंस-मनि त्राहि त्राहि अब मोहि ।

सुनतहिं आरत बचन प्रभु अभय करहिंगे तोहि २०॥

रे कपिपोत न बोल सँभारी * मूढ़ न जानेसि मोहि सुरारी
कहु निज नाम जनक कर भाई * केहि नाते मानिये मिताई
अंगद नाम बालि कर बेटा * तासों कबहुँ भई ही भेंटा
अंगदबचन सुनत सकुचाना * रहा बालि बानर मैं जाना
अंगद तुही बालिकर बालक * उपजेहु बंस-अनलकुल घालक
गर्भ न गयउ व्यर्थ तुम्ह जायेहु * निजमुख तापसदूत कहायेहु
अब कहु कुसल बालि कहँ अहई * बिहँसि बचन तब अंगद कहई
दिन दस गये बालि पहिं जाई * पूछेहु कुसल सखा उर लाई
राम-बिरोध कुसल जसि होई * सो सब तोहि सुनाइहि सोई
सुनु सठ भेद होइ मन ताके * श्रीरघुबीर हृदय नहिं जाके

दो० हम कुलघालक सत्य तुम्ह कुलपालक दससीस।
अंधउ बधिर न अस कहहिं नयन कान तव बीस २१॥

सिव बिरंचि-सुर-मुनि-समुदाई * चाहत जासु चरन सेवकाई
तासु दूत होइ हम कुल बोरा * ऐसिहु मति उर बिहर न तोरा
सुनि कठोर बानी कपि केरी * कहत दसानन नयन तरेरी
खल तव कठिन बचन सब सहऊँ * नीति धर्म मैं जानत अहऊँ
कह कपि धर्मसीलता तोरी * हमहु सुनी कृत पर त्रिय-चोरी
देखेउ नयन दूत रखवारी * बूड़ि न मरहु धर्म-व्रत धारी
कान नाक बिनु भगिनि निहारी * छमा कीन्ह तुम्ह धर्म बिचारी
धर्मसीलता तव जग जागी * पावा दरस हमहुँ बड़भागी

दो० जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि सठ बिलोकु मम बाहु।
लोकपाल बल बिपुल ससि ग्रसन हेतु जिमि राहु २२॥

जानहिं दिग्गज उर कठिनाई • जब जब भिरउँ जाइ बरिआई
जिन्ह के दसन कराल न फूटे • उर लागत मूलक इव टूटे
जासु चलत डोलति इमि धरनी • चढ़त मत्तगज जिमि लघु तरनी
सोइ रावन जग बिदित प्रतापी • सुनेहि न स्रवन अलीक प्रलापी
दो• तेहि रावन कहँ लघु कहसि नर कर करसि बखान।
रे कपि बर्बर खर्ब खल अब जाना तव ग्यान ॥११०॥
सुनि अंगद सकोप कह बानी • बोलु सँभारि अधम अभिमानी
सहसबाहु-भुज - गहन अपारा • दहन अनल सम जासु कुठारा
जासु परसु सागर - खर -धारा • बूड़े नृप अगनित बहु बारा
तासु गर्ब जेहि देखत भागा • सो नर क्यों दससीस अभागा
राम मनुज कस रे सठ बंगा • धन्वी काम नदी पुनि गंगा
पसु सुरधेनु कल्पतरु रूखा • अन्न दान अरु रस पीयूषा
बैनतेय खग अहि सहसानन • चिंतामनि पुनि उपल दसानन
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा • लाभ कि रघुपति-भगति-अकुंठा
दो• सेनसहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि।
कस रे सठ हनुमान कपि गयउ जो तवसुत मारि ॥१११॥
सुनु रावन परिहरि चतुराई • भजसि न कृपासिंधु रघुराई
जौं खल भएसि राम कर द्रोही • ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही
मूढ़ बृथा जनि मारसि गाला • राम-बैर होइहि अस हाला
तव सिर-निकर कपिन्ह के आगे • परिहहिं धरनि राम-सर लागे
ते तव सिर कंदुक सम नाना • खेलिहहिं भालु कीस चौगाना
जबहिं समर कोपिहि रघुनायक • छुटिहहिं अतिकराल बहु सायक
तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा • अस बिचारि भजु राम उदारा

सुनत अधम रावन परजरा • जरत महानल जनु घृत परा

दो॰ कुम्भकरन अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध सक्रारि ।
मोर पराक्रम सुनेसि नहिं जितेउँ चराचर झारि॥२०॥

सठ साखामृग जोरि सहाई • बाँधा सिंधु इहइ प्रभुताई
नाघहिं खग अनेक बारीसा • सूर न होहिं ते सुनु सब कीसा
मम भुज-सागर-बल-जल-पूरा • जहँ बूड़े बहु सुर नर सूरा
बीस पयोधि अगाध अपारा • को अस बीर जो पाइहि पारा
दिगपालन्ह मैं नीर भरावा • भूप सुजस खल मोहि सुनावा
जौं पै समरसुभट तव नाथा • पुनि पुनि कहसि जासुगुन-गाथा
तौ बसीठ पठवत केहि काजा • रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा
हर-गिरि मथन निरखु मम बाहू • पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सराहू

दो॰ सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहिं सीस ।
हुने अनल अति हरष बहु बार साखि गौरीस ॥ १८ ॥

जरत बिलोकेउँ जबहिं कपाला • बिधि के लिखे अंक निज भाला
नर के कर आपन बध बाँची • हँसेउँ जानि बिधिगिरा असाँची
सोउमन समुझि त्रास नहिं मोरे • लिखा बिरंचि जरठमति भोरे
आन बीरबल सठ मम आगे • पुनिपुनि कहसिलाज पति त्यागे
कह अंगद सलज्ज जग माहीं • रावन तोहि समान कोउ नाहीं
लाजवंत तव सहज सुभाऊ • निजमुख निजगुन कहसि न काऊ
सिर अरु सैल कथा चित रही • ता तें बार बीस तैं कही
सो भुजबल राखेहु उर घाली • जीतेहु सहसबाहु बलि बाली
सुनु मतिमंद देहि अब पूरा • काटे सीस कि होइय सूरा
बाजीगर कहँ कहिय न बीरा • काटइ निज कर सकल सरीरा

अहंकार ममता मद त्यागू ॥ महा मोहनिसि सूतत जागू
काल ब्याल कर भच्छक जोई ॥ सपनेहु समर कि जीतिअ सोई
दो० सुनि दसकंध रिसान अति तेहिं मन कीन्ह बिचार।
राम-दूत-कर मरउँ बरु यह खल रत मलभार ॥५०॥
अस कहि चला रचेसि मगमाया ॥ सर मंदिर बर बाग बनाया
मारुत सुत देखा सुभ आस्रम ॥ मुनिहि बूझि जल पियउँ जाइ स्रम
राच्छस-कपट - बेष तहँ सोहा ॥ मायापति दूतहि चह मोहा
जाइ पवनसुत नायउ माथा ॥ लाग सो कहइ राम-गुन-गाथा
होत महा रन रावन रामहिं ॥ जितिहहिं राम न संसय या महीं
इहाँ भये मैं देखउँ भाई ॥ ग्यान-दृष्टि बल मोहि अधिकाई
माँगा जल तेहिं दीन्ह कमंडल ॥ कह कपि नहिं अघाउँ थोरे जल
सरमज्जन करि आतुर आवहु ॥ दिच्छा देउँ ग्यान जेहि पावहु
दो० सर पैठत कपि पद गहा मकरी तब अकुलान।
मारी सो धरि दिव्यतनु चली गगन चढ़ि जान ॥५१॥
कपि तव दरस भइउँ निष्पापा ॥ मिटा तात मुनिबर कर सापा
मुनि न होइ यह निसिचर घोरा ॥ मानहु सत्य बचन प्रभु मोरा
अस कहि गई अपछरा जबहीं ॥ निसिचर निकट गयउ कपि तबहीं
कह कपि मुनि गुरदछिना लेहू ॥ पाछे हमहिं मंत्र तुम्ह देहू
सिर लंगूर लपेटि पछारा ॥ निज तनु प्रगटेसि मरती बारा
राम राम कहि छाँड़ेसि प्राना ॥ सुनि मन हरषि चलेउ हनुमाना
देखा सैल न औषध चीन्हा ॥ सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा
गहि गिरि निसि नभ धावत भयऊ ॥ अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ
दो० देखा भरत बिसाल अति निसिचर मन अनुमानि।

बिनु फर सर तकि मारेउ चाप श्रवन लगि तानि ॥७२॥

परेउ मुरछि महि लागत सायक • सुमिरत राम राम रघुनायक
सुनि प्रियबचन भरत उठि धाये • कपि-समीप अति आतुर आये
बिकल बिलोकि कीस उर लावा • जागत नहिं बहु भाँति जगावा
मुख मलीन मन भये दुखारी • कहत बचन लोचन भरि बारी
जेहिं बिधि राम बिमुख मोहिं कीन्हा • तेहिं पुनि यह दारुन दुख दीन्हा
जौं मोरे मन बच अरु काया • प्रीति राम-पद-कमल अमाया
तौ कपि होउ बिगत-स्रम-सूला • जौं मो पर रघुपति अनुकूला
सुनत बचन उठि बैठ कपीसा • कहि जय जयति कोसलाधीसा

सो० लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलकित तन लोचनसजल ।
प्रीति न हृदय समाइ सुमिरि राम रघुकुल-तिलक ८ ॥

तात कुसल कहु सुखनिधान की • सहित अनुज अरु मातु जानकी
कपि सब चरित समास बखाने • भये दुखी मन महँ पछिताने
अहह दैव मैं कत जग जायउँ • प्रभु के एकहु काम न आयउँ
जानि कुअवसर मन धरि धीरा • पुनि कपि सन बोले बल बीरा
तात गहरु होइहि तोहि जाता • काम नसाइहि होत प्रभाता
चढ़ु मम सायक सैल समेता • पठवउँ तोहि जहँ कृपानिकेता
सुनि कपि मन उपजा अभिमाना • मोरे भार चलिहि किमि बाना
रामप्रभाव बिचारि बहोरी • बंदि चरन कपि कह कर जोरी
तव प्रताप उर राखि गोसाईं • जैहौं राम - बान की नाईं
भरत हरषि तब आयसु दयऊ • पद सिरनाइ चलेउ कपि भयऊ

दो० भरत-बाहु-बल-सील-गुन प्रभु पद प्रीति अपार ।
मन महँ जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार ॥७३॥

उहाँ राम लछिमनहि निहारी * बोले बचन मनुजअनुसारी
अर्धराति गइ कपि नहिं आयउ * राम उठाइ अनुज उर लायउ
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ * बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ
मम हित लागि तजेहु पितु माता * सहेउ बिपिन हिम आतप बाता
सो अनुराग कहाँ अब भाई * उठहु न सुनि मम बच बिकलाई
जौं जनतेउँ बन बंधुबिछोहू * पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू
सुत बित नारि भवन परिवारा * होहिं जाहिं जग बारहिं बारा
अस बिचारि जियँ जागहु ताता * मिलइ न जगत सहोदर भ्राता
जथा पंख बिनु खग अति दीना * मनि बिनु फनि करिबर करहीना
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही * जौं जड़ दैव जिआवइ मोही
जैहउँ अवध कवन मुँह लाई * नारिहेतु प्रिय भाइ गँवाई
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं * नारि हानि बिसेष छति नाहीं
अब अपलोक सोक सुत तोरा * सहिहि निठुर कठोर उर मोरा
निज जननी के एक कुमारा * तात तासु तुम्ह प्रानअधारा
सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहिपानी * सब बिधि सुखद परमहितजानी
उतरु काह देहउँ तेहि जाई * उठि किन मोहि सिखावहु भाई
बहुबिधि सोचत सोचबिमोचन * स्रवत सलिलराजिवदल-लोचन
उमा एक अखंड रघुराई * नरगति भगत कृपाल देखाई
सो॰ प्रभु-प्रलाप सुनि कान बिकल भये बानरनिकर ।
आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ बीररस ॥६१॥
हरषि राम भेंटेउ हनुमाना [illegible] कृतग्य प्रभु परम सुजाना
तुरत बैद तब [illegible] बैठे लछिमन हरषाई
हृदय लाइ [illegible] -कपि ब्राता

पुनि कपि बैद तहाँ पहुँचावा * जेहि बिधि तबहिं ताहि लेइ आवा
यह बृत्तांत दसानन सुनेऊ * अति बिषाद पुनिपुनि सिर धुनेऊ
ब्याकुल कुंभकरन पहिं गयऊ * करि बहु जतन जगावत भयऊ
जागा निसिचर देखिय कैसा * मानहुँ काल देह धरि बैसा
कुंभकरन बूझा कहु भाई * काहे तव मुख रहे सुखाई
कथा कही सब तेहि अभिमानी * जेहि प्रकार सीता हरि आनी
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे * महा - महा - जोधा संहारे
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी * भट अतिकाय अकंपन भारी
अपर महोदर आदिक बीरा * परे समरमहि सब रनधीरा

दो० सुनि दसकंधर-बचन तब कुम्भकरन बिलखान ।
जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत कल्यान ॥७४॥

भल न कीन्ह तैं निसिचर-नाहा * अब मोहि आइ जगायेहि काहा
अजहूँ तात त्यागि अभिमाना * भजहु राम होइहि कल्याना
हैं दससीस मनुज रघुनायक * जाके हनूमान से पायक
अहह बंधु तैं कीन्हि खोटाई * प्रथमहिं मोहि न सुनायेहि आई
कीन्हेहु प्रभुबिरोध तेहि देवक * सिव बिरंचि सुर जाके सेवक
नारद मुनि मोहि ज्ञान जो कहा * कहतेउँ तोहि समय निरबहा
अब भरि अंक भेंटु मोहि भाई * लोचन सुफल करौं मैं जाई
स्यामगात सरसीरुह - लोचन * देखौं जाइ ताप-त्रय-मोचन

दो० राम-रूप-गुन सुमिरि मन मगन भयउ छन एक ।
रावन माँगेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक ॥७५॥

महिषखाइ करि मदिरा पाना * गर्जा बज्राघात समाना
कुंभकरन दुर्मद रनरंगा * चला दुर्ग तजि सेन न संगा

देखि बिभीषन आगे आयउ • परेउ चरन निज नाम सुनायउ
अनुज उठाइ हृदय तेहि लावा • रघुपति-भगत जानि मनभावा
तात लात रावन मोहि मारा • कहत परमहित मंत्र बिचारा
तेहि गलानि रघुपति पहिं आयउँ • देखि दीन प्रभु के मन भायउँ
सुनु सुत भयउ कालबस रावन • सो कि मान अब परम सिखावन
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषन • भयउ तात निसिचर-कुल-भूषन
बंधु - बंस तैं कीन्ह उजागर • भजहु राम सोभा-सुख सागर
दो० बचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रनधीर ।
जाहु न निज पर सूझ मोहि भयउँ कालबस बीर ॥६४॥
बंधु-बचन सुनि फिरा बिभीषन • आयउ जहँ त्रैलोक - बिभूषन
नाथ भूधराकार - सरीरा • कुंभकरन आवत रनधीरा
एतना कपिन्ह सुना जब काना • किलकिलाइ धाये बलवाना
लिये उपारि बिटप अरु भूधर • कटकटाइ डारहिं ता ऊपर
कोटिकोटि गिरि - सिखर प्रहारा • करहिं भालु कपि एक एक बारा
मुरइ न मन तन टरइ न टारा • जिमि गज अर्क फलन्हि कर मारा
तब मारुत-सुत मुठिका हनेऊ • परेउ धरनि ब्याकुल सिर धुनेऊ
पुनि उठि तेहिं मारेउ हनुमंता • घुर्मित भूतल परेउ तुरंता
पुनिनलनीलहि अवनिपछारेसि • जहँतहँ पटकि पटकि भट डारेसि
चली बली मुख सेन पराई • अतिभय-त्रसित न कोउ समुहाई
दो० अंगदादि कपि मुरुछित करि समेत सुग्रीव ।
काँख दाबि कपिराज कहुँ चला अमित बल-सींव ॥६५॥
उमा करत रघुपति नरलीला • खेल गरुड़ जिमि अहिगन मीना
भृकुटि भंग कालहि जो खाई • ताहि कि सोहइ ऐसि लराई

जगपावनि कीरति बिस्तरिहहिं • गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहहिं
मुरछा गइ मारुत-सुत जागा • सुग्रीवहिं तब खोजन लागा
सुग्रीवहु कै मुरछा बीती • निबुकि गयउ तेहि मृतकप्रतीती
काटेसि दसन नासिका काना • गरजि अकास चलेउ तेहिं जाना
गहेउ चरन गहि भूमि पछारा • अतिलाघव उठि पुनि तेहिं मारा
पुनि आयउ प्रभु पहिं बलवाना • जयति जयति जय कृपानिधाना
नाक कान काटे जिय जानी • फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी
सहजभीम पुनि बिनु स्रुति नासा • देखत कपिदल उपजी त्रासा

दो० जय जय जय रघुबंस-मनि धाये कपि देइ हूह ।
एकहि बार जो तासु पर छाड़िन्हि गिरि-तरु-जूह ॥७०॥

कुंभकरन रनरंग बिरुद्धा • सनमुख चला काल जनु क्रुद्धा
कोटि कोटि कपि धरिधरि खाई • जनु टीड़ी गिरिगुहा समाई
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा • कोटिन्ह मींजि मिलवमहि गर्दा
मुख नासा स्रवनन्हि की बाटा • निसरि पराहिं भालु-कपि-ठाटा
रन-मद मत्त निसाचर दर्पा • बिस्वग्रसिहिजनुएहि बिधि अर्पा
मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे • सूझ न नयन सुनहिं नहिं टेरे
कुंभकरन कपिफौज बिडारी • सुनि धाई रजनीचर - धारी
देखी राम बिकल कटकाई • रिपु-अनीक नाना बिधि आई

दो० सुनु सौमित्रि कपीस तुम्ह सकल सँभारेहु सैन ।
मैं देखउँ खल-दल-बलहि बोले राजिवनैन ॥ ७१ ॥

कर सारंग साजि कटि भाथा • अरि-दल-दलनि चले रघुनाथा
प्रथम कीन्हि प्रभु धनुष-टकोरा • रिपुदल बधिर भयउ सुनि सोरा
सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा • कालसर्प जनु चले सपच्छा

देखि बिभीषन आगे आयउ • परेउ चरन निज नाम सुनायउ
अनुज उठाइ हृदय तेहि लावा • रघुपति-भगत जानि मनभावा
तात लात रावन मोहि मारा • कहत परमहित मंत्र बिचारा
तेहिं गलानिरघुपति पहिंआयउँ • देखि दीन प्रभु के मन भायउँ
सुन सुत भयउ कालबस रावन • सो कि मान अब परम सिखावन
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषन • भयउ तात निसिचर-कुल-भूषन
बंधु - बंस तैं कीन्ह उजागर • भजहु राम सोभा-सुख सागर
दो० बचन कर्म मन कपट तजि भजेहु राम रनधीर ।
जाहु न निज पर सूझ मोहि भयउँ कालबस बीर ॥६३॥
बंधु-बचन सुनि फिरा बिभीषन • आयउ जहँ त्रैलोक बिभूषन
नाथ भूधराकार - सरीरा • कुंभकरन आवत रनधीरा
एतना कपिन्ह सुना जब काना • किलकिलाइ धाये बलवाना
लिये उपारि बिटप अरु भूधर • कटकटाइ डारहिं ता ऊपर
कोटिकोटि गिरि सिखर प्रहारा • करहिं भालु कपि एक एक बारा
मुरइ न मन तन टरइ न टारा • जिमि गज अर्क फलनिहकेमारा
तब मारुत-सुत मुठिका हनेऊ • परेउ धरनि ब्याकुल सिर धुनेऊ
पुनि उठि तेहिं मारेउ हनुमंता • घुर्मित भूतल परेउ तुरंता
पुनिनलनीलहि अवनिपछारेसि • जहँतहँ पटकि पटकि भट डारेसि
चली बली मुख सेन पराई • अतिभय-त्रसित न कोउ समुहाई
दो० अंगदादि कपि मुरछित करि समेत सुग्रीव ।
काँख दाबि कपिराज कहँ चला अमित बल-सींव ॥६४॥
उमा करत रघुपति नरलीला • खेल गरुड़ जिमि अहिगन मीला
भृकुटि भंग जो कालहि खाई • ताहि कि सोहइ ऐसि लराई

जगपावनि कीरति बिस्तारिहहिं • गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहहिं
मुरछा गइ मारुत-सुत जागा • सुग्रीवहिं तब खोजन लागा
सुग्रीवहु कै मुरछा बीती • निबुकि गयउ तेहि मृतकप्रतीती
काटेसि दसन नासिका काना • गरजि अकास चलेउ तेहिं जाना
गहेउ चरन धरि धरनि पछारा • अतिलाघव उठि पुनि तेहिं मारा
पुनि आयउ प्रभु पहिं बलवाना • जयति जयति जय कृपानिधाना
नाक कान काटे जिय जानी • फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी
सहजभीम पुनि बिनु श्रुतिनासा • देखत कपिदल उपजी त्रासा

दो० जय जय जय रघुबंस-मनि धाये कपि दै हूह ।
एकहि बार तासु पर छाँड़ेन्हि गिरि-तरु-जूह ॥६८॥

कुंभकरन रनरंग बिरुद्धा • सनमुख चला काल जनु क्रुद्धा
कोटि कोटि कपि धरिधरि खाई • जनु टीड़ी गिरि-गुहा समाई
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा • कोटिन्ह मींजि मिलव महि गर्दा
मुख नासा स्रवनन्हि की बाटा • निसरि पराहिं भालु-कपि-ठाटा
रन-मद मत्त निसाचर दर्पा • बिस्वग्रसिहि जनु एहि बिधि अर्पा
मुरे सुभट रन फिरहिं न फेरे • सूझ न नयन सुनहिं नहिं टेरे
कुंभकरन कपिफौज बिडारी • सुनि धाई रजनीचर-धारी
देखी राम बिकल कटकाई • रिपु-अनीक नाना बिधि आई

दो० सुनु सौमित्रि कपीस तुम्ह सकल सँभारेहु सैन ।
मैं देखउँ खल-बल-दलहि बोले राजिवनैन ॥७१॥

कर सारँग साजि कटि भाथा • अरि-दल-दलन चले रघुनाथा
प्रथम कीन्हि प्रभु धनुष-टकोरा • रिपुदल बधिर भयउ सुनि सोरा
सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा • कालसर्प जनु चले सपच्छा

जहँ तहँ चले बिपुल नाराचा • लगे कटन भट बिकट पिसाचा।
कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा • बहुतक बीर होहिं सत खंडा
घुर्मि घुर्मि घायल महि परहीं • उठि संभारि सुभट पुनि लरहीं
लागत बान जलद जिमि गाजहिं• बहुतक देखि कठिनसर भाजहिं
रुंड प्रचंड मुंड बिनु धावहिं • धरु धरु मारु मारु धुनि गावहिं
दो• छन महँ प्रभु के सायकन्हि काटे बिकट पिसाच।
पुनि रघुबीर निषंग महुँ प्रबिसे सब नाराच ॥ ८०॥
कुंभकरन मन दीख बिचारी • हती निमिषमहँ निसिचरि-धारी
भा अति क्रुद्ध महा बल बीरा • कियमृगनायक-नाद गँभीरा
कोपि महीधर लेइ उपारी • डारइ जहँ मर्कट भट भारी
आवत देखि सैल प्रभु भारे • सरन्हि काटि रजसम करि डारे
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक • छाँड़े अति कराल बहु सायक
तन महँ प्रबिसि निसरि सर जाहीं • जिमि दामिनि घन माँझ समाहीं
सोनित स्रवत सोह तन कारे • जनु कज्जलगिरि गेरु पनारे
बिकल बिलोकि भालु कपि भागे • बिहँसा जबहिं निकट भट आगे
दो• महानाद करि गर्जा कोटि कोटि गहि कीस ।
महि पटकइ गजराज इव सपथ करइ दससीस ॥८१॥
भागे भालु-बलीमुख जूथा • बृकबिलोकि जिमि मेष-बरूथा
चले भागि कपि भालु भवानी • बिकल पुकारत आरत बानी
यह निसिचर दुकाल-सम अहई • कपिकुल देस परन अब चहई
कृपा बारिधर राम खरारी • पाहि पाहि प्रनतारति-हारी
सकरुन-बचन सुनत भगवाना • चले सुधारि सरासन बाना
राम सेन निज पाछे घाली • चले सकोप महा बलसाली

खैंचि धनुष सर - सत संधाने * छूटे तीर सरीर समाने
लागत सर धावा रिसभरा * कुधर डगमगत डोलति धरा
लीन्ह एक तेहि सैल उपाटी * रघुकुल तिलक भुजा सोइ काटी
धावा बामबाहु गिरिधारी * प्रभु सोउ भुजा काटि महि पारी
काटे भुजा सोह खल कैसा * पच्छहीन मंदरगिरि जैसा
उग्र बिलोकनि प्रभुहि बिलोका * ग्रसन चहत मानहुँ त्रैलोका

दो॰ करि चिक्कार घोर अति धावा बदन पसारि ।
गगन सिद्ध सुर त्रासित हा हा हेति पुकारि ॥ ८२ ॥

सभय देव करुना निधि जानेउ * स्रवन अपंत सरासन तानेउ
बिसिखनिकरनिसिचरमुखभरेऊ * तदपि महाबल भूमि न परेऊ
सरन्हि भरा मुख सनमुख धावा * काल त्रोन सजीव जनु आवा
तब प्रभु कोपि तीब्र सर लीन्हा * धर तें भिन्न तासु सिर कीन्हा
सो सिर परेउ दसानन आगे * बिकलभयउजिमिफनिमनित्यागे
धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा * तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ खंडा
परे भूमि जिमि नभ तें भूधर * हेठ-दाबि कपि भालु निसाचर
तासु तेज प्रभु बदन समाना * सुर मुनि सबहिं अचंभव माना
सुर दुंदुभी बजावहिं हरषहिं * अस्तुतिकरहिं सुमन बहुबरषहिं
करि बिनती सुर सकल सिधाये * तेही समय देवरिषि आये
गगनोपरि हरि गुन-गन गाये * रुचिर बीर-रस प्रभु मन भाये
बेगि हतहु खल कहि मुनि गये * राम समर महि सोहत भये

छं॰ संग्राम-भूमि बिराज रघुपति अतुलबलकोसलधनी ।
श्रमबिंदु मुख राजीवलोचन अरुन तन सोनितकनी ॥
भुज जुगल फेरत सर-सरासन भालु कपि चहुँ दिसि बने ।

कहइ दास तुलसी कहि न सकइ छबि सेष जेहि आनन घने ॥
दो० निसिचर अधम मलाकर ताहि दीन्ह निज धाम ।
गिरिजा ते नर मंदमति जे न भजहिं श्रीराम ॥८१॥
दिन के अंत फिरी दोउ अनी • समर भई सुभटन्ह श्रम घनी
रामकृपा कपिदल बल बाढ़ा • जिमि तृन पाइ लाग अति डाढ़ा
छीजहिं निसिचर दिन अरु राती • निज मुख कहे सुकृत जेहि भाँती
बहु बिलाप दसकंधर करई • बंधुसीस पुनि पुनि उर धरई
रोवहिं नारि हृदय हति पानी • तासु तेज बल बिपुल बखानी
मेघनाद तेहि अवसर आवा • कहि बहु कथा पिता समुझावा
देखेहु कालि मोरि मनुसाई • अबहिं बहुत का करउँ बड़ाई
इष्टदेव सों बल रथ पायउँ • सो बल तात न तोहि देखायउँ
एहि बिधि जल्पत भयउ बिहाना • चहुँ दुआर लागे कपि नाना
इत कपि भालु कालसम बीरा • उत रजनीचर अति रन धीरा
लरहिं सुभट निज निज जयहेतू • बरनि न जाइ समर खगकेतू
दो० मेघनाद माया-रचित रथ चढ़ि गयउ अकास ।
गर्जेउ प्रलय-पयोद जिमि भइ कपि-कटकहि त्रास ॥८२॥
सक्ति सूल तरवारि कृपाना • अस्त्र सस्त्र कुलिसायुध नाना
डारइ परसु परिघ पाषाना • लागेउ बृष्टि करइ बहु बाना
रहे दसहुँ दिसि सायक छाई • मानहुँ मघा मेघ झरि लाई
धरु धरु मारु सुनिय धुनि काना • जो मारइ तेहि कोउ न जाना
गहिगिरितरु अकासकपि धावहिं • देखहिंतेहिनदुखित फिरिआवहिं
अवघट घाट बाट गिरि कंदर • मायाबल कीन्हेसि सर पंजर
जाहिं कहाँ भये ब्याकुल बंदर • सुरपति बंदि परे जनु मंदर

मारुत-सुत अंगद नल नीला ● कीन्हेसि बिकल सकल बलसीला
पुनि लछिमन सुग्रीव बिभीषन ● सरन्हि मारि कीन्हेसि जर्जरतन
पुनि रघुपति सन जूझै लागा ● सर छाँड़इ होइ लागहिं नागा
ब्याल-पास-बस भयउ खरारी ● स्वबस अनंत एक अबिकारी
नट इव कपट-चरित कर नाना ● सदा स्वतंत्र राम भगवाना
रनसोभा लगि प्रभुहिं बँधायो ● देखि दसा देवन्ह भय पायो

दो० गिरिजा जासु नाम जपि मुनि काटहिं भवपास ।
सो प्रभु आव कि बंधतर ब्यापक बिस्वनिवास ॥८४॥

चरित राम के सगुन भवानी ● तरकि न जाहिं बुद्धि मन बानी
अस बिचारि जे तज्ञ बिरागी ● रामहिं भजहिं तर्क सब त्यागी
ब्याकुल कटक कीन्ह घननादा ● पुनि भा प्रगट कहइ दुर्बादा
जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा ● सुनि करि ताहि क्रोध अति बाढ़ा
बूढ़ जानि सठ छाँड़ेउँ तोही ● लागेसि अधम पचारइ मोही
अस कहि तरल त्रिसूल चलायो ● जामवंत सो कर गहि धायो
मारेसि मेघनाद कै छाती ● परा धरनि घुर्मित सुरघाती
पुनि रिसान गहि चरन फिरायो ● महि पछारि निज बल देखरायो
बर प्रसाद सोइ मरइ न मारा ● तब गहि पद लंका पर डारा
इहाँ देवरिषि गरुड़ पठायो ● रामसमीप सपदि सो आयो

दो० पन्नगारि खाये सकल छन महँ ब्याल-बरूथ ।
भये बिगत माया तुरत हरषे बानर-जूथ ॥ ८५ ॥
गहि गिरि पादप उपल नख धाये कीस रिसाइ ।
चले तमीचर बिकलतर गढ़ पर चढ़े पराइ ॥ ८६ ॥

मेघनाद कै मुरछा जागी ● पितहि बिलोकि लाज अति लागी

सुभट बोलाइ दसानन बोला * रन-सनमुख जा कर मन डोला
सो अबहीं बरु जाउ पराई * संजुगबिमुख भये न भलाई
निज-भुज-बल मैं बैर बढ़ावा * देहउँ उतरु जो रिपु चढ़ि आवा
अस कहि मरुत-बेग रथ साजा * बाजे सकल जुझाऊ बाजा
चले बीर सब अतुलित बली * जनु कज्जल कै आँधी चली
असगुन अमित होहिं तेहि काला * गनइ न भुजबल गर्ब बिसाला

छं० अतिगर्व गनइ न सगुन असगुन स्रवहिं आयुध हाथ तें।
भट गिरत रथ तें बाजि गज चिक्करत भाजहिं साथ तें॥
गोमायु गीध कराल खर-रव स्वान बोलहिं अति घने।
जनु कालदूत उलूक बोलहिं बचन परम भयावने॥

दो० ताहि कि संपति सगुन सुभ सपनेहु मन बिस्राम।
भूत-द्रोह-रत मोह-बस राम बिमुख रत-काम॥ ६१॥

चलेउ निसाचर-कटक अपारा * चतुरंगिनी अनी बहुधारा
बिबिध भाँति बाहन रथ जाना * बिपुल बरन पताक ध्वज नाना
चले मत्त गज - जूथ घनेरे * प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे
बरन बरन बिरदैत निकाया * समरसूर जानहिं बहु माया
अति बिचित्र बाहिनी बिराजी * बीर बसंत सेन जनु साजी
चलत कटक दिगसिंधुर डगहीं * छुभितपयोधि कुधर डगमगहीं
उठी रेनु रबि गयउ छपाई * मरुत थकित बसुधा अकुलाई
पनव निसान घोररव बाजहिं * प्रलयसमय के घन जनु गाजहिं
भेरि नफीरि बाज सहनाई * मारू राग सुभट सुखदाई
केहरि - नाद बीर सब करहीं * निज निज बल पौरुष उच्चरहीं
कहइ दसानन सुनहु सुभट्टा * मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा

हैं मारिहउँ नृप देखु भलाई • अस कहि सनमुख फौज रेंगाई
यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई • धाये करि रघुबीर - दोहाई
छं० धाये बिसाल कराल मरकट भालु काल समान ते ।
मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधरबृंद नाना बान ते ॥
नख दसन-सैल-महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं ।
जय राम रावन-मत्त-गज-मृगराज सुजस बखानहीं ॥
दो० दुहुँ दिसि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि ।
भिरे बीर इत रघुपतिहि उत रावनहिं बखानि ॥१२॥
रावन रथी बिरथ रघुबीरा • देखि बिभीषन भयउ अधीरा
अधिक प्रीति मन भा संदेहा • बंदि चरन कह सहित सनेहा
नाथ न रथ नहिं तन पदत्राना • केहि बिधि जितब बीर बलवाना
सुनहु सखा कह कृपानिधाना • जेहि जय होइ सो स्यंदन आना
सौरज धीरज तेहि रथ चाका • सत्य-सील दृढ़ ध्वजा - पताका
बल-बिबेक-दम-पर हित घोरे • छमा कृपा समता रजु जोरे
ईस भजन सारथी सुजाना • बिरति चर्म संतोष कृपाना
दान-परसु बुधि-सक्ति प्रचंडा • बर - बिज्ञान कठिन - कोदंडा
अमल अचल मन त्रोन-समाना • सम-जम नियम सिलीमुख नाना
कवच अभेद बिप्र-गुरु - पूजा • एहि सम बिजय-उपाय न दूजा
सखा धरम-मय अस रथ जाकें • जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें
दो० महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर ।
जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥१३॥
सुनत बिभीषन प्रभु-बचन हरषि गहे पद-कंज ।
एहि मिस मोहि उपदेसिय राम कृपा-सुखपुंज ॥१४॥

दो० उत पचार दसकंठ-भट इत अंगद हनुमान।
लरत निसाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन॥८१॥

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना। देखत रन नभ चढ़े बिमाना॥
हमहूँ उमा रहे तेहि संगा। देखत राम - चरित रन रंगा॥
सुभट समर रस दुहुँ दिसि माते। कपि जयसील राम बल ताते॥
एक एक सन भिरहिं पचारहिं। एकन्ह एक मर्दि महि पारहिं॥
मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं। सीस तोरि सीसन्ह सन मारहिं॥
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं। गहि पद अवनि पटकि भट डारहिं॥
निसिचर भट महि गाड़हिं भालू। ऊपर ढारि देहिं बहु बालू॥
बीर बलीमुख जुद्ध बिरुद्धे। देखिअत बिपुल काल जनु क्रुद्धे॥

छं० क्रुद्धे कृतांत समान कपि तन स्रवत सोनित राजहीं।
मर्दहिं निसाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजहीं॥
मारहिं चपेटन्हि डाटि दातन्ह काटि लातन्ह मीजहीं।
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहिं खल छीजहीं॥
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अँतावरि मेलहीं।
प्रह्लादपति जनु बिबिध तनु धरि समर अंगन खेलहीं॥
धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही।
जय राम जो तृन ते कुलिस कर कुलिस ते कर तृन सही॥

दो० निज दल बिचल बिलोकि तेहिं बीस भुजा दस चाप।
रथ चढ़ि चलेउ दसानन फिरहु फिरहु करि दाप॥८२॥

धायउ परम क्रुद्ध दसकंधर। सन्मुख चले हूह दै बंदर॥
गहि कर पादप उपल पहारा। डारेन्हि ता पर एकहिं बारा॥
लागहिं सैल बज्र तन तासू। खंड खंड होइ फूटहिं आसू॥

चला न अचल रहा रथ रोपी ● रन-दुर्मद रावन अति कोपी
इत उत झपटि दपटि कपिजोधा ● मर्दै लाग भयउ अति क्रोधा
चले पराइ भालु कपि नाना ● त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना
पाहि पाहि रघुवीर गोसाईं ● यह खल खाइ काल की नाईं
तेहि देखे कपि सकल पराने ● दसहुँ चाप सायक सधाने

छं० संधान धनु सरनिकर छाँड़ेसि उरगजिमि उड़िलागहीं।
रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि बिदिस कहँ कपि भागहीं॥
भयो अति कोलाहल बिकल कपिदल भालु बोलहिं आतुरे।
रघुवीर करुनासिंधु आरतबंधु जन-रच्छक हरे॥

दो० विचलत देखि अनीक निज कटि निषंग धनु हाथ।
लछिमन चले सकोप अति नाइ राम पद माथ ८० ॥

रे खल का मारसि कपि भालू ● मोहि बिलोकु तोर मैं कालू
खोजत रहेउँ तोहि सुत घाती ● आजु निपाति जुड़ावउँ छाती
अस कहि छाँड़ेसि बान प्रचंडा ● लछिमन किये सकल सतखंडा
कोटिन्ह आयुध रावन डारे ● तिल प्रमान करि काटि निवारे
पुनि निज बानन्ह कीन प्रहारा ● स्यंदन भंजि सारथी मारा
सत सत सर मारे दस भाला ● गिरिसृंगन्ह जनुप्रबिसहिं ब्याला
सत सर पुनि मारा उर माहीं ● परेउ अवनितल सुधि कछु नाहीं
उठा प्रबल पुनि मुरछा जागी ● छाँड़ेसि ब्रह्म दीन जो साँगी

छं० सो ब्रह्मदत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही।
परयौ बीर बिकल उठाव दसमुख अतुलबलमहिमारही॥
ब्रह्मांड भुवन बिराज जाके एक सिर जिमि रज-कनी।
तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जानि नहिं त्रिभुवनधनी॥

दो॰ देखत आयउ पवन-सुत बोलत बचन कठोर।
आवत ही उर महँ हनेउ मुष्टि प्रहार प्रघोर॥ ८८॥

जानु टेकि कपि भूमि न गिरा * उठा सँभारि बहुत रिसभरा
मुठिका एक ताहि कपि मारा * परेउ सैल जनु बज्र – प्रहारा
मुरछा गइ बहोरि सो जागा * कपिबल बिपुल सराहन लागा
धिग धिग मम पौरुष धिग मोही * जौं तैं जियत उठेसि सुर-द्रोही
असकहि कपि लछिमन कहँ ल्यायो * देखि दसानन बिसमय पायो
कह रघुबीर समुझु जिय भ्राता * तुम्ह कृतांत-भच्छक सुर त्राता
सुनत बचन उठि बैठ कृपाला * गगन गई सो सक्ति कराला
पुनि कोदंडबान गहि धाये * रिपु-सनमुख अति आतुर आये

छं॰ आतुर बहोरि बिभंजि स्यन्दन सूत हति ब्याकुल कियो।
गिरयो धरनि दसकंधर बिकलतर बानसत बेध्यो हियो॥
सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लइ गयो।
रघुबीर बंधु प्रताप-पुंज बहोरि प्रभु-चरनन्हि नयो॥

दो॰ उहाँ दसानन जागि करि करइ लाग कछु जग्य।
जय चाहत रघुपति बिमुख सठ हठबस अति अग्य॥ ८९॥

इहाँ बिभीषन सब सुधि पाई * सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई
नाथ करइ रावन एक जागा * सिद्ध भये नहिं मरिहि अभागा
पठवहु देव बेगि भट बंदर * करहिं बिधंस आव दसकंधर
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये * हनुमदादि अंगद सब धाये
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका * पैठे रावन भवन असंका
जबहीं करत जग्य सो देखा * सकल कपिन्ह भा क्रोध बिसेखा
रन तें निलज भाजि घर आवा * इहाँ आइ बक ध्यान लगावा

अस कहि अंगद मारेउ लाता ॥ चितव न सठ स्वारथ मन राता
छं० नहिं चितव जब करि कोप कपि गहि दसन लातन्ह मारहीं।
धरि केस नारि निकारि बाहेर तेऽतिदीन पुकारहीं ॥
तब उठेउ क्रुद्ध कृतांतसम गहि चरन बानर डारई।
एहि बीच कपिन्ह बिधंसकृत मख देखि मन महँ हारई ॥
दो० मख बिधंस कपि कुसल सब आये रघुपति पास।
चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ त्यागि जिवन कै आस ॥१००॥
चलत होहिं अति असुभ भयंकर ॥ बैठहिं गीध उड़ाहि सिरन्ह पर
भयउ कालबस काहु न माना ॥ कहेसि बजावहु जुद्ध-निसाना
चली तमीचर-अनी अपारा ॥ बहु गज रथ पदाति असवारा
प्रभु सनमुख धाये खल कैसे ॥ सलभ-समूह अनल कहँ जैसे
इहाँ देवतन्ह बिनती कीन्ही ॥ दारुन बिपति हमहिं एहिं दीन्ही
अब जनि राम खेलावहु एही ॥ अतिसय दुखित होति बैदेही
देव-बचन सुनि प्रभु मुसुकाना ॥ उठि रघुबीर सुधारे बाना
जटा जूट दृढ़ बाँधे माथे ॥ सोहहिं सुमन बीच बिच गाँथे
अरुननयन बारिद-तनु स्यामा ॥ अखिल-लोक-लोचन अभिरामा
कटितट परिकर कस्यो निषंगा ॥ कर कोदंड कठिन सारंगा
छं० सारंग कर सुंदर निषंग सिलीमुखाकर कटि कस्यौ।
भुजदंड पीन मनोहरायत उर धरा-सुर पद लस्यौ ॥
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु सरचाप कर फेरन लगे।
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे ॥
दो० हरषे देव बिलोकि छबि बरषहिं सुमन अपार।
जय जय प्रभु गुन-ग्यान-बल धाम हरन महिभार ॥१०१॥

उहाँ बीच निसाचर - अनी * कसमसाति आई अति घनी
देखि चले सनमुख कपि भट्टा * प्रलयकाल के जनु घनघट्टा
बहु कृपान तरवारि चमंकहिं * जनु दस दिसि दामिनी दमंकहिं
गज रथ तुरग चिकार कठोरा * गर्जहिं मनहुँ बलाहक घोरा
कपिलंगूर बिपुल नभ छाए * मनहुँ इंद्र - धनु उए सुहाए
उठइ धूरि मानहुँ जल धारा * बान बुंद भइ बृष्टि अपारा
दुहुँ दिसि पर्बत करहिं प्रहारा * बज्रपात जनु बारहिं बारा
रघुपति कोपि बान झरि लाई * घायल भे निसिचर - समुदाई
लागत बान बीर चिक्करहीं * घुर्मि घुर्मि जहँ तहँ महि परहीं
स्रवहिं सैल जनु निर्झर भारी * सोनित सरि कादर भयकारी
छं० कादर भयंकर रुधिर-सरिता चली परम अपावनी।
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अबर्त बहति भयावनी॥
जलजंतु गज पदचर तुरग खर बिबिध बाहन को गने।
सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने॥
दो० बीर परहिं जनु तीरतरु मज्जा बहु बह फेन।
कादर देखत डरहिं तेहि सुभटन के मन चेन॥ १०२॥
मज्जहिं भूत पिसाच बेताला * प्रमथ महा झोटिंग कराला
काक कंक लइ भुजा उड़ाहीं * एक ते छीनि एक लेइ खाहीं
एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई * सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई
कहँरत भट घायल तट गिरे * जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे
खैंचहिं गीध आँत तट भये * जनु बनसी खेलहिं चित दये
बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं * जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं
जोगिनिभरि भरि खप्पर संचहिं * भूत पिसाच बधू नभ नंचहिं

भट कपाल करताल बजावहिं * चामुंडा नाना बिधि गावहिं
जंबुक निकर कटक्कट कट्टहिं * खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं
कोटिन्ह रुंड मुंड बिनु डोल्लहिं * सीस परे महि जय जय बोल्लहिं
छं० बोल्लहिं जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिर बिनु धावहीं।
खप्परिन्ह खग्ग अलुज्झि जुज्झहिं सुभट सुरपुर पावहीं॥
निसिचर-बरूथ बिमर्दि गरजहिं भालु कपि दर्पित भये।
संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम-सर-निकरन्हि हये॥
दो० हृदय बिचारेसि दसबदन भा निसिचर-संहार।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करउँ अपार॥१०१॥
देवन प्रभुहि पयादे देखा * उपजा उर अतिछोभ बिसेखा
सुरपति निज रथ तुरत पठावा * हरष-सहित मातलि लइ आवा
तेज-पुंज रथ दिब्य अनूपा * हरषि चढ़े कोसलपुर-भूपा
चंचल तुरग मनोहर चारी * अजर अमर मन-सम-गति-कारी
रथारूढ़ रघुनाथहिं देखी * धाये कपि बल पाइ बिसेखी
सही न जाइ कपिन्ह कै मारी * तब रावन माया बिस्तारी
सो माया रघुबीरहिं बाँची * सब काहू मानी करि साँची
देखी कपिन्ह निसाचर-अनी * बहु अंगद लछिमन कपि धनी
छं० बहु बालिसुत लछिमन कपीस बिलोकि मर्कट अपडरे।
जनु चित्रलिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहिं खरे॥
निजसेन चकित बिलोकि हँसि सरचाप सजि कोसलधनी।
माया हरी हरि निमिष महँ हरषी सकल मरकट अनी॥
दो० बहुरि राम सब तन चितइ बोले बचन गँभीर।
द्वंदजुद्ध देखहु सकल श्रमित भये अति बीर॥१०२॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा • विप्र-चरन-पंकज सिर नावा
तब लंकेस क्रोध उर छावा • गर्जत तर्जत सनमुख धावा
जीतेहु जे भट संजुग माहीं • सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं
रावन नाम जगत जस जाना • लोकप जाके बंदीखाना
खर-दूषन - बिराध तुम्ह मारा • बधेहु ब्याध इव बालि बिचारा
निसिचर-निकर सुभट संघारेहु • कुंभकरन घननादहि मारेहु
बैर आजु सब लेहुँ निबाही • जौं रन भूप भाजि नहिं जाहीं
आजु करउँ खलु काल-हवाले • परेहु कठिन रावन के पाले
सुनि दुर्बचन काल-बस जाना • बिहँसि बचन कह कृपानिधाना
सत्य सत्य सब तव प्रभुताई • जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई

छं० जनि जल्पना करि सुजस नासहि नीति सुनहि करहि छमा ।
संसार महँ पूरुष त्रिबिध पाटल-रसाल-पनस - समा ॥
एक सुमन-प्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल लागहीं ।
एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं॥

दो० राम बचन सुनि बिहँसि कह मोहि सिखावत ग्यान ।
बैर करत नहिं तब डरेहु अब लागे प्रिय प्रान ॥ १०२ ॥

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर • कुलिस-समान लाग छाँड़ै सर
नानाकार सिलीमुख धाये • दिसि अरु बिदिसि गगन महि छाये
अनल - बान छाँड़ेउ रघुबीरा • छन महँ जरे निसाचर - तीरा
छाँड़िसि तीव्र सक्ति खिसिआई • बान - संग प्रभु फेरि पठाई
कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पबारै • बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारै
निफल होहिं रावन सर कैसे • खल के सकल मनोरथ जैसे
तब सतबान सारथी मारेसि • परेउ भूमि जय राम पुकारेसि

राम कृपा करि सूत उठावा * तब प्रभु परम क्रोध कहँ पावा

छं० भये क्रुद्ध जुद्ध विरुद्ध रघुपति त्रोन सायक कसमसे।
कोदण्डधुनि अतिचंड सुनि मनुजाद सब मारुत ग्रसे॥
मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर त्रसे।
चिक्करहिं दिग्गज दसन गहि महि देखि कौतुक सुर हँसे॥

दो० तानेउ चाप स्रवन लगि छाँड़े विसिख कराल।
राम-मारगन-गन चले लहलहात जनु व्याल ॥१०१॥

चले बान सपच्छ जनु उरगा * प्रथमहिं हतेउ सारथी तुरगा
रथ विभंजि हति केतु पताका * गर्जा अति अंतर बल थाका
तुरत आन रथ चढ़ि खिसिआना * छाँड़ेसि अस्त्र-सस्त्र विधि नाना
विफल होहिं सब उद्यम ताके * जिमि पर-द्रोह निरत-मनसा के
तब रावन दस सूल चलाये * बाजि चारि महि मारि गिराये
तुरग उठाइ कोपि रघुनायक * खैंचि सरासन छाँड़े सायक
रावन सिर-सरोज बन चारी * चलि रघुबीर सिलीमुख धारी
दस दस बान भाल दस मारे * निसरि गये चले रुधिर-पनारे
स्रवत रुधिर धायउ बलवाना * प्रभु पुनि कृत धनु-सर-संधाना
तीस तीर रघुबीर पवारे * भुजन्ह समेत सीस महि पारे
काटत ही पुनि भये नबीने * राम बहोरि भुजा - सिर छीने
काटत झटिति पुनि नूतन भये * प्रभु बहु बार बाहु सिर हये
पुनिपुनि प्रभु काटत भुजसीसा * अति कौतुकी कोसलाधीसा
रहे छाइ नभ सिर अरु बाहू * मानहुँ अमित केतु अरु राहू

छं० जनु राहु केतु अनेक नभपथ स्रवत सोनित धावहीं।
रघुबीर-तीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं॥

अंतरधान भयउ छन एका • पुनि प्रगटे खल रूप अनेका
रघुपति-कटक भालु कपि जेते • जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते
देखे कपिन्ह अमित दससीसा • भागे भालु बिकल भट कीसा
चले बलीमुख धरहिं न धीरा • त्राहि त्राहि लछिमन रघुबीरा
दहदिसि कोटिन्ह धावहिं रावन • गर्जहिं घोर कठोर भयावन
डरे सकल सुर चले पराई • जयकै आस तजहु अब भाई
सब सुर जिते एक दसकंधर • अब बहु भये तकहु गिरिकंदर
रहे बिरंचि संभु मुनि ग्यानी • जिन्ह जिन्ह प्रभु-महिमा कछु जानी
छं• जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे।
चले बिचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे॥
हनुमंत अंगद नील नल अतिबल लरत रनबाँकुरे।
मर्दहिं दसानन कोटि कोटिन्ह कपट भू भट अंकुरे॥
दो• सुर बानर देखे बिकल हँसे कोसलाधीस।
सजि बिसिखासन एक सर हते सकल दससीस॥१११॥
प्रभु छन महँ माया सब काटी • जिमि रबि उये जाहिं तम फाटी
रावन एक देखि सुर हरषे • फिरे सुमन बहु प्रभु पर बरषे
भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे • फिरे एक एकन्ह तब टेरे
प्रभु-बल पाइ भालु कपि धाये • तरल तमकि संजुग महि आये
अस्तुति करत देव तेहि देखे • भयउँ एक मैं इन्ह के लेखे
सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल • कहि अस कोपि गगन-पथ धायल
हाहाकार करत सुर भागे • खलहु जाहु कहँ मोरे आगे
बिकल देखि सुर अंगद धावा • कूदि चरन गहि भूमि गिरावा
छं• गहि भूमि पार्‌यो लात मार्‌यो बालिसुत प्रभु पहिं गयो।

सभारि उठि दसकंठ घोर कठोर रव गर्जत भयो ॥
करि दाप चाप चढ़ाइ दस संधानि सर बहु बरषई ।
किये सकल भट घायल भयाकुल देखि निज बल हरषई ॥

दो॰ तब रघुपति लंकेस के सीस भुजा सर चाप ।
काटे भये बहोरि बहु जिमि तीरथ कर पाप ॥११२॥

सिर भुज बाढ़ि देखि रिपु केरी • भालु-कपिन्ह रिस भई घनेरी
मरत न मूढ़ कटेहुँ भुज सीसा • धाये कोपि भालु भट कीसा
बालितनय मारुति नल नीला • द्विबिद कपीस पनस बलसीला
बिटप महीधर करहिं प्रहारा • सोइ गिरि तरु गहि कपिन्ह सो मारा
एक नखन्ह रिपु-बपुष बिदारी • भागि चलहिं एक लातन्ह मारी
तब नलनील सिरन्ह चढ़ि गये • नखन्ह लिलार बिदारत भये
रुधिर बिलोकि सकोप सुरारी • तिन्हहिं धरन कहँ भुजा पसारी
गहे न जाहिं सिरन्ह पर फिरहीं • जनु जुग मधुप कमल बन चरहीं
कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी • महि पटकत भजे भुजा मरोरी
पुनि सकोप दस धनु कर लीन्हे • सरन्ह मारि घायल कपि कीन्हे
हनुमदादि मुरछित करि बंदर • पाइ प्रदोष हरष दसकंधर
मुरछित देखि सकल कपि बीरा • जामवंत धायउ रनधीरा
संग भालु भूधर तरु धारी • मारन लगे पचारि पचारी
भयउ क्रुद्ध रावन बलवाना • गहि पद महि पटकइ भट नाना
देखि भालुपति निज-दल घाता • कोपि माँझ उर मारेसि लाता

छं॰ उर लात घात प्रचंड लागत बिकल रथ तें महि परा ।
गहि भालु बीसहु कर मनहुँ कमलन्ह बसे निसि मधुकरा ॥
मुरछित बिलोकि बहोरि पद हति भालुपति प्रभु पहिं गयो ।

तुरत चले कपि सुनि प्रभु-बचना * कीन्ही जाइ तिलक कै रचना
सादर सिंहासन बैठारी * तिलक सारि अस्तुति अनुसारी
जोरि पानि सबहीं सिर नाये * सहित बिभीषन प्रभु पहिं आये
तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे * कहि प्रिय बचन सुखी सब कीन्हे
छं० किये सुखी कहि बानी सुधासम बल तुम्हारे रिपु हयो ।
पायो बिभीषन राज तिहुँ पुर जस तुम्हारो नित नयो ॥
मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जे गाइहैं ।
संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाइहैं ॥
दो० बारहिं बार बिलोकि मुख नहिं अघाहिं कपिपुंज ।
सुनत राम के बचन मृदु गहहिं सकल पदकंज ॥१२२॥
पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना * लंका जाहु कहेउ भगवाना
समाचार जानकिहिं सुनावहु * तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु
तब हनुमंत नगर महँ आये * सुनि निसिचरी निसाचर धाये
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्हीं * जनक-सुता दिखाइ पुनि दीन्हीं
दूरिहि तें प्रनाम कपि कीन्हा * रघुपति-दूत जानकी चीन्हा
कहहु तात प्रभु कृपा निकेता * कुसल अनुज-कपि-सेन-समेता
सब बिधि कुसल कोसलाधीसा * मातु समर जीतेउ दससीसा
अबिचल राज बिभीषन पावा * सुनि कपिबचन हरष उर छावा
छं० अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा ।
का देउँ तोहि त्रैलोक महँ कपि किमपि नहिं बानी समा ॥
सुनु मातु मैं पायउँ अखिल-जग-राज आज न संसयं ।
रन जीति रिपुदल बंधु जुत पस्यामि राममनामयं ॥
दो० सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदय बसहु हनुमंत ।

सानुकूल रघुबंसमनि रहहु समेत अमात ॥ १२१ ॥
अब सोइ जतनकरहु तुम्ह ताता • देखउँ नयन स्याम मृदु गाता
तब हनुमान राम पहिं जाई • जनक-सुता कै कुसल सुनाई
सुनि संदेस भानु-कुल - भूषन • बोलि लिये जुवराज बिभीषन
मारुत सुत के संग सिधावहु • सादर जनकसुतहि लइ आवहु
तुरतहिं सकल गये जहँ सीता • सेवहिं सब निसिचरी बिनीता
बेगि बिभीषन तिन्हहिं सिखावा • सादर तिन्ह सीतहि अन्हवावा
बहु प्रकार भूषन पहिराये • सिबिका रुचिर साजि पुनि लाये
ता पर हरषि चढ़ी बैदेही • सुमिरि राम सुखधाम सनेही
बेतपानि रच्छक चहुँ पासा • चले सकल मन परम हुलासा
देखन भालु कीस सब आये • रच्छक कोपि निवारन धाये
कह रघुबीर कहा मम मानहु • सीतहि सखा पयादे आनहु
देखहिं कपि जननी की नाईं • बिहँसि कहा रघुनाथ गुसाईं
सुनि प्रभु-बचन भालुकपिहरषे • नभ ते सुरन्ह सुमन बहु बरषे
सीता प्रथम अनल महँ राखी • प्रगट कीन्हि चह अंतर साखी
दो० तेहि कारन करुनायतन कहे कछुक दुर्बाद ।
सुनत जातुधानी सकल लागीं करइ बिषाद ॥१२२॥
प्रभु के बचन सीस धरि सीता • बोली मन-क्रम बचन-पुनीता
लछिमन होहु धरम के नेगी • पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी
सुनि लछिमन सीता कै बानी • बिरह बिबेक धरम-नयसानी
लोचन सजल जोरि कर दोऊ • प्रभुसन कछु कहि सकत न ओऊ
देखि राम रुख लछिमन धाये • प्रगटि कृसानु काठ बहु लाये
पावक प्रबल देखि बैदेही • हृदय हरष कछु भय नहिं तेही

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामचरितमानस

सप्तम सोपान

(उत्तरकांड)

श्लोक

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥१॥
कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ ॥२॥
कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ।
कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गमोचनम् ॥३॥

दो० रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ।
जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कृस-तन राम वियोग ॥१॥
सगुन होहिं सुन्दर सकल मन प्रसन्न सब केर ।
प्रभु-आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर ॥२॥

दो० कौसल्यादि मातु सब मन अनंद अस होइ।
आयउ प्रभु सिय अनुज-जुत कहन चहत अब कोइ ॥
भरत नयन भुज-दच्छिन फरकत बारहिं बार।
जानि सगुन मन हरष अति लागे करइ बिचार ॥४॥

रहेउ एक दिन अवधि अधारा * समुझत मन दुख भयउ अपारा
कारन कवन नाथ नहिं आयउ * जानि कुटिल किधौं मोहि बिसरायउ
अहह धन्य लछिमन बड़भागी * राम - पदारबिंद अनुरागी
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा * तातें नाथ संग नहिं लीन्हा
जौं करनी समुझैं प्रभु मोरी * नहिं निस्तार कलप-सत कोरी
जन-अवगुन प्रभु मान न काऊ * दीनबंधु अति मृदुल सुभाऊ
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई * मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई
बीतें अवधि रहहिं जौं प्राना * अधम कवन जग मोहि समाना

दो० राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत।
बिप्र-रूप धरि पवन-सुत आइ गयउ जनु पोत ॥ २ ॥
बैठे देखि कुसासन जटा-मुकुट कृसगात।
राम राम रघुपति जपत स्रवत नयन जलजात ॥ १ ॥

देखत हनूमान अति हरषेउ * पुलकगात लोचन-जल बरषेउ
मन महँ बहुत भाँति सुख मानी * बोलेउ स्रवन-सुधा-सम बानी
जासु बिरह सोचहु दिन-राती * रटहु निरंतर गुन गन - पाँती
रघुकुल-तिलक सुजन सुखदाता * आयउ कुसल देव-मुनि - त्राता
रिपु रन जीति सुजस सुर गावत * सीता अनुज सहित पुर आवत
सुनत बचन बिसरे सब दूखा * तृषावंत जिमि पाइ पियूषा
को तुम्ह तात कहाँ तें आये * मोहि परम प्रिय बचन सुनाये

मारुत सुत मैं कपि हनुमाना • नाम मोर सुनु कृपानिधाना
दीनबंधु रघुपति कर किंकर • सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर
मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता • नयन स्रवत जल पुलकित गाता
कपि तव दरस सकल दुख बीते • मिले आजु मोहि राम पिरीते
बार बार बूझी कुसलाता • तो कहुँ देउँ काह सुनु भ्राता
एहि संदेस सरिस जग माहीं • करि बिचार देखेउँ कछु नाहीं
नाहिं न तात उरिन मैं तोही • अब प्रभुचरित सुनावहु मोही
तब हनुमंत नाइ पद माथा • कहे सकल रघुपति-गुन-गाथा
कहु कपि कबहुँ कृपालु गोसाईं • सुमिरहिं मोहि दास की नाईं

छं॰ निजदास ज्यौं रघुबंस-भूषन कबहुँ मम सुमिरन करयो।
सुनि भरत बचन बिनीत अति कपि पुलकि तन चरनन्हि परयो॥
रघुबीर निज मुख जासु गुनगन कहत अग-जग-नाथ जो।
काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सदगुन सिंधु सो॥

दो॰ राम-प्रान प्रिय-नाथ तुम्ह सत्य बचन मम तात।
पुनि पुनि मिलत भरत सुनि हरष न हृदय समात॥

सो॰ भरतचरन सिर नाइ तुरित गयउ कपि राम पहिं।
कही कुसल सब जाइ हरषि चलेउ प्रभु जान चढ़ि॥

हरषि भरत कोसलपुर आये • समाचार सब गुरहि सुनाये
पुनि मंदिर महँ बात जनाई • आवत नगर कुसल रघुराई
सुनत सकल जननी उठि धाईं • कहि प्रभुकुसल भरत समुझाईं
समाचार पुरबासिन्ह पाये • नर अरु नारि हरषि सब धाये
दधि दुर्बा रोचन फल फूला • नव तुलसीदल मंगल मूला
भरि भरि हेमथार भामिनी • गावत चलीं सिंधुर-गामिनी

जो जैसेहि तैसेहि उठि धावहिं • बाल बृद्ध कहँ संग न लावहिं
एक एकन्ह कहँ बूझहिं भाई • तुम्ह देखे दयाल रघुराई
अवधपुरी प्रभु आवत जानी • भई सकल सोभा कै खानी
भइ सरजू अति निर्मल नीरा • बहइ सुहावन त्रिबिध समीरा

दो• हरषित गुरु परिजन अनुज भूसुर-बृंद-समेत।
चले भरत अतिप्रेम मन सनमुख कृपानिकेत ॥ ८ ॥
बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह निरखहिं गगन बिमान।
देखि मधुर सुर हरषित करहिं सुमंगल गान ॥ ९ ॥
राकाससि रघुपति पुर सिंधु देखि हरषान।
बढ़े कोलाहल करत जनु नारि-तरंग-समान ॥ १० ॥

इहाँ भानुकुल-कमल-दिवाकर • कपिन्ह देखावत नगर मनोहर
सुनु कपीस अंगद लंकेसा • पावन पुरी रुचिर यह देसा
जद्यपि सब बैकुंठ बखाना • बेद-पुरान-बिदित जग जाना
अवधसरिस प्रिय मोहि न सोऊ • यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ
जनमभूमि मम पुरी सुहावनि • उत्तर दिसि बह सरजू पावनि
जा मज्जन तें बिनहिं प्रयासा • मम समीप नर पावहिं बासा
अतिप्रिय मोहि इहाँ के बासी • मम धामदा पुरी सुखरासी
हरषे सब कपि सुनि प्रभु-बानी • धन्य अवध जो राम बखानी

दो• आवत देखि लोग सब कृपासिंधु भगवान।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि बिमान ॥ ११ ॥
उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहिं तुम्ह कुबेर पहिं जाहु।
प्रेरित राम चलेउ सो हरषु बिरहु अति ताहु ॥ १२ ॥

आये भरत संग सब लोगा • कृसतन श्रीरघुबीर बियोगा

बामदेव बसिष्ठ मुनिनायक • देखे प्रभु महि धरि धनु सायक
धाइ धरे गुर-चरन-सरोरुह • अनुजसहित अति पुलक-तनोरुह
भेंटि कुसल बूझी मुनिराया • हमरें कुसल तुम्हारिहि दाया
सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा • धरम-धुरंधर रघुकुल-नाथा
गहे भरत पुनि प्रभु-पद-पंकज • नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज
परे भूमि नहिं उठत उठाये • बर करि कृपासिंधु उर लाये
स्यामल गात रोम भये ठाढ़े • नव-राजीव नयन जल बाढ़े

छं० राजीवलोचन स्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी।
अतिप्रेम हृदय लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवन धनी॥
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो पहिं जाति नहिं उपमा कही।
जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बर सुखमा लही॥
बूझत कृपानिधि कुसल भरतहि बचन बेगि न आवई।
सुनु सिवा सो सुख बचन मन तें भिन्न जान जो पावई॥
अब कुसल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो।
बूड़त बिरह-बारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो॥

दो० पुनि प्रभु हरषित सत्रुहन भेंटे हृदय लगाइ।
लछिमन भरत मिले तब परम प्रेम दोउ भाइ॥ १२ ॥

भरतानुज लछिमन पुनि भेंटे • दुसह बिरह - संभव दुख मेटे
सीता - चरन भरत सिर नावा • अनुज - समेत परमसुख पावा
प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी • जनित बियोग बिपति सब नासी
प्रेमातुर सब लोग निहारी • कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी
अमित रूप प्रगटे तेहि काला • जथाजोग मिले सबहि कृपाला
कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी • किये सकल नर नारि बिसोकी

जन महँ सबहिं मिले भगवाना । उमा मरम यह काहु न जाना
एहि बिधि सबहि सुखी करि रामा । आगे चले सील - गुन - धामा
कौसल्यादि मातु सब धाईं । निरखि बच्छ जनु धेनु लवाईं
छं॰ जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन बन-परबस गईं ।
दिन अंतपुर रुख स्रवत थन हुंकार करि धावत भईं ॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेटीं बचन मृदु बहु बिधि कहे ।
गइ बिषम बिपतिबियोग भवतिन्ह हरष सुख अगनित लहे ॥

दो॰ भेंटेउ तनय सुमित्रा राम-चरन-रति जानि ।
रामहिं मिलत कैकई हृदय बहुत सकुचानि ॥ १० ॥
लछिमन सब मातन्ह मिलि हरषे आसिष पाइ ।
कैकइ कहँ पुनि पुनि मिले मन कर छोभ न जाइ ॥ १२ ॥

सासुन्ह सबन्ह मिली बैदेही । चरनन्हि लागि हरष अति तेही
देहिं असीस बूझि कुसलाता । होइ अचल तुम्हार अहिवाता
सब रघुपतिमुख कमल बिलोकहिं । मंगल जानि नयन जल रोकहिं
कनक थार आरती उतारहिं । बार बार प्रभुगात निहारहिं
नाना भाँति निछावरि करहीं । परमानंद हरष उर भरहीं
कौसल्या पुनि पुनि रघुबीरहि । चितवति कृपासिंधु रनधीरहि
हृदय बिचारति बारहिं बारा । कवन भाँति लंकापति मारा
अति सुकुमार जुगल मेरे बारे । निसिचर सुभट महाबल भारे

दो॰ लछिमन अरु सीता सहित प्रभुहिं बिलोकति मातु ।
परमानंद-मगन-मन पुनि पुनि पुलकित गात ॥ ११ ॥

लंकापति कपीस नल नीला । जामवंत अंगद सुभसीला
हनुमदादि सब बानर बीरा । धरे मनोहर मनुज - सरीरा

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे * दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे
श्रुति-पथपालक धरम-धुरंधर * गुनातीत अरु भोग पुरंदर
पति अनुकूल सदा रह सीता * सोभा-खानि सुसील बिनीता
जानति कृपासिंधु-प्रभुताई * सेवति चरन कमल मन लाई
जद्यपि गृह सेवक सेवकिनी * बिपुल सकल सेवा-बिधि गुनी
निज कर गृह परिचरजा करई * रामचंद्र आयसु अनुसरई
जेहि बिधि कृपासिंधु सुख मानइ * सोइ कर श्रीसेवा-बिधि जानइ
कौसल्यादि सासु गृह माहीं * सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं
उमा-रमा ब्रह्मादि-बंदिता * जगदंबा संततमनिंदिता

दो० जासु कृपा कटाच्छ सुर चाहत चितव न सोइ ।
राम-पदारबिंद रति करति सुभावहि खोइ ॥ २४ ॥

सेवहिं सानुकूल सब भाई * रामचरन-रति अति अधिकाई
प्रभु-मुख-कमल बिलोकत रहहीं * कबहुँ कृपाल हमहि कछु कहहीं
राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती * नाना भाँति सिखावहिं नीती
हरषित रहहिं नगर के लोगा * करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा
अहनिसि बिधिहि मनावत रहहीं * श्रीरघुबीर-चरन-रति चहहीं
दुइ सुत सुंदर सीताँ जाये * लव-कुस बेद पुरानन्हि गाये
दोउ बिजई बिनई गुनमंदिर * हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे * भये रूप गुन सील घनेरे

दो० ग्यान-गिरा-गोतीत अज माया मन-गुन-पार ।
सोइ सच्चिदानन्दघन कर नर-चरित उदार ॥ २५ ॥

प्रातकाल सरऊ करि मज्जन * बैठहिं सभाँ संग द्विज सज्जन
बेद-पुरान बसिष्ठ बखानहिं * सुनहिं राम जद्यपि सब जानहीं

अनुजन्ह संयुत भोजन करहीं • देखि सकलजननी सुख भरहीं
भरत सत्रुहन दूनउ भाई • सहित पवन सुत उपवन जाई
पूछहिं बैठि राम गुन-गाहा • कह हनुमान सुमति अवगाहा
सुनत बिमल गुन अति सुख पावहिं • बहुरि बहुरि करि बिनय कहावहिं
सबके गृह गृह होहिं पुराना • रामचरित पावन बिधि नाना
नर अरु नारि राम-गुन-गावहिं • करहिं दिवसनिसिजातनजानहिं
दो॰ अवध-पुरी-बासिन्ह कर सुख संपदा समाज।
सहस सेष नहिं कहि सकहिं जहँ नृप राम बिराज ॥२६॥
नारदादि सनकादि मुनीसा • दरसन लागि कोसलाधीसा
दिन प्रति सकल अयोध्या आवहिं • देखि नगर बिराग बिसरावहिं
जातरूप-मनि रचित अटारी • नाना रंग रुचिर गच ढारी
पुर चहुँ पास कोट अति सुंदर • रचे कँगूरा रंग रंग बर
नवग्रह निकर अनीक बनाई • जनु घेरी अमरावति आई
महि बहु रंग रचित गच काँचा • जो बिलोकि मुनिबर मन नाचा
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत • कलस मनहुँ रबिससिदुति निंदत
बहु मनिरचित झरोखा भ्राजहिं • गृह गृह प्रति मनिदीप बिराजहिं
छं॰ मनिदीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी बिद्रुम रची।
मनि खंभ भीति बिरंचि बिरचीकनकमनिमरकतखची॥
सुन्दर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिकरचे।
प्रतिद्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खचे॥
दो॰ चारु चित्रसाला रुचिर प्रति गृह लिखे बनाइ।
रामचरित जे निरख मुनि ते मन लेहिं चोराइ ॥२७॥
सुमनवाटिका सबहिं लगाईं • बिबिध भाँति करि जतन बनाईं

लता बिबिध बहु भाँति सुहाई * फूलहिं सदा बसंत कि नाई
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर * मारुत त्रिबिध सदा बह सुंदर
नाना खग बालकन्हि जिआये * बोलत मधुर उड़ात सुहाये
मोर हंस सारस पारावत * भवननि पर सोभा अति पावत
जहँ तहँ देखहिं निज परछाहीं * बहु बिधि कूजहिं नृत्य कराहीं
सुक सारिका पढ़ावहिं बालक * कहहु राम रघुपति जनपालक
राजदुआर सकल बिधि चारू * बीथी चौहट रुचिर बजारू

छं० बाजार रुचिर न बनइ बरनत बस्तु बिनु गथ पाइये।
जहँ भूप रमानिवास तहँ की संपदा किमि गाइये ॥
बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहु कुबेर ते।
सब सुखी सब सच्चरित सुंदरनारि नर सिसु जरठ जे॥

दो० उत्तर दिसि सरजू बहइ निर्मल जल गंभीर।
बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर ॥ २८ ॥

दूरि फराक रुचिर सो घाटा * जहँ जल पियहिं बाजिगज-ठाटा
पनिघट परम मनोहर नाना * तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना
राजघाट सब बिधि सुंदर बर * मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर
तीर तीर देवन्ह के मन्दिर * चहुँदिसि तिन्हके उपबनसुंदर
कहुँ कहुँ सरितातीर उदासी * बसहिं ग्यानरत मुनि सँन्यासी
तीर तीर तुलसिका सुहाई * बृंद बृंद बहु मुनिन्ह लगाई
पुर-सोभा कछु बरनि न जाई * बाहिर नगर परम रुचिराई
देखत पुरी अखिल अघ भागा * बन उपबन बापिका तड़ागा

छं० बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं।
सोपान सुन्दर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं॥

बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं।
आराम रम्य पिकादि-खग-रवजनु पथिक हंकारहीं॥
दो० रमानाथ जहँ राजा सो पुर बरनि कि जाइ।
अनिमादिक-सुखसम्पदा रहीं अवध सब छाइ॥२१॥
जहँ तहँ नर रघुपतिगुन गावहिं • बैठि परसपर इहइ सिखावहिं
भजहु प्रनत - प्रतिपालक रामहिं • सोभा-सील-रूप-गुन - धामहिं
जलज बिलोचन स्यामल गातहिं • पलक नयन इव सेवक - त्रातहिं
धृत-सर-रुचिर-चाप - तूनीरहिं • संत-कंज-बन-रबि-रन धीरहिं
काल कराल ब्याल खगराजहिं • नमत राम अकाम ममता जहिं
लोभ-मोह-मृग जूथ - किरातहिं • मनसिजकरि हरिजनसुखदातहिं
संसयसोक-निबिड़-तम -भानुहिं • दनुज-गहन-घनदहन कृसानुहिं
जनक-सुता -समेत रघुबीरहिं • कस न भजहु भंजन भवभीरहिं
बहु-बासना-मसक- हिमरासिहिं • सदा एकरस अज अबिनासिहिं
मुनिरंजन भंजन महिभारहिं • तुलसिदास के प्रभुहिं उदारहिं
दो० एहिबिधिनगर-नारि-नर करहिं राम-गुन-गान।
सानुकूल सब पर रहहिं संतत कृपानिधान॥२२॥
जब तें राम प्रताप खगेसा • उदित भयउ अति प्रबलदिनेसा
पूरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका • बहुतेन्ह सुख बहुतेन्ह मनसोका
जिन्हहि सोक ते कहउँ बखानी • प्रथम अबिद्या निसा नसानी
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने • काम - क्रोध - कैरव सकुचाने
बिबिधकर्म गुन-काल सुभाऊ • ए चकोर सुख लहहिं न काऊ
मत्सर मान मोह मद चोरा • इन्हकर हुनर न कवनिहुँ ओरा
धरम तड़ाग ग्यान बिग्याना • ए पंकज बिकसे बिधि नाना

सम संतोष विराग विवेका * विगत सोक ए कोक अनेका
दो० यह प्रताप रवि जाके उर जब करइ प्रकास ।
पछिले बाढहिं प्रथम जे कहे ते पावहिं नास ॥ ३१ ॥
भ्रातन्ह सहित राम एक बारा * संग परम प्रिय पवन-कुमारा
सुंदर उपवन देखन गए * सब तरु कुसुमित पल्लव नए
जानि समय सनकादिक आए * तेजपुंज गुनसील सुहाए
ब्रह्मानंद सदा लयलीना * देखत बालक बहु कालीना
रूप धरे जनु चारिउ वेदा * समदरसी मुनि विगत विभेदा
आसा बसन ब्यसन यह तिन्हहीं * रघुपति-चरित होइ तहँ सुनहीं
तहाँ रहे सनकादि भवानी * जहँ घटसंभव मुनिवर ग्यानी
रामकथा मुनि बहु विधि बरनी * ग्यान-जोनि पावक जिमि अरनी
दो० देखि राम मुनि आवत हरषि दंडवत कीन्ह ।
स्वागत पूछि पीत पट प्रभु बैठन्ह कहँ दीन्ह ॥ ३२ ॥
कीन्ह दंडवत तीनिउँ भाई * सहित पवनसुत सुख अधिकाई
मुनि रघुपति छवि अतुल बिलोकी * भए मगन मन सके न रोकी
स्यामल गात सरोरुह लोचन * सुंदरता-मंदिर भव मोचन
एकटक रहे निमेष न लावहिं * प्रभु कर जोरे सीस नवावहिं
तिन्ह कै दसा देखि रघुबीरा * स्रवत नयन जल पुलक सरीरा
कर गहि प्रभु मुनिवर बैठारे * परम मनोहर बचन उचारे
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा * तुम्हरे दरस जाहिं अघ खीसा
बड़े भाग पाइब सत संगा * बिनहिं प्रयास होइ भवभंगा
दो० संतसंग अपवर्ग कर कामी भव कर पंथ ।
कहहिं संत कवि कोविद स्रुतिपुरान सदग्रंथ ॥ ३३ ॥

सुनि प्रभुबचन हरषि मुनिचारी * पुलकित तन अस्तुति अनुसारी
जय भगवंत अनंत अनामय * अनघ अनेक एक करुनामय
जय निर्गुन जय जय गुनसागर * सुख-मंदिर सुंदर अति नागर
जय इंदिरारमन जय भूधर * अनुपम अज अनादि सोभाकर
ज्ञाननिधान अमान मानप्रद * पावन सुजस पुरान बेद बद
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता-भंजन * नाम अनेक अनाम निरंजन
सर्ब सर्बगत सर्ब उरालय * बससि सदा हम कहँ परिपालय
द्वंद बिपति भवफंद बिभंजय * हृदिबसि राम काम-मद गंजय

दो॰ परमानन्द कृपायतन मन परिपूरन काम।
प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहिं श्रीराम ॥ २९ ॥

देहु भगति रघुपति अतिपावनि * त्रिबिध-ताप-भव-दापनसावनि
प्रनत-काम-सुरधेनु - कलपतरु * होइ प्रसन्न दीजइ प्रभु यह बरु
भव बारिधि कुंभज रघुनायक * सेवत-सुलभ सकल सुखदायक
मन-संभव दारुन दुख दारय * दीनबंधु समता बिस्तारय
आस त्रास - इरिषादि-निवारक * बिनय बिबेक -बिरति बिस्तारक
भूप-मौलि - मनि मंडन धरनी * देहि भगति संसृति - सरि तरनी
मुनि-मन-मानस हंस निरंतर * चरन-कमल बंदित अज - संकर
रघुकुल केतु सेतु श्रुतिरच्छक * काल-कर्म-सुभाव-गुन - भच्छक
तारन तरन हरन सब दूषन * तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूषन

दो॰ बार बार अस्तुति करि प्रेम सहित सिर नाइ।
ब्रह्म भवन सनकादि गे अति अभीष्ट बर पाइ॥३०॥

सनकादिक बिधिलोक सिधाये * भ्रातन्ह रामचरन सिर नाये
पूछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं * चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं

सुनी चहहिं प्रभुमुख कै बानी • जो सुनि होय सकल-भ्रम -हानी
अंतरजामी प्रभु सब जाना • बूझत कहहु काह हनुमाना
जोरि पानि कह तब हनुमंता • सुनहु दीनदयाल भगवंता
नाथ भरत कछु पूछन चहहीं • प्रस्न करत मन सकुचत अहहीं
तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ • भरतहिं मोहिं न कछु दुराऊ
सुनि प्रभुबचन भरत गहे चरना • सुनहु नाथ प्रनतारति हरना
दो• नाथ न मोहिं संदेह कछु सपनेहु सोक न मोह।
केवल कृपा तुम्हारिही कृपानंद - संदोह ॥३८॥
करउँ कृपानिधि एक ढिठाई • मैं सेवक तुम्ह जन सुखदाई
संतन कै महिमा रघुराई • बहु बिधि बेद पुरानन्हि गाई
श्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि बड़ाई • तिन्हपर प्रभुहि प्रीतिअधिकाई
सुना चहउँ प्रभु तिन्हकर लच्छन • कृपासिंधु गुन ग्यान बिचच्छन
संत असंत भेद बिलगाई • प्रनतपाल मोहिं कहहु बुझाई
संतन्ह के लच्छन सुनु भ्राता • अगनित स्रुतिपुरान बिख्याता
संत असंतन्ह कै असि करनी • जिमि कुठार चंदन आचरनी
काटइ परसु मलय सुनु भाई • निजगुन देइ सुगंध बसाई
दो• तातें सुर सीसन्ह चढ़त जगबल्लभ श्रीखंड।
अनल दाहि पीटत घनहिं परसुबदन यह दंड ॥३९॥
बिषय अलंपट सील - गुनाकर • परदुख दुख सुख सुख देखेपर
सम अभूतरिपु बिमद बिरागी • लोभामरष हरष भय त्यागी
कोमलचित दीनन्ह पर दाया • मनबचक्रम ममभगति अमाया
सबहि मानप्रद आपु अमानी • भरत प्रानसम मम ते प्रानी
बिगतकाम मम नामपरायन • सांति बिरति बिनती मुदितायन

सीतलता सरलता मइत्री * द्विजपद-प्रीति धरम जनयित्री
ये सब लच्छन बसहिं जासु उर * जानहु तात संत संतत फुर
समदम नियमनीति नहिं डोलहिं * परुष बचन कबहूँ नहिं बोलहिं
दो० निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पदकंज ।
ते सज्जन मम प्रान प्रिय गुनमंदिर सुखपुंज ॥ ३८ ॥
सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ * भूलेहु संगति करिय न काऊ
तिन्ह कर संग सदा दुखदाई * जिमि कपिलहि घालइ हरहाई
खलन्ह हृदय अतिताप बिसेखी * जरहिं सदा परसंपति देखी
जहँ कहुँ निंदा सुनहिं पराई * हरषहिं मनहुँ परी निधिपाई
काम-क्रोध-मद-लोभ परायन * निर्दय कपटी कुटिल मलायन
बयर अकारन सब काहू सों * जो कर हित अनहित ताहू सों
झूठइ लेना झूठइ देना * झूठइ भोजन झूठ चबेना
बोलहिं मधुरबचन जिमि मोरा * खाहिं महाअहि हृदय कठोरा
दो० परद्रोही परदार-रत पर धन पर-अपवाद ।
ते नर पाँवर पापमय देह धरे मनुजाद ॥ ३९ ॥
लोभइ ओढ़न लोभइ डासन * सिस्नोदर-पर जमपुर त्रासन
काहू के जौं सुनहिं बड़ाई * स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई
जब काहू के देखहिं बिपती * सुखी भये मानहुँ जगनृपती
स्वारथ-रत परिवार-बिरोधी * लंपट काम लोभ अति क्रोधी
मातु पिता गुरु बिप्र न मानहिं * आपु गये अरु घालहिं आनहिं
करहिं मोह बस द्रोह परावा * संत-संग हरि कथा न भावा
अवगुन सिंधु मंदमति कामी * बेद बिदूषक पर-धन-स्वामी
बिप्र-द्रोह पर-द्रोह बिसेसा * दंभ कपट जिय धरे सुबेसा

दो॰ ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेता नाहिं।
द्वापर कछुक बृन्द बहु होइहहिं कलिजुग माहिं॥१२॥

पर-हित सरिस धरम नहिं भाई • पर पीड़ा सम नहिं अधमाई
निरनय सकल पुरान बेदकर • कहेउ तात जानहिं कोबिद नर
नर सरीर धरि जे परपीरा • करहिं ते सहहिं महा-भव-भीरा
करहिं मोह-बस नर अघ नाना • स्वारथ-रत परलोक नसाना
कालरूप तिन्ह कहँ मैं भ्राता • सुभअरुअसुभकरम फल दाता
अस बिचारि जे परमसयाने • भजहिं मोहि संसृति दुख जाने
त्यागहिं कर्म सुभासुभ दायक • भजहिंमोहिंसुर-नर-मुनिनायक
संत असंतन के गुन भाखे • ते न परहिं भव जिन्हलखिराखे

दो॰ सुनहु तात मायाकृत गुन अरु दोष अनेक।
गुन यह उभय न देखिअहिं देखिअ सो अबिबेक॥१३॥

श्रीमुख बचन सुनत सब भाई • हरषे प्रेम न हृदय समाई
करहिं बिनय अति बारहिं बारा • हनूमान हिय हरष अपारा
पुनि रघुपति निज मंदिर गये • एहि बिधि चरितकरत नितनये
बार बार नारदमुनि आवहिं • चरित पुनीत राम के गावहिं
नितनव चरित देखि मुनि जाहीं • ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं
सुनि बिरंचि अतिसय सुखमानहिं • पुनिपुनि तातकरहु गुनगानहिं
सनकादिक नारदहि सराहहिं • जदपि ब्रह्मनिरत मुनि आहहिं
सुनि गुन गान समाधि बिसारी • सादर सुनहिं परम अधिकारी

दो॰ जीवन मुक्त ब्रह्म पर चरित सुनहिं तजि ध्यान।
जे हरिकथा न करहिं रति तिन्हके हिय पाषान॥१४॥

एक बार रघुनाथ बोलाये • गुर द्विज पुरबासी सब आये

बैठे सबहि अनुज मुनि सज्जन * बोले बचन भगत-भय-भंजन
सुनहु सकल पुरजन मम बानी * कहउँ न कछु ममता उर आनी
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई * सुनहु करहु जौं तुम्हहि सुहाई
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई * मम अनुसासन मानइ जोई
जौं अनीति कछु भाषउँ भाई * तौ मोहि बरजहु भय बिसराई
बड़े भाग मानुष-तन पावा * सुर-दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा
साधनधाम मोच्छ कर द्वारा * पाइ न जेहि परलोक सँवारा

दो० * सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ ॥ ४३ ॥

एहि तनकर फल बिषय न भाई * स्वरगउ स्वल्प अंत दुखदाई
नर-तन पाइ बिषय मन देहीं * पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं
ताहि कबहुँ भल कहइ न कोई * गुंजा ग्रहइ परस-मनि खोई
आकर चारि लच्छ चौरासी * जोनिभ्रमत यह जिव अबिनासी
फिरत सदा माया कर प्रेरा * काल कर्म सुभाव गुन घेरा
कबहुँक करि करुना नरदेही * देत ईस बिनु हेतु सनेही
नर-तनु भव-बारिधि कहँ बेरो * सनमुख मरुत अनुग्रह मेरो
करनधार सदगुर दृढ़ नावा * दुर्लभ साज सुलभ करि पावा

दो० * जो न तरइ भवसागर नर समाज अस पाइ ।
सो कृत निंदक मंदमति आतम-हन-गति जाइ ॥ ४४ ॥

जौं परलोक इहाँ सुख चहहू * सुनि मम बचन हृदय दृढ़ गहहू
सुलभ सुखद मारग यह भाई * भगति मोरि पुरान स्रुति गाई
ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका * साधन कठिन न मन कहँ टेका
करत कष्ट बहु पावइ कोऊ * भगतिहीन मोहि प्रिय नहिं सोऊ

भगति सुतंत्र सकल-सुख-खानी • बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी
पुन्यपुंज बिनु मिलहिं न संता • सतसंगति संसृति कर अंता
पुन्य एक जग महँ नहिं दूजा • मन क्रम बचन बिप्र-पद-पूजा
सानुकूल तेहि पर मुनि देवा • जो तजि कपटु करइ द्विज-सेवा

दो॰ अउरउ एक गुपुत मत सबहिं कहउँ कर जोरि।
संकर-भजन बिना नर भगति न पावइ मोरि ॥४५॥

कहहु भगति-पथ कवन प्रयासा • जोग न मख जप तप उपवासा
सरल सुभाव न मन कुटिलाई • जथालाभ संतोष सदाई
मोर दास कहाइ नर आसा • करइ त कहहु कहा बिस्वासा
बहुत कहउँ का कथा बढ़ाई • एहि आचरन बस्य मैं भाई
बयर न बिग्रह आस न त्रासा • सुखमय ताहि सदा सब आसा
अनारंभ अनिकेत अमानी • अनघ अरोष दच्छ बिग्यानी
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा • तृन-सम बिषय स्वर्ग अपबर्गा
भगति पच्छ हठ नहिं सठताई • दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई

दो॰ मम गुनग्राम नाम रत गत-ममता-मद-मोह।
ताकर सुख सोइ जानइ परानंद - संदोह ॥ ४६ ॥

सुनत सुधासम बचन राम के • गहे सबनि [illegible]

निज गृह गये सुआयसु पाई • बरनत प्रभु बतकही सुहाई
दो० उमा अवधवासी नर नारि कृतारथ रूप।
ब्रह्मसच्चिदानंद घन रघुनायक जहँ भूप ॥ ४७ ॥
एक बार वसिष्ठ मुनि आये • जहाँ राम सुखधाम सुहाये
अति आदर रघुनायक कीन्हा • पद पखारि चरनोदक लीन्हा
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी • कृपासिंधु बिनती कछु मोरी
देखि देखि आचरन तुम्हारा • होत मोह मम हृदय अपारा
महिमा अमित बेद नहिं जाना • मैं केहि भाँति कहउँ भगवाना
उपरोहिती कर्म अति मंदा • बेद पुरान सुमृति कर निंदा
जब न लेउँ मैं तब बिधि मोही • कहा लाभ आगे सुत तोही
परमातमा ब्रह्म नर - रूपा • होइहि रघुकुल भूषन भूपा
दो० तब मैं हृदय बिचारा जोग जग्य व्रत दान।
जाकहँ करिअ सो पाइहउँ धर्म न एहि सम आन॥४८॥
जप-तप नियम-जोग निजधर्मा • श्रुति-संभव नाना सुभ कर्मा
ग्यान दया दम तीरथ मज्जन • जहँ लगि धरम कहत श्रुतिसज्जन
आगम निगम पुरान अनेका • पढ़े सुने कर फल प्रभु एका
तव पद - पंकज प्रीति निरंतर • सब साधन कर यह फल सुंदर
छूटइ मल कि मलहि के धोये • घृत कि पाव कोउ बारि बिलोये
प्रेम भगति जल बिनु रघुराई • अभि-अंतर-मल कबहुँ न जाई
सोइ सर्बग्य तग्य सोइ पंडित • सोइ गुनगृह बिग्यान अखंडित
दच्छ सकल-लच्छन-जुत सोई • जाके पद सरोज रति होई
दो० नाथ एक बर माँगउँ राम कृपा करि देहु।
जनमजनमप्रभु-पद-कमलकबहुँ घटइजनिनेहु ॥४९॥

भगति सुतंत्र सकल-सुख-खानी • बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी
पुन्यपुंज बिनु मिलहिं न संता • सतसंगति संसृति कर अंता
पुन्य एक जग महँ नहिं दूजा • मन क्रम बचन बिप्र-पद-पूजा
सानुकूल तेहि पर मुनि देवा • जो तजि कपट करइ द्विज-सेवा
दो• औरउ एक गुपुत मत सबहि कहउँ कर जोरि।
संकर भजन बिना नर भगति न पावइ मोरि ॥४७॥
कहहु भगति-पथ कवन प्रयासा • जोग न मख जप तप उपवासा
सरल सुभाव न मन कुटिलाई • जथालाभ संतोष सदाई
मोर दास कहाइ नर आसा • करइ त कहहु कहा बिस्वासा
बहुत कहउँ का कथा बढ़ाई • एहि आचरन बस्य मैं भाई
बयर न बिग्रह आस न त्रासा • सुखमय ताहि सदा सब आसा
अनारंभ अनिकेत अमानी • अनघ अरोष दच्छ बिग्यानी
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा • तृन-सम बिषय स्वर्ग अपबर्गा
भगति पच्छ हठ नहिं सठताई • दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई
दो• मम गुनग्राम नाम रत गत-ममता-मद-मोह।
ताकर सुख सोइ जानइ परानंद - संदोह ॥४८॥
सुनत सुधासम बचन राम के • गहे सबनि पद कृपाधाम के
जननि जनक गुरु बंधु हमारे • कृपानिधान प्रान ते प्यारे
तनु धनु धाम राम हितकारी • सब बिधि तुम्ह प्रनतारतिहारी
असि सिख तुम्ह बिनु देइ न कोऊ • मातु पिता स्वारथ रत ओऊ
हेतु-रहित जग जुग उपकारी • तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी
स्वारथ-मीत सकल जग माहीं • सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं
सबके बचन प्रेम-रस साने • सुनि रघुनाथ हृदय हरषाने

निज गृह गये सुआयसु पाई • बरनत प्रभु बतकही सुहाई
दो० उमा अवधवासी नर नारि कृतारथ रूप।
ब्रह्मसच्चिदानंद घन रघुनायक जहँ भूप ॥ ४६ ॥
एक बार बसिष्ठ मुनि आये • जहाँ राम सुखधाम सुहाये
अति आदर रघुनायक कीन्हा • पद पखारि चरनोदक लीन्हा
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी • कृपासिंधु बिनती कछु मोरी
देखि देखि आचरन तुम्हारा • होत मोह मम हृदय अपारा
महिमा अमित वेद नहिं जाना • मैं केहि भाँति कहउँ भगवाना
उपरोहिती कर्म अति मंदा • वेद पुरान सुमृति कर निंदा
जब न लेउँ मैं तब बिधि मोही • कहा लाभ आगे सुत तोही
परमातमा ब्रह्म नर - रूपा • होइहि रघुकुल भूषन भूपा
दो० तब मैं हृदय बिचारा जोग जज्ञ व्रत दान।
जा कहँ करिय सो पाइहउँ धर्म न एहि सम आन ॥ ४७ ॥
जप-तप नियम जोग निजधर्मा • श्रुति-संभव नाना सुभ कर्मा
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन • जहँ लगि धरम कहत श्रुतिसज्जन
आगम निगम पुरान अनेका • पढ़े सुने कर फल प्रभु एका
तव पद - पंकज प्रीति निरंतर • सब साधन कर यह फल सुंदर
छूटइ मल कि मलहि के धोये • घृत कि पाव कोउ बारि बिलोये
प्रेम भगति जल बिनु रघुराई • अभि-अंतर-मल कबहुँ न जाई
सोइ सर्वज्ञ तज्ञ सोइ पंडित • सोइ गुनगृह बिज्ञान अखंडित
दच्छ सकल-लच्छन-जुत सोई • जाके पद सरोज रति होई
दो० नाथ एक बर माँगउँ राम कृपा करि देहु।
जनम जनम प्रभु-पद-कमल कबहुँ घटइ जनि नेहु

अस कहि मुनि वसिष्ठ गृह आये • कृपासिंधु के मन अति भाये
हनूमान भरतादिक भ्राता • संग लिये सेवक-सुख दाता
पुनि कृपालु पुर बाहर गये • गज रथ तुरग मँगावत भये
देखि कृपा करि सकल सराहे • दिये उचित जिन्ह जिन्ह जेइ चाहे
हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई • गये जहाँ शीतल अँवराई
भरत दीन्ह निज बसन डसाई • बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई
मारुत-सुत तब मारुत करई • पुलक वपुष लोचनजल भरई
हनूमान समान बड़ भागी • नहिं कोउ राम चरन अनुरागी
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई • बार बार प्रभु निजमुख गाई
दो॰ तेहि अवसर मुनि नारद आये करतल बीन ।
गावन लागे राम-कल-कीरति सदा नवीन ॥ ५१ ॥
मामवलोकय पंकज लोचन • कृपाविलोकनि सोच-विमोचन
नील-तामरस-स्याम काम-अरि • हृदय-कंज-मकरंद मधुप हरि
जातुधान-बरूथ बल भंजन • मुनि-सज्जन-रंजन अघ-गंजन
भूसुर ससि नव बृंद बलाहक • असरन-सरन दीन जन-गाहक
भुजबल विपुलभार महि खंडित • खर-दूषन-विराध-बध पंडित
रावनारि सुख रूप भूपबर • जय दसरथ-कुल-कुमुद-सुधाकर
सुजस पुरान विदित निगमागम • गावत सुर-मुनि-संत-समागम
कारुनीक-व्यलीक-मद - खंडन • सब विधि कुसल कोसलामंडन
कलिमल-मथन-नाम ममताहन • तुलसिदास प्रभुपाहि प्रनतजन
दो॰ प्रेमसहित मुनि नारद बरनि राम-गुन-ग्राम ।
सोभासिंधु हृदय धरि गये जहाँ विधिधाम ॥ ५२ ॥
गिरिजा सुनहु बिसद यह कथा • मैं सब कही मोरि मति जथा

रामचरित सत कोटि अपारा • श्रुति सारदा न बरनइ पारा
राम अनंत अनंत गुनानी • जनम कर्म अनंत नामानी
जलसीकर महिरज गनि जाहीं • रघुपति-चरित न बरनि सिराहीं
बिमल कथा हरि-पद-दायनी • भगति होइ सुनि अनपायनी
उमा कहेउँ सब कथा सुहाई • जो भुसुंडि खगपतिहिं सुनाई
कछुक रामगुन कहेउँ बखानी • अब का कहउँ सो कहहु भवानी
सुनि सुभकथा उमा हरषानी • बोली अति बिनीत मृदुबानी
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी • सुनेउँ रामगुन भव-भय-हारी

दो• तुम्हरी कृपा कृपायतन अब कृतकृत्य न मोह।
जानेउँ राम प्रताप प्रभु चिदानंद-संदोह ॥ ७४ ॥
नाथ तवानन ससि स्रवत कथा-सुधा रघुबीर।
स्रवनपुटन्हि मन पान करि नहिं अघात मति धीर ॥ ७५ ॥

रामचरित जे सुनत अघाहीं • रस बिसेष जाना तिन्ह नाहीं
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ • हरिगुन सुनहिं निरंतर तेऊ
भवसागर चह पार जो पावा • रामकथा ता कहँ दृढ़ नावा
बिषइन्ह कहँ पुनि हरिगुन-ग्रामा • स्रवन सुखद अरु मन अभिरामा
स्रवनवंत अस को जग माहीं • जाहि न रघुपति चरित सुहाहीं
ते जड़ जीव निजात्मक घाती • जिन्हहि न रघुपति-कथा सुहाती
हरि-चरित्र मानस तुम्ह गावा • सुनि मैं नाथ अमितसुख पावा
तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई • कागभुसुंडि गरुड़ प्रति गाई

दो• बिरति ग्यान बिग्यान दृढ़ रामचरन अति नेह।
बायसतन रघुपति भगति मोहि परम संदेह ॥ ७६ ॥

नरसहस्र महँ सुनहु पुरारी • कोउ एक होइ धर्म-व्रत धारी

जब रघुनाथ कीन्ह रन-क्रीडा • समुझत चरित होत मोहि ब्रीडा
इंद्रजीत कर आप बँधायो • तब नारद मुनि गरुड़ पठायो
बंधन काटि गयो उरगादा • उपजा हृदय प्रचंड बिषादा
प्रभु-बंधन समुझत बहु भाँती • करत बिचार उरग आराती
ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा • माया मोह - पार परमीसा
सो अवतार सुनेउँ जग माहीं • देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं

दो० भवबंधन ते छूटहिं नर जप जाकर नाम।
खर्ब निसाचर बाँधेउ नाग पास सोइ राम ॥५८॥

नाना भाँति मनहिं समुझावा • प्रगट न ज्ञान-हृदय भ्रम छावा
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई • भयउ मोह-बस तुम्हरिहि नाईं
ब्याकुल गयउ देवरिषि पाहीं • कहेसि जो संसय निज मन माहीं
सुनि नारदहि लागि अति दाया • सुनु खग प्रबल राम कै माया
जो ज्ञानिन्ह कर चित अपहरई • बरिआईं बिमोह मन करई
जेहि बहु बार नचावा मोही • सोइ ब्यापी बिहंग-पति तोही
महामोह उपजा उर तोरे • मिटिहि न बेगि कहे खग मोरे
चतुरानन पहिं जाहु खगेसा • सोइ करेहु जो होइ निदेसा

दो० अस कहि चले देवरिषि करत राम-गुन गान।
हरि-माया-बल बरनत पुनि पुनि परम सुजान ॥५९॥

तब खगपति बिरंचि पहिं गयऊ • निज संदेह सुनावत भयऊ
सुनि बिरंचि रामहि सिर नावा • समुझि प्रताप प्रेम उर छावा
मन महँ करइ बिचार बिधाता • माया-बस कबि कोबिद ज्ञाता
हरि-माया कर अमित प्रभावा • बिपुल बार जेहि मोहि नचावा
अग-जग-मय सबमय उपराजा • नहिं आचरज मोह खगराजा

तब मोहि बिधि गिरा सुहाई • जान महेस राम प्रभुताई
बैनतेय संकर पहिं जाहू • तात अनत पूछहु जनि काहू
तहँ होइहि तव संसय हानी • चलेउ बिहंग सुनत बिधि-बानी
दो॰ परमातुर बिहगपति आयउ तब मो पास।
जात रहेउँ कुबेर-गृह रहिहु उमा कैलास ॥ ८३ ॥
तेहिं मम पद सादर सिर नावा • पुनि आपन संदेह सुनावा
सुनि ताकरि बिनती मृदु बानी • प्रेम-सहित मैं कहेउँ भवानी
मिलेहु गरुड़ मारग महँ मोही • कवन भाँति समुझावउँ तोही
तबहिं होइ सब संसय भंगा • जब बहु काल करिअ सतसंगा
सुनिअ तहाँ हरि-कथा सुहाई • नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई
जेहि महँ आदि मध्य अवसाना • प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना
नित-हरि-कथा होति जहँ भाई • पठवउँ तहाँ सुनहु तुम्ह जाई
जाइहि सुनत सकल संदेहा • रामचरन होइहि अति नेहा
दो॰ बिनु सतसंग न हरि-कथा तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गये बिनु राम-पद होइ न दृढ़ अनुराग ॥ ८४ ॥
मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा • किये जोग जप ज्ञान बिरागा
उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला • तहँ रह काकभुसुंडि सुसीला
राम-भगति-पथ परम प्रबीना • ज्ञानी गुनगृह बहुकालीना
रामकथा सो कहइ निरंतर • सादर सुनहिं बिबिध बिहंगबर
जाइ सुनहु तहँ हरिगुन भूरी • होइहि मोह जनित दुख दूरी
मैं जब तेहि सब कहा बुझाई • चलेउ हरषि मम पद सिर नाई
ता तें उमा न मैं समुझावा • रघुपति कृपा मरम मैं पावा
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना • सो खोवइ चह कृपानिधाना

जब रघुनाथ कीन्हि रन-क्रीड़ा * समुझत चरित होत मोहि व्रीड़ा
इंद्रजीत कर आपु बँधायो * तब नारद मुनि गरुड़ पठायो
बंधन काटि गयो उरगादा * उपजा हृदय प्रचंड विषादा
प्रभु-बंधन समुझत बहु भाँती * करत विचार उरग आराती
व्यापक ब्रह्म विरज बागीसा * माया मोह - पार परमीसा
सो अवतार सुनेउँ जग माहीं * देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं

दो० भवबंधन ते छूटहिं नर जप जाकर नाम।
खर्ब निसाचर बाँधेउ नाग-पास सोइ राम ॥ ५८ ॥

नाना भाँति मनहि समुझावा * प्रगट न ज्ञान- हृदय भ्रम छावा
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई * भयउ मोह-बस तुम्हरिहि नाईं
व्याकुल गयउ देवरिषि पाहीं * कहेसि जो संसय निज मन माहीं
सुनि नारदहि लागि अति दाया * सुनु खग प्रबल राम कै माया
जो ज्ञानिन्हकर चित अपहरई * बरिआईं विमोह मन करई
जेहि बहु बार नचावा मोही * सोइ व्यापी विहंग-पति तोही
महामोह उपजा उर तोरे * मिटिहि न बेगि कहे खग मोरे
चतुरानन पहिं जाहु खगेसा * सोइ करेहु जो होइ निदेसा

दो० अस कहि चले देवरिषि करत राम-गुन गान।
हरि-माया-बल बरनत पुनि पुनि परम सुजान ॥ ५९ ॥

तब खगपति बिरंचि पहिं गयऊ * निज संदेह सुनावत भयऊ
सुनि बिरंचि रामहि सिर नावा * समुझि प्रताप प्रेम उर छावा
मन महँ करइ विचार विधाता * माया-बस कबि कोविद ज्ञाता
हरि-माया कर अमित प्रभावा * बिपुल बार जेहि मोहि नचावा
अग-जग-मय सब मम उपराजा * नहिं आचरज मोह खगराजा

तब सीखे बिधि गिरा सुहाई • जान महेस राम प्रभुताई
बैनतेय संकर पहिं जाहू • तात अनत पूछेहु जनि काहू
तहँ होइहि तव संसय हानी • चलेउ बिहंग सुनत बिधि-बानी

दो॰ परमातुर बिहगपति आयउ तब मो पास।
जात रहेउँ कुबेर-गृह रहिहु उमा कैलास ॥ ८१ ॥

तेहिं मम पद सादर सिर नावा • पुनि आपन संदेह सुनावा
सुनि ताकरि बिनती मृदु बानी • प्रेम-सहित मैं कहेउँ भवानी
मिलेउ गरुड़ मारग महँ मोही • कवन भाँति समुझावउँ तोही
तबहिं होइ सब संसय भंगा • जब बहु काल करिअ सतसंगा
सुनिअ तहाँ हरि कथा सुहाई • नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई
जेहि महँ आदि मध्य अवसाना • प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना
नित हरि-कथा होति जहँ भाई • पठवउँ तहाँ सुनहु तुम्ह जाई
जाइहि सुनत सकल संदेहा • रामचरन होइहि अति नेहा

दो॰ बिनु सतसंग न हरि-कथा तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गये बिनु राम-पद होइ न दृढ़ अनुराग ॥ ८२ ॥

मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा • किये जोग जप ज्ञान बिरागा
उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला • तहँ रह काकभुसुंडि सुसीला
राम-भगति पथ परम प्रबीना • ज्ञानी गुनगृह बहुकालीना
रामकथा सो कहइ निरंतर • सादर सुनहिं बिबिध बिहंगबर
जाइ सुनहु तहँ हरिगुन भूरी • होइहि मोह जनित दुख दूरी
मैं जब तेहि सब कहा बुझाई • चलेउ हरषि मम पद सिर नाई
ता तें उमा न मैं समुझावा • रघुपति कृपा मरम मैं पावा
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना • सो खोवै चह कृपानिधाना

जेहि बिधि मोह भयउ प्रभु मोही • सो सब कथा सुनावउँ तोही
राम कृपा-भाजन तुम्ह ताता • हरिगुन-प्रीति मोहि सुखदाता
ताते नहिं कछु तुम्हहि दुरावउँ • परम रहस्य मनोहर गावउँ
सुनहु राम कर सहज सुभाऊ • जन-अभिमान न राखहिं काऊ
संसृति - मूल सूल-प्रद नाना • सकल-सोक-दायक अभिमाना
ताते करहिं कृपानिधि दूरी • सेवक पर ममता अति भूरी
जिमि सिसु-तन ब्रन होइ गोसाईं • मातु चिराव कठिन की नाईं

दो॰ जदपि प्रथम दुख पावइ रोवइ बाल अधीर ।
ब्याधि-नास-हित जननी गनत न सो सिसुपीर ॥१०२॥
तिमि रघुपति निज दासकर हरहिं मान हितलागि ।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं कस न भजसि भ्रमत्यागि ॥१०३॥

रामकृपा आपनि जड़ताई • कहउँ खगेस सुनहु मन लाई
जब जब राम मनुज - तन धरहीं • भक्त- हेतु लीला बहु करहीं
तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ • बालचरित बिलोकि हरषाऊँ
जनम - महोत्सव देखउँ जाई • बरष पाँच तहँ रहउँ लोभाई
इष्टदेव मम बालक रामा • सोभा-बपुष कोटि-सत - कामा
निज-प्रभु-बदन निहारि निहारी • लोचन सुफल करउँ उरगारी
लघु बायस-बपु धरि हरि - संगा • देखउँ बाल चरित बहुरंगा

दो॰ लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं तहँ तहँ संग उड़ाउँ ।
जूठनि परइ अजिर महँ सोइ उठाइ करि खाउँ ॥१०४॥
एकबार अतिसय सब चरित किये रघुबीर ।
सुमिरत प्रभुलीला सोइ पुलकित भयउ सरीर ॥१०५॥

कहइ भुसुंडि सुनहु खगनायक • रामचरित सेवक- सुख - दायक

गृह मंदिर सुंदर सब भाँती * खचित कनकमनि नाना जाती
बरनि न जाइ रुचिर अँगनाई * जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई
बाल बिनोद करत रघुराई * बिचरत अजिर जननि-सुखदाई
मरकत मृदुल कलेवर स्यामा * अंग अंग प्रति छबि बहु कामा
नव-राजीव अरुन मृदु चरना * पदजरुचिर नखससिदुति हरना
ललित अंक कुलिसादिक चारी * नूपुर चारु मधुर - रव कारी
चारु पुरट-मनि रचित बनाई * कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई
दो॰ रेखा त्रय सुन्दर उदर नाभि रुचिर गँभीर ।
उर आयत भ्राजत बिबिध बालबिभूषनचीर ॥१०९॥
अरुन पानि नखकरज मनोहर * बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर
कंध बालकेहरि दर ग्रीवाँ * चारु चिबुक आनन छबिसींवाँ
कलबल बचन अधर अरुनारे * दुइ दुइ दसन बिसदबर बारे
ललित कपोल मनोहर नासा * सकलसुखद ससि-कर-समहाँसा
नील-कंज-लोचन भव मोचन * भ्राजत भाल तिलक गोरोचन
बिकट भृकुटि सम स्रवन सुहाये * कुंचित कच मेचक छबिछाये
पीत झीनि झिगुली तन सोही * किलकनि चितवनि भावति मोही
रूपरासि नृप अजिर - बिहारी * नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी
मोहिसनकरहिंबिबिधबिधिक्रीड़ा * बरनत मोहि होति अति ब्रीड़ा
किलकत मोहि धरन जब धावहिं * चलउँ भागि तब पूपदेखावहिं
दो॰ आवत निकट हँसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं ।
जाउँसमीप गहन पद फिरिफिरि चितइपराहिं ॥११०॥
प्राकृत सिसु इव लीला देखि भयउमोहि मोह ।
कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद - संदोह ॥१११॥

गयउँ तहाँ प्रभु मुख निरखि व्याकुल भयउँ बहोरि ॥ ११५ ॥
मूँदेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ • पुनि चितवत कोसलपुर गयऊँ
मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं • बिहँसत तुरत गयउँ मुख माहीं
उदर मौझ सुनु अंडज राया • देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया
अति बिचित्र तहँ लोक अनेका • रचना अधिक एक तें एका
कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा • अगनित उडुगन रबि रजनीसा
अगनित लोकपाल जम काला • अगनित भूधर भूमि बिसाला
सागर सरि सर बिपिन अपारा • नाना भाँति सृष्टि - बिस्तारा
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किंनर • चारि प्रकार जीव सचराचर
दो॰ जो नहिं देखा नहिं सुना जो मनहूँ न समाइ ।
सो सब अद्भुत देखेउँ बरनि कवन बिधि जाइ ॥ ११६ ॥
एक एक ब्रह्मांड महुँ रहेउँ बरष सत एक ।
एहि बिधि देखत फिरेउँ मैं अंडकटाह अनेक ॥ ११७ ॥
लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता • भिन्न बिष्नु सिव मनु दिसित्राता
नर गंधर्ब भूत बेताला • किंनर निसिचर पसु खग ब्याला
देव-दनुज -गन नाना जाती • सकल जीव तहँ आनहिं भाँती
महि सरि सागर सर गिरि नाना • सब प्रपंच तहँ आनइ आना
अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा • देखेउँ जिनिस अनेक अनूपा
अवधपुरी प्रतिभुवन निहारी • सरजू भिन्न भिन्न नर नारी
दसरथ कौसल्या सुनु ताता • बिबिध रूप भरतादिक भ्राता
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा • देखेउँ बाल बिनोद उदारा
दो॰ भिन्न भिन्न मैं दीख सब अति बिचित्र हरिजान ।
अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु राम न देखेउँ आन ॥ ११८ ॥

दो॰ मायासंभव भ्रम सब अब न ब्यापिहहिं तोहि।
जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुन गुनाकर मोहि॥१२६॥
मोहि भगत प्रिय संतत अस बिचारि सुनु काग।
काय बचन मन मम पद करेसु अचल अनुराग॥१२७॥

अब सुनु परमबिमल मम बानी • सत्य सुगम निगमादि बखानी
निज सिद्धांत सुनावउँ तोही • सुनि मन धरु सब तजि भजु मोही
मम माया संभव संसारा • जीव चराचर बिबिध प्रकारा
सब मम प्रिय सब मम उपजाये • सबतें अधिक मनुज मोहि भाये
तिन्हमहँ द्विज द्विजमहँ श्रुतिधारी • तिन्हमहँ निगम धर्म अनुसारी
तिन्हमहँ प्रियबिरक्त पुनिग्यानी • ग्यानिहुँ तें अतिप्रिय बिग्यानी
तिन्हतें पुनिमोहिप्रिय निजदासा • जेहि गति मोरि न दूसरि आसा
पुनिपुनि सत्य कहउँ तोहिपाहीं • मोहि सेवकसम प्रिय कोउ नाहीं
भगतिहीन बिरंचि किन होई • सब जीवन महँ अप्रिय सोई
भगतिवंत अतिनीचउ प्रानी • मोहि प्रानप्रिय असि ममबानी

दो॰ सुचि सुसील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग।
श्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग॥१२८॥

एक पिता के बिपुल कुमारा • होहिं पृथक गुन सील अचारा
कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता • कोउ धनवंत सूर कोउ दाता
कोउ सर्बग्य धर्मरत कोई • सब पर पितहि प्रीति सम होई
कोउ पितुभगत बचन मनकर्मा • सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा
सो सुत प्रिय पितु प्रान-समाना • जदपि सो सब भाँति अयाना
एहि बिधि जीव चराचर जेते • त्रिजग देव नर असुर समेते
अखिल बिस्व यह मम उपजाया • सब पर मोहि बराबरि दाया

तिन्ह महँ जौं परिहरि मद माया * भजइ मोहि मन बच अरु काया

दो० पुरुष नपुंसक नारि नर जीव चराचर कोइ ।
भगतिभाव भजि कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ ॥ १२४ ॥

सो० सत्य कहउँ खग तोहि सुचि सेवक मम प्रानप्रिय ।
अस बिचारि भजु मोहि परिहरि आस भरोस सब ॥ १२५ ॥

कबहूँ काल न ब्यापिहि तोही * सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही
प्रभु बचनामृत सुनि न अघाऊँ * तन पुलकित मन अति हरषाऊँ
सो सुख जानइ मन अरु काना * नहिं रसना पहिं जाइ बखाना
प्रभु सोभा सुख जानहिं नयना * कहि किमि सकहिं तिन्हहिं नहिं बयना
बहु बिधि मोहि प्रबोधि सुख देई * लगे करन सिसु कौतुक तेई
सजल नयन कछु मुख करि रूखा * चितइ मातु लागी अति भूखा
देखि मातु आतुर उठि धाई * कहि मृदु बचन लिये उर लाई
गोद राखि कराव पय - पाना * रघुबर-चरित ललित कर गाना

सो० जेहि सुख लागि पुरारि असुभ बेष-कृत सिव सुखद ।
अवधपुरी नरनारि तेहि सुख महँ संतत मगन ॥ १ ॥

सोइ सुख लवलेस जिन्ह बारक सपनेहु लहेउ ।
ते नहिं गनहिं खगेस ब्रह्मसुखहिं सज्जन सुमति ॥ २ ॥

मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला * देखेउँ बालबिनोद रसाला
रामप्रसाद भगति बर पायउँ * प्रभुपद बंदि निजाश्रम आयउँ
तब तें मोहि न ब्यापी माया * जब तें रघुनायक अपनाया
यह सब गुप्त चरित मैं गावा * हरिमाया जिमि मोहि नचावा
निज अनुभव अब कहउँ खगेसा * बिनु हरिभजन न जाहिं कलेसा
रामकृपा बिनु सुनु खगराई * जानि न जाइ राम - प्रभुताई

जानें बिनु न होइ परतीती • बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती
प्रीति बिना नहिं भगति दृढ़ाई • जिमि खगपति जल कै चिकनाई
सो• बिनु गुरु होइ कि ज्ञान ज्ञान कि होइ बिराग बिनु ।
गावहिं बेद पुरान सुख कि लहहिं हरिभगतिबिनु ॥८९॥
कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु ।
चलइ कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचिपचिमरिय ८
बिनु संतोष न काम नसाहीं • काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं
रामभजन बिनुमिटहिं कि कामा • थलबिहीन तरु कबहुँ कि जामा
बिनु बिज्ञान कि समता आवइ • को अवकास कि नभबिनु पावइ
श्रद्धा बिना धरम नहिं होई • बिनु महि गंध कि पावइ कोई
बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा • जल बिनु रस कि होइ संसारा
सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई • जिमि बिनु तेज न रूप गोसाँई
निजसुख बिनु मनहोइ कि थीरा • परस कि होइ बिहीन समीरा
कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा • बिनुहरिभजन न भव-भयनासा
दो• बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न राम ।
रामकृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिश्राम ॥९०॥
सो• अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल ।
भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुंदर सुखद ॥१॥
निज-मति-सरिस नाथ मैं गाया • प्रभु-प्रताप-महिमा खगराया
कहेउँ न कछु करियुगुति बिसेखी • यह सब मैं निज नयनन्हि देखी
महिमा नाम रूप गुनगाथा • सकल अमित अनंत रघुनाथा
निज २ मति मुनि हरिगुनगावहिं • निगम सेष सिव पार न पावहिं
तुम्हहि आदि खग मसक प्रजंता • नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता

तिमि रघुपति-महिमा अवगाहा ॥ तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा ॥
राम काम-सत-कोटि सुभग-तन ॥ दुर्गा कोटि-अमित अरिमर्दन ॥
सक्र कोटि-सत-सरिस बिलासा ॥ नभसत-कोटि अमित अवकासा ॥

दो॰ मरुत कोटि-सत बिपुल बल रबि सत-कोटि-प्रकास ।
ससिसतकोटिसो सीतलसमनसकल भव-त्रास ॥१२१॥
काल कोटि-सत-सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत ।
धूमकेतु सत-कोटि-सम दुराधरष भगवंत ॥१२२॥

प्रभु अगाध-सत-कोटि पताला ॥ समन कोटि-सत-सरिस कराला ॥
तीरथ अमित-कोटि-सम पावन ॥ नाम अखिल अघ-पुंज-नसावन ॥
हिमगिरि-कोटि अचल रघुबीरा ॥ सिंधु कोटि-सत-सम गंभीरा ॥
कामधेनु सत कोटि-समाना ॥ सकल-काम-दायक भगवाना ॥
सारद कोटि अमित-चतुराई ॥ बिधि-सत-कोटि-सृष्टि निपुनाई ॥
बिष्णु कोटि-सत पालन-कर्ता ॥ रुद्र कोटि-सत-सम संहर्ता ॥
धनद कोटि-सत-समधनवाना ॥ माया कोटि-प्रपंच-निधाना ॥
भार धरन सत-कोटि-अहीसा ॥ निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा ॥

छं॰ निरुपम न उपमा आन राम-समान राम निगम कहै ।
जिमि कोटि-सत-खद्योत-सम रबि कहत अति लघुता लहै ॥
एहि भाँति निज निज मति बिलास मुनीस हरिहि बखानहीं ।
प्रभु भाव-गाहक अति कृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं ॥

दो॰ राम अमित-गुन सागर, थाह कि पावइ कोइ ।
संतन्ह सन जस कछु सुनेउँ तुम्हहि सुनायउँ सोइ ॥१२३॥

सो॰ भाव-बस्य भगवान सुख-निधान करुना भवन ।
तजि ममता मद मान भजिय सदा सीतारमन ॥१२४॥

सुनि भुसुंडि के बचन सुहाये । हरषित खगपति पंख फुलाये ॥
नयन-नीर मन अति हरषाना । श्रीरघुपति-प्रताप उर आना ॥
पाछिल मोह समुझि पछिताना । ब्रह्म अनादि मनुज करि माना ॥
पुनि पुनि काग-चरन सिरनावा । जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ॥
गुरबिनु भवनिधि तरइ न कोई । जौं बिरंचि-संकर-सम होई ॥
संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता । दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता ॥
तव सरूप गारुडि रघुनायक । मोहि जियायउ जन-सुख-दायक ॥
तव प्रसाद मम मोह नसाना । राम-रहस्य अनूपम जाना ॥
दो० ताहि प्रसंसि बिबिधबिधि सीस नाइ कर जोरि ।
बचन बिनीत सप्रेम मृदु बोलेउ गरुड़ बहोरि ॥१२१॥
प्रभु अपने अबिबेक तें बूझउँ स्वामी तोहि ।
कृपासिंधु सादर कहहु जानि दास निज मोहि ॥१२२॥
तुम्ह सर्बग्य तग्य तमपारा । सुमति सुसील सरल आचारा ॥
ग्यान-बिरति-बिग्यान निवासा । रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा ॥
कारन कवन देह यह पाई । तात सकल मोहि कहहु बुझाई ॥
राम-चरित-सर सुंदर स्वामी । पायहु कहाँ कहहु नभगामी ॥
नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं । महाप्रलयहुँ नास तव नाहीं ॥
मुधा बचन नहिं ईस्वर कहई । सो मोरे मन संसय अहई ॥
अग-जग जीव नाग-नर देवा । नाथ सकल जग काल-कलेवा ॥
अंडकटाह अमित लयकारी । काल सदा दुरतिक्रम भारी ॥
सो० तुम्हहि न ब्यापत काल अति कराल कारन कवन ।
मोहि सो कहहु कृपाल ग्यानप्रभाउ कि जोग-बल ॥१२३॥
दो० प्रभु तव आस्रम आयउँ मोर मोह भ्रम भाग ।

कारन कवन सो नाथ सब कहहु सहित अनुराग॥११६॥

गरुड़ गिरा सुनि हरषेउ कागा। बोलेउ उमा सहित अनुरागा॥
धन्य धन्य तव मति उरगारी। प्रस्न तुम्हारि मोहि अति प्यारी॥
सुनि तव प्रस्न सप्रेम सुहाई। बहुत जनम कै सुधि मोहि आई॥
सब निज कथा कहउँ मैं गाई। तात सुनहु सादर मन लाई॥
जप तप मख सम दम ब्रत दाना। बिरति बिबेक जोग बिग्याना॥
सब कर फल रघुपति-पद प्रेमा। तेहि बिनु कोउ न पावइ छेमा॥
एहि तन रामभगति मैं पाई। तातें मोहि ममता अधिकाई॥
जेहि तें कछु निजस्वारथ होई। तेहि पर ममता कर सब कोई॥

सो॰ पन्नगारि असि नीति श्रुतिसंमत सज्जन कहहिं।
अति नीचहु सन प्रीति करिअ जानि निज-परमहित॥११७॥
पाट कीट तें होइ तेहि तें पाटंबर रुचिर।
कृमि पालइ सब कोइ परम अपावन प्रान-सम॥११८॥

स्वारथ साँच जीव कहँ एहा। मन-क्रम बचन राम-पद नेहा॥
सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा। जो तनु पाइ भजिअ रघुबीरा॥
राम बिमुख लहि बिधि-सम देही। कबि कोबिद न प्रसंसहिं तेही॥
राम-भगति एहि तन उर जामी। तातें मोहि परमप्रिय स्वामी॥
तजउँ न तनु निज इच्छा मरना। तनु बिनु बेद भजन नहिं बरना॥
प्रथम मोहँ मोहि बहुत बिगोवा। रामबिमुख सुख कबहुँ न सोवा॥
नाना जनम करम पुनि नाना। किये जोग जप मख तप दाना॥
कवन जोनि जनमेउँ जहँ नाहीं। मैं खगेस भ्रमि भ्रमि जग माहीं॥
देखेउँ करि सब करम गोसाईं। सुखी न भयउँ अबहिं की नाईं॥
सुधि मोहि नाथ जनम बहु केरी। सिवप्रसाद मति मोहँ न घेरी॥

ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं । उभय लोक निज हाथ नसावहिं ॥
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी । निराचार सठ बृषली स्वामी ॥
सूद्र करहिं जप तप ब्रत नाना । बैठि बरासन कहहिं पुराना ॥
सब नर कल्पित करहिं अचारा । जाइ न बरनि अनीति अपारा ॥

दो० भए बरन - संकर कलि भिन्नसेतु सब लोग ।
करहिं पाप दुख पावहिं भय रुज सोक बियोग ॥११९॥
श्रुतिसंमत हरि-भक्ति पथ संजुत बिरति बिबेक ।
तेहि न चलहिं नर मोहबस कल्पहिं पंथ अनेक ॥१२०॥

तोमर छंद

बहु दाम सँवारहिं धाम जती । बिषया हरि लीन्हि न रहि बिरती ॥
तपसी धनवंत दरिद्र गृही । कलि-कौतुक तात न जात कही ॥
कुलवंति निकारहिं नारि सती । गृह आनहिं चेरि निबेरि गती ॥
सुत मानहिं मातु पिता तब लौं । अबलानन दीख नहीं जब लौं ॥
ससुरारि पिआरि लगी जब तें । रिपु-रूप कुटुंब भए तब तें ॥
नृप पाप-परायन धर्म नहीं । करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं ॥
धनवंत कुलीन मलीन अपी । द्विज चिन्ह जनेउ उघार तपी ॥
नहिं मान पुरान न बेदहि जो । हरिसेवक संत सही कलि सो ॥
कबिबृंद उदार दुनी न सुनी । गुन-दूषक-ब्रात न कोपि गुनी ॥
कलि बारहिं बार दुकाल परै । बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै ॥

दो० सुनु खगेस कलि कपट हठ दंभ द्वेष पाषंड ।
मान मोह मारादि मद ब्यापि रहे ब्रह्मंड ॥१२१॥
तामस धर्म करहिं नर जप तप मख ब्रत दान ।
देव न बरषहिं धरनि पर बए न जामहिं धान ॥१२२॥

तोटक-छन्द

अबलाकच भूषन भूरि छुधा । धनहीन दुखी ममता बहुधा ॥
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म-रता । मतिथोरि कठोरि न कोमलता ॥
नर पीड़ितरोग न भोग कहीं । अभिमानबिरोध अकारनहीं ॥
लघु जीवन संवत पंचदसा । कलपांत न नास गुमान असा ॥
कलिकालबिहाल किये मनुजा । नहिं मानत क्वौ अनुजा तनुजा ॥
नहिं तोसबिचार न सीतलता । सब जाति कुजाति भये मंगता ॥
इरषा परुषाच्छर लोलुपता । भरि पूरि रही समता बिगता ॥
सब लोग बियोग बिसोक हये । बरनाश्रम धर्म अचार गये ॥
दम दान दया नहिं जानपनी । जड़ता पर-बंचनताऽति-घनी ॥
तन-पोषक नारि नरा सगरे । पर-निंदक जे जगमों बगरे ॥

दो० सुनु ब्यालारि कराल कलि मल अवगुन आगार ।
गुनउ बहुत कलिजुग कर बिनु प्रयास निस्तार १०८ ॥
कृतजुग त्रेता द्वापर पूजा मख अरु जोग ।
जो गति होइ सो कलि बिसै नाम ते पावहिं लोग १०९

कृतजुग सब जोगी बिग्यानी ● करि हरि ध्यान तरहिं भवप्रानी
त्रेता बिबिध जग्य नर करहीं ● प्रभुहिं समर्पि करम भव तरहीं
द्वापर करि रघुपति - पद-पूजा ● नर भव तरहिं उपाउ न दूजा
कलिजुग केवल हरि-गुन गाहा ● गावत नर पावहिं भव - थाहा
कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना ● एक अधार राम-गुन - गाना
सब भरोस तजि जो भज रामहिं ● प्रेम समेत गाव गुन-ग्रामहिं
सोइ भवतर कछु संसय नाहीं ● नाम - प्रताप प्रगट कलि माहीं
कलि कर एक पुनीत प्रतापा ● मानस पुन्य होहिं नहिं

दो० कलिजुग-सम जुग आन नहिं जौं नर कर-बिस्वास।
गाइ राम-गुन-गन बिमल भव तर बिनहिं प्रयास॥१२०॥
प्रगट चारि पद धर्म के कलि महँ एक प्रधान।
जेन केन बिधि दीन्हे दान करइ कल्यान॥१२१॥

नित जुग धर्म होहिं सब केरे • हृदय राम माया के प्रेरे
सुद्ध सत्व समता बिग्याना • कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना
सत्व बहुत रज कछु रति कर्मा • सब बिधि सुख त्रेता कर धर्मा
बहु रज स्वल्प सत्व कछु तामस • द्वापर - धर्म हरष भय मानस
तामस बहुत रजोगुन थोरा • कलि प्रभाव बिरोध चहुँ ओरा
बुध जुग-धर्म जानि मन माहीं • तजि अधर्म रति धर्म कराहीं
काल धर्म नहिं ब्यापहिं ताही • रघुपति चरन प्रीति-रति जेही
नटकृत कपट बिकट खगराया • नटसेवकहि न ब्यापइ माया

दो० हरि-माया-कृत दोष गुन बिनु हरि भजन न जाहिं।
भजिअ राम सब काम तजि अस बिचारि मन माहिं॥१२२॥
तेहि कलिकाल बरस बहु बसेउँ अवध बिहँगेस।
परेउ दुकाल बिपति-बस तब मैं गयउँ बिदेस॥१२३॥

गयउँ उजेनी सुनु उरगारी • दीन मलीन दरिद्र दुखारी
गये काल कछु संपति पाई • तहँ पुनि करउँ संभु - सेवकाई
बिप्र एक बैदिक सिव - पूजा • करइ सदा तेहि काज न दूजा
परमसाधु परमारथ - बिंदक • संभु-उपासक नहिं हरि-निंदक
तेहि सेवउँ मैं कपट - समेता • द्विजदयाल अतिनीति-निकेता
बाहिज नम्र देखि मोहि साँई • बिप्र पढ़ाव पुत्र की नाँई
संभु-मंत्र मोहि द्विजबर दीन्हा • सुभ उपदेस बिबिध बिधि कीन्हा

जपउँ मंत्र सिवमंदिर जाई • हृदय दंभ अहमिति अधिकाई।
दो० मैं खल मल-संकुल-मति नीच जाति बस-मोह।
हरिजन द्विज देखे जरउँ करउँ बिष्णुकर द्रोह॥१२४॥
सो० गुरु नित मोहि प्रबोध दुखित देखि आचरन मम।
मोहि उपजइ अति क्रोध दंभिहि नीति कि भावई॥१२॥
एक बार गुरु लीन्ह बोलाई • मोहि नीति बहु भाँति सिखाई
सिव सेवा कै सुत फल सोई • अबिरल-भगति राम-पद होई
रामहि भजहिं तात सिव धाता • नर पाँवर कै केतिक बाता
जासु चरन अज सिव अनुरागी • तासु द्रोह सुख चहसि अभागी
हर कहँ हरिसेवक गुरु कहेऊ • सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ
अधम जाति मैं बिद्या पाये • भयउँ यथा अहि दूध पिआये
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती • गुरु कर द्रोह करउँ दिन राती
अतिदयाल गुरु स्वल्प न क्रोधा • पुनिपुनि मोहि सिखाव सुबोधा
जेहि तें नीच बड़ाई पावा • सो प्रथमहिं हठि ताहि नसावा
धूम अनल-संभव सुनु भाई • तेहि बुझाव घन पदवी पाई
रज मग परी निरादर रहई • सब कर पग प्रहार नित सहई
मरुत उड़ाइ प्रथम तेहि भरई • नृपकिरीट पुनि नयनन्ह परई
सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा • बुध नहिं करहिं अधम कर संगा
कवि कोबिद गावहिं असि नीती • खलसनकलह न भल नहिं प्रीती
उदासीन नित रहिअ गोसाँई • खलपरिहरिअ स्वान की नाँई
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई • गुरु हित कहहिं न मोहि सुहाई
दो० एक बार हर-मंदिर जपत रहेउँ सिव-नाम।
गुरु आयउ अभिमान तें उठि नहिं कीन्ह प्रनाम १२६

दो०- सो दयाल नहिं कहेउ कछु उर न रोष लवलेस।
अति अघ गुर-अपमानता सहि नहिं सके महेस॥१२६॥

मंदिर माँझ भई नभ-बानी। रे हतभाग्य अग्य अभिमानी॥
जद्यपि तव गुर के नहिं क्रोधा। अति कृपाल चित सम्यक बोधा॥
तदपि साप सठ दैहउँ तोही। नीति-बिरोध सोहाइ न मोही॥
जौं नहिं दंड करौं खल तोरा। भ्रष्ट होइ श्रुति-मारग मोरा॥
जे सठ गुर सन इरिषा करहीं। रौरव नरक कोटि-जुग-परहीं॥
त्रिजग जोनि पुनि धरहिं सरीरा। अयुत जनम भरि पावहिं पीरा॥
बैठि रहेसि अजगर इव पापी। सर्प होहि खल मल मति ब्यापी॥
महा बिटप-कोटर महँ जाई। रहु अधमाधम अधगति पाई॥

दो०- हाहाकार कीन्ह गुर दारुन सुनि सिव साप।
कंपित मोहि बिलोकि अति उर उपजा परिताप॥१२७॥
करि दंडवत सप्रेम द्विज सिव सनमुख कर जोरि।
बिनय करत गदगद गिरा समुझि घोर गति मोरि॥१२८॥

भुजंगप्रयात छंद

नमामीशमीशान निर्वाणरूपम्।
विभुं व्यापक ब्रह्म वेदस्वरूपम्॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहम्।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयम्।
गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम्॥
करालं महाकालकालं कृपालम्।
गुणागार संसारपारं नतोऽहम्॥

तुषाराद्रिसङ्काशगौरं गभीरम् ।
मनो भूतकोटिप्रभा श्रीशरीरम् ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा ।
लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥
चलत्कुण्डलं शुभ्रनेत्रं विशालम् ।
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालम् ।
प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशम् ।
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिम् ।
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥
कलातीत कल्याणकल्पान्तकारी ।
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी ।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दम् ।
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ॥
न तावत्सुखं शान्तिसन्तापनाशम् ।
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजाम् ।
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ॥
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानम् ।

प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥

श्लो॰ रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

दो॰ सुनि बिनती सर्बग्य सिव देखि बिप्र-अनुराग ।
पुनि मंदिर नभ-बानी भइ द्विजबर बर माँग ॥१२९॥
जौं प्रसन्न प्रभु मो पर नाथ दीन पर नेहु ।
निज पद भगति देइ प्रभु पुनि दूसर बर देहु ॥१३०॥
तव मायाबस जीव जड़ संतत फिरइ भुलान ।
तेहि पर क्रोध न करिअ प्रभु कृपासिंधु भगवान ॥१३१॥
संकर दीनदयाल अब एहि पर होहु कृपाल ।
साप अनुग्रह होइ जेहि नाथ थोरेहीं काल ॥१३२॥

एहि कर होइ परम कल्याना • सोइ करहु अब कृपानिधाना
बिप्र गिरा सुनि पर हित-सानी • एवमस्तु इति भइ नभबानी
जदपि कीन्ह एहिं दारुन पापा • मैं पुनि दीन्हि कोप करि सापा
तदपि तुम्हारि साधुता देखी • करिहउँ एहि पर कृपा बिसेषी
छमासील जे पर - उपकारी • ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी
मोर साप द्विज ब्यर्थ न जाइहि • जन्म सहस अवसि यह पाइहि
जनमत मरत दुसह दुख होई • एहि स्वल्पउ नहिं ब्यापिहि सोई
कवनेउ जनम मिटिहि नहिं ग्याना • सुनहि सूद्र मम बचन प्रमाना
रघुपति -पुरी जनम तव भयऊ • पुनि तैं मम सेवाँ मन दयऊ
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरें • राम-भगति उपजिहि उर तोरें
सुनु मम बचन सत्य अब भाई • हरि-तोषन ब्रत द्विज -सेवकाई
अब जनि करहि बिप्र अपमाना • जानेहु संत अनंत समाना

इंद्र कुलिस मम सूल बिसाला • काल-दंड हरिचक्र कराला
जो इन्ह कर मारा नहिं मरई • बिप्र-द्रोह पावक सो जरई
अस बिबेक राखेहु मन माहीं • तुम्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं
अउरउ एक आसिषा मोरी • अप्रतिहत गति होइहि तोरी

दो॰ सुनि सिव-बचन हरषि गुरु एवमस्तु इति भाखि।
मोहि प्रबोधि गयउ गृह संभु-चरन उर राखि॥११२॥
प्रेरित काल बिंधिगिरि जाइ भयउँ मैं ब्याल।
पुनि प्रयास बिनु सो तनु तजेउँ गये कछु काल॥११३॥
जोइ तनु धरउँ तजउँ पुनि अनायास हरिजान।
जिमि नूतन पट पहिरइ नर परिहरइ पुरान॥११४॥
सिव राखी श्रुतिनीति अरु मैं नहिं पाव कलेस।
एहि बिधि धरेउँ बिबिधतनु ग्यान न गयउ खगेस॥११५॥

त्रिजग देव नर जो तनु धरऊँ • तहँ तहँ 'रामभजन' अनुसरऊँ
एक सूल मोहि बिसर न काऊ • गुरु कर कोमल सील सुभाऊ
चरमदेह मैं द्विज कै पाई • सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई
खेलउँ तहौं बालकन्ह मीला • करउँ सकल रघुनायक-लीला
प्रौढ़ भये मोहि पिता पढ़ावा • समुझउँ सुनउँ गुनउँ नहिं भावा
मन तें सकल बासना भागी • केवल रामचरन लय लागी
कहु खगेस अस कवन अभागी • खरी सेव सुरधेनुहि त्यागी
प्रेम-मगन मोहि कछु न सुहाई • हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाई
भये काल-बस जब पितु माता • मैं बन गयउँ भजन जन-त्राता
जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वर पावउँ • आस्रम जाइ जाइ सिर नावउँ
बूझउँ तिन्हहि राम-गुन-गाहा • कहहिं सुनउँ हरषित खगनाहा

भरि लोचन बिलोकि अवधेसा * तब सुनिहउँ निर्गुन उपदेसा
मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा * खंडि सगुन-मत अगुन निरूपा
तब मैं निर्गुन-मत करि दूरी * सगुन निरूपेउँ करि हठ भूरी
उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा * मुनि-तन भये क्रोध के चीन्हा
सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये * उपज क्रोध ज्ञानिहु के हिये
अति संघरषन करइ जो कोई * अनल प्रगट चंदन तें होई

दो॰ बारबार सकोप मुनि करइ निरूपन ज्ञान।
मैं अपने मन बैठि तब करउँ विविध अनुमान॥१११॥
क्रोध कि द्वैत-बुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अज्ञान।
माया-बस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस-समान॥११२॥

कबहुँ कि दुखसबकर हित ताके * तेहि कि दरिद्र परसमनि जाके
परद्रोही कि होइ निसंका * कामी पुनि कि रहइ अकलंका
बंसकि रह द्विज अनहित कीन्हे * कर्म कि होहिं स्वरूपहिं चीन्हे
काहू सुमति कि खलसँग जामी * सुभगति पाव कि परतिय-गामी
भवकि परहि परमातम-बिंदक * सुखीकि होहिं कबहुँ हरि-निंदक
राज कि रहइ नीति बिनु जाने * अघ कि रहइ हरिचरित बखाने
पावन जस कि पुन्य बिनु होई * बिनु अघ अजस कि पावइ कोई
लाभ कि कछु हरि भगति समाना * जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना
हानि कि जग एहिसम कछु भाई * भजिय न रामहिं नरतनु पाई
अघकि पिसुनता सम कछु आना * धर्म कि दया-सरिस हरिजाना
एहि बिधि अमित जुगति मन गुनऊँ * मुनि उपदेस न सादर सुनऊँ
पुनि पुनि सगुन-पच्छ मैं रोपा * तब मुनि बोले बचन सकोपा
मूढ़ परम सिख देउँ न मानसि * उत्तर प्रतिउत्तर बहु आनसि

सत्य-बचन बिस्वास न करही ॥ बायस इव सबही तें डरही
सठ स्वपच्छतव हृदय बिसाला ॥ सपदि होहु पच्छी चंडाला
लीन्ह स्राप मैं सीस चढ़ाई ॥ नहिं कछु भय न दीनता आई

दो० तुरत भयउँ मैं काग तब पुनि मुनिपद सिर नाइ ।
सुमिरि राम रघुबंस-मनि हरषित चलेउँ उड़ाइ ॥१॥
उमा जे राम-चरन-रत बिगत-काम-मद-क्रोध ।
निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि सन करहिं बिरोध ॥२॥

सुनु खगेस नहिं कछु रिषिदूषन ॥ उरप्रेरक रघुबंस बिभूषन
कृपासिंधु मुनि-मति करि भोरी ॥ लीन्ही प्रेम-परीछा मोरी
मनबच क्रममोहि निजजनजाना ॥ मुनि मति पुनि फेरी भगवाना
रिषि मम सहनसीलता देखी ॥ राम चरन बिस्वास बिसेषी
अति बिसमयपुनि पुनि पछिताई ॥ सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई
मम परितोष बिबिधबिधि कीन्हा ॥ हरषित राममंत्र तब दीन्हा
बालकरूप राम कर ध्याना ॥ कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना
सुंदर सुखद मोहि अति भावा ॥ सो प्रथमहिं मैं तुम्हहि सुनावा
मुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा ॥ राम चरित-मानस तब भाषा
सादर मोहि यह कथा सुनाई ॥ पुनि मोहि मुनि गिरा सुहाई
राम-चरित-सर गुप्त सुहावा ॥ संभु प्रसाद तात मैं पावा
तोहि निज भगत रामकर जानी ॥ तातें मैं सब कहेउँ बखानी
रामभगति जिन्हके उर नाहीं ॥ कबहुँ न तात कहिय तिन्ह पाहीं
मुनिमोहि बिबिध भाँतिसमुझावा ॥ मैं सप्रेम मुनिपद सिर नावा
निजकरकमल परसि मम सीसा ॥ हरषित आसिष दीन्हि मुनीसा
रामभगति अबिरल उर तोरे ॥ बसहु सदा प्रसाद अब मोरे

दो॰ सदा रामप्रिय होहु तुम्ह सुभ-गुन-भवन अमान।
काम-रूप इच्छा मरन ग्यान-बिराग-निधान ॥१०५॥
जेहिं आश्रम तुम्ह बसब पुनि सुमिरत श्री भगवंत।
ब्यापिहि तहँ न अबिद्या जोजन एक प्रजंत ॥१०६॥

काल कर्म गुन दोष सुभाऊ • कछु दुख तुम्हहि न ब्यापिहि काऊ
राम-रहस्य ललित बिधि नाना • गुप्त प्रगट इतिहास पुराना
बिनु स्रम तुम्ह जानब सब सोऊ • नित नव नेह राम - पद होऊ
जो इच्छा करिहहु मन माहीं • हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं
सुनि मुनि आसिष सुनु मति धीरा • ब्रह्म-गिरा भइ गगन गँभीरा
एवमस्तु तव बच मुनि ग्यानी • यह मम भगत करम मनबानी
सुनि नभ गिरा हरष मोहि भयऊ • प्रेम मगन सब संसय गयऊ
करि बिनती मुनि आयसु पाई • पद-सरोज पुनिपुनि सिर नाई
हरष-सहित एहि आस्रम आयउँ • प्रभु - प्रसाद दुर्लभ बर पायउँ
इहाँ बसत मोहि सुनु खग-ईसा • बीते कलप सात अरु बीसा
करउँ सदा रघुपति-गुन - गाना • सादर सुनहिं बिहंग सुजाना
जब जब अवधपुरी रघुबीरा • धरहिं भगत हित मनुज-सरीरा
तब तब जाइ रामपुर रहऊँ • सिसुलीला बिलोकि सुख लहऊँ
पुनि उर राखि राम सिसु-रूपा • निज आस्रम आवउँ खग-भूपा
कथा सकल मैं तुम्हहि सुनाई • काग देह जेहिं कारन पाई
कहेउँ तात सब प्रस्न तुम्हारी • राम-भगति महिमा अतिभारी

दो॰ तातें यह तन मोहि प्रिय भयउ राम-पद-नेह।
निज-प्रभु दरसन पायउँ गयउ सकल संदेह ॥१०७॥

मास पारायण २६ दिन

दो० भगतिपच्छ हठ करि रहेउँ दीन्हि महारिषि साप।
मुनि दुर्लभ बर पायउँ देखहु भजन प्रताप ॥१०८॥

जे असि भगति जानि परिहरहीं • केवल ग्यान हेतु स्रम करहीं
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी • खोजत आक फिरहिं पय लागी
सुनु खगेस हरिभगति बिहाई • जे सुख चाहहिं आन उपाई
ते सठ महासिंधु बिनु तरनी • पैरि पार चाहहिं जड़ करनी
सुनि भुसुंडि के बचन भवानी • बोलेउ गरुड़ हरषि मृदु बानी
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं • संसय-सोक-मोह-भ्रम नाहीं
सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा • तुम्हरी कृपा लहेउँ बिश्रामा
एक बात प्रभु पूछउँ तोही • कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही
कहहिं संत मुनि बेद पुराना • नहिं कछु दुर्लभ ग्यान समाना
सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाईं • नहिं आदरेहु भगति की नाईं
ग्यानहि भगतिहि-अंतर केता • सकल कहहु प्रभु कृपा-निकेता
सुनि उरगारि-बचन सुख माना • सादर बोलेउ काग सुजाना
भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा • उभय हरहिं भव-संभव खेदा
नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर • सावधान सोउ सुनु बिहंगबर
ग्यान बिराग जोग बिग्याना • ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती • अबला अबल सहज जड़ जाती

दो० पुरुष त्यागि सक नारिहि जो बिरक्त मति धीर।
न तु कामी जो बिषय बस बिमुख जो पद रघुबीर ॥१०९॥

सो० सो मुनि ग्याननिधान मृगनयनी-बिधु-मुख निरखि।
बिबस होहिं हरिजान नारि बिष्नु माया प्रगट ॥११०॥

इहाँ न पच्छपात कछु राखउँ • बेद पुरान-संत-मत भाषउँ

मोह न नारि-नारि के रूपा • पन्नगारि यह रीति अनूपा
माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ • नारि-बर्ग जानहिं सब कोऊ
पुनि रघुबीरहिं भगति पियारी • माया खलु नर्तकी बिचारी
भगतहिं सानुकूल रघुराया • तातें तेहिं डरपति अति माया
रामभगति निरुपम निरुपाधी • बसइ जासु उर सदा अबाधी
तेहि बिलोकि माया सकुचाई • करि न सकइ कछु निजप्रभुताई
अस बिचारि जे मुनि बिज्ञानी • जाँचहिं भगतिसकलसुख-खानी

दो॰ यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानइ कोइ।
जो जानइ रघुपति-कृपा सपनेहु मोह न होइ॥१८०॥
अउरउ ज्ञान भगति कर भेद सुनहु सुप्रबीन।
जो सुनि होइ रामपद प्रीति सदा अबिछीन॥१८१॥

सुनहु तात यह अकथ कहानी • समुझत बनइ न जाइ बखानी
ईस्वर-अंस जीव अबिनासी • चेतन अमल सहज सुखरासी
सो माया बस भयउ गोसाईं • बँधेउ कीर मरकट की नाईं
जड़ चेतनहिं ग्रंथि परि गई • जदपि मृषा छूटत कठिनई
तब तें जीव भयउ संसारी • छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी
श्रुति-पुरान बहु कहेउ उपाई • छूट न अधिक अधिक अरुझाई
जीव हृदय तम मोह बिसेखी • ग्रंथि छूटि किमि परइ न देखी
अस सञोग ईस जब करई • तबहुँ कदाचित सो निरुअरई
सात्विक स्रद्धा धेनु सुहाई • जौं हरिकृपा हृदय बसि आई
जप तप ब्रत जम नियम अपारा • जे श्रुति कह सुभ-धर्म अचारा
तेइ तृन हरित चरइ जब गाई • भाव बच्छ-सिसु पाइ पेन्हाई
नोइ निबृत्ति पात्र बिस्वासा • निर्मल मन अहीर निज दासा

कहेउँ ग्यान सिद्धांत बुझाई • सुनहु भगति-मनि कै प्रभुताई
रामभगति चिंतामनि सुंदर • बसइ गरुड़ जाके उर अंतर
परमप्रकास रूप दिन राती • नहिं कछु चहिअ दिआ घृत बाती
मोह दरिद्र निकट नहिं आवा • लोभ बात नहिं ताहि बुझावा
प्रबल अबिद्या-तम मिटि जाई • हारहिं सकल सलभ समुदाई
खल कामादि निकट नहिं जाहीं • बसइ भगति जाके उर माहीं
गरल सुधा सम अरि हित होई • तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई
ब्यापहिं मानस रोग न भारी • जिन्हके बस सब जीव दुखारी
राम-भगति-मनि उर बस जाके • दुख-लव-लेस न सपनेहुँ ताके
चतुर-सिरोमनि तेइ जग माहीं • जे मनि लागि सुजतन कराहीं
सो मनि जदपि प्रगट जग अहई • रामकृपा बिनु नहिं कोउ लहई
सुगम उपाइ पाइबे केरे • नर हतभाग्य देहिं भटभेरे
पावन पर्बत बेद पुराना • रामकथा रुचिराकर नाना
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी • ग्यान बिराग नयन उरगारी
भाव सहित खोजइ जो प्रानी • पाव भगति मनि सब-सुख-खानी
मोरे मन प्रभु अस बिस्वासा • राम तें अधिक राम कर दासा
राम सिंधु घन सज्जन धीरा • चंदन तरु हरि संत समीरा
सब कर फल हरिभगति सुहाई • सो बिनु संत न काहू पाई
अस बिचारि जोइ कर सतसंगा • रामभगति तेहि सुलभ बिहंगा

दो॰ ब्रह्म पयोनिधि मंदर ग्यान संत सुर आहिं।
कथासुधा मथि काढ़हिं भगति-मधुरता जाहिं ॥ १८९ ॥
बिरति चर्म असि ग्यान मद लोभ मोह रिपु मारि।
जय पाइअ सो हरिभगति देखु खगेस बिचारि ॥ १९० ॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ • जौं कृपाल मोहि ऊपर भाऊ
नाथ मोहि निज सेवक जानी • सप्त प्रस्न मम कहहु बखानी
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा • सब तें दुर्लभ कवन सरीरा
बड़ दुख कवन कवन सुख भारी • सो संछेपहिं कहहु बिचारी
संत असंत मरम तुम्ह जानहु • तिन्हकर सहज सुभाव बखानहु
कवनपुन्य श्रुति बिदित बिसाला • कहहु कवन अघ परम कराला
मानस रोग कहहु समुझाई • तुम्ह सर्बग्य कृपा अधिकाई
तात सुनहु सादर अति प्रीती • मैं संछेप कहउँ यह नीती
नरतन-सम नहिं कवनिउ देही • जीव चराचर जाचत तेही
नरक-स्वर्ग अपवर्ग-निसेनी • ग्यान-बिराग-भगति सुभ-देनी
सो तनुधरि हरिभजहिं न जे नर • होहिं बिषय रत मंद मंदतर
काँच किरिच बदले ते लेहीं • कर तें डारि परस-मनि देहीं
नहिं दरिद्र-समदुख जग माहीं • संत मिलनसम सुख कछु नाहीं
पर उपकार बचन मन काया • संत सहज सुभाउ खगराया
संतसहहिं दुख पर हित लागी • पर-दुख हेतु असंत अभागी
भूरज तरु-समसंत कृपाला • परहित नितसह बिपतिबिसाला
सनइवखल पर - बंधन करई • खाल कढ़ाइ बिपति सहि मरई
खल बिनु स्वारथ परअपकारी • अहि मूषक इव सुनु उरगारी
पर - संपदा बिनासि नसाहीं • जिमिससिहतिहिमउपलबिलाहीं
दुष्ट - उदय जग आरत हेतू • जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू
संत - उदय संतत सुखकारी • बिस्व-सुखद जिमि इंदु तमारी
परमधरम श्रुतिबिदित अहिंसा • पर निन्दा-सम अघ न गरीसा
हरि-गुर - निंदक दादुर होई • जनम सहस्र पाव तन सोई

द्विजनिंदक बहु नरक भोग करि • जग जनमइ बायस सरीर धरि
सुरस्रुति निंदक जे अभिमानी • रौरव नरक परहिं ते प्रानी
होहिं उलूक संत - निंदा - रत • मोहनिसा प्रिय ग्यान-भानु गत
सबकै निंदा जे जड़ करहीं • ते चमगादुर होइ अवतरहीं
सुनहु तात अब मानसरोगा • जिन्ह तें दुख पावहिं सब लोगा
मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला • तिन्ह तें पुनि उपजहिं बहु सूला
काम बात कफ लोभ अपारा • क्रोध पित्त नित छाती जारा
प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई • उपजइ सन्यपात दुखदाई
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना • ते सब सूल नाम को जाना
ममता दादु कंडु इरषाई • हरष बिषाद गरह बहुताई
परसुख देखि जरनि सोइ छई • कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई
अहंकार अति दुखद डमरुआ • दंभ कपट मद मान नेहरुआ
तृस्ना उदरबृद्धि अति भारी • त्रिबिध ईषना तरुन तिजारी
जुगबिधि ज्वर मत्सर अबिबेका • कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका

दो० एक ब्याधिबस नर मरहिं ए असाध्य बहु ब्याधि ।
पीड़हिं संतत जीव कहुँ सो किमि लहइ समाधि ॥१२१॥
नेम धर्म आचार तप ग्यान जग्य जप दान ।
भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं रोग जाहिं हरिजान ॥१२२॥

एहि बिधि सकल जीव जग रोगी • सोक हरष भय प्रीति बियोगी
मानस - रोग कछुक मैं गाए • हहिं सबके लखि बिरलेन्ह पाए
जाने तें छीजहिं कछु पापी • नास न पावहिं जन-परितापी
बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे • मुनिहु हृदय का नर बापुरे
राम कृपा नासहिं सब रोगा • जौं एहि भाँति बनइ संजोगा

सद्गुरु बैदबचन बिस्वासा • संजम यह न बिषय कै आसा
रघुपति-भगति सजीवनमूरी • अनूपान श्रद्धा मति पूरी
एहिबिधिभलेहिंसो रोग नसाहीं • नाहित जतन कोटि नहिं जाहीं
जानिअ तब मन बिरुजगोसाँई • जब उर बल बिराग अधिकाई
सुमति छुधा बाढ़इ नित नई • बिषय आस दुर्बलता गई
बिमल ज्ञानजल जब सो नहाई • तब रह राम-भगति उर छाई
सिवअजसुकसनकादिक नारद • जे मुनि ब्रह्म बिचार बिसारद
सब कर मत खगनायक एहा • करिअ राम पद-पंकज-नेहा
श्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं • रघुपति-भगति बिना सुख नाहीं
कमठ पीठि जामहिं बरु बारा • बंध्या-सुत बरु काहुहि मारा
फूलहीं नभ बरु बहुबिधि फूला • जीवन लह सुख हरि-प्रतिकूला
तृषा जाइ बरु मृग-जल-पाना • बरु जामहिं सस-सीस बिषाना
अंधकार बरु रबिहि नसावइ • राम-बिमुख न जीव सुख पावइ
हिम ते अनल प्रगट बरु होई • बिमुख राम सुख पाव न कोई

दो॰ बारि मथे घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल ।
बिनु हरिभजन न भव तरहिं यह सिद्धांत अपेल ॥१२२॥
मसकहि करइ बिरंचि प्रभु अजहि मसक तें हीन ।
अस बिचारि तजि संसय रामहिं भजहिं प्रबीन ॥१२२॥

नगस्वरूपिणी

विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते ॥

कहेउँ नाथ हरिचरित अनूपा • ब्यास समास स्वमति अनुरूपा
श्रुति-सिद्धांत इहइ उरगारी • राम भजिअ सब काम बिसारी

प्रभु रघुपति तजि सेइय काही ॥ मोसे सठ पर ममता जाही
तुम्ह बिज्ञान-रूप नहिं मोहा ॥ नाथ कीन्हि मोपर अति छोहा
पूछेहु राम-कथा अतिपावनि ॥ सुक-सनकादि-संभु-मन-भावनि
सतसंगति दुर्लभ संसारा ॥ निमिष दंड-भरि एकउ बारा
देखु गरुड़ निज हृदय बिचारी ॥ मैं रघुबीर, भजन-अधिकारी
सकुनाधम सब भाँति अपावन ॥ प्रभु मोहि कीन्ह बिदित जगपावन
दो० आजु धन्य मैं धन्य अति जद्यपि सब बिधि हीन।
सिव मन जानि राम मोहि संत-समागम दीन ॥१२३॥
नाथ जथामति भाषेउँ राखेउँ नहिं कछु गोइ।
चरितसिंधु रघुबीर के थाह कि पावइ कोइ ॥१२४॥
सुमिरि राम के गुनगन नाना ॥ पुनि पुनि हरष भुसुंडि सुजाना
महिमा निगम नेति करि गाई ॥ अतुलित बल प्रताप प्रभुताई
सिव अज-पूज्य चरन रघुराई ॥ मो पर कृपा परम मृदुलाई
अस सुभाउ कहुँ सुनउँ न देखउँ ॥ केहि खगेस रघुपति-सम लेखउँ
साधक, सिद्ध, बिमुक्त, उदासी ॥ कबि कोबिद, कृतग्य, संन्यासी
जोगी सूर सुतापस ग्यानी ॥ धर्म-निरत पंडित बिग्यानी
तरहिं न बिनु सेयें मम स्वामी ॥ राम नमामि नमामि नमामी
सरन गये मोसे अघ रासी ॥ होहिं सुद्ध नमामि अबिनासी
दो० जासु नाम भव-भेषज हरन घोर त्रय-सूल।
सो कृपाल मोहि तोहि पर सदा रहउ अनुकूल ॥१२५॥
सुनि भुसुंडि के बचन सुभ देखि राम-पद-नेह।
बोलेउ प्रेमसहित गिरा गरुड़ बिगत-संदेह ॥१२६॥
मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी ॥ सुनि रघुबीर-भगति-रस-सानी

राम-चरन नूतन रति भई * माया-जनित बिपति सब गई
मोह-जलधि बोहित तुम्ह भयऊ * मो कहँ नाथ बिबिध सुख दयऊ
मो पर होइ न प्रति उपकारा * बंदउँ तव पद बारहिं बारा
पूरन काम राम-अनुरागी * तुम्ह सम तात न कोउ बड़भागी
संत बिटप सरिता गिरि धरनी * परहित हेतु सबन्हि कै करनी
संत हृदय-नवनीत समाना * कहा कबिन्ह पै कहइ न जाना
निज परिताप द्रवइ नवनीता * परदुख द्रवहिं सुसंत पुनीता
जीवन जनम सुफल मम भयऊ * तव प्रसाद संसय सब गयऊ
जानेहु सदा मोहि निज किंकर * पुनि पुनि उमा कहइ बिहंगवर
दो० तासु चरन सिर नाइ करि प्रेम-सहित मति धीर।
गयउ गरुड़ बैकुंठ तब हृदय राखि रघुबीर ॥१२५॥
गिरिजा संत-समागम-सम न लाभ कछु आन।
बिनु हरि-कृपा न होइ सो गावहिं बेद पुरान ॥१२५॥
कहेउँ परमपुनीत इतिहासा * सुनत स्रवन छूटहिं भवपासा
प्रनत-कल्पतरु करुनापुंजा * उपजइ प्रीति राम-पद-कंजा
मन क्रम बचन-जनित अघ जाई * सुनहिं जे कथा स्रवन मन लाई
तीर्थाटन साधन समुदाई * जोग बिराग ग्यान निपुनाई
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना * संजम दम जप तप मख नाना
भूतदया द्विज-गुरु-सेवकाई * बिद्या बिनय बिबेक बड़ाई
जहँ लगि साधन बेद बखानी * सब कर फल हरिभगति भवानी
सो रघुनाथ-भगति श्रुति गाई * रामकृपा काहूँ एक पाई
दो० मुनिदुर्लभ हरिभगति नर पावहिं बिनहिं प्रयास।
जे यह कथा निरंतर सुनहिं मानि बिस्वास ॥१२६॥

सुंदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो।
सो एक राम अकाम-हित निर्बान-प्रद सम आन को॥
जाकी कृपा-लव-लेस ते मतिमंद तुलसी दास हूँ।
पायउ परम बिश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूँ॥

दो० मो सम दीन न दीनहित तुम्ह समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंस-मनि हरहु बिषम भवभीर॥१३०॥
कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम॥१३१॥

श्लोक

यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यै तु रामायणम्।
मत्वा तद्रघुनाथनाम निरतं स्वान्तस्तमः शान्तये
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम्॥१॥
पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये
ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः॥२॥

मास पारायण ३० दिन—नवाह्न-पारायण ९ दिन

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुष
विध्वंसने अविरलहरिभक्तिसम्पादनो नाम
सप्तमः सोपानः समाप्तः।
शुभमस्तु मंगलमस्तु

रामायण

लवकुशकाण्ड

दो॰ श्रीमुनिवर के सुनि वचन, देखि राम पद प्रीति ।
बृद्ध प्रसन्न बोले गरुड़, बाणी परम पुनीति ॥
सुरसरि सम पावन भयो, नाथ हृदय अब मोर ।
जन्म-जन्म छूटै नहीं, नाथ पदाम्बुज तोर ॥

सुने अखिल गुणगण प्रभु केरे * पूरे नाथ मनोरथ मेरे
तव प्रसाद वायस - कुलनाथा * हृदय बसहिं भवप्रभु गुणगाथा
मन सन्तोष न चित्त अघाहीं * यथा उदधि सरितासर नाहीं
पशु पक्षी जड़ जङ्गम जाती * पर अवसर शरण किमि भाँती
जे जन भवन बसहिं सुखधामा * लिये सह सादर श्रीरामा
तजि सब भवन गये सह देहा * यह मोहिं नाथ परम सन्देहा
भवप्रभु मोहि सम काहु तुम्हाई * पिता जानि मैं करी दिठाई
यह इतिहास पुनीत कृपाला * जिमि भक्त कीन्ह राममहिपाला
दो॰ अस कहि गदगद वचन मृदु, पुलकावली शरीर ।
सुनि सप्रेम हर्षे विहँग, वायस मति अति धीर ॥
धन्य धन्य तुम धनि खगराया * कीन्हीं अमित मोहिं पर दाया
रामकृपा तुम्हरे मन माहीं * संशय शोक मोह भ्रम नाहीं
अति प्रिय वचन रसाल तुम्हारे * लागत नाथ मोहिं अति प्यारे
अब प्रभुकथा विशद विस्तारी * सकल सुनावहुँ प्रभु हितकारी

तब मन प्रीति देखि जगराया • मिटे जनजन कोटिन्ह पाप
छन्न भय रामरहस्य अनूपा • चरित पुनीत अवधपुर भूपा
भक्त सहित अमल अविनाशी • रहित सकलकलिमल कर फाँसी
भव सदस नव रात कम भासी • कछ चरित रह पुर भय वासी
दो॰ निधिवर भवन सँवारि वर, राजत कल्पागार।
युगल नारि शोभा निरखि, लजित कोटि सतमार॥
पठय सचिव प्रभु प्रजा बुलावे • दशमुद सादर तिन कहँ लावे
मकर मास रवि पर्व सुहावा • विदा माँगि युगपद शिर नावा
ज्ञरांदेय धर्ममय साना • सकल सजायसु वाहन नाना
चतुरङ्गिनी अनी सब साजा • यहि विधि गमनकीन्ह रघुनाथ
बीच वास करि शिवपुर आये • सादर पुरिहि शोभ तिन्ह भाये
आइ सुरसरिहि कीन्ह प्रणामा • अभय अर्नठ पाप विनाशा
महिसुर द्रविड यती संन्यासी • पूजेउ कृपासिन्धु सुखरासी
दीन्ह दान कछु वरणि न जाई • धनद कुबेर सुरेश लजाई
दो॰ यहि विधि रहि प्रभु विपुल दिन, सुखी किये मुनिवृन्द।
आये पुनि निज नगर महँ, हर्षित करुणाकन्द॥
प्रतिदिन भवन अनन्द उछाहू • दान देहिं प्रतिदिन नरनाहू
दुःख अपथ शोक नहिं काहू • व्याप न कबहुँ सुना सगजाहू
सुनहिं महो तहँ वेद पुराना • दूसर धर्म न काहु आना
दिन दिन प्रीति देखि जगधामा • अमित अनन्द सकलपुर आना
शत सम्वत परिमाण हमारा • भये शोपकर राम सहारा
अश्वमेध मख करि सुहावन • गाय तरहिं भव दुःख भरावन
जानि निज आयुहि गत जिय जानी • विधि के वचन विलम्ब न ठानी

आय आइ हनुमान समीती • करी करी सब सुन्दर रीती
दो॰ अस बिचार उर राखिकर, कृपासिंधु मति धीर।
किये चरित नाना अमित, हरण शोक भवभीर॥
कही सुनी रघुपति प्रभुताई • जो पुराण ऋषि नारद गाई
रामचन्द्र महिमा अति पूरी • सो वर्णत कवि मन कदरूरी
मैं मतिमन्द कहौं किमि माँठी • लोटत काग कि हंस सुपंथी
सुनिय न प्रभुमिकहुँ भवकाना • पढ़हिं चतुर नर वेद पुराना
गावहिं प्रभुगुणगाण भयहारी • निन्दहिं अमरलोक नरनारी
आज्ञा मातु पिता गुरु करहीं • तप मख दान करहिं हरिभजहीं
प्रजा अनन्द राज्य प्रभु केरे • मानहु राज कुबेर घनेरे
रजत सब रनिवास अनन्दा • सुखी चकोर लखत सिसिचन्दा
दो॰ रघुवर राम विराम अति, सकल अवनि अघ भाग।
विचरहिं मुनि कानन निपुण, बसहिं सहित अनुराग॥
मही सुदर्शन कानन चारू • खग मृग एक सँग करहिं विहारू
बैर न सुनिय राम के राजा • मिलि विचरहिं मन सकल समाजा
नाना भव स्मृति समुदाई • सकहिं न गाइ राम प्रभुताई
सहस्र कोटि कोटि अहिईशा • अगणित चतुरानन गौरीशा
कहँ लगि जग कोविद कविराई • रामराज्य सुख नहि सक गाई
मसिहु आदि कज्जल गिरि पूरी • पात्र समुद्र मही भरि पूरी
कर ले लेखनी सुरतरु डारी • सप्तद्वीप महि पत्र विचारी
सुरपति हरिहर विधि अरु शेषा • सहस कल्पशत लिखैं विशेषा
सो॰ तदपि न पावहिं पार, राम राज कौतुक अमित।
सुनु मम चरित अपार, अस खगपति भाखे अभय॥

॥ मुनि मगन कृपानिधान पर के सम्प उर, रावत भये।
निधि स्वाम देखत जगतपति उठि जागि दास्य दुसहु भये॥
दो॰ बीती अवधि प्रमाण युग, कीन्ह विचार कृपाल।
एक सहस पितुराज को, भोगहुं मैं इहि काल॥
त्यागहुं जनकसुता बन माहीं॰ रखी श्रुतिपथ धर्म न जाहीं
फिर मन तुरत छीय पहँ आये॰ सादर बोले बचन सुहाये
निज छाया धरि यहाँ विनीता॰ रहहु जाइ निज धाम पुनीता
प्रभुपद वन्दि गई नभ सोई॰ जीव चराचर लखी न कोई
इहि सन प्रभु अस कहा बुझाई॰ मनभावत माँगहु बर गाई
नाथ साथ मुनिआश्रम विहाई॰ आयउँ तुव गृह मन सकुचाई
मुनि तिय भूषन बसन सुहाये॰ पहिराये प्रभु जो मन भाये
हँसि कह कृपानिकेत सकारे॰ पूजै मन अभिलाष तुम्हारे
दो॰ देखि प्रात अब जगतपति, जागे रमा निवास।
याचकगण, गायत मुदित, लखि मुख कमल प्रकास॥
भरत लखन रिपुदमन समेता॰ आये जहँ प्रभु कृपानिकेता
कीन्ह प्रणाम माथ महि लाई॰ बोले नहिं कछु श्रीरघुराई
बदन विलोकि सशंकित भ्राता॰ चकित देख वपुष कर राता
थर थर काँपहिं तीनों भाई,॰ जानि न जाइ चरित रघुराई
पुनि स्वास भरु कुसमय जानी,॰ बोले मृदु मनोहर बानी
सुनि लघु भाइ कहेउ रघुनाया॰ ले बन जाहु जानकिहि साथा
सुनि सहमि सुनि बचन कराला॰ भरेउ गात उपजी उर ज्वाला
हँसत कि सोच कहत रघुराई॰ असमंजस मन, दुख अधिकाई
दो॰ भरतादिक आशा विकल, मुख आवत नहिं बैन।

जोरि युगल कर शत्रुहन, भये नीर भरि नैन ॥
सुनि प्रभुबचन हृदय बिलखाना • जगतजननि सियसत अनुमाना
जगतपिता प्रभु सब उरबासी • जड़ चेतन मन अन्तरबासी
कारण कवन जानकी त्यागी • मन अस वचन परम अनुरागी
सुनि प्रभु पावन कर मुख बानी • परम प्रीतिमय करुणासानी
पङ्कजनयन नीर भरि आये • कहि प्रिय वचन अनुजसमुझाये
आयसु मम टरहिं जो ताता • रहइ न प्राण तात मम गाता
विधि इच्छा भावी बलवाना • तुम कहँ तात सर्व कल्याना
मम यह वचन पालु अनुभाई • प्रात जानकिहिं जाहु छिपाई
दो• भरत कहेउ युग जोरिकर, सुनि प्रभु वचन कठोर ।
सुनि बिनती सर्वज्ञ प्रभु, नाथ हमाहि अति थोर ॥
हंसवंश जग में विख्याता • दशरथ पिता कौशल्या माता
त्रिभुवनपति प्रभु सब जगजाना • गावहिं जाहि शेष श्रुति नाना
तस्य शक्ति तव प्रगट सुहाई • जापि न सकहिं वेद बखिराई
शोभाखानि जगत की माता • रहित अमल महतख्याता
जाया जेहि तिय पतिव्रत करहीं • सुमरि पिताम पापहुँ किमि करहीं
बिन अपराध कि जिये कृपाला • कभी कि रह बिनु पारिजमाला
जीवहिं रघुकुलमणि किमि सीता • ज्ञानवन्ति अति चतुर विनीता
सुनि करुणामय वचन सप्रीती • कह्यो भरत तुम सुन्दर नीती
दो• तदपि नृपहिं चाहिय सदा, राजनीति जन धर्म ।
वसुधा पालहिं शोच तजि, वचन प्रीति शुचिकर्म ॥
पूरब कथा सो अवध काऊ • पुन्यफलद यह पावन भवक
रघुबंशा नृप भये अनेका • एक पूर्व निपुण विवेका

स्वायम्भुवमनु रघु नृप जानी • सगर भगीरथ बिरद बखानी
दशरथ दीन्ह सदा तुम नीके • बचन न टारेउ लाखन जीके
तेहि कुल रावक सुनत कलंकू • तैं नीच तैं अधम मयंकू
छल सर्वस सकल अपहारी • मित्र कलह मद जनककुमारी
शिवि हरिहर छिबि देखि सुहाई • पावक प्रविसि अनट सब माई
जो सुर नर मुनि सपनेहुँ माहीं • पद पवित्र जग लखि हरषाहीं
दो॰ ते शठ रौरव नरक महँ, कोटि कल्प करि बास।
रहहिं कल्पशत रोगबश, भोगहिं नरक निवास॥
रिस रस देखि नयन करि तीखे • आयउ भरत लषणकर पीछे
छल सौमित्रि छाँडि हठ रोषू • जग भलकी कछी किन पोषू
तजि आशा प्रत्युत्तर करिही • मोहिं बिनसोच स ममरिमरिही
जनकसुता रथ तुरत चढ़ाई • गरुड़ समीप फिरहु पहुँचाई
अति गह्वर बन जहाँ न कोई • छाँडहु तात यतन कर सोई
फेरहु सुम मति बचन उदासा • मरण ठान कर चलेउ निरासा
सुभग विमान सीय बैठारी • भूषण पट बहु धरे सँमारी
अति अनन्द मन चली जानकी • अतिरामप्रिय करुणानिधानकी
दो॰ विपरय्य लषण निहारि कर, सोच विकल भइ जाय।
हृदय विचार न करि सकति, मति विशुन्याकुल व्यास॥
उतरि देवसरि यान सुहावा • देखत घन बन मन भय पावा
कारण अपर जानि भयभीता • बोली वचन मनोहर सीता
दीखत नहीं मुनिन कर धामा • जात कहाँ प्रभु मनुज सकामा
समगृग केहरि विषधर व्याला • करि बराह वृक भाल कराला
कोउ मुनिसिखत न आवत जाता • निकसत आप तात मम गाता

सीय विकल लखि मनरिपुहीरा॥ कहन लगे कर कीन्ह विषीरा
मूर्छित रघु ते भे विकराला॥ गिरत भूमि तब भाव समाला
सिय बिलोकि मनधीरज माना॥ तुषा बिना भय निकसत माना

दो॰ भरतसुता व्याकुल निरखि, प्राण कण्ठगत जानि।
तजन चहत तनु सोच सब, धिक धिक जीवन मानि॥

देखि लखन सिय मूर्च्छा धाई॥ गगनगिरा तब भई सुहाई
सुनु सौमित्रि जाहु सिय त्यागी॥ जनकपुत्रिका बिसरि सभागी
नभगिरा सुनि धीरज कीन्हा॥ हाय मोरि परिदक्षिण दीन्हा
लै रथ चरन बन्दि सिय फेरे॥ चले अवधपुर नाथ घनेरे
जागी सिया सकल दिशि देखा॥ नहिं रथ लखन नहीं कछु रेखा
सहि दुख प्रथम रहे रहे माना॥ पुनि सोच पहत न करनपयाना
करुणा करत विपिन अतिभारी॥ वाल्मीकि आये वनचारी
पुत्री वाल्मीकि कह मानी॥ चन आश्रम निजचारित पसानी

दो॰ मुनि पुत्री मैं जनक की, रामप्रिया जग जान।
त्यागन हेतु न जान कछु, विधि गति अति बलवान॥

देवर लखन गये पहुँचाई॥ तब सब हेतु लख्यो मुनिराई
सुनु सीता मिथिलापति मोरा॥ परम शिष्य मम भव पितु तोरा
चिन्ता जनि करसि कुमारी॥ मिलिहहिं तोहि शोच हितकारी
सादर पर्णकुटी सिय धानी॥ करिमज्जन पुनि सब गतिजानी
विविध भाँति मुनि धीरज दीन्हा॥ सिय तब सुरसरि मज्जन कीन्हा
सुमिरि राम मूरति उर राखी॥ दीने फल मुनि आश्रम माखी
मुनिवर कथा अनेक प्रसंगा॥ कहैं सुनैं सिय सब बिरंगा
ज्ञान अनेक प्रकार दृढाये॥ ईश्वर अवधपुरी अब जाये

छं॰ भेजेसो लक्ष्मण त्यागिसीतहिं विकलनिजआश्रमगये।
बहु भाँति रोवत मातु सम कह सीय दारुण दुख दये ॥
सुनिसहमि मूर्छितमातुवाणी विकल कपिमिमिमयिदये।
तिमि मातुविलपति आम व्याकुल कौशलहि दुखवशभये ॥
रोवति वदति बहु भाँति को कह विपति पड़ दारुण भये।
सुनि शोर रावर सहित लक्ष्मण राम निज मन्दिर गये ॥
निज आम धर्म समुझाय त्यहि सब भुले पट अम्बर भये।
इम जानि शुम सुत मान प्रभु जग भूलि भ्रम फंदनमये ॥
भये कृपा करि जगदीश रघुवर देहु भक्ति सुहावनी।
जेहि लोभ मुनि योगीश तापस परम भिविमल पावनी ॥
वर चहेउसोइ सोइ दियो मातुहिं कारुणिक रघुपति तबै।
मम शोधकर निज योग पावक सभा तनु सादर सबै ॥
दो॰ योग अगिनि तनु भस्म करि, सकल गई पतिधाम।
भरत शत्रुसूदन लखणं, शोक भवन मे राम ॥
विधिवत कर्म किये श्रुति गाये • प्रभु ते गुरु सादर करवाये
दीन दान पुनि कोटि प्रकारा • को अस कवि जग बरणै पारा
धेनु वसन हाटक मणि हीरा • जटि गजमोतिम कोटिक चीरा
पुनि परलोक हेतु धन धामा • दिये किये द्विज पूरण कामा
रही न चाह याचकन केरी • रह धनद पदवी जनु हेरी
वेद पढ़हिं द्विज देहिं असीशा • चिरजीवहु कोशलपुर ईशा
राम दान दे सब विधि तोषे • भये निवर्त काज करि चोखे
पूइ द्विज याचक सकल सिधाये • अमित प्रकार राम सुख पाये
दो॰ कछुक समय मध एक पुनि, अश्वमेध मग ठाम।
कसुर सकल सन्ताप हर, जगत परम सुखदाम ॥

आहु मुनि इ के आश्रम माहीं • सादर न्योत देहु सब काहीं
जहाँ राम पूछेउ गुरु देवा • आज्ञा देव करौं सोइ सेवा
प्रभु मन की गति मुनिवर जानी • बोले अति सनेह वर बानी
पठवहु दूत जनकपुर आजू • आवहिं जनक समेत समाजू
दो० सुनहु राम रघुवरमणि, न्योतिं सकल पुर जाति ।
वरुण कुबेरहिं इन्द्र यम, पुनि मुनिवर सब ज्ञाति ॥
गुरु समेत प्रभु भवनहिं आये • देखि समाज अमित सुख पाये
जनक नगर चर तुरत पठाये • देश देश के भूपति बुलाये
जाम्बवन्त सुग्रीव विभीषण • अंगदनील द्विविद कुशभूषण
आये सब जहँ राम कृपाला • वरुण कुबेर इन्द्र यम काला
चढ़ि विमान सुर नारि सिहाहीं • करहिं गान कल कंठ सुभाहीं
आये मुनिवर भूप घनेरे • देहिं कृपानिधि सुन्दर डेरे
शशि हर हरि विधि रविसनकादी • आये सुर जे परम अनादी
विश्वामित्र संग मुनि भारी • सहस साठ ऋषि इच्छाधारी
दो० पाराशर भृगु अंगिरा, नारद व्यास अगस्त्य ।
नाना पृथक मुनि सकल, देवल सहित पुलस्त्य ॥
मख मण्डप अति दीस सुहाये • नाना भाँति देखि सुख पाये
मिथिलापुर ते दूत पठाये • देखि नगरवासिन मन भाये
सरपाथ सब लपरि जमाई • अवध नगर सन पाती आई
सुनि विदेह सहसा उठि धाये • तनमन पुलकि नयन जल छाये
भयो नृपति मन आनँद जेता • कहि न सकै शारद अहि तेतो
शिविर भम नृप द्वारे आये • देखि दूत अतिशय सुख पाये
कहु-कुशल रघुपति सब भाई • पत्रि देय सब कुशल सुनाई

हृदय लाइ पुनि नयन लगाई • गद्गद कंठ न कछु कहि जाई
दो० नृप प्रेम तेहि समय जस, तस न कहहिं मति धीर।
तुलसी भयउ बधाइनस, जय जय शब्द गँभीर॥
कौशल प्रीति न हृदय समानी • घरघर भौसि कही हँसि बानी
नगर गाँव पुर मंगल साजे • अमित अपार बाजने बाजे
सचिव बोलि नृप पत्री दीन्ही • उठिकर जोरि बिनयकर लीन्ही
पढ़ी सचिव अति प्रेम अनन्दा • सुमिरि राम कौशलपुरचन्दा
घर घर खबरि व्याप भय माहीं • मंगल कलश साजि सब पाहीं
भयो अनंद न जाय बखाना • कीन्हीं बिबिध भाँति नृपदाना
धरि तन देव अमित नभवासी • आये भूप नगर सुखरासी
कहहिं बचन नृप के हितकारी • चली भवन सब काम बिसारी
दो० कहि कहि सुर सादर चले, पाहन रचे बनाय।
जोरियुगल कर मुकुटमणि, अस्तुति करहिं सुभाय॥
छं० सुमिरत चरण श्रीराम रघुकुलचन्द सीतानायकं।
श्रीसहित अनुज समेत सुस्थिर बसहु मम उर लायकं॥
अम्भोजनयन बिशाल भाल कृपालु दशरथनन्दनं।
शतकोटिमार उदार शोभा अतुल बल महिमंडनं॥
दो० पूजे बिबिध प्रकार नृप, सादर दूत हँकारि।
गुरुगृह गवनेउ मुकुटमणि, पाय पदारथ चारि॥
सकल कथा भीपाल सुनाई • शतानन्द आनन्द बधाई
चलहु नृपति मत देखहिं जाई • साजहु जाय सकल कटकाई
करि बिनती नृप मन्दिर आई • बाँचि पत्रिका सकल सुनाई
मार्कण्डेय सब सुनी बधाई • दिये दान महिदेव बुलाई

वामक सकल प्रयापक कीन्हें * सादर मोलि युगल कर लीन्हें
विलग विलग सब पूछहिं वामा * सुने राम के पूरब कामा
छं॰ सब काम पूरब राम के सुनि विपुल बाजन बाजहीं।
पुर द्वार घर रजबार रासे सैन्य भट सब साजहीं॥
दश सहस सिंधुर चढ़ि शत रथ वाजि बर्षेस माहिंवनै।
जगमगत बीन जराव रवि मखि देखि कवि कैसे भनै॥
चढ़ि शूर प्रबल अधीप भे असि चलत सब सादर भये।
सुखपाल परमविशाल युग चढ़ि गुरहिं लै आदर नये॥
महिडोल घसकत कमठ अहिपत देखि अमित विदेह को।
रघुभूपपद चर भमित बर्षहिं जगत अस कवि मूढ़ को॥
दो॰ चल्यो राव मुनिगणसहित, विपुल निशान बजाय।
प्रात तीसरे पहर सोइ, अवध नगर नियराय॥
पुर बाहर सरयू शुचि तीरा * वास दीन्ह हर्षित रघुवीरा
सौंपि अनुज कहँ राज समाजू * आये प्रभु जहँ नृपमणिराजू
मिलि पुनि नृपति तिलक बैठारे * गद्गद ह्वै मृदु वचन उचारे
बदन मयंक निरखि सब गाता * आनँद मगन न हृदय समाता
प्रभु विनीत सब करि सेवकाई * सचिव भरत पुनि लिये बुलाई
नृपसेवा सब भरत सँभारी * तब रघुपति अस कीन्ह खरारी
आय गुरहिं सादर शिर नाई * मन भावत आशिष तिन पाई
पुनि प्रभु सकल देवगुरु बन्दे * अभिमत आशिष पाय अनन्दे
दो॰ दस सहस मुनिवर सहित, आये प्रभु मखधाम।
बोले वचन विनीत गुरु, मंत्र सुनहु मम राम॥
धर्म सकल वेद बेद बखाने * संत पुराण लोक सब जाने

मारु शब्द सुनहिं भट गाजहिं • विपुलबाणमेदहुँ दिसी बाजहिं
निज प्रभु कहिं जब मोरी जानी • दरसि भिरे भट मन हठ ठानी
छं• हठ ठानि प्रबल प्रवीण भेमसि भिरे मतिरिपुमबलसे।
इक मधुपुर सराहि रोकहिं एक मुकन कर बसे॥
कर शक्ति तोमर सूल परसु कृपाणपूर चलावहीं।
कर परख गिर हति वीर पारहिं भूमि बान न प्रावहीं॥
मलगिरहिंपुनिउठिभिरहिं बरकहिं करहिं मायामतिघनी
प्रभुतनय सुस्वर वीर बांके हनहिं रिपु भिरधर घनी॥
देखहिं परस्पर युद्ध कौतुक सुमट एकहिं इक हनें।
सचि कोटि रथ सुर भाय नभ पथ सुमन बर्षाकरि भनें॥
दो• विचलत अनी बिलोकि निज, ब्रह्मासुर बरबंड।
संग तनय मार्तंग भट, दूसर केतु प्रचंड॥
मरिघत स्वेद सुबाहु बिराजा • भिरा मतंग हृदय जनु गाजा
पुष्पकेतु पर केतु प्रचारी • सकहिं सुसेन न मानहिं हारी
अनी समूह जानि निज भोरी • मम रथ गहि भिरे भोरी
विषम युद्ध लखि देव सकाने • दूसेउ सहज कहिं मुसकाने
मसि दिय कोप समरपति भयउ • राम प्रताप सुमिरि उर बरहू
पुष्पकेतु कर कोप अपारा • हम रिपुकेतु संग महि डारो
इहाँ सुबाहु मत गहि मारा • द्रव पद कटि संवनि भर भारा
छं• कहिं दारि करपद शीश आतुर सूप भार मतियतमये।
रविकर के अमवंत दूनों समर महि रावत भये॥
सुनि मरसडुगसुतविकलनिशिचरभूमिपरमूर्छितगिरो।
पुनिजागि सुत संभारिप्रभुकेसमर सन्मुख ह्वै भिरो॥

निसपति विकल दीखि भटमारी • धाये बहु कर शस्त्र सँभारी
कैटम नाम वीर बलवाना • मूर्छित लवणासुर सम माना
तीन सहस्र लिये रथ गाढ़े • धाय सुबाहु सम्मुखे ठाढ़े
कटक वचन कहि कोपेसि बाना • तिन काटे सुबाहु बलवाना
तब सिसियान शत्रु ले भाला • यूपकेतु के सन्मुख घाला
सो० मारेसि हृदय सँभारि, गिरे नृपत करुणायतन।
मूर्छित वीर पुकारि, रामचन्द्र चिनमयविग्रह॥
मूर्छित बंधु सुबाहु बिलोकी • भै रिस अमित रहै नहिं रोकी
कठिन चाप कर कोप अपारा • छाँड़ेउ तीनि सहस इक बारा
ताहि विकल करि मनुजसमीपा • आतुर आये निजकुल दीपा
लागो बाण तासु उरमाहीं • परयोअवनितजसुधि कछु नाहीं
तब शत्रु सर मारत कीन्हा • राम नाम धर ओषधि दीन्हा
उठि सुधि संग मनुज के संगा • लीन्ह बिहँसि धनुबाण निषंगा
धाय समरमहि सुभट अपारा • बाणते विपुल देव अरि मारा
मूर्छा गत कैटम बलवाना • रथ चढ़ाय तिहि सुरथ सिधाना
दो० कर उपाय रथ राखि तेहि, पठै भवन रणधीर।
आय समर गर्जत भयो, संग महा बलवीर॥
आया कैटम पुनि पर चाई • आयो कुमक संग निज भाई
रणवीर घेरि घत सकाई • रहेउ समर सुनहु नृपराई
आयउ धाय आनि बरजोरी • तासु समर बधि पूछेउ मोही
रावण रिपु लघु भ्राता आनू • तनय तासु बलरूप निधानू
कोटिन शत्रु समर हम मारे • बालक नृपति निरखि रिपु हारे
रिपुदल हनि करि डर अतितापू • अबी कहहु जनि हृदय बिलापू

मावत यम इन्द्रो, प्रभु ताही • गिरे भूमि भवनी रिपुघाती
मूर्छित देखि सम ते ताता • गिरसि सुवाहु क्रोध कर घाता
भवस गदा रथ सारथि संगा • पिसि महाबल रिपुदल गञ्ज
रथ विहीन व्याकुल मन माहीं • मूर्छित परमो अवनि सुधि नाहीं
पुनि उठि गर्जि सकोप मुरारी • मल सँभारि क्रोध करि भारी
वठे शत्रुदल मन अनुमाने • सादर सब हिय ते सनमाने
विस्मित विकल देव सब जाने • राम आप अति सादर तामे
दो॰ सुमिरि अवधपति चरणयुग, छाड़े युग नाराच।
परेउ अवनि तनु भिन्न ह्वै, व्याकुल विकल पिशाच॥
तासु मरण सुनि सब सुरयूथा • चढ़ि विमान नभ सकल वरूथा
बाजहिं दुंदुभि बर्षहिं फूला • आज नाथ बीते सब शूला
जयजय धुनि सब देव सुनावहीं • वेद मंत्र पढ़ि आशिष करहीं
पाशुपान पति दीन त्रिलोकी • कैसम पुनि रिपु सकयो न रोकी
करि किलकार गर्जि अति घोरा • शिखा एक है आयहु मोरा
शर शत शैल सुबाहु प्रचारी • लागी हृद भुजा गहि भारी
वदन पसारि ताहि हत ताता • देव सुबाहु अवस पर्यो भ्राता
देखि बन्धु पुनि अवध मथता • छोड़यो चाप सुबाहु तुरता
काटि शीश तिहिं भूमि गिरावा • सुनासीर आतुर चलि आवा
जोरि युगल कर अति अनुरागे • बोले वचन प्रेम रसपागे
हमहिं सहितसुर कीन्ह सनाथा • अस्तुति योग नाहिं हम ताक्
अस्तुति विनय शक्र पुनि कीन्ही • बार बार बहु आशिष दीन्ही
दो॰ देवन सहित सु देव गुरु, आये जहँ मख धाम
समाचार सादर सकल, कहे सवन के नाम॥

महिपरे पुनि कहु फिरे योधा वाय रिपुहन सो कहा।
मुनिबालकहति संग्राम सैन्यहिं वाजि ले रणमहँ रहा॥
सुनिकोपकरि अतिशत्रुहन तब सैन्य लै धावत भयो।
रणमाहिं गावत वीर बाँके कोपव्रति ज्वलित भयो॥

सो॰ सुन्मुनि बाल मराल, देखु भरत तब कोप मिल।
पूछि तुमहिं तेहि काल, करिहहिं अम्म सकल मनु॥

कौन नाम नृप किहि पुरवासी • फिरहु विपिन सँगवीय प्रकासी
बाँधेउ बाजि हेतु किहि लागी • लिख्यो पत्र मौंग्यो मय त्यागी
महि तव सत्रु बस पौरुष माहीं • छोड़हु पत्र बाजि गृह जाहीं
सुनि रिपुहन कहु गिरा बखाने • गहहु धनु मन करि मुसकाने
हमहिं प्रचारत नृप बल भारी • डरपहिं सिंह बाजते तारी
अस कहि धनुषबाण कर लीना • मुनिवर विनय चरण शिरदीना
मारेसि रथ सारथी तुरंगा • कोटिन बाण हने सब अंगा
करि मूर्च्छितनृप कटक सँहारा • लहिं माँस अति गीधकाग
दो॰ एकहि एक प्रचार कर, हने सकल रणशूर।
आये तब रघुवीर पहँ, कायर करनी चूर॥
पूँछेहु सकल मातुकुसनाथा • रिपु के सबल कहे गुणगाथा
मुनि बालक दोउ सेन सँहारा • रिपुहन आदि समर महँ वारा
रिपु बालक मुनि विकल सरारी • विकल होय पुनि कहेउ पुकारी
सरसप सम आउ दोउ माईं • मुनि बालक बाँध्यो बरियाई
मारहु जनि आनहु पुरमाहीं • ऋषिसुतवधनउचितमहिकाहीं
चल्यो शेष सँग सैन्य अपारा • आयउ तुरत समर जेहि मारा
हैं पर बीन आहु मुनि बालक • दिनकरवंश देवद्विजपालक

किया करि क्रोध विशिख सो छीने * मंत्र प्रेरि मुनिवर जो दीने
लोक रसातल भूतल माहीं * यह सर छुटे बचै कोउ नाहीं
कोहम भस्म भाम तेहि जानो * विष्णु महेश मम जेहि मानो
मारेसि ताकि शेष उर माहीं * परे भरतिहल सुधि कछु नाहीं
बची सैन्य सब भागि अपारा * कौशलपुर महँ आय पुकारा
जननी सकल युद्ध की करनी * सत्रुसद वीर परे जिमि धरनी
केहि विधि कटक सकल सहारा * निज लोचन हम नाथ निहारा
वयकिशोर दोउ बालक अनूपा * तव प्रतिबिंब मनहुँ सुरभूपा
काकपद शिर धरे मनाई * बालक वीर बरणि नहिं जाई

दो॰ भरत जोरि कर कह्यो तब, सपन अमित बिलखाय।
सीय त्याग फल दीनविधि, प्रभु कहि देखहु आय॥

अनुज समर महँ सुभ दियहारे * सम्भहु हय गज रथ मतवारे
रही सब रिपु देखहु जाई * बालक राघव के दुलदाई
सीय वचन सुनि भरत सजाने * बहुत भाँति रघुपति समझाने
जाम्बवंत कपिराज विभीषण * द्विविद मयंद नीलनल भूषण
प्रथम सखा सब लिये बुलाई * हनुमदादि अंगद समुदाई
रिपुहि मारिकै समर मगाई * तात अनुज दोउ आनहु जाई
भाय नाय सँग कटक विशाला * चले भरत उर उपजी ज्वाला
शोणित सरिता समर निलोकी * करयो वीर भरत रथ रोकी

दो॰ समर सीय दोउ वीरवर, भाय गये बलधाम।
देखि डरे कपि भालु सब, तब बोलेउ हनुमान॥

धन्य मातु पितु जेहि तुम जाये * पुरुष युगल घर जाहु सुहाये
समर विमुख मुनि भट बिलखाने * हनुमत प्रति बोले रिस साने

नहिं मन होय जासु पर मारई • रही न प्रीत जो रघु कदराई
भाषे वचन भरत सुनि श्रवना • सेतु सँभारि चाप धनु गमना
लखनप्राण कपि जासु सपूता • दीन्हि उपार प्रबल तरु जूता
एकहि बार सकल तिन मारा • सब काटहिं तिल सम करि डारा
त्रिपुरारि काटि निमिष एकमाहीं • यथा मनोरथ लख मिटि जाहीं
कर सन कोप चाप टंकारे • मारे वीर भूमि सब डारे

छं० परम भयहिं भंकरास जहँ तहँ गीध सब प्रमुदित भये।
तहँ प्रेत सिद्धसमाज मोदहु ब्याह प्रति मंगल ठये॥
तहँ डाकिनी मन मुदित बोलहिं शाकिनी शोणित भरी।
होड करन लेपहिं कालिका शिवगण करत क्रीडा खरी॥
भस्मावरी गावहिं गर लपटहिं पियत शोणित आतुरे।
गज लाल लेपहिं मूत शंकर प्रेत सगर चातुरे॥
वैताल वीर कराल करवर करी कर हुक कर धरे।
है भार रुधिर प्रवाह पूरत पाप करत हरे हरे॥

दो० विषम युद्ध होइ बहु करि, जीते कपि संग्राम।
आयउ पुनि तहँ नृप भरत, समर विधाता बाम॥

कपि भालुहिं नायक सब भागीं • शाखनाथ मन अति दुख पागीं
जाम्बवन्त कपिराज बुलाये • अंगद हनूमान सुन आये
तब मिलि सहित निशाचर राजा • करि मानहु दोउ बालसमाजा
पाव उठे कपि जासु भवानी • तिन कछु प्रभु महिमा नहिं जानी
बोले कृपा सुन बालिकुमारा • तुम पद विदित जान संसारा
मिलहिं शरभ जासु पर देखी • सकल शास्त्र जाने तुम पेखी
तो कस वेग समर महँ जाहू • त्यागहु सकल कलंक समाजू

धुनत क्रोध अंगद उर लागा ● गहि गिरि एक ताहि पर धावा
दो० धावत दीख बिसाल अति, तिलसम सर हति कीन ।
तस अंगद बस गर्व अति, तस फल रघुपति दीन ॥
तमकि ताहि कुश बाण चलावा ● अंगद शीश अकम्पा उड़ावा
धावत आनि पुहुमि कपि मारी ● मारे बाण अपारि अपारी
इत उत आन कतहुँ नहि पावै ● पवन भरै जिमि महि नहिं आवै
गय अकाश गय भूतल घोरा ● बोलेउ राघव भाग्य अस तोरा
रहेउ गर्व हम कहँ भगवाना ● अग जग नाथ न हम पहिचाना
बाँध बाण बेधेउ कपि दोऊ ● दीन जानि त्यागेउ हँसि सोऊ
गिरे भरत के सन्मुख जाई ● दशा देखि कपि दिशा भुलाई
मारुतसुत हनुमान कपीशा ● धाये तरुगिरि लै बहु कीशा
दो० हँसे कुँवर कुश देखि कपि, अनुजहिं कहेउ बुझाय ।
आज समर जितिहहुँ भरत, भालुकपिन बिलगाय ॥
अनुसुत समर कीन्ह अस करणी ● निगम शेष शारद नहिं बरणी
धरिव तासु लहु शैलकुमारी ● मारेहु समर सब कपि भारी
समर धीर दोउ भ्रात बिराजे ● बिरासे भालुकपिसन अतिसाजे
खैंचि धनुषगुण छाँडेउ सायक ● कपिपति आदि हने कपिनायक
मूर्छित सैन परी महि भारी ● नहिं कोउ कपिपायक जो भारी
देखि भरत सब सैन निपाती ● कोपि बाण मारेउ लव छाती
मूर्छित विकल परेउ महिमाहीं ● अति अचेत तनु की सुधि नाहीं
दुखित देखि कुश अमित रिसाना ● चाप चढ़ाय बाण सन्धाना
अभय अवत खैंचि धनु धीरा ● भरत हृदय मारेउ शत तीरा
भयो युद्ध तहँ बिबिध प्रकारा ● बीर बाँकुरे सुभट अपारा ।

पुनत मौच अंगद उर लाता • गहि गिरि एक तादि पर धावा
दो• बाघत शैल विशाल लखि, तिलसम शर हति कीन।
बस अंगद बल गर्व अति, तस कत रघुपति दीन ॥
तमकि ताहि कुश बाघ चलाता • अंगद नील मकरा दकाता
धावत जानि पुहुमि कपि मारी • मारे बाघ प्रचारि भारी
रावत आन कतहुँ नहि पवि • पवन गढ़ तिमि गहि मीं जावै
पच मकरा पय भूतल आता • बोलेउ शरच नाम अस तोरा
रहेउ गर्व हम कहँ भगवाना • भग भग नाम न हम पहिचाना
पाँच बाघ वेवेउ कपि दोऊ • दीन जानि त्यागेउ हँसि सोऊ
गिरे भरत के सन्मुख आई • दशा देखि कपि दिशा भुलाई
जाम्बवन्त हनुमान कपीशा • चले तरुगिरि ले बहु कीशा
दो• हँसे कुँवर कुश देखि कपि, अनुजहि कहेउ बुझाय।
आज समर जितिहहु भरत, भालुकपिन विलगाय ॥
अनुपम समर कीन्ह जस कथी • नियम शेष शारद गहि मथी
धरि धनु सत्रु शैलकुमारी • मारेहु समर शर कपि मारी
समर वीर दोउ भात विराजे • गिराल मालुकपिगन भगिजाजे
देखि धनुबाण छाँडेउ सायक • कपिपति आदि हने कपिनायक
मूर्च्छित सैन परी महि माहीं • नहिं कोउ कपिघायल जो नाहीं
देखि भरत सब सैन निपाती • कोपि बाघ मारेउ लव छाती
मूर्च्छित विफल परेउ महिमाहीं • असि अचेत तहु की सुधि नाहीं
दुखित देखि कुश अमित रिसाना• चाप चढ़ाय बाण संधाना
अवध भवत खैंचि धनु बीरा • भरत[1] हृदय
भयो युद्ध तहँ विविध प्रकारा • बीर

दो० समरभूमि सोये भरत, सबहिं बीच उर लाय ।
सुमिरि मातु गुरुचरणयुग, रहे अमर भय पाय ॥
आये लषन धेन पर भारी ॥ भरत सैन्य तिन सकल निहारी
शोणित सरिता देखि डराने ॥ हय गज बहे जात रथ याने
देखी सरित भयंकर भारी ॥ कठिन कराल सुनहु खरारी
बहुतक उछरि बूडि पुनि आई ॥ धर्म मनहु कच्छप की नाई
महातरंग बीर भर आहीं ॥ बालक पैर तीर लपटाहीं
फिरे दूत कोशलपुर आये ॥ समाचार सब राम सुनाये
खरखर वचन सुनत दुख पावा ॥ त्यागेउ मख निज कटक मँगावा
चले सकोप कृपालु उदारा ॥ आये जहँ प्रभु कटक सँहारा
मुनिवर बालक देखि सुहाये ॥ सिर नवाय प्रभु निकट बुलाये
दो० पूछेउ बाल बुलाय दोउ, कहहु मातु पितु नाम ।
केहि ग्राम निज कहहु सब कस जीतेहु संग्राम ॥
गहहु चरण अनि कहहु कहानी ॥ पूछहु नाम गाँव कहँ ज्ञानी
समर बात बहु भांति बड़ाई ॥ छाँडि छोभ मन कहहु सराई
वंश नाम बिनु पूछेहु ताता ॥ हमीं न माय मनोहर गाता
माता सीय जनक की जाता ॥ बाल्मीकि पाल्यो मुनि ताता
पितावंश नहिं जानहिं काहू ॥ लव-कुश नाम सुनहु रघुराजू
सुनि सब कथा राखि मन माहीं ॥ बाल बिलोकि वचन मन नाहीं
आवत सुभट समूह निहारे ॥ सरिहहिं सुगसन समर सुखारे
अस कहि अंगद नील उठावा ॥ जाम्बवन्त कपिपतिहिं बुलावा
छं० कपिराजअंगद जाम्बवानहिं बोलि निशिचरनाथहूँ ।
हनुमान द्विविद मयंद नीलहि सुभट जे अति साथहूँ ॥

करि रौस दोउ भिरे रिसाई • लछमन हने बीर बरिआई
कपिन कोप करि उर हत तेही • जिमिलग मशक चोट गज देही
हति दोनों कपि भूमि गिराये • जाम्बवन्त कपिपति पहँ आये
करि युद्ध कौटिक समर लराई • जीते सबै बहुत हम भाई
दो॰ ये बालक त्रिभुवन बली, जीत सके नहिं कोय।
चलहु आप कीजिय समर, अमर जगत नहिं कोय॥
आये महा बली भट मानी • तानि शरासन शर सधानी
परम तानि सब मारेउ सायक • मोहन शर गयो कपिनायक
जाय भाय कपि कोप बढ़ाई • महायुद्ध कुशा कीन्ह मचाई
निज बल भ्रातहि अवनिपछारा • दोउ कर चरण बाँधि बिकराला
हनुमन्तहि बाँधेउ पुनि जाई • राखेउ निकट परम बल भाई
रखवारी बाँधेउ सब बीरा • आय परयो रघुनायक तीरा
देखेउ रण पर श्रीपति सोये • फिरेउ बीर निज ताज बिगोये
सुभट अस्त्र पट भूषण नाना • चले परम धरि कै हनुमाना
छं॰ शुभ वस्त्र पट भूषण सुमकुट धनुष सँग हय पर चढ़े
सिय निकट आये आय दोउ सुत भेट भूषण ले मढ़े॥
पहिचानिकपिदोउ निरखि भूषणसहमिसियपरमदुखभरी।
इहि बीच मुनिवरसदन आये सियहिं अतिचिन्तितकरी॥
हनुमान आशुहि छोडि बेगहिं त्यागि बहु समुझायऊ।
रिपुदमन लछिमन सहित भरतहिं राम समर सुवायऊ॥
सुत कीन्ह कर्म कलंक कुलमहँ मोहिं विधि विधवाकरी।
कवि सोच चंदन अमर आनहु काठ पिय सँग अब जरी॥
सुनि धीर बालमिक पैह तब कुश सग लै सादर चले।

रघु देखि बालक चरित देखत विहँसि मन प्रमुदित भये ॥
रघु देखि हय पहिँचानि प्रभु कहँ जाय मुनि आगे भये।
उठि वेगु कोशलनाथ आरत समय तब आगे छुये ॥
सो॰ सुनि मुनिवर वर बैन आगे रघुपति भयहरन।
बिहँसि उचारे बैन लीन्हें हृदय लगाय मुनि ॥
प्रभुहिं देखि मुनि अति हर्षाने • बार बार निज भाग्य बखाने
जेहि विधि शेष सीय बन आनी • मुनिवर सों सब कथा बखानी
लवकुश कथा सकल मुनिभाखी • शिव विरंचि सूरज करि साखी
मिले तनय दोउ हृदय लगाई • सुधावर्षे सुर सैन्य जियाई
भरत आदि आगे सब भ्राता • लक्ष्मण चले जहाँ सिय माता
बहुरि राम लक्ष्मणहिं बुलाई • सुनहु तात अस बचन सुनाई
ऐसे बचन मानि मम भाई • सिय सन सपथ लेहु तुम जाई
लक्ष्मण आय शीश सियनावा • कुशल कही बहु विधि समुझावा
हरि इच्छा सियमन अस आवा • शेष सहस फणि आनि दिखावा
दो॰ अटित मणिमय सिंहासनमहिं, सादर सीय चढ़ाय।
भये अलोप पतालमहँ, महिमा किमि कहि जाय ॥
लक्ष्मण चकित देख सब ठाढ़े • नयन प्रवाह चले अति गाढ़े
सकल चरित सुनि कृपानिधाना • चलन हमार सीयमन जाना
तनय सहित निजपुर प्रभु आये • दान दीन शुभ यज्ञ कराये
जेहि जेहि विधिसुर भायसु दीने • कोटिकार्थिविधि सोइ प्रभु कीने
कोटिक धेनु धाम धन वरषी • दीन कृपानिधि सब को हरषी
भोजन विविध भाँति करवाये • विदा कीन्ह मुनिवृन्द बुलाये
जनकहिं पूजि विदा प्रभु कीना • सुत प्रभु पूजि पयोदक लीना

आये जनक गुरहि पहुँचाई • बैठे प्रभु महिदेव बुलाई
दो० अस आस पर बेनु चम पूछि पूजि द्विज पाप।
एक एक बिमन दई, हर्षित कौशलराय॥
गे सब मुनि सज्जन निज धामा • पायो अमित अमित सुख रामा
पुरवासी आये सब भारी • सुनहिं पुराण अनद सुखारी
जे जड़ चेतन जीव घनेरे • सचराचर कौशलपुर केरे
तिन सुख कहत सुनत सुरराया • करहिं बिनोद बिहार अमाया
इहि बिधि बिपुल काल प्रभु बितयऊ • निजपुर गमन सो अवसर भयऊ
बीती अवधि मम तब जानी • नारद मुनिसन कहा भवानी
निज पुर आवन करहिं खरारी • धर्मराज कहँ करहु तैयारी
बिनती बहु बिरंचि सब भाखी • चलेउ धर्म रघुपति उर राखी
दो० आयउ धर्म रघुबीर पुर, मुनिवर भेष बनाय।
तेजपुञ्ज सुन्दर तरुण, कटि मृग त्वचा सुहाय॥
द्वारपाल सरभस कहँ जानी • बोलेउ तापस अति मृदुबानी
तुरत रोष तब खबर जनाई • सुनत वचन आये रघुराई
मुनिहिं निरखि प्रभु कीन्ह प्रणामा • सादर उचित कहेउ श्रीरामा
आपुहिं दीन्ह आसन बैठारी • मुनिवर सुन्दर गिरा उचारी
सुनु सर्वज्ञ कृपालु बिसेरा • आयउँ मैं मुनिवर के भेषा
हम तुम रहें औ और ना कोई • तिसरे सुनत नाश तेहि होई
सुने राम तेहि देहुँ शरापू • बिधि हरि हर भाखी यो आपू
समहु लषण चलि बैठहु द्वारे • ना कोउ आव न, गिरा उचारे
हतमैव पर आवै पुनि कोई • मरहि सत्य यह मृषा न होई
दो० बोलेउ तापस बचन मृदु, नाहिं नाहिं रघुनाथ।

... कहा सकल इतिहास मुनि, कहि पुनि नायो माथ ॥
प्रभु इच्छा भावी बलवाना * दुर्वासा मुनि आय तुलाना
मुनिहि देखि लछमणपहि आगे * गये निकट बिनती अनुरागे
पूछेउ मुनि कहँ रघुकुलईसा * आउँ तहाँ मैं सुनहु मुनीसा
जो उत्तर प्रति करि ही धामू * भसम करौं तव घर पुर राजू
कँपेउ लखण सुनत मुनि बानी * निजबध जानसो कहेउ भवानी
दोउ कर जोर कहे प्रभु पाहीं * दुर्वासा मुनि आवन चाहीं
यह अपराध कीन्ह तुम भारी * काल कर्म गति टरै न टारी
कीन्ह गवन दिनकरकुलकेतू * सुनहु खगेसा कथा कर हेतू
दो० तुरत कहेउ मुनि आनहु, सादर कृपानिधान ।
लखहु वेगि मुनि तुरत अब, कहा राम भगवान ॥
छं० अतितेजपुंजविशालमुनिप्रमुदित उचितहठिआसनदियो ।
जल आनि सादर चरण धोये सुभग पादोदक लियो ॥
अब स्वामि मुनिवर देहु आयसु वेगि सो सादर करौं ।
बहु काल क्षुधितकृपायतनअपअशनबिन मूओ मरौं ॥
मनभाव भोजन दीन रघुपति बहुत बिधि बिनती करी ।
संतोष पाय मुनीश अस्तुति करि बिनय आशिष भरी ॥
करि बिदा मुनिवर देखि लछमण हृदय दारुणदुखमये ।
भरतादि अनुज समेत पुरजन् ताहि छिन बेहाल भये ॥
पद बंदि ठाढ़े जोरि दोउ कर बदन लखि अति कंपही ।
भरि नयन पंकज नीर आरत भरत सन प्रभु सन कही ॥
अब गुरुहिं आनहु वेगि सादर दुखित अति आतुर गये ।
सब कथा गुरुहिं सुनाय आतुर राम प्रति आवत भये ॥ 7

आये वशिष्ठ विलोकि रघुपति विकल उठि चरणन परे।
सवाद सुनि मुनि समय जान्यो त्यागि हैं हमको हरे॥
सुनिवचन शेष विचार निश्चय रामबिन धिक जीवना।
गहि चरण सरयू तीर आये देखि जल शुभ पीवना॥

दो॰ करि प्रणाम मन मध्य में कीनो ध्यान अखंड।
योग यत्नकरि राम कहि फोरयो निज ब्रह्मांड॥
राम धाम पहुँचे तुरत लषण चतुर्थम भाग।
सुनि व्याकुल रघुपति भरत मिटेउ सकल अनुराग॥

मैं नहिं तज्यो तज्यो मोहि ताता • धन कर यश सो देखहु भ्राता
करहु भरत पुरजन सुखारी • सुनत गिरेउ महि व्याकुल भारी
वचन भरत अब भाय सुनाई • प्रभु तुम्हबिन रहि न सकाई
तब भरतहु करि तनय बुलाये • कीन्ह तिलक बहु नीति सिखाये
भरततनय सुतक्ष हैं नामा • दक्षिण नगर दीन्ह तेहि रामा
दूसर पुष्कल जेहि जग जाना • पुष्कर नगर दीन्ह भगवाना
चित्रकेतु अंगद रणधीरा • लक्ष्मणतनय सुभट गंभीरा

दो॰ पश्चिमदिशा पिशाच बहु, जीति हते संग्राम।
तहँ राखे सुत सरिस दोउ, विलग विलग करि भाम॥

अवध नृपति कुश कीन्ह बहोरी • शिक्षयनीति पुनि कह्यो निहोरी
भ्रातन पर सुत दया करेहू • राजनीति उर भीतर धरेहू
उत्तर नगर सुठर दूरी • सुख सम्पदा जहाँ अति रूरी
लव कहँ दीन्ह कृपानिधि सोई • यहि तरि अवध नगर नहिं कोई
आठ सहस्र व तुरँग पचासा • दश सहस्र गजमत्त विलासा
लखहिं इन्द्रगज जिनहिं विलोकी • दिगपालन मिस प्रभुता रोकी

दो॰ चिरंजीव सुत रहहु तुम, जब लगि रवि शशि शेष।
तुम्हहिं सेवत मिटिहहिं सकल, दुस्तर कठिन कलेश॥

भ्रातृगमन पहँ धर्म सिखाये • सरयू तीर जगतपति आये
पहले देव अज भव सनकादी • जो मुनि परम अलौकिक अनादी
कोटिन रथ वाहन विविनाना • भरय अकाश न जाय बखाना
नभ पर जय जय जय धुनि होई • पावहिं पर सुर यावहिं जोई
देखि नागरय मग परजाई • जिमि गिरिकमिनमयंक उजाई
करहिं परसि जल जो तनुधारी • पाय चतुर्भुज रूप सुखारी
चढ़ि विमान प्रभु धाम सिधाये • सकल अमरपति कहँ सकुचाये
सुमन वृष्टि नभ होइ अपारा • होइ नाद विधि वेद उचारा

छं॰ उचरित वेद प्रसन्न भरत कृपालु हँसि सादर लयो।
जल परसि कर रिपुदमन सादर चपवन राघव भयो॥
कपिनादि भूपप रावणारि प्रभुसरूपशिवभिलमरगये।
सुग्रीव प्रभु पद वंदि धारहिं बार रविमंडल गये॥
सुरसहित दिनकर वंशभूषण आप जलसाभित रहे।
तेहि समय योगि अनादि प्रभुभुवपमपावनमय कहे॥
इक मास रहु तुम नीर यहँ ममपुरी जीव सुभावहीं।
तेहि सुभग देहु विमान पद निर्वाण जो मम पावहीं॥
अतिप्रीति सरयूसलिल मज्जहिं मम चराचरतिकरसदा।
धरि आप सुरपुर सकल सादर सुनहु मम वाणीसुधा॥
जे जन्म भरि मम संग कोशलपुर रहे मिथिलिप सदा।
तिन तुरत जाने धाम मम सादर सुनहु वाणी सुधा॥
करहिं नृपम अंतरध्यान प्रभु जिमि दामिनी घनमेंबसे।

जय जयति जयजयकार जयजय जयति कर दै सुर चले ॥
इहि भाँति रघुपति सह चराचर लै गये निज धाम को।
सो कह्यो उमहिं कृपायतन उर राखि सादर राम को॥
दो० गिरिजा संत समागमहिं सम न लाभ कछु आन।
बिनु हरि कृपा न होय सो गावहिं वेद पुरान॥
इहिविधि सब संवाद सुनि, पुलकित गरुड़ शरीर।
बारबार तेहि चरण गहि जानि दास रघुवीर॥
तासु चरण शिरनाय करि हृदय राखि रघुवीर।
गयउ गरुड़ वैकुण्ठ तब, प्रेम सहित मति धीर॥
इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
लवकुशकाण्डे विमलवैराग्यसम्पादनो नाम
अष्टमस्सोपानः ॥ ८ ॥